सेठिया जैन ग्रन्थालय-पुस्तक नं. ३४.

# श्री प्रकरण संग्रह-भाग २ जो.

[ स्वर्गस्थ पं. मुनिराज श्री उत्तमचंद्रजी स्वामीए संशोधीने तैयार करेला २७ थोकडानो संग्रह. ]

प्रकाशक,
धर्मचंद्रजी तत्पुत्र भैरोंदानजी तत्पुत्र जेठमल सेठिया
बीकानेर-निवासी.

प्रथम आवृत्ति. प्रत २०००. संवत १९८०. इ. स. १९२४. वीर संवत २४५०.

श्री "वीर-शासन प्रिन्टींग प्रेस" मां शा. केशवलाल वलसुखभाईए छाप्युं. ठे. कालुपुर टंकशाळ-अमदावाद.

मूल्य रु. १

# प्रस्तावना.

श्रीमत्पार्श्वजिनं नत्वा, स्मृत्वा च गुरुदेवताम् ।
प्रकरणानि संगृह्य, ग्रन्थोऽयं लिख्यते मुदा ॥

स्वर्गस्थ पंडित महाराज श्री उत्तमचंद्रजी स्वामीए प्रकरण संग्रहना बीजा भागना लेखनकार्यनो प्रारंभ करतां उपर आपेला श्लोकवडे मंगलाचरण करेलुं हतुं, परन्तु एवा मंगलाचरणवडे प्रारंभेला ग्रंथने प्रकाशमां आवेलो तेओ श्री जोई न शक्या. आजे तेमना अप्रकट ग्रंथने प्रकट करी तेनो लाभ लेवा इच्छनारा मुमुक्षुओनी समीपे तेने रजु करी, स्वर्गस्थ पंडित महाराजश्रीनुं स्मरण करवानुं प्रकाशकने माटे अवशिष्ट रह्युं छे. काळनी गति गहन छे.

उत्तराध्ययन सूत्रना २८ मा अध्ययनमां मोक्षनां चार अंग कहेलां छे: (१) ज्ञान, (२) दर्शन, (३) चारित्र अने (४) तप. आ चारे मोक्षमार्गना हेतुओमां दशवैकालिक सूत्रमां "पढमं नाणं तओ दया" ए शब्दोवडे ज्ञानने प्रथम पंक्तिमां मूकवामां आव्युं छे, अने ते यथार्थ ज छे. ज्ञानवडे ज हेय ज्ञेय उपादेय पदार्थोनी समज मनुष्यमां आवी शके छे, अने ए रीते ते चारित्रशील बनी जीवननुं सार्थक्य करे छे. ज्ञाननुं आटलुं बधुं माहात्म्य छे.

द्रव्यगुणपर्यवना ज्ञानवडे करीने मनुष्य इहलोकमां तथा परलोकमां पोतानी परिस्थितिनुं भान प्राप्त करे छे. ज्यांसुधी मन वैराग्यथी रंगित थतुं नथी त्यांसुधी मोक्षनी श्रेणीपर आत्मा चडी शकतो नथी अने ज्यांसुधी द्रव्यगुणपर्यवनुं ज्ञान मनुष्यने प्राप्त थतुं नथी त्यांसुधी वैराग्यनी स्फुरणा पण थती नथी. द्रव्य-गुणपर्यवनो विस्तार जैन सिद्धान्तोमां मोटा प्रमाणमां आपवामां आपेलो छे, परन्तु बधा सिद्धान्तोनुं सम्यक्

प्रकारे ज्ञान मेळववानुं सौ कोईने एकसरखुं सुलभ होतुं नथी. आवा जिज्ञासुओने माटे जैनागमोमांथी प्रकरणो छूटां पाडीने आपवामां आवे छे तो तेनो लाभ सारा प्रमाणमां लेवामां आवे छे. आ प्रकरणो थोडा वखतमां द्रव्य–गुणपर्यवनुं ज्ञान प्राप्त करवा माटे घणां उपयोगी पुरवार थयां छे अने तेथी जूदा जूदा प्रकाशको तरफथी तेना जूदा जूदा संग्रहो प्रसिद्ध थया छे. एवी ज रीते आ एक वधु संग्रह पण प्रसिद्ध करवामां आवे छे.

स्व. पंडित महाराजश्री उत्तमचंद्रजी स्वामीए तैयार करेलो अने स्व. पूज्य महाराज श्री लाधाजी स्वामीए सुधारेलो प्रकरण संग्रहनो पहेलो भाग घणां वर्षो अगाउ प्रसिद्ध थयो हतो अने त्यारपछी सुधारावधारा साथे तेनी पांच आवृत्तिओ प्रसिद्ध थई छे. आवा संग्रहोनी लोकप्रियता ए उपरथी मालूम पडी आवे छे. आ संग्रह पण स्व. महाराजश्रीए लखावी सुधारीने तैयार करी राखेलो हतो, परन्तु तेमना अवसानथी ते अप्रकट दशामां ज रह्यो हतो. १९७९ ना चातुर्मासमां पंडित महाराजश्री गुलाबचंद्रजी स्वामी, मुनि श्री वीरजी स्वामी, पंडित श्री रत्नचंद्रजी स्वामी इत्यादि साधुवर्योनां दर्शनार्थे अमदावाद मुकामे जतां अने आ संग्रह मुनि श्री खुशालचंद्रजी पासे जोवामां आवतां ते प्रसिद्ध करीने मुमुक्षुओने तेनो लाभ आपवानी उत्कंठा मने थई आवी; परन्तु ए ग्रंथनो हस्तलेख छापखानामां मोकली आपवा जेटलो शुद्ध अने सगवडभर्यो नहोतो, एटले तेनी नवी नकल करावी तेने सुधारी आपवा में महाराज श्री गुलाबचंद्रजी स्वामीने विनति करी. महाराजश्रीए पोतानी नादुरस्त तबीयत छतां ते सुधारी आपवानी अने छेवटनां प्रुफो तपासी आपवानी कृपा करी छे, ते तेओश्रीनो मारा पर परम उपकार थयो छे. तेमनो एटलो कृपाने परिणामे आजे आ ग्रंथ आटला सारा स्वरूपमां तैयार थई शक्यो छे.

प्रकरण संग्रहना प्रथम भाग करतां आ भागमां लेखनशैली वधारे सुगम्य राखी छे. जे वखते ते प्रथम प्रसिद्ध

थयो ते वखत करतां अत्यारे भाषा—व्याकरणमां गुजराती भाषा आगळ वधी छे अने जूनी ढबनां लखाणो आधुनिक वाचकोने केटलीक वार दुर्गम पण लागे छे. आ संग्रहमां पण जैन परिभाषा तो वापरी ज छे, परन्तु वाक्यरचना आदिमां अने अर्थवाहकतामां बनी तेटली वधारे स्पष्टता करी छे अने ए कार्यनो श्रम पं. मुनिराज श्री गुलाबचंद्रजी स्वामीए लीधो छे.

पुस्तकने सारा कागळमां अने मोटा अक्षरमां छापवानो हेतु तेना वाचनमां सरलता थाय ए प्रकारनो छे. आवां ज्ञाननां उपकरणो तो जेम बने तेम विनामूल्ये वहेंचाय तेमां ज लाभ रहेलो छे, परन्तु विनामूल्ये वहेंचानी वस्तुओ केटलीक वार अनधिकारीना हाथमां पण जाय छे अने तेथी ज्ञाननी आशातना थाय छे. आ कारणथी आ पुस्तकनुं मूल्य राख्युं छे खरुं परन्तु ते पडतर करतां पण ओछुं राख्युं छे अने ते द्रव्य ज्ञानप्रचारमां ज वापरवामां आवशे. जिज्ञासुओ तेनो यथोचित लाभ ले तो मारा आ प्रयासने हुं सफळ थएलो मानीश.

पंडित महाराज श्री उत्तमचंद्रजी स्वामीना शब्दोमां ज गुरुस्तुति करीने आ प्रस्तावना पूरी करुं छुं.

शार्दूल ॥ वंदे सद्गुरुवर्यमेनमधुना लाधाजिसंज्ञं मुदा।
सद्विद्यार्णवमार्यशीलमरसं सौजन्यरत्नाकरम् ॥
यत्पादार्चनतोजडोऽप्यलमहो जातोऽस्मि विद्यां वुधौ ।
तत्तुं शक्तिवरोहमुत्तमपुरश्चंद्राभिधानो मुनिः ॥

बीकानेर
१९८०

भैरोंदान जेठमल.

## स्व. मुनि महाराज श्री उत्तमचंद्रजी स्वामीनो जीवनपरिचय.

॥ शार्दूल ॥

उत्कृष्टं विमलं त्रिकालविषयं ज्ञानं यदीयं स्फुटं ।
तत्त्वव्याप्तवचो विबाधरहितः ख्यातो यदीयागमः ॥
मत्याऽगम्यगतिर्गरिष्ठमहिमा व्याप्तोहि लोकत्रये ।
चन्द्रोऽज्ज्वलयवरिष्ठशासनपतिर्नस्स्यात्स भद्रंकरः ॥

स्व. मुनि महाराज श्री उत्तमचंद्रजी स्वामीए 'प्रकरण संग्रह' ना प्रथम भागमां जे स्तुतिनो श्लोक रचीने अंतर्लापिकामां पोताना नामनो रचना करी हती, ते ज श्लोकवडे प्रभुस्तुति करीने तेमनो संक्षिप्त जीवन-परिचय अत्र आलेखुं छुं.

### कुटुंबपरिचय.

श्री उत्तमचंद्रजीना पिता श्री जगजीवन रुघनाथ न्याते भावसार सुरतमां सगरामपुरामां मुठीया कुवा पासेना चोगानमां रहेता. श्री उत्तमचंद्रजीनो जन्म विक्रम संवत् १९१० मां थयो हतो. तेमनी मातानुं नाम दिवाळीबाई हतुं. बाल्यावस्थामां गुजराती सात धोरण अने अंग्रेजी पांच धोरणनो अभ्यास तेमणे कर्यो हतो. तेमना पिता रंगाराना धंधा

करता हता, परन्तु श्री उत्तमचंद्रजी तो विद्याभ्यासमांथी निवृत्त थईने महेतागीरीनी नोकरीमां जोडाई गया हता. हंमेशनो ऋजु स्वभाव अने हृदयनी सरलता तेमने साधुसमागममां प्रेरती अने तेथी साधुओनो परिचय तेमने हमेशां वधारवानुं ज गमतुं. तेमने बे बहेनो हती जेमनां नाम माणेकबाई तथा नंदकोरबाई हतां. बेउ व्हेन तेमनां लग्न थया बाद गुजरी गयां हतां. तेमना एक मोटा भाई काळीदास तो केवळ नानी वयमां गुजरी गया हता. तेमना पिताजी संवत् १९२३ मां गुजरी गया, जे वखते श्री उत्तमचंद्रजीनी वय मात्र १३ वर्षनी हती.

## साधुत्व.

साधुसमागमनी विशेषताथी श्री उत्तमचंद्रजीना ऋजु स्वभावमां वैराग्यनां बीज ववातां हतां, ते बीजना अंकुरो संवत् १९२८ मां फूट्या. ते वखते तेमनां मातुश्री वृद्ध हतां तथापि धर्मपरायण अने पुत्रना कल्याणनी इच्छावाळां होवाथी विघ्न न पाडतां दीक्षा लेवाने आज्ञा आपी तेथी पूज्य श्री लाधाजी स्वामी पासे ए वर्षना चैत्र मासनी अष्टमी ने मंगळवारे श्री उत्तमचंद्रजीए सुरतमां पोतानी फोईना दिकरा दलीचंद माणेकचंदने घेरथी दीक्षा ग्रहण करी. ए दीक्षामहोत्सव वखते सुरतमां सारो उत्साह व्याप्यो हतो अने मुंबई, कठोर वगेरे गामना संघो सुरतमां आव्या हता. उत्सवभेर सारा जमणवारो पण थया हता. श्री. उत्तमचंद्रजीनी दीक्षातिथि—चैत्र सुद ८—नी पाखी पाळवानो ठराव ते वखते ज भावसारज्ञातिमां थयो हतो जे अत्यारसुधी पळाय छे एवुं जाणवामां आव्युं छे. दीक्षा पछीनुं पहेलुं ज चातुर्मास श्री उत्तमचंद्रजी स्वामीए पोताना गुरुमहाराज श्री लाधाजी स्वामीनी साथे सुरत पासेना कठोर गाममां कर्युं.

## अभ्यास.

दीक्षा ग्रहण कर्या पछी श्री उत्तमचंद्रजी स्वामीए सूत्रज्ञान, तेमज संस्कृत भाषाना अभ्यासनो प्रारंभ कर्यो. व्याकरण, काव्य, अलंकार, न्याय आदिनो तेमनो अभ्यास सारो हतो अने तेथी तेमां पारंगत थया पछी संस्कृत भाषामां श्लोको तथा गद्य विवरणो लखवामां ते बहु उत्साह दाखवता. आ प्रकारनुं तेमनुं लेखन केवळ प्रकीर्ण हतुं. थोडुं अंग्रेजी तथा उर्दू भाषानुं ज्ञान पण तेमणे प्राप्त कर्युं हतुं. केटलांक सूत्रो तेमणे मुखपाठ कर्यां हतां. तेमनी उत्तर अवस्थामां केटलाक नवदीक्षित साधुओ सूत्रज्ञान तेमनी पासेथी पण ग्रहण करता. जैनेतर मतमतांतरोनो अभ्यास पण तेमणे सारो कर्यो हतो एम तेमना केटलाक प्रकीर्ण लेखो उपरथी आजे मालूम पडे छे. पूज्य श्री श्रीलालजी महाराजे ज्यारे काठीयावाडमां पहेली ज वार विहार कर्यो हतो, त्यारे श्री. उत्तमचंद्रजी महाराज तेमना परिचयमां आव्या हता. तेमना सूत्रज्ञानना संबंधमां पूज्यश्री श्रीलालजी महाराज जणावता के तेमनुं सूत्रज्ञान उत्तम प्रकारनुं हतुं अने केटलीक बाबतोना सूत्र संबंधी खुलासा तेमने श्री उत्तमचंद्रजी महाराज पासेथी मेळवीने संतोष थयो हतो. तेमना ए ज्ञाननी पूज्यश्री श्रीलालजी महाराज अनेक प्रसंगे प्रशंसा पण करता.

## लेखनप्रवृत्ति.

लेखनप्रवृत्ति तेमने अत्यंत रुचिकर जणाती हती. ज्यारे ज्यारे समय मळे त्यारे त्यारे ते कांईक ने कांईक लखवानुं काम करता. तेमना प्रसिद्ध थएला ग्रंथोमां प्रकरण संग्रहना बे विभागो सिवाय बीजुं कांई नथी परन्तु तेमनां लखाणोनो अप्रसिद्ध संग्रह मोटो छे. केटलाक नाना मोटा ग्रंथो जेवा के ज्योतिष करंडक पइन्नानुं गुजराती

भाषांतर, तेरापंथी चर्चा ( संस्कृत श्लोकोमां ), चार छेदसूत्रोनां गुजराती भाषांतर, इत्यादि तेमणे पूरां लखेलां छे; ते उपरांत सूत्रोमांथी करवामां आवेलां केटलांक दोहन, शंकासमाधानो, प्रकीर्ण उतारा, नवा रचेला केटलाक प्रकीर्ण संस्कृत श्लोको इत्यादि संग्रह अव्यवस्थित स्थितिमां पडेलो छे. आ संग्रहने तपासीने, अने विषयवार वर्गवार करीने जो व्यवस्थित करवामां आवे तो तेमांथी केटलाक मोटा ग्रंथो बने तेवो संभव छे. लेखनप्रवृत्तिना तीव्र उत्साहने लीधे तेमणे जे कांई लख्युं छे तेमांनुं घणुंखरुं कागळना नाना-मोटा गमे तेवा टुकडाओ उपर लखेलुं छे. लखवानो उत्साह स्फुरे ते वखते पोतानी निकटमां नानो कागळनो टुकडो होय, किंवा एक बाजुए छापेलुं अने बीजी बाजुए कोरुं कोई हेन्डबील होय अथवातो पाना आकारना कोई सारी जातना कागळोना ककडा पडेला होय तो जेवो मळ्यो तेवो कागळ लईने लखवा बेसी जवुं एवो तेमनो नियम हतो. आ ज कारणथी तेमना प्रकीर्ण लेखोनो संग्रह कोई विचित्र प्रकारनो पत्रसमुदाय होय एवुं जणाय छे. आ संग्रहमांनो सौथी वधारे उपयोगी भाग चुंटी काढीने प्रसिद्ध करवामां आवे तो घणा मुमुक्षुओने लाभ थवा पामे एवो संभव छे.

## चातुर्मासो.

महाराजश्री उत्तमचंद्रजी स्वामीए सं. १९२८ मां दीक्षा ग्रहण करीने ते वर्षे कठोरमां पूज्य श्री लाधाजी स्वामीनी साथे ज चातुर्मास कर्युं. बीजुं सं. १९२९ नुं चातुर्मास तेमणे पोताना गुरुवर्यनी साथे लींबडीमां कर्युं. त्यार-पछी १९३० मां मोरबी, १९३१ मां धोराजी, १९३२ मां अमदावाद, १९३३ मां भुज (कच्छ), १९३४ मां मुद्रा

(कच्छ), १९३५ मां अमदावाद, १९३६ मां सुरत, १९३७ मां जेतपुर, १९३८ मां लींबडो, १९३९ मां जामनगर, १९४० मां वांकानेर, १९४१ तथा ४२ मां सुरत, १९४३ मां अमदावाद, १९४४ मां मांडवी (कच्छ), १९४५ मां मुद्रा, १९४६ मां रापर (कच्छ-वागड), १९४७ मां सुरत, १९४८ मां जेतपुर, १९४९ मां अंजार (कच्छ), १९५० मां मुद्रा, १९५१ मां वढवाण शहेर, १९५२ मां लींबडो, १९५३ मां मोरबी, १९५४ मां मायला, १९५५ मां अंजार (कच्छ), १९५६ मां मांडवी (कच्छ, १९५७ मां मोरबी, १९५८ मां गुंदाला (कच्छ), १९५९ मां वढवाण केम्प, १९६० मां सुरत, १९६१ मां मुंबई, १९६२ मां लींबडो, १९६३ मां अमदावाद, १९६४ मां लींबडी, १९६५ मां वढवाण केम्प, १९६६ मां वढवाण शहेर, १९६७ मां लींबडी, १९६८ मां जेतपुर, १९६९ मां मांडवी (कच्छ), १९७० मां गुंदाला (कच्छ), १९७१ मां रापर (कच्छ-वागड), १९७२ मां मोरबी, १९७३ मां सुरत, १९७४ मां जामनगर अने छेल्ले १९७५ नी सालनुं चातुर्मास अमदावादमां कर्युं. संवत् १९७४ नुं चातुर्मास करवा जामनगर जता हता, त्यां रस्तामां राजकोट मुकामे तेमने लकवानुं दर्द लागु पडयुं हतुं पण तेनी बहु असर न्होती जेथी उपचार करतां तुरतथी आराम जणायो हतो. तेथी राजकोटथी विहार करी जामनगर चोमासुं पहोंच्या. चोमासुं सारी रीते पसार थयुं. जोके दर्दनी अंदरखाने असर हता तेथी अशक्ति वधती जती हती तोपण पोते उत्साही हिम्मतवान् अने धैर्यवाळा हता तेथी शारीरिक अशक्ति जणावा न देतां चोमासुं उतर्ये तुरत जामनगरथी विहार करी लींबडी पहोंच्या. लींबडीना श्रावकोए शरीरनी अशक्ति जाणी लींबडी रोकावा घणो आग्रह कर्यो पण पोताना जन्मदेश-गुजरात तरफ एक वखत चोमासुं करी आववानी तेमने उमेद हती तेथी

अमदावादनुं चोमासुं ठराव्युं. लींबडीथी विहार करी अमदावाद आवतां रस्तामां फरी ते दर्दनो हुमलो थयो अने गामडाना विहारमां हरकत आववा मांडी तोपण मनोबळने परिणामे चोरवडोदरासुधी पहोंच्या. त्यां थोडो वखत रोकाई सारवारपूर्वक उपचार करतां कंई ठीक थयुं एटले अमदावाद पहोंच्या. लकवानी असर मगज उपर उतरी. डोकटर जीवराजभाई तथा केशवलालभाई वगेरे खरी लागणीथी उपचार करता हता पण एकंदर रीते दर्द वधवा मांड्युं. तेमना एक शिष्य भाईचंद्रजी मुनि अने बीजा त्रण साधुओ तेमनी सारवार करवामां सारी महेनत लेता हता. तेमना एक शिष्य खुशालचंद्रजी मुनि कठोर चोमासुं हता. तेमने मांदगी वधवाना खबर मळतां महाराज श्री शिवजी स्वामीनी साथे लांबा लांबा विहार करी थोडा दिवसमां कठोरथी अमदावाद आवी पहोंच्या अने थोडा दिवस गुरुसेवानो लाभ लीधो. केटलांएक चिह्नो उपरथी पं. श्री उत्तमचंद्रजी महाराजने जणायुं के हवे आ मांदगी मटवाना नथी एटले पोते आहार पाणी तजी संथारानो विचार जणाव्यो. तेवा खबर लींबडी वगेरे स्थळे पहोंचतां केटलाक भाविक श्रावको कठोर सुरत लींबडी वगेरे स्थळेथी आवी पहोंच्या हता अने केटलाक तेमनी सारवार माटे खास रोकाया हता. छेवट आलोवी पडिक्कमी संथारो करी तेओश्री आसो वद ११ ने रविवारे परोढमां बे वागते ४८ वर्ष संयम पाळी एकंदर ६६ वर्षनुं आयुष्य भोगवी काळधर्मने पाम्या.

## गुणमीमांसा.

महाराज श्री उत्तमचंद्रजी अत्यंत दयाळु, सरल दिलना अने ज्ञानभारथी नम्र बनी गएला हृदयना पापभीरु साधुवर्य हता. तेमना जीवनना परिचयीने कोई ने कोई प्रसंगे तेमना ए गुणोनो आपोआप अनुभव थयाविना रहेतो नहि.

लींबडी संप्रदायनां बधां साधु–साध्वी तेमनाथी मोटां होय के नानां तथापि पूर्ण मानवृत्तिथी तेमने जोतां. तेमना समागममां रही अभ्यास करवानुं घणा साधुओने गमतुं कारणके तेमनी शिक्षणपद्धतिमां पारावार भरेलो प्रेम मालूम पडतो. अन्य संप्रदायना साधुओ पण तेमनी साथे रहीने ज्ञानप्राप्ति करवाने हमेशां उत्सुक रहेता. तेमने एकंदरे ४ शिष्यो थया हता. तेमांना खेतशी तथा ताराचंदजी संप्रदायनी मर्यादामां रहीने वर्तवामां शिथिल मालूम पड्या हता. महाराजश्रीए तेमने केटलीक वार शिखामणो आपी वार्या हता, परन्तु ए सरल दिलना गुरु-वर्यनी परवा नहि करनार शिष्योने छेवटे गुरुवर्यें पोते ज साधुवेश उतरावीने रजा आपी दीधी हती. त्रीजा शिष्य खुशालचंद्रजी हाल विद्यमान छे. चोथा शिष्य भाईचंद्रजीए वननिवास स्वीकार्यो छे. तेओश्री एकाकीपणे पर्वतोनी कंदराओमां वसे छे अने शांतियुक्त स्थानोमां यथेच्छ पर्यटन करी काळनिर्गमन करे छे.

## शास्त्रीय ज्ञान.

पंडित श्री उत्तमचंद्रजी महाराजनुं शास्त्रीय ज्ञान अत्युत्तम हतुं. जैन आगमोनो भाव तो तेमना मगजमां शृंखला-बद्ध गोठवाई रह्यो हतो, तेनुं कारण ए के एक एक आगम केटलीए वार तेमना वांचवामां आवतो. ते उद्यमी एटला बधा हता के नवरा बेसवुं तो तेमने गमतुं ज न्होतुं. कोई वांचनार होय तो तेने वंचावता अने ते न होय तो पोते वांच्या करता. टीकाओ वांचवानो तेमने बहु शोख हतो. ते वांचना विचारता अने उपयोगी भाग लखी लेता. लिंबडी संप्रदायमां तेमना समयमां तेमनी व्याख्यानशैली शास्त्रीय ज्ञानथी भूषित थएल होवाने लीधे बहु वखणाती हती. घणां साधुसाध्वीओ पण तेमनुं व्याख्यान सांभळवाने उत्सुक रहेता हता. शास्त्रोक्त भांगा संबंधीनुं गणितज्ञान पण तेमनामां उच्च

प्रकारनुं हतुं. पं. श्री रत्नचंद्रजी महाराज अने तेमना शिष्य खुशालचंद्रजी मुनिने गंगोयाना भांगा तेमणे ज शीखव्या हता के जे थोडा वखतमां पुस्तक रूपे बहार पाडवामां आवनार छे.

## चर्चाशक्ति.

शास्त्र संबंधी चर्चा करवामां तेओश्री घणा निपुण हता. तेमां पण खुबी ए हती के सामो माणस गमे तेवा आडा अवळा पोईंट उपर जाय तोपण पोते तपी जता नहि किन्तु मगजने शांत राखी शांतिथी समजावता. तेमनी चर्चा मरचांथी भरेली नही पण साकर जेवी मधुर जणाती हती. घणी वार तेमनी चर्चा ज्ञानगोष्ठीरूप ज थती हती अने श्रोताओने तेमांथी अपूर्व ज्ञानानंद मळतो हतो. संवत् १९६५ नी सालमां तेओश्री कच्छ मुंद्रामां बीराजता हता त्यारे कच्छ कोडायना रहीश प्रोफेसर रवजी देवराज साथे तेमने मूर्ति संबंधी चर्चा थई हती. दररोज त्रणथी चार कलाक शास्त्रीय युक्ति अने दाखला साथे सवाल जवाब थतां त्रण दिवस सुधी मधुर चर्चा तेमणे चलावी हती. तेथी प्रो. रवजी देवराजभाईने घणो संतोष थयो हतो अने तेमना ज्ञाननो तारीफ करी हती.

संवत् १९४३ नी सालमां तेओश्री रापर चोमासुं रह्या हता, त्यारे रापरना रहीश भोटा जेचंद करमचंद के जे एक तेरा पंथना चुस्त श्रावक हता अने जेमणे जैन सूत्रोनो बहु सारो परिचय करेल हतो, तेनी साथे तेरापंथीनी मान्यता संबंधी चर्चा चाली. दररोज रात्रे बबे कलाक विचारणीय मुद्दा उपर चर्चा चालतां चार महिना नीकळी गया. छेवट चोमासानी आखरे चर्चाने परिणामे जेचंदभाई समज्या अने तेरापंथीनी मान्यता विपरीत छे एम

કબુલ કરી તેરાપંથીની શ્રદ્ધા તજી તેમણે શુદ્ધ શ્રદ્ધા ધારણ કરી. આ પ્રસંગના પરિચયથી પંડિતશ્રીએ તેરાપંથીનો ચર્ચા સંબંધી એક નાનું સરખું પુસ્તક સંસ્કૃત શ્લોક રૂપે તૈયાર કરેલ છે.

## સ્મારક.

મહારાજ શ્રી ઉત્તમચંદ્રજી સ્વામીની વય અવસાન સમયે ૬૬ વર્ષની હતી. તેમનો નિર્વાણ મહોત્સવ અમદાવાદના છ કોટી તથા આઠ કોટી સમુદાયના સર્વ શ્રાવકસમુદાયે સુંદર રીતે ઉજવ્યો હતો. તેમની પાછળ રૂ. ૫૦૦૦ જેટલો ધર્માદો એ બેઉ સમુદાયોના શ્રાવકો તરફથી થવા પામ્યો હતો અને એ રકમના વ્યાજમાંથી 'સાધુશાળા' સ્થાપવાનો તથા તેને અભાવે 'શ્રાવિકાશાળા' સ્થાપવાનો ઠરાવ થયો હતો. સંવત ૧૯૮૦ માં પં. મુનિ મહારાજ શ્રી ગુલાબચંદ્રજી સ્વામી, શ્રી વીરજી સ્વામી, પં. મુ. શ્રી રત્નચંદ્રજી સ્વામી, શ્રી રુપચંદ્રજી તથા સ્વ. મહારાજશ્રી ઉત્તમચંદ્રજી સ્વામીના વિનીત શિષ્ય શ્રી ખુશાલચંદ્રજી સ્વામીનું ચાતુર્માસ અમદાવાદમાં થતાં આ શ્રાવિકાશાળાનો પ્રારંભ કરવામાં આવ્યો છે અને બધા સમુદાયોની શ્રાવિકાઓ તેનો લાભ લઈ શકે છે. ધાર્મિક શિક્ષણ અને તે હેતુપૂરતું લેખન વાચનનું જ્ઞાન આપવાનો પ્રબંધ એ શ્રાવિકાશાળામાં કરવામાં આવ્યો છે.

ચુનીલાલ વર્ધમાન શાહ.

# अनुक्रमणिका.

## शुद्धिपत्र.

| पत्रांक | पृष्टांक | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|---|
| ३ | २ | १२ | उत्सह | उत्साह |
| ६ | २ | ११ | १९४३ | १९४६ |
| ३ | २ | ८-९ | जीव समुदाय मळ-वाथी लागती क्रिया ते | पोतानो जीव रुप वस्तुना वखाण थवाथी हर्ष पामे ते |
| ३ | २ | ९-१० | अजीव समुदाय रथादि मेळववाथी | पोताना अजीव समुदाय रथादिनां वखाण थवाथी |
| ६ | २ | ७ | १८ लाख पंचेंद्रियनी योनीमां दर्शन २-३-४ लाभे | ४ लाख तिर्यंच पंचेंद्रियनी योनीमां दर्शन २-३ अने १४ लाख मनुष्यनी |
| ७ | १ | ३ | २२ | ५२ |
| ७ | १ | १२ | ६ | ४-६ |
| ८ | १ | १२ | ७० | ५८ |
| ८ | २ | १ | १४ | २६ |
| ८ | २ | १ | भाव ५ | भाव ३-४-५ |

| पत्रांक | पृष्टांक | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|---|
| ८ | २ | ५ | (अशुद्ध) नारकी देवनो ८ लाख योनीमां २५ कषाय, ११ जोग. १२ अव्रत, ५ मिथ्यात्व, एम ५३ हेतु लाभे. (शुद्ध) नारकीनी ४ लाख योनीमां २३ कषाय, ११ जोग, १२ अव्रत, ५ मिथ्यात्व, ए ५१ हेतु लाभे. देवतानी ४ लाख योनीमां २४ कषाय, ११ जोग, १२ अव्रत, ५ मिथ्यात्व, ए ५२ हेतु लाभे. | |
| ८ | २ | १० | ५३ | ५३॥ |
| १० | २ | ११ | सोल | बार |
| १० | २ | ११ | आठ—आठ | छ—छ |
| १० | २ | १२ | बे आंगलनी | बे पलनी |
| ११ | १ | १ | बार आंगलनी | सात आंगलनी |
| १२ | १ | १०-११ | शेर १० | शेर ८ |
| १४ | २ | ३ | सूक्ष्म केटला? ने बादर केटला? | संज्ञी केटला? ने असंज्ञी केटला? |
| १६ | १ | १ | असंख्यातगुणा | अनंतगुणा |
| १८ | १ | १० | कळ | काल |
| १८ | २ | ३ | मरुदेवा मातानी अपेक्षाए | ० |
| २० | २ | १० | ए | ए १३२ ने |
| २३ | २ | ३ | वायु | तेउ |

| पत्रांक | पृष्ठांक | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|---|
| २४ | १ | ६ | (अशुद्ध) २१९-वैक्रेय मिश्रयोगनी माफक जाणवुं. | (शुद्ध) ११६-७ नरक, १ बादर वायरो, ५ संज्ञीतिर्यंच, १५ कर्मभूमि, ग्रैवेयक अनुत्तर विमान वर्जी ८५ देवता, ए सर्वेना पर्याप्तामां लाभे. |
| २५ | २ | १० | ६ | ७ |
| २५ | २ | ११ | ४-६- | ५-७ |
| ४० | २ | १२ | तेडावी जाय | स्पर्श विषय |
| ४१ | १ | १ | स्पर्श भोग | रुप विषय |
| ,, | ,, | ,, | रुपभोग | शब्दविषय |
| ,, | ,, | ,, | शब्दभोग | ० |
| ४१ | १ | २ | नजरमेळानो भोग | मानसिक भोग |
| ४७ | १ | ८ | संख्यातानुं | असंख्यातानुं |
| ६८ | १ | ६ | द्रीप | द्वीप |
| ६९ | १ | १२ | होम | रोम |
| ७४ | २ | ९ | सचिठणा | संचिठणा |
| ८८ | १ | १२ | आछुं | ओछुं |
| ९९ | १ | ४ | वाल | वालाग्र |
| ९९ | २ | ६ | तजस् | तैजस |
| १०१ | २ | ४ | पवुं | एवुं |
| १०२ | १ | १ | ने | ते |
| १०६ | २ | २ | कानी माठेरी | का माठेरीनी |
| १०७ | २ | ८ | द्वीपप्रदेशी | द्विप्रदेशी |
| १०९ | १ | ४ | जोजन | गाउ |
| ११० | २ | ५ | विपुलमतिथी | विपुलमति पथी |
| ११७ | २ | ९ | ४३ | ३४ |
| ११८ | २ | ९ | तेणे | जेणे |
| १२२ | २ | ८ | २१५ | २१४ |
| १२४ | १ | ८ | एम मली ५२ दंडक थया | एम ५२ दंडक थया, सर्व मली १०२ दंडक जाणवा |
| १२५ | २ | ३ | २२-२२ | २१-२१ |
| १२५ | २ | ४ | २२-४४ | २१-४२ |
| १२७ | २ | १२ | ३४ | ३२ |
| १२८ | १ | ५ | १४५ | १४४ |
| १२९ | १ | ४ | २५८४ | २५९० |
| १३० | १ | ८ | ६ एकेंद्रिय | ५ एकेंद्रिय |
| १३० | १ | ११ | न | नें |
| १३६ | २ | २ | राह्य | रह्या |
| १३६ | २ | ८ | वाल | वोल |
| १३७ | २ | ६ | व्यक्तवता | वक्तव्यता |
| १४५ | १ | ५ | तजु | तेजु |
| १५२ | २ | ६ | वण | वर्ण |
| १६० | २ | २ | वंधनी | वंधनी ज० |

# विशेष शुद्धि.

पत्रांक पृष्ठांक पंक्ति अशुद्ध शुद्ध

६ १ १० (अशुद्ध) १८ लाख योनिमां १६ तथा ८ कषाय लाभे. (शुद्ध) ५८ लाख योनिमां १६ कषाय लाभे, ८ लाख योनिमां १६ तथा १२ कषाय लाभे, ४ लाख योनिमां १६-१२-८ कषाय लाभे.

६ २ ३ (अशुद्ध) १८ लाख पंचेंद्रियनी योनिमां २-३-४-५ ज्ञान लाभे. (शुद्ध) ४ लाख योनिमां २-३ ज्ञान लाभे, १४ लाख योनिमां २-३-४-५ ज्ञान लाभे.

८ १ ११ (अशुद्ध) ६ लाख विकलेंद्रियनी योनिमां २ तथा ३ क्रियावादी वध्या. (शुद्ध) अज्ञानवादी १ अक्रियावादी २ ए बे समवसरण लाभे.

| पत्रांक | पृष्ठांक | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|---|
| ८ | २ | २ | ४१ हेतु | ३९ हेतु |
| ८ | २ | २ | २५ | २३ |
| ८ | २ | ४ | ४३ | ४१ |
| ८ | २ | ४ | २५ | २३ |
| ८ | २ | ५ | ४२ | ४० |

२३ २ २ (शुद्ध) स्थावर नाडीमां १५० भेद अपेक्षाये लाभवा कह्युं छे, पण मूल भेदनी अपेक्षा लइये तो २२ एकेंद्रियमांथी १ तेउकायनो पर्याप्तो वर्जी २१ एकेंद्रियना भेद लाभे.

| पत्रांक | पृष्ठांक | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|---|
| ३० | २ | ११ | मायानो | सायानो |

पत्रांक पृष्ठांक पंक्ति अशुद्ध शुद्ध

३२ १ ११ (अशुद्ध) तिर्यंच अने मनुष्य ज्यां ज्यां जाय त्यां त्यां ज० उ० प्रथम पांचे लेश्यानी अंतर्मुहूर्त्तनी स्थिति जाणवी. केवल ज्ञान आश्री शुक्ल लेश्यानी स्थिति. (शुद्ध) तिर्यंच आश्री छ लेश्या अने मनुष्य आश्री प्रथम पांच लेश्यानी स्थिति ज० उ० अंतर्मुहूर्त्तनी। शुक्ल लेश्यानी स्थिति छद्मस्थ मनुष्य आश्री ज० उ० अंतर्मु०नी अने केवली आश्री

३२ २ ७ (अशुद्ध) ज्योतिषी. (शुद्ध) ज्योतिषी आश्री तेजु लेश्यानी ज० स्थिति पल्यना आठमा भागनी अने उ० १ पल्य ने १ लाख वर्षनी.

| पत्रांक | पृष्ठांक | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|---|
| ४१ | १ | ११ | १७॥ | १७ |
| ४५ | १ | १० | आउबल | आउबहुल |
| ४५ | १ | ११ | पंकबल | पंकबहुल |
| ४९ | १ | ५ | जंबूद्वीप पालखो एक चपटीमांहि २१ फेरा देइ | ० |
| ५२ | २ | ३ | कालोदधि | कालोदधि समुद्रनां पाणी मांस सरिखां |
| ५२ | २ | ३ | त्रण | बे |
| ५४ | २ | ५ | पांचमी | ० |

| पत्रांक | पृष्ठांक | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|---|
| ५८ | २ | ७ | वाटला संस्थान | वाटला अर्द्ध कविट्ठ संस्थान |
| ५५ | १ | १ | २६०० योजन | २७०० योजन |
| ५५ | १ | १ | २५०० ,, | २६०० ,, |
| ५५ | १ | २ | २४०० ,, | २५०० ,, |
| | | | | सातमा आटमा देवलोकना २४०० योजननां |
| ५५ | १ | ११ | अर्द्धचंद्राकार | त्रिकोण सिंघोडाकार |
| ५६ | २ | ५ | १ | १॥ |
| ५६ | २ | ६ | २ | २॥ |
| ५६ | २ | ६ | ३ | ३॥ |
| ५९ | २ | १ | (अशुद्ध) पहेले समये १०८ मोक्ष जाय. | (शुद्ध) १ थी ३२ पर्यंत मोक्ष जाय तो ८ समय सुधिमां ॥१॥ ३३ थी ४८ मोक्ष जाय तो ७ समय सुधिमां ॥२॥ ४९ थी ६० मोक्ष जाय तो ६ समय सुधिमां ॥३॥ ६१ थी ७२ मोक्ष जाय तो ५ समय सुधिमां ॥४॥ ७३ थी ८४ मोक्ष जाय तो ४ समय सुधिमां ॥५॥ ८५ थी ९६ मोक्ष जाय तो ३ समय सुधिमां ॥६॥ ९७ थी १०२ मोक्ष जाय तो २ समय सुधिमां ॥७॥ १०३ थी १०८ मोक्ष जाय तो १ समय सुधिमां ॥ ८ ॥ |
| ६१ | २ | ८ | असंखेज्जगुणा | संखेज्जगुणा |
| ६३ | १ | ११ | पज्जत्ता | बादर पज्जत्ता |
| ८४ | २ | ४ | ज० | ज० २ |
| ८५ | १ | ८ | एकेंद्रिय | वायुकाय एकेंद्रिय |
| ८५ | १ | ९ | नोएकेंद्रिय | नोवाउकाय |
| ८५ | १ | ९ | नोएकेंद्रिय | नोवाउकाय |
| ८५ | १ | ९ | एकेंद्रिय | वाउकाय एकेंद्रिय |
| ८५ | १ | १३ | एमज | ज० अंतर्मुहूर्त्तनुं उ० एमज ॥ |
| ८७ | २ | ५ | ५ । २५<br>५ । १२५<br>५ । ६२५<br>५ । ३१२५ | ५x । ५= । २५<br>२५x । ५= । १२५<br>१२५x । ५= । ६२५<br>६२५x । ५= । ३१२५ |
| ११९ | २ | ५ | नोअसंयत | नोअसंयत नोसंयतासंयत |
| १२५ | २ | २ | अचरमपणुं | चरमाचरमपणुं |
| १२५ | २ | ५ | आहारकवत् | अनाहारकवत् |
| १४५ | २ | १ | बाल | बोल |

# श्री प्रकरण संग्रह.

## भाग बीजो.

### प्रारंभ.

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

# पचीस क्रिया ॥

## ॥ अथ श्री ठाणांगसूत्रादिथी पचीस क्रियाना बोल ॥

करीए ते क्रिया. तेना पचीस भेद. तेमां कायाना व्यापारे करी निपनी ते कायकी क्रिया ॥ १ ॥ तेना बे भेद—१ पापथी निवर्त्या नथी एवा अविरत मिथ्यादृष्टि तथा समदृष्टि जीवने हालवा चालवाथी जे क्रिया लागे ते अनुपरतकाय क्रिया. २ दुष्ट रीते मन, वचन अने कायाना योग प्रवर्ताववाथी लागे ते दुःप्रयुक्तकाय क्रिया ॥ २ ॥ अधिकरण (खड्गादि) शस्त्रे करी जे क्रिया लागे ते अधिकरणिका. तेना बे भेद—१ पूर्वे नीपजावेल खड्गादिने विषे मुष्टि आदिनुं जोडवुं ते संयोजनाधिकरणिका, २ प्रथमथीज

खड्ग, मुष्ट्यादिनुं नीपजाववुं ते निवर्तनाधिकरणिका ॥ ३ ॥ प्रद्वेषे (मत्सरे) करी नीपजी ते पाउसिया–प्राद्वेषिकी. तेना वे भेद–१ जीवने विषे द्वेष करवाथी निपनी ते जीवप्राद्वेषिकी, २ अजीव (स्तंभादि) ने विषे द्वेष करवाथी निपनी ते अजीवप्राद्वेषिकी ॥ ४ ॥ परितापना (ताडनादि) दुःख विशेषे करी निपनी ते पारितावणिया–पारितापनिका. तेना वे भेद–१ पोताने हाथे करी परितापना उपजावे ते स्वहस्तपारितापनिका, २ बीजाने हाथे परितापना उपजाववे करी निपनी ते परहस्तपारितापनिका ॥ ५ ॥ प्राण (आयुष्यादि १०) नो अतिपात–नाश करवे करी निपनी ते प्राणातिपात क्रिया. तेना वे भेद–१ पोताने हाथे करी कोइ प्राणीने प्राणथी वेगळो करे ते स्वहस्तप्राणातिपात क्रिया, २ बीजाने हाथे कोइने प्राणथी वेगळो करावतां लागे ते परहस्तप्राणातिपात क्रिया ॥ ६ ॥ आरंभ (उपद्रव) करवाथी निपनी ते आरंभिका. तेना वे भेद–१ जीवने उपद्रव करवाथी लागे ते जीवआरंभिका, २ अजीव ( जीवना कलेवर अथवा वस्त्रादि ) नो आरंभ–अग्निसंस्कार वगेरे करतां जे क्रिया लागे ते अजीवआरंभिका ॥ ७ ॥ परिग्रह नव

प्रकारनो, ते उपर मूर्च्छा राखवाथी लागे ते परिग्गहिया क्रिया. तेना बे भेद–१ जीव (मनुष्यादि) ने विषे मूर्च्छा राखवाथी लागे ते जीवपरिग्गहिया, २ अजीव (सुवर्णादि) ने विषे मूर्च्छा राखवाथी लागे ते अजीव परिग्गहिया ॥ ८ ॥ माया–कपट निमित्तथी जे क्रिया लागे ते मायावत्तिया. तेना बे भेद–१ हृदयना दुष्ट आशयने वक्रतारूपे बोजी रीते बतावववानी कोशीश करवी ते आयभाववंकणया, २ खोटा लेखादिके करी परने वंचवानो व्यापार ते परभाववंकणया ॥ ९ ॥ अविरति निमित्तथी निपनी जे क्रिया ते अपच्चखाण क्रिया. तेना बे भेद–१ जीवने विषे प्रत्याख्यान कर्या विना जे बंधादि व्यापार ते जीव अपच्चखाण क्रिया, २ मद्यादि अजीवने विषे पच्चखाण न करवाथी कर्मबंध थाय ते अजीव अपच्चखाण क्रिया ॥ १० ॥ मिथ्यात्व निमित्ते कर्मबंध व्यापार थाय ते मिच्छादंसणवत्तिया. तेना बे भेद–१ हीन–अधिक आत्मादि वस्तु विषय मिथ्यात्वदर्शन निमित्त व्यापार ते ऊणातिरिक्तमिच्छादंसणवत्तिया, २ पूर्वोक्त ऊणातिरिक्त मिथ्यादर्शनथी भिन्न मिथ्यादर्शन जेमके आत्मा नथी, इत्यादिरूप मिथ्यादर्शन व्यापार ते तद्व्यति-

रिक्तमिह्वादंसणवत्तिया ॥ ११ ॥ वस्तुना देखवाथी निपनी ते दिट्ठिया. तेना बे नेद--१ जीवता हाथी घोमा प्रमुखने देखवाथी जे कर्म लागे ते जीवदिट्ठिया, २ चित्रामण प्रमुख जोवाथी जे कर्म लागे ते अजीवदिट्ठिया ॥ १२ ॥ वस्तुने स्पर्शवाथी निपनी ते पुट्ठिया. तेना बे नेद--१ जीवने रागद्वेष स्पर्शवाथी जे कर्म लागे ते जीवपुट्ठिया, २ अजीवने राग-द्वेषे स्पर्शवाथी जे कर्म लागे ते अजीवपुट्ठिया ॥ १३ ॥ बाह्य वस्तुनुं मातुं चिंतववाथी निपनी ते पामुच्चिया. तेना बे नेद--१ जीवने आश्रिने राग-द्वेषथी निपनी ते जीवपाडुच्चिया, २ अजीवने आश्रिने राग-द्वेषथी निपनी ते अजीवपामुच्चिया ॥ १४ ॥ सर्व प्रकार जनसमूहना मळवाथी निपनी ते सामंतोवणिवाइया. तेना बे नेद--१ जीव समुदाय मळवाथी लागती क्रिया ते जीवसामंतोवणिवाइया, २ अजीव समुदाय रथादि मेळववाथी हर्ष पामे ते अजीवसामंतोवणिवाइया ॥ १५ ॥ हाथे करी निपनी ते साहत्थिया. तेना बे नेद--१ पोताने हाथे जीवने पकमी हणे ते जीवसाहत्थिया, २ पोताने हाथे (अजीव) खमगादिक पकमी जीवने हणे ते अजीवसाहत्थिया ॥ १६ ॥

निसर्जन-फकवाथी निपनी ते नेसत्थिया. तेना बे भेद-१ पथ्थर आदि सजीव वस्तुनुं यंत्रादिवडे फेंकवुं ते जीवनेसत्थिया, २ बाणादिनुं धनुष्यादिवडे फेंकवुं ते अजीवनेसत्थिया ॥ १७ ॥ स्वामीना आदेशथी निपनी ते आणवणिया-आज्ञापनिका. तेना बे भेद-१ जीवने आणवानो आदेश करवाथी निपनी ते जीवआणवणिया, २ अजीवने आणवाना आदेश करवाथी निपनी ते अजीवआणवणिया ॥ १८ ॥ विदारवाथी निपनी ते विदारणिका. तेना बे भेद-१ जीवने विदारवाथी निपनी ते जीवविदारणिका, २ अजीव (स्तंभकाष्ठादि) ने विदारवाथी निपनी ते अजीवविदारणिका ॥ १९ ॥ अज्ञान निमित्तथी निपनी ते अणाभोगवत्तिया. तेना बे भेद-१ उपयोग विना वस्त्रादि लेवां ते अनायुक्तआदानता, २ उपयोग विना पात्रादिनुं प्रमार्जन करवुं ते अनायुक्तप्रमार्जनता ॥ २० ॥ स्वशरीरादिनी अपेक्षा न राखवाथी क्रिया लागे ते अणवकंखवत्तिया. तेना बे भेद--१ पोताना शरीरनी क्षति करवाथी लागे ते आत्मशरीरअणवकंखवत्तिया, २ परना शरीरनी क्षति करवाथी लागे ते परशरीरअणवकंखवत्तिया ॥ २१ ॥

प्रेम ( स्नेह ) ना निमित्तथी निपनी ते पेज्जवत्तिया-प्रेमवृत्तिका. तेना बे भेद-१ मायाना निमित्तथी निपनी ते मायावृत्तिका, २ लोभना निमित्तथी निपनी ते लोभवृत्तिका ॥ २२ ॥ द्वेष ( क्रोध मान ) ना निमित्तथी निपनी ते दोसवत्तिया-द्वेषवृत्तिका. तेना बे भेद-१ क्रोधना निमित्तथी निपनी ते क्रोधवृत्तिका, २ मानना निमित्तथी निपनी ते मानवृत्तिका ॥ २३ ॥ प्रयोगे करी निपनी ते प्रयोगक्रिया. तेना त्रण भेद-१ मनना प्रयोगे करी निपनी ते मनप्रयोगक्रिया, २ वचनना प्रयोगे करी निपनी ते वचनप्रयोगक्रिया, ३ कायाना प्रयोगे करी निपनी ते कायप्रयोगक्रिया ॥ २४ ॥ मन आदि प्रयोगे करी ग्रहण करेल कर्मवर्गणानुं सम्यक् प्रकारे प्रकृत्तिबंधादि भेदे करी अंगीकार करवुं ते समुदान क्रिया. तेना त्रण भेद-१ आंतरारहित ( प्रथम समयवर्त्तिनी) ते अनंतरसमुदान क्रिया-२ द्वितीयादि समयवर्त्तिनी ते परंपरसमुदान क्रिया, ३ प्रथम अप्रथम समयनी अपेक्षाए ते तदुभयसमुदान क्रिया ॥ २५ ॥ पंथे चालवाथी जे क्रिया लागे ते इर्यापथिका. तेना बे भेद-१ ११ मे तथा १२ मे गुणठाणे यथाख्यात चारित्रवाळाने लागे

ते छद्मस्थइरियावहिया क्रिया, २ केवलीने लागे ते केवलीइरियावहिया क्रिया ॥ एवं मूल क्रिया २५ अने उत्तर क्रिया ५२ थइ ॥

॥ इति पचीस क्रियाना बोल संपूर्ण ॥

## योनिना बोल ॥

गाथा ॥ जीव १ इंदिय २ गुणठाण ३, जोग ४ वेय ५ कसाय ६ लेस्सा ७ ॥
नाण ८ अन्नाण ९ दंसण १०, सण्णि ११ वेयणीय १२ पज्जति १३ ॥ १ ॥
पाण १४ झाण १५ उवओग १६, दिट्ठी १७ अप्पा १८ मरण १९ समुग्घाए २० ॥
सरीर २१ संठाण २२ संघयण २३, वणाइ २४ सण्णा २५ समोसरण चेव २६ ॥२॥
भाव २७ हेउ २८ कूल कोडी २९, पयवी ३० इमाइं तिसदाराइं ॥
चउरासी लख जीवाजोणी, उत्तारेयव्वं तस्सोवरी ॥३॥

पहेलुं जीवद्वार कहे छे—८४ लाख योनिमा ५६३ भेद लाभे. तेमां ५२ लाख योनिमां एकेन्द्रियना २२ भेद लाभे. ६ लाख योनिमां विगलेंद्रियना ६ भेद लाभे. २६ लाख योनिमां ५३५ भेद लाभे. ते १४ नारकीना, २० तिर्यंच पंचेन्द्रियना, ३०३ भेद मनुष्यना, १९८ भेद देवताना. सर्व मळी ५३५ भेद थाय ॥१॥ बीजुं इंद्रियद्वार—८४ लाख जीवा योनिमां इंद्रिय ५ लाभे. तेमां ५२ लाख योनिमां इंद्रिय १ लाभे. बे लाख बेइंद्रियनी योनिमां इंद्रिय २ लाभे. २ लाख तेइंद्रियनी योनिमां इंद्रिय ३ लाभे. २ लाख चउरिंद्रियनी योनिमां इंद्रिय ४ लाभे. २६ लाख पंचेन्द्रियनी योनिमां इंद्रिय ५ लाभे. ॥ २ ॥ त्रीजुं गुणठाणद्वार—समुच्चय योनिमां १४ गुणठाणा लाभे. तेमां ८४ लाख योनिमां प्रथम गुणठाणुं लाभे. ३२ लाख यानि ते एकेन्द्रियनी वर्जितमां बीजुं गुणठाणुं लाभे. २६ लाख योनि ते विगलेंद्रियनी ६ वर्जितमां त्रीजुं चोथुं बे गुणठाणां लाभे. १८ लाख योनि ते देवता नारकीनी ८ लाख वर्जितमां पाचमुं गुणठाणुं लाभे. १४ लाख योनि ते ४ लाख तिर्यंच पंचेंद्रियनी वर्जितमां ६ ठा गुणठाणाथी १४ मा गुणठाणा सुधी ९ गुणठाणां

लाभे ॥३॥ चोथुं जोगद्वार—तेमां प्रथम ३ मूल योग कहे छे. ५२ लाख योनिमां १ काय योग लाभे. ६ लाख योनिमां काया ने वचन ए बे योग लाभे. २६ लाख योनिमां २--३ योग लाभे. हवे १५ उत्तर योग कहे छे. ८४ लाख योनिमां समुच्चय १५ जोग लाभे. वाउकाय वर्जिने एकेन्द्रियनी ४५ लाख योनिमां ३ जोग लाभे. वाउकायनी ७ लाख योनिमां ५ जोग लाभे. विगलेंद्रियनी ६ लाख योनिमां ४ जोग लाभे. नारकी देवतानी ८ लाख योनिमां ११ जोग लाभे. ४ लाख तिर्यंच पंचेन्द्रियनी योनिमां १३ जोग लाभे. १४ लाख मनुष्यनी योनिमां १५ जोग लाभे ॥४॥ पांचमुं वेदद्वार कहे छे. ६२ लाख योनिमां नपुंसक वेद लाभे ते एकेंद्रिय विकलेंद्रिय अने नारकीमां लाभे. १८ लाख योनिमां १-२-३ वेद लाभे. ४ लाख योनिमां १-२ बे वेद लाभे ॥५॥ छट्ठुं कषायद्वार—८४ लाख योनिमां १६ कषाय लाभे. तेमां १८ लाख योनिमां १६ तथा ८ कषाय लाभे. १४ लाख योनिमां १६-१२-८-४-० कषाय लाभे. ॥६॥ सातमुं लेश्याद्वार—८४ लाख योनिमां ६ लेश्या लाभे. तेमां २४ लाख योनिमां ४ लेश्या लाभे. ३८ लाख योनिमां ३ लेश्या लाभे.

२२ लाख योनिमां ३-४-६ लेश्या लाभे ॥७॥ आठमुं ज्ञानद्वार–८४ लाख योनि तेमां ५२ लाख योनिमां ज्ञान लाभे नहि. ६ लाख विगलेन्द्रियनी योनिमां २ ज्ञान लाभे. ८ लाख नारकी देवनी योनिमां ३ ज्ञान लाभे. १८ लाख पंचेन्द्रियनी योनिमां २-३-४-५ ज्ञान लाभे ॥८॥ नवमुं अज्ञानद्वार–८४ लाख योनिमां अज्ञान ३ लाभे. तेमां ५८ लाख योनिमां अज्ञान २ लाभे. २६ लाख योनिमां २ तथा ३ अज्ञान लाभे ॥९॥ दसमुं दर्शनद्वार–५६ लाख योनिमां १ अचक्षुदर्शन लाभे. २ लाख चउरिन्द्रियमां बे दर्शन चक्षु, अचक्षु लाभे. ८ लाख देवनारकीनी योनिमां ३ दर्शन लाभे. १८ लाख पंचेन्द्रियनी योनिमां दर्शन २-३-४ लाभे ॥१०॥ अगीआरमुं संज्ञी असंज्ञीद्वार–५८ लाख योनिमां १ असंज्ञी लाभे. २६ लाख योनिमां संज्ञी असंज्ञी २ लाभे ॥११॥ बारमुं वेदना द्वार–८४ लाख योनिमां निश्चयनये २ वेदना लाभे प्रत्येक प्रत्येकमां. व्यवहारनये ४ लाख नारकीनी योनिमां १ अशाता वेदनीय लाभे. ४ लाख देवतानी योनिमां १ शाता वेदनीय लाभे. शेष ७६ लाख योनिमां २ वेदना लाभे ॥१२॥ तेरमुं पर्याप्तिद्वार–८४ लाख जीवा

योनिमां पर्याप्ति ६ लाभे. तेमां ५२ लाख एकेन्द्रियनी योनिमां पर्याप्ति ४ लाभे. ६ लाख विगलेन्द्रियनी योनिमां पर्याप्ति ५ लाभे. २६ लाख पंचेन्द्रियनी योनिमां पर्याप्ति ५-६ लाभे ॥१३॥ चौदमुं प्राणद्वार—८४ लाख योनिमां प्राण दस लाभे. तेमां ५२ लाख एकेन्द्रियनी योनिमां प्राण ४ लाभे. २ लाख बेइंद्रियनी योनिमां प्राण ६ लाभे. २ लाख तेइंद्रियनी योनिमां प्राण ७ लाभे. २ लाख चउरिंद्रियनी योनिमां प्राण ८ लाभे. २६ लाख पंचेन्द्रियनी योनिमां प्राण ९—१० लाभे ॥१४॥ पंदरमुं ध्यानद्वार--५८ लाख योनिमां २ ध्यान लाभे ते आर्त्तध्यान १, रौद्रध्यान २. १२ लाख योनिमां २ ३ ध्यान लाभे ते धर्मध्यान वध्युं. १४ लाख योनिमां २-३-४ ध्यान लाभे ॥१५॥ सोलमुं उपयोगद्वार—८४ लाख योनि तेमां ५२ लाख योनिमां ३ उपयोग, २ अज्ञान १ अचक्षु ए ३ लाभे. ४ लाख बेइंद्रिय तेइंद्रियनी योनिमां ५ उपयोग लाभे. २ लाख चउरिन्द्रियनो योनिमां ६ उपयोग लाभे, १२ लाख देव नारकी तिर्यंचनी योनिमां ९ उपयोग लाभे. १४ लाख मनुष्यनी योनिमां उपयोग ६ तथा १२ लाभे ॥१६॥ सत्तरमुं दृष्टिद्वार—५२ लाख

जीवायोनिमां दृष्टि १ लाभे. ६ लाख योनिमां २ दृष्टि लाभे. २६ लाख पंचेन्द्रियनी योनिमां १–२ तथा ३ दृष्टि लाभे ॥ १७ ॥ अढारमुं आत्माद्वार–५२ लाख एकेन्द्रियनी योनिमां ६ आत्मा लाभे ज्ञान चारित्र वर्जिने. १४ लाख योनिमां ७ आत्मा लाभे ते १ ज्ञान वर्ज्युं. १० लाख तिर्यंच मनुष्यनी योनिमां ८ आत्मा लाभे ते चारित्र वर्ज्युं. ॥१८॥ ओगणीसमुं मरणद्वार–८४ लाख जीवायोनिमां २ मरण समोहिया, १, असमोहिया २, प्रत्येक प्रत्येकमां लाभे ॥१९॥ वीसमुं समुद्घातद्वार–५१ लाख योनिमां ३ समुद्घात लाभे. ११ लाख योनिमां ४ समुद्घात लाभे, वैक्रेय वधी. ८ लाख योनिमां ५ समुद्घात लाभे. १४ लाख योनिमां ३-४-५-६-७ समुद्घात लाभे ॥२०॥ एकवीसमुं शरीरद्वार–८४ लाख जीवायोनि तेमां ५१ लाख योनिमां ३ शरीर–उदारीक, तेजस अने कार्मण ए त्रण लाभे. ११ लाख योनिमां ४ शरीर लाभे ते १ वैक्रेय वर्ज्युं. ८ लाख योनिमां ३ शरीर ते वैक्रेय, तेजस अने कार्मण ए ३ लाभे.१४ लाख योनिमां ३-४-५ शरीर लाभे ॥२१॥ बावीसमुं संठाणद्वार–८४ लाख योनिमां ६ संठाण लाभे. तेमां ८२ लाख योनिमां १ हुंड संठाण. ४ लाख

योनिमां समचउरंस संठाण. १० लाख योनिमां १ संठाण तथा ६ संठाण लाभे ॥ २२ ॥ तेवीसमुं संघयणद्वार-८४ लाख योनिमां ६ संघयण लाभे. तेमां ५८ लाख योनिमां १ छेवट्ठ संघयण. ८ लाख योनि असंघयणी. १८ लाख योनिमां १ संघयण तथा ६ संघयण लाभे ॥ २३ ॥ चोवीसमुं वर्णादिद्वार-८४ लाख जीवायोनिमां ५ वर्ण, २ गंध, ५ रस, ८ स्पर्श सर्व मळी २० लाभे. तेमां ४ लाख नारकीनी योनिमां अशुभ वर्ण, गंध, रस, स्पर्श लाभे ने ४ लाख देवनी योनिमां शुभ वर्ण, गंध, रस, स्पर्श लाभे. शेष ७६ लाख योनिमां शुभाशुभ वर्णादि २० बोल लाभे ए व्यवहारनयनी अपेक्षाये जाणवुं ॥ २४ ॥ पचीसमुं संज्ञाद्वार-८४ लाख योनिमां ४ संज्ञा लाभे प्रत्येक प्रत्येकमां ॥ २५ ॥ छवीसमुं समवसरणद्वार-८४ लाख जीवायोनिमां ४ समवसरण लाभे. तेमां ५२ लाख योनिमां २ समवसरण अक्रियावादी अज्ञान २ लाभे. ६ लाख विगलेन्द्रियनी योनिमां २ तथा ३ ते क्रियावादी वध्या. २६ लाख पंचेन्द्रियनी योनिमां २-३-४ सम० लाभे ॥ २६ ॥ सत्तावीसमुं भावद्वार-७० लाख योनिमां भाव ३

लाभे, उदय, क्षयोपशम, परिणामिक. १४ लाख योनिमां भाव ५ लाभे ते उपशम, क्षायक ए बे वध्या ॥ २७ ॥ अठ्ठावीसमुं हेतुद्वार–४५ लाख एकेन्द्रियमां ४१ हेतु लाभे. २५ कषाय, ३ जोग, १२ अव्रत, १ अनाभोगमिथ्यात्व एम ४१. वाउकायनी ७ लाख योनिमां २ वैक्रेयना वधतां ४३ हेतु लाभे. त्रण विगलेन्द्रियनी छ लाख योनिमां २५ कषाय, ४ जोग, १२ अव्रत, १ अनाभोगमिथ्यात्व एम ४२ हेतु लाभे. नारकीदेवनी ८ लाख योनिमां २५ कषाय, ११ जोग, १२ अव्रत, ५ मिथ्यात्व ए ५३ हेतु लाभे. तिर्यंचपंचेन्द्रियनी ४ लाख योनिमां ५५ हेतु लाभे, ते ५७मांथी आहारकना २ वर्ज्यां. १४ लाख मनुष्यनी योनिमां ५७ हेतु लाभे ॥ २८ ॥ ओगणत्रीसमुं कुलकोटिद्वार–५२ लाख एकेन्द्रियनी योनिमां ५७ लाख कुलकोटि. विगलेन्द्रियनी ६ लाख योनिमां २४ लाख कुलकोटि. देवनारकीनी ८ लाख योनिमां ५१ लाख कुलकोटि. तिर्यंच पंचेंद्रियनी ४ लाख योनिमां ५३ लाख कुलकोटी. १४ लाख मनुष्यनी योनिमां १२ लाख कुलकोटि. ए १९७५०००० लाख थाय. कुलकोटि कहेतां कूळना समुदाय जाणवा ॥ २९ ॥ त्रीसमुं पदवीद्वार–७ लाख पृथ्वीकायनी योनिमां

७ एकेन्द्रियनी पद्वी लाभे. शेष ४५ लाख एकेन्द्रियनी योनिमां पद्वी एके न लाभे. ६ लाख विगलेन्द्रियनी योनिमां पद्वी एक समकीतनी लाभे. ८ लाख नारकी तथा देवनी योनिमां १ समदृष्टिनी पद्वी लाभे. ४ लाख तिर्यंच पंचेन्द्रियनी योनिमां ४ पद्वी– अश्व ने गज तथा श्रावक ने समदृष्टिनी लाभे. मनुष्यनी १४ लाख योनिमां ५ पंचेन्द्रिय रत्ननी ने ए मोटी पद्वी एम १४ पद्वी लाभे ॥ ३० ॥

॥ इति योनिना बोल संपूर्णम् ॥

## गर्भावासना बोल ॥

अथ श्री तंदुलवेयालिया प्रकीरणकथी संक्षेपे गर्भावासना बोल लिख्यते ॥

स्त्रीनी नाभी नीचे बे नाडी छे, ते फुलनी नालीने आकारे छे. तेनी नीचे योनि छे. ते जीवने उपजवानुं ठेकाणुं छे. ते अधोमुख कमळने आकारे छे. त्यां आंबानी मंजरी

सरखुं मांस छे. ज्यारे स्त्रीने ऋतुकाळ आवे त्यारे मंजरी फरे. जेम रसजर्युं गुमडुं फरे तेम ते ऋतुनां बिंदु फरे. त्यां वीर्यनो संजोग मिश्र थाय त्यारे बार मुहूर्त्तमां जीव आवी उपजे, उत्कृष्टा नव लाख जीव उपजे. स्त्रीनी योनि पंचावन वर्ष उपरांत मळी जाय—अबीज थाय. पुरुष पंचोतेर वर्ष पछी अबीज थाय. ए नियम सो वर्षना आयुष्यना प्रमाणनो समजवो. उपरांत पूर्व क्रोड सुधी आयुष्य होय तो स्त्रीना अर्द्ध आयुष्य सुधी सबीज योनि होय. पुरुषना सर्व आयुष्यनो वीसमो भाग शेष रहे त्यारे अबीज होय. वळी एक पुत्रने नवसें पिता होय. नवसें पुरुषनो एक पुत्र. ते गर्भ उत्कृष्टो बार वर्ष सुधी माताना उदरमां ठोरूपणे रहे. पाछो एनो ए जीव पापना उदयथी फरी पाछा बीजा बार वर्ष रहे, एटले चोवीस वर्ष थाय, त्यांसुधी रहे. जमणे पासे पुत्र रहे. डावे पासे पुत्री रहे. वच्चे नपुंसक रहे. तिर्यंचणीने आठ वर्ष सुधी ठोर रहे. मातानुं रुधिर, पिताना शुक्रनो प्रथम आहार ले. सात दिवस सुधी चोखाना धोवण सरखो होय. बीजा साते पाणीना परपोटा सरखो थाय. त्रीजा साते नाकना श्लेषम सरखो थाय. चोथा साते

आंबानी गोटली सरखो थाय--अथवा खजुरनी पेशी सरखो थाय. ते जीव पहेले मासे अमतालीस मासाभार थाय. बीजे मासे पेशीथी कठण थाय. त्रीजे मासे माताने दोहद (इछा) थाय. सारी इछा पुण्यवंतनी माताने थाय अने खराब इछा पापी जीवनी माताने थाय. चोथे मासे मातानुं अंग पुष्ट करे. पांचमे मासे पेशी थकी पांच अंकुरा नीकळे, बे हाथ, बे पग, एक माथुं एम पांच. छट्टे मासे पीत्त अने लोही उपजे. सातमे मासे सातसो शीरा--नाडी उपजे. पांचसें पेसी ते मांसस्थानक विशेष, नव मोटी नाडी थाय, नवाणु लाख रोम गळा हेठे, बे क्रोड एकावन लाख रोम गळा उपर, सर्व मळी साडीत्रणक्रोड रोम थाय. आठमे मासे संपूर्ण अंगनी प्राप्ति होय. गर्भमांहि जीव उच्चार पासवण खेल संघाण पीत्त शुक्र शोणित एटलां वानां न करे. ते केम जे पुद्गल रसहरणी नाडीये आहारे, ते शरीरनां अंगोपांगपणे, पांच इंद्रियपणे, हाड, मींजा, वाळ, मुछ, दाढी, रोम, नखपणे परगमावे. मस्तक अवयवादि पण निपजावे. गर्भमांहि जीवने कवल आहार नहि. माता राजी तो गर्भ राजी. माता दुःखी तो गर्भ दुःखी. मातानी ने गर्भना

जीवनी नाल रसहरणीने वळगी रही छे. जे माता आहार करे ते सर्व गर्भने नालोनाल प्रगमे, फळना बींटनी परे. शरीरने विषे त्रण अंग मातानां छे. मांस १, लोही २, माथानुं भेजुं ३. त्रण अंग पितानां छे. हाड १, हाडनी मींजा २, दाढी, मूछ, रोम, नख, प्रमुख ३. गर्भमांथी जीव मरीने नरकमां जाय तेम देवतामां पण जाय. वळी गर्भमांहि माता सुवे तो गर्भ सुवे. माता जागे तो गर्भ जागे. गर्भावासमांहि अंधकार छे. महा अशूचि दुर्गंध छे. मल मूत्रनुं स्थानक छे. त्यां जीव दुःखी थतो रहे छे. एम दुःख भोगवतां सवा-नव मासे जन्मे. जीव अल्प लोही ने घणा शुक्रनो आहार करे तो पुत्र थाय १, अल्प शुक्र ने घणा लोहीनो आहार करे तो पुत्री थाय २, बे बरोबर आहार करे तो नपुंसक थाय ३. मस्तकेथी जन्म पामे तो सुखेथी जन्मे. कोइ पापी जीव आडो थइ आवे तो विनाश पण पामे. वळी आ शरीर केवुं छे तो के महा अशुचीनो भंडार छे. आ शरीरने विषे अढार पृष्ठ करंड सांधा छे. सोल पांसळी करंड छे. आठ एक पासे, आठ बीजे पासे. चार आंगळनुं गळुं छे. बे आंगळनी आंख छे. चार आंगळनो नीलाड छे. बत्रीस दांत

छे. बार आंगळनी जीभ छे. साडात्रण पलनुं हैयुं छे. पचीस पलनुं काळजुं छे. बे आंत (कोठा) नानी छे, बे आंत मोटी छे. मोटी आंतमां वडीनीत प्रणमे छे. नानी आंतमां लघुनीत प्रणमे छे. बे पासां छे. डाबुं ने जमणुं पासुं. डाबे पासे सुखनो परिणाम छे. जमणे पासे दुःखनो परिणाम छे. आ शरीरने विषे एकसो साठ सांधा छे. एकसो सीत्तेर मर्मनां स्थान छे. त्यां घा लागे तो तत्काळ मरण पामे. त्रणसो हाडनी मींजा छे. नवसो नारुणी छे. सातसो शीरा छे. पांचसो पेसी मांसस्थानक छे. नव नाडी मोटी छे. सातसो नाडीनुं विवरण--एकसो साठ नाडी नाभीथी निकली ते उंची चाली मस्तके पहोंची. ते रसहरणी नामथी ओळखाय छे. एनी निरुपघाते आंख, कान, नाक, जीभनुं बळ वधे. एनी उपघाते आंख, कान, नाक, जीभनुं बळ घटे. एकसो साठ नाडी नाभिथी उपनी अधोगामिनी पगतळे जइ पहोंची. तेनी निरुपघाते नेत्रनुं अने जंघानुं बळ वधे. तेनी उपघाते मस्तके वेदना, शूळादिक उपजे. आंखे आंधळो थाय, नेत्रनुं बळ ओछुं थाय. एकसो साठ नाडि नाभिथी उपनी त्रीछी जइ हाथे जइ पहोंची.

तेनी निरुपघाते बाहुनुं बळ वधे. तेनी उपघाते पखवाडे वेदना, पुंठवेदना, कुखवेदना, कुखे शूलादिक उपजे. एकसो साठ नाडि नाभिथी उपनी अधोगामिनी गुह्ये पहोंची. एनी निरुपघाते वडीनीत लघुनीत, कूर्मवायु आदि रौद्र दुःख उपजे. पचीस नाडि सलेखमनी धरणहारी छे. पचीस नाडि पित्तनी धरणहारी छे. दश नाडि शुक्रनी धरणहारी छे. एम पुरुषने सातसें नाडी शिराने नामे छे. एमां त्रसें सीत्तेर नाडि स्त्रीने छे. नपुंसकने छसें एंसी नाडी छे. मोटी नव नाडी तेनाथी जूदी जाणवी. पुरुषना शरीरमांहे पांच कोठा छे. स्त्रीने छ कोठा छे. गर्भ धरे ते कोठो अधिको छे. नव द्वार पुरुषने छे. बार द्वार स्त्रीने छे. पुरुषने पांचसें पेशी छे. स्त्रीने त्रीस ओछी छे. जेम सोनी जंतरडाथी तार खेंची बहार काढे तेम गर्भावासमांथी गर्भ खेंचाइ कोटी कष्टे बहार आवे. बाल्यावस्थामां मल मूत्र अशुचीमां रसबस रह्यो अनेक व्याधी भोगवी म्होटो थयो, वळी शरीर रस १, रुधिर २, मांस ३, मेद ४, हाड ५, मज्जा ६, शुक्र ७ ए सात धातुए करीने भर्यो छे. महा अशूची, मलमूत्रनो भंडार छे. ए द्वार तथा १२ द्वार हमेशां वहे छे. सडण पडण विध्वंसण स्वभाव छे. अनेक मल मूत्र श्लेष्मादिके सहित छे. ते शरीर स्नानादिके करी शुचि केम थाय? ए शरीरने

शूचीपणे करी माने छे, ते जीवनुं मूर्खपणुं छे. शुचि--पवित्रता तो ज्ञान १, दर्शन २, चारित्र ३, तप ४ ए चारथी थाय, अने तेणे करी मोक्ष पामीए, एवुं जाणी दुगंछा टाळवी. एक स्त्रीने एक भवमां नव लाख संतान उपजे नीपजे, ए भगवतीसूत्रमां छे. भोगे भोगे असंख्याता जीव समुर्छिम मरण पामे छे, ते केम तो के, वांसनी भूंगळीमांहे रु पींजीने भर्युं होय, ते भूंगळीमां लोढानो खीलो अग्निमां तपावी रातोचोळ करी ते वांसनी नळीमां दाबे ने जेम रु विध्वंस पामे--बळी जाय, तेम स्त्रीने संगे असंख्यात जीव समुर्छिम मरण पामे छे. आठ बोल उदारीक शरीरना कहे छे--त्रणसें साठ सांधा छे १, पांचसें पेशी छे २, सातसो शीरा छे ३, नवसो नाडी छ ४, बहोंतर कोठा छे. ५, एकसो आठ नानी नाडि छे ६, नव मोटी धमण नाडि छे ७ साडीत्रण क्रोड रोम छे ८, ए आठ बोल उदारीक शरीरना जाणवा. पीत्त टांक ६४ ॥ १ ॥ वीर्य टांक ३२ ॥ २ ॥ रुधिर शेर १० ॥३॥ मूत्र शेर १० ॥४॥ चरवी शेर ५ ॥ ६॥ विष्टा शेर ५ ॥ ६॥ ए मान निरोगी शरीरनुं जाणवुं.

॥ इति गर्भावासना बोल संपूर्ण ॥

# श्वासोश्वासना वोल ॥



## अथ श्री श्वासोश्वासना बोल लिख्यते ॥

सो वर्षनी युग वीस ॥१॥ सो वर्षना संवत्सर सो ॥२॥ सो वर्षनां अयन वसो ॥३॥ सो वर्षनी ऋतु ठसो ॥४॥ सो वर्षना मास बारसो ॥५॥ सो वर्षनां पखवाफियां चोवीस सो ॥६॥ सो वर्षनां अठवाफियां अफतालीस सो ॥७॥ सो वर्षना दिवस ठत्रीस हजार ॥८॥ सो वर्षना पहोर बे लाख ने अठ्ठाशी हजार ॥९॥ सो वर्षनां मुहूर्त्त दस लाख ने एंसी हजार ॥१०॥ सो वर्षनी घमी एकवीस लाख ने साठ हजार ॥११॥ सो वर्षनां श्वास उश्वास चारसो सात क्रोम अफतालीस लाख ने चालीस हजार. ते संख्याना अंक दस थाय. ४०७,४८,४०,००० ॥१२॥ एक घमीना श्वास उश्वास अढारसो ने सामी ठयाशी ॥१३॥ एक मुहूर्त्तना श्वास उश्वास साफत्रीस सो ने तोंतेर ॥१४॥ एक पहोरना

श्वास उश्वास चौद हजार एकसो ने पोणी ओगणपचास ॥१५॥ एक अहोरात्रिना श्वास उश्वास एक लाख तेर हजार एकसो ने नेवुं॥१६॥ पंदर दिवसना श्वासोश्वास सोल लाख सत्ताणुं हजार आठसो ने पचास ॥ १७॥ एक मासना श्वासोश्वास तेत्रीस लाख पंचाणु हजार सातसो ॥१८॥ सवानव मासना श्वासोश्वास त्रण क्रोड चउद लाख दस हजार बसो ने पचीस ॥१९॥ एक वर्षना श्वासोश्वास चार क्रोड सात लाख अडतालीस हजार ने चारसो ॥२०॥ ब्रह्मदत्त नामे बारमो चक्री मरीने सातमी नरके उपन्यो. त्यां तेत्रीस सागरनुं आयुष्य छे. ते इहां मनुष्यपणे एकेक श्वासोश्वासने सुखे त्यां नरकमां केटलो काल दुःख भोगवशे ते कहे छे. अग्यार लाख पल्योपम छप्पन हजार पल्योपम नवसो ने पचीस पल्योपम ने एक पल्योपमनो त्रीजो भाग झाझेरुं दुःख भोगवशे ॥१॥ काकंदी नगरीना धन्ना अणगारे नव मासनुं चारित्र पाळ्युं,ते नव मासना श्वासोश्वास त्रण क्रोड पांच लाख एकसठ हजार ने त्रणसो. ते धन्नो अणगार चवी सर्वार्थसिद्ध विमाने उपन्या. त्यां ३३ सागरनुं आयुष्य छे. तेणे इहां मनुष्यपणामां नव मासनुं चारित्र पाळ्युं, कष्ट वेठ्युं, ते

श्वासो-श्वासना ॥१३॥

एकेक श्वास उश्वासने कष्टे देवतानी गतिमां एकसो सात क्रोड सत्ताणुं लाख छन्नु हजार नवसो अठ्ठाणुं पल्योपम ने एक पल्योपमनो छठ्ठो भाग माठेरुं एटलुं देवतानुं सुख भोगवशे. हवे संवर तथा तपना फळनुं प्रमाण कहे छे. सम्यक्दृष्टि जीव रागद्वेषरहित, क्षमा दयासहित, पौषध पडिवजें ते सत्यावीससो ने सीत्तोतेर क्रोड सीत्तोतेर लाख सीत्तोतेर हजार सातसो ने सीत्तोतेर पल्य ने एक पल्यना नव भाग करीए ते मांहिला आठ भाग झाझेरुं देवतानुं आयुष्य बांधे ॥ १ ॥ एक पहोरवेळा सुधी संवर आदरे ते त्रणसो बेंतालीस क्रोड बावीस लाख बावीस हजार बसो बावीस पल्य ने एक पल्यना आठ भाग करीए ते मांहिला सात भाग झाझेरुं देवतानुं आयुष्य बांधे ॥ २ ॥ एक मुहूर्त्त सुधीनो संवर आदरे ते बाणुं क्रोड ओगणसाठ लाख पचीसहजार नवसो ने पचासपल्य ने एक पल्यना सात भाग करीए तेवा छ भाग झाझेरुं देवतानुं आयुष्य बांधे.॥ ३ ॥ एक घडीनो संवर आदरे ते छेंतालीस क्रोड, ओगणत्रीस लाख बासठ हजार नवसो ने सडसठ पल्य ने एक पल्यना छ भाग करीए ते मांहिला चार भाग झाझेरानुं देवतानुं आयुष्य बांधे ॥४॥

बोल ॥१३॥

एक श्वासोश्वास सुधीनो संवर आदरे ते बे लाख चोपन हजार चारसो आठ पल्य ने एक पल्यनो चोथो नाग देवतानुं आयुष्य बांधे ॥५॥ एक नमोक्कारसी तप करे ते ओगणीस लाख त्रेसठ हजार बसो सत्तसठ पल्य ने एक पल्यना चोथा नागनुं देवतानुं आयुष्य बांधे ॥ ६ ॥ एक अनुपूर्वि गणे तेनां जघन्य छासठ सागरनां नारकीनां पाप नाश पामे, उत्कृष्ट पांचसो सागरनां नारकीनां पाप नाश पामे ॥ ७ ॥ एक उणोदरी तप करे ते, सो वर्षे नारकी कर्म खपावे, तेथी अधिक खपावे ॥ ८ ॥ एक उपवास करे ते एक हजार वर्षे नारकी कर्म खपावे तेथी अधिक खपावे ॥९॥ एक छठ्ठ तप करे ते एक लाख वर्षे नारकी कर्म खपावे तेथी अधिक खपावे ॥ १० ॥ एक अठ्ठम तप करे ते क्रोड वर्षे नारकी कर्म खपावे तेथी अधिक खपावे ॥ ११ ॥ चार उपवास करे ते एक क्रोडाक्रोडी वर्षे नारकी कर्म खपावे तेथी अधिक खपावे ॥ १४ ॥

॥ इति श्वासोश्वासना बोल संपूर्ण ॥

# जीवना चौद भेद ॥

## अथ जीवना चौद भेदनी चर्चा लिख्यते ॥

जीवना १४ भेद—तेमां सूक्ष्म केटला ? ने बादर केटला ? उत्तर—असंज्ञीना बार पहेला. संज्ञी बे ते तेरमो ने चौदमो ए बे ॥ १ ॥ जीवना १४ भेद तेमां त्रस केटला ? ने स्थावर केटला ? उत्तर—स्थावर चार पहेला, अने त्रसना उपला दस ॥ २ ॥ जीवना १४ भेद तेमां पर्याप्ता केटला ? अने अपर्याप्ता केटला ? उत्तर—सात अपर्याप्ता ते १-३-५-७-९-११-१३, अने सात पर्याप्ता ते २-४-६-८-१०-१२-१४ ॥ ३ ॥ जीवना १४ भेद तेमां नजरे केटला आवे ? अने नजरे केटला न आवे ? उत्तर—सात अपर्याप्ता अने एक सूक्ष्म पर्याप्तानो ए आठ नजर न आवे, अने बाकी ६ भेद नजरे आवे ॥ ४ ॥ जीवना १४ भेद तेमां त्रस नामीमां केटला ? अने स्थावर नामीमां केटला ? उत्तर—त्रस नामीमां १४ भेद लाभे, अने

स्थावर नामीमां चार स्थावरना नेदनी नियमा. पांच अपर्याप्ता अने संज्ञीनो पर्याप्तो एम ६ नेदनी नजना वखते होय अने वखते न पण होय ॥ ५ ॥ जीवना १४ नेद तेमां आहारक केटला ? अने अणाहारक केटला ? उत्तर–सात अपर्याप्ता ने एक संज्ञीनो पर्याप्तो एम ७ अणाहारकमां लाने, अने आहारकमां १४ नेद लाने ॥ ६ ॥ जीवना १४ नेद तेमां मनसहित केटला? अने मनरहित केटला? उत्तर–मन सहित तो एक १४ मो अने मनरहित मांहे १४ नेद लाने ॥७॥ जीवना १४ नेद तेमां गर्नज केटला ? अने अणगर्नज केटला ? उत्तर–गर्नज बे तेरमो ने चौदमो, अने अणगर्नजमां तो चौद लाने॥७॥जीवना १४ नेद तेमां साश्वता केटला ? अने असाश्वता केटला ? उत्तर–साश्वता तेर नेद लाने, ते एक १३ मो नेद वर्जिने, अने असाश्वतो एक १३ मो ज नेद लाने ॥ ए ॥ जीवना १४ नेद तेमां प्रत्येक केटला ? ने साधारण केटला ? उत्तर–साधारणमां चार नेद पहेला लाने, अने प्रत्येकमां १४ नेद लाने. ॥ १० ॥ ए दस प्रश्न ॥ वाटे वेहेता जीवने शरीर केटलां लाने ? उत्तर–तेजस १, कामण २, ए बे शरीर लाने ॥ १ ॥ वाटे वेहेता जीवने जोग केटला लाने ? उत्तर–एक कार्मण काय-

जोग. ॥ २ ॥ वाटे वहेता जीवने उपयोग केटला लाभे ? उत्तर—मनः पर्यवज्ञान १, चक्षुदर्शन २, ए वे वर्जिने वाकी १० उपयोग लाभे ॥ ३ ॥ वाटे वहेता जीवने गुणठाणां केटलां लाभे ? उत्तर—पहेलुं, वीजुं अने चोथुं ए त्रण लाभे ॥४॥ वाटे वहेता जीवने प्राण केटला ? उत्तर—एक आयुष्यप्राण ॥ ५ ॥ एक आंगळीना टेरवामां जीवना भेद केटला? उत्तर—त्रण. सूक्ष्म एकेन्द्रियना वे भेद, एक संज्ञीनो पर्याप्तो एम ३ नी नियमा. वीजा अपर्याप्तानी भजना जाणवी ॥ ६ ॥ हाथनी मुठ्ठीमां जीवना भेद केटला? उत्तर—पांच भेद. चार स्थावरना भेद, एक संज्ञीनो पर्याप्तो एम ५ भेद लाभे. ए ५ नी नियमा अने शेष अपर्याप्तानी भजना ॥ ७ ॥ चार भाषामां सत्य १, असत्य २, ए वे पर्याप्ति. ( पूरी भाषा ). मिश्र १, व्यवहार २, ए वे अपर्याप्ति (अधूरी भाषा) ॥ ८ ॥ सौधर्म देवलोके जीवना १४ भेद तेमां केटला भेद लाभे? उत्तर—ठ भेद. चार पहेला अने संज्ञीनां २, ए ठ लाभे. ॥ ए ॥ एमज रयणप्रभामां ठ भेद लाभे ॥ १० ॥ ए प्रश्न १०॥ एक आंगळीनां टेरवामा प्रदेश केटला लाभे? उत्तर—एक पोताना जीवना असंख्याता प्रदेश लाभे. एम अनंता जीवना प्रदेश लाभे ते

जीवथी प्रदेश असंख्यातगुणा अधिक लाभे ॥ १ ॥ एक आकाशप्रदेश उपर अजीवना केटला भेद लाभे? उत्तर–नव भेद. धर्मास्तिकायनो देश १, प्रदेश २; अधर्मास्तिकायना २; पुद्गलना ४ अने एक अधासमयनो एम ए भेद लाभे ॥ २ ॥ अलोकमां अजीवना भेद केटला लाभे? उत्तर–आकाशास्तिकायनो देश १, प्रदेश २; ए बे लाभे.॥३॥एक जीवने माता केटली? अने पिता केटला? उत्तर–माता एक अने पिता घणा॥ ४ ॥ पांचमे आरे छ नियंठामांहिथी केटला लाभे? उत्तर–बीजो, त्रीजो अने चोथो ए त्रण लाभे ॥५॥ छ नियंठामांहिथी एक पुलाकनुं साहरण न थाय,बाकी पांचनुं साहरण थाय ॥६॥ छेवटु संघयणनो धणी मरीने देवतामां जाय तो पहेला चार देवलोक सुधी जाय. पांचमे, छट्टे पहेला ५ संघयणनो धणी जाय. सातमे आठमे पहेला ४ संघयणनो धणी जाय. नवमे, दसमे, अग्यारमे अने बारमे देवलोके पहेला ३ संघयणनो धणी जाय. नव ग्रैवेयके पहेला बे संघयणनो धणी जाय. पांच अनुत्तर विमाने तथा मोक्षमां एक पहेला संघयणनो धणी जाय ॥ ७ ॥ वधे वधे ते शुं? तृष्णा ॥ १ ॥ घटे पण वधे नहि ते शुं? आयुष्य ॥२॥ घटे पण खरुं ने वधे

पण खरुं ते शुं? मनना परिणाम ॥३॥ न वधे न घटे ते शुं? तीर्थंकरे भाव दीठा ते ॥४॥ वळी बीजा चार भांगा–वधे पण घटे नहि ते शुं? सिद्ध भगवंत ॥१॥ घटे पण वधे नहि ते शुं? भव्यजीव ॥ २ ॥ घटे ने वधे ते शुं? पडिवाइ समदृष्टि ॥ ३ ॥ न वधे न घटे ते शुं? अभव्य जीव ॥ ४ ॥ पांच इंद्रियनां संठाण ॥ श्रोत्रेंद्रियनुं संठाण कलंबु फुलनुं ॥ १ ॥ चक्षु इंद्रियनुं संठाण मसुरनी दाळनु ॥ २ ॥ रसेंद्रियनुं संठाण छरपलानुं ॥ ३ ॥ घ्राणेंद्रियनुं संठाण भात्रिनी कोथळीनुं ॥ ४ ॥ स्पर्शेंद्रियनुं संठाण नाना प्रकारनुं ॥ ५ ॥ पांच इंद्रियना विषय कहे छे ॥ श्रोत्रेंद्रियनो विषय १२ जोजननो ॥ १ ॥ चक्षुइंद्रियनो विषय लाख जोजननो ॥ २ ॥ नासिका ॥ ३ ॥ जीभ ॥ ४ ॥ स्पर्शेंद्रिय ए त्रणेनो विषय नव जोजननो ॥ ५ ॥ जीवतत्त्व चौद राजलोकमांहे लाभे ॥ १ ॥ अजीवतत्त्व लोक अलोक मांहि लाभे ॥ २ ॥ पाप १, आश्रव २, बंध ३, ए लोक आखामांहि लाभे ॥ ५ ॥ पुण्यतत्त्व देशे उणा चौद राजलोकमांहि लाभे, 'लोगदेसेय बायरा' इति वचनात् ॥ ६ ॥ संवर ७, नीर्जरा ८, ए बे त्रिठा लोकमां लाभे ॥ ८ ॥ मोक्षतत्त्व अढी द्वीपमांहि लाभे

॥ ए ॥ समकितनुं नाजन जीव ॥ १ ॥ जीवनुं नाजन अजीव ॥ २ ॥ अजीवनुं नाजन लोक ॥ ३ ॥ लोकनुं नाजन अलोक ॥ ४ ॥ अलोकनुं नाजन केवलज्ञान, केवलदर्शन ॥५॥ जगी जगीने जग्या ते नरत महाराजा ॥ १ ॥ जगीने आथम्या ते ब्रह्मदत्त चक्रवर्ति ॥२॥ आथमीने जग्या ते हरकेशी अणगार ॥ ३ ॥ आथमीने आथम्या ते कालसूरीयो कसाइ ॥ ४ ॥ ए चोनंगी ठाणांगे ठे ॥ पापनुं कुटुंब कहे ठे ॥ पापनी माता हिंसा ॥ १ ॥ पापनो बाप लोन ॥ २ ॥ पापनो नाइ जूठो ॥ ३ ॥ पापनी बेन तृष्णा ॥ ४ ॥ पापनी स्त्री माया ॥ ५ ॥ पापनो दीकरो लालच ॥ ६ ॥ पापनी दीकरी कुबुद्धि ॥ ७ ॥ पापनु मूळ क्रोध ॥८॥ हवे जुदां जुदां द्रव्योनां संठाण कहे ठे. तरूकानुं संठाण गामानी जधनुं ॥ १ ॥ ठायानुं संठाण पेटीनुं ॥२॥ अलोकनुं संठाण पोला गोळानुं ॥ ३ ॥ अधोलोकनुं संठाण त्रापानुं ॥ ४ ॥ त्रिठा लोकनुं संठाण झालरनुं ॥ ५ ॥ उर्ध्वलोकनुं संठाण मृदंगनुं ॥ ६ ॥ दिवसनुं संठाण मोतीनी लटनुं ॥ ७ ॥ दिशानुं संठाण गामानी जधनुं ॥ ८ ॥ पृथ्वीनुं संठाण मसुरनी दाळनुं ॥ ए ॥ पाणीनुं संठाण पाणीना बिंदुनुं ॥ १० ॥ अग्निनुं संठाण सुइना

भारानुं ॥ ११ ॥ वायुनुं संठाण ध्वजापताकानुं ॥ १२ ॥ वनस्पतिनुं संठाण नाना प्रकारनुं ॥ १३ ॥ त्रसकायनुं संठाण नाना प्रकारनुं ॥ १४ ॥ अढिद्वीप माहिला चंद्रमा, सूर्यनुं संठाण अर्द्ध लाकवानुं ॥ १५ ॥ अढि द्वीप बाहिरला चंद्रमा सूर्यनुं संठाण पाकी इंटनुं ॥ १६ ॥ आठ फरस काया उपर कहे छे ॥ खरखरो फरस ते पगनां तळा ॥ १ ॥ सुंहालुं ते ताळवुं ॥ २ ॥ भारे ते हाडकां ॥ ३ ॥ हळवो ते केश ॥ ४ ॥ टाढी ते काननी बुंट ॥ ५ ॥ उनी ते छाती ॥ ६ ॥ चीगटी ते नाकनी कांकी ॥ ७ ॥ लूखो ते जीभनो फरस ॥ ८ ॥ नारकीनो जीव काळ करीने जघन्य उत्कृष्टो केटले आंतरे जइ उपजे ? उत्तर–जघन्य हजार जोजन झाझेराने आंतरे उपजे. ते केम ? पहेली नरकनो जीव काल करीने–महापाताल कलशा लाख जोजनना लांबा पहोळा छे, ने हजार जोजननी ठींकरी जाकी छे तेने भेदीने पाताल कलशामां जळचरपणे उपजे, उत्कृष्टो त्रिछो स्वयंभूरमणसमुद्रमां अने उंचो मेरुनी वावकीमां उपजे ॥ ७ ॥ भवनपतिथी बीजा देवलोकना देवता काल करीने जघन्य उत्कृष्ट केटले आंतरे उपजे ? उत्तर–जघन्य तो आंगुलना असंख्यातमा भागे पोतानी

शय्याना आभूषणमांहि पृथ्वीकायपणे उपजे, उत्कृष्टो नीचो सातमी नरकना हेठला चरिम प्रदेशमां त्रिछो स्वयंभूरमणसमुद्रनी वेदीकामां अने उंचो इसीपब्भारामां उपजे॥२॥ त्रीजा देवलोकथी आठमा देवलोकनां देवता काल करीने जघन्य उत्कृष्टा केटले आंतरे उपजे ? उत्तर, जघन्य आंगुलना असंख्यातमे भागे उपजे. ज्यारे पंडगवनमी वावडीमां आठमा देवलोक सुधीनां देवता जल अवगाहीने क्रीडा करतां आउखुं त्रुटे तेवारे समय पुरो थये माछलीना गर्भपणे उपजे, अथवा पूर्वभवनी मनुष्यपणानी स्त्रीथी घणो स्नेह करी, अतिरागे करीने ते स्त्रीनो स्पर्श करे, त्यारे प्रदेश प्रवेशतो काल करे ते गर्भमांहि पुरुषनुं वीर्य हतुं ते त्यां उपजे. नीचो तो महापाताल कलशा लाख जोजननां छे, तेना त्रण भाग करीए तेना सहुथी नीचेना भागमां मच्छपणे उपजे त्रिछो स्वयंभूरमण समुद्रमां उपजे ॥ ३ ॥ नवमा देवलोकथी सर्वार्थसिद्धना देवता कळ करीने जघन्य उत्कृष्टा केटले आंतरे उपजे ? उत्तर–जघन्य तो विद्याधरनी श्रेणीमां. नीचो हजार जोजननी विजय उंडी छे तेमां अने त्रीछो मनुष्यक्षेत्रने अंते उपजे ॥ ४ ॥ श्री

साधुजीनी अवगाहना उत्कृष्टी ५०० धनुष्यनी, आयुष्य देशे उणुं पूर्व क्रोडनुं. देशव्रती श्रावकनी अवगाहना १००० जोजननी माछलानी अपेक्षाए, आयुष्य देशे उणुं पूर्व क्रोडनुं मरुदेवा मातानी अपेक्षाए ॥ ५ ॥ केवलीनी अवगाहना त्रण लोक प्रमाणे केवल समुद्घातनी अपेक्षाए. आयुष्य देशे उणुं पूर्व क्रोडनुं ॥ ६ ॥ आखा लोकमांहि अजीवना जेद केटला? उत्तर—अग्यार जेद लाजे. धर्मास्तिकायनो देश १, प्रदेश २, अधर्मास्तिकायनो देश १, प्रदेश २, आकाशास्तिकायनो देश १, प्रदेश २. कालनो १, पुद्गलना ४, एम ११ जेद लाजे ॥ ७ ॥ अलोकमां अजीवना बे जेद लाजे. देश १ प्रदेश २, ए बे लाजे ॥ ८ ॥ अढिद्वीप बाहिर काल वर्जिने अजीवना १० जेद लाजे ॥ ९ ॥ द्रव्य १, क्षेत्र २, काल ३, जाव ४. ए चारमां सूक्ष्म घणो कोण ? ने थोडो कोण ? उत्तर—सर्वथी थोडो सूक्ष्म काल १, तेथी क्षेत्र सूक्ष्म २, तेथी द्रव्य सूक्ष्म ३, तेथी जाव सूक्ष्म छे ॥ १० ॥ परमाणुनुं परमाणुपणे जो पुद्गल रहे तो केटलो काळ रहे? उत्तर—असंख्यातो काळ रहे ॥ ११ ॥ जे आकाश प्रदेशे परमाणुओ हता ते फरीने तेज आकाश प्रदेशे पाछा

आवे तो केटले काळे आवे? उत्तर–असंख्याते काले ॥ १२ ॥ अजोगी घणा ? के अणाहारक घणा? उत्तर–अणाहारक घणा ते वाटे वेहेता अणाहारक छे माटे ॥ १३ ॥ वाटे वेहेता जीव घणा ? के सिद्ध घणा ? उत्तर–वाटे वेहेता जीव घणा निगोद छे माटे ॥१४॥

॥ इति जीवना चौद भेदनी चर्चा संपूर्ण ॥

---

## जीवना ५६३ भेद ॥

---

॥ अथ श्री ५६३ भेद जीवना छे तेनी चर्चा ॥

---

गाथा–वेय १ दिठिय २ पज्जत्ते ३, सासए ४ सन्नि ५ चवणे ६ लेस्सा ७ ॥
जोगे ८ सरीरे ९ मणसहीए १०, दिठिगोयरे ११ गब्भज्ज १२ नालिए चेव १३ ॥ १ ॥
आया १४ मरणे १५ समुग्घाए १६, पज्जा १७ विभंग अणाणे १८ ओहिनाणेय १९॥

उहिदंसण २० परित्त २१ सावग २२, गुणठाणे २३ लोया २४ ऽलोए २५ चेव ॥ २ ॥

जीवना ५६३ भेद मांहि १४ भेद नारकीना, ४८ भेद तिर्यंचना, ३०३ भेद मनुष्यना, १९८ भेद देवताना ए सर्व मळी ५६३ भेद थाय. स्त्रीवेदमां ३४० भेद लाभे, ते ५ संज्ञी तिर्यंचना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए १०, तथा मनुष्यना १०१ गर्भज मनुष्यना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए २०२ मनुष्यना अने देवताना ६४ भेद प्रथम जातिना बीजा देवलोक सुधीना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए १२८ देवताना. सर्व मळी ३४० भेद लाभे ॥ १ ॥ पुरुष वेदमां ४१० भेद लाभे, ते संज्ञी तिर्यंचनां १० भेद, गर्भज मनुष्यना २०२ भेद, देवताना १९८ भेद. सर्व मळी ४१० भेद लाभे ॥ २ ॥ नपुंसक वेदमां १९३ भेद लाभे. ते १४ भेद नारकीना, ४८ भेद तिर्यंचना, मनुष्यना जुगलीया वर्जिने १३१ भेद, सर्व मळी १९३ भेद लाभे ॥ ३ ॥ त्रणे वेदमां ४० भेद लाभे. ते संज्ञी तिर्यंचना १० भेद, १५ कर्मभूमि मनुष्यना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ३०, सर्व मळी ४० भेद लाभे ॥ ४ ॥ समकित एकलामां पांच अनुत्तर विमानना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए १० भेद लाभे ॥ ५ ॥ समुच्चय समकितीमां तो २८३ भेद लाभे

ते १४ नेद नारकीनामांथी सातमी नरकनो अप्रजाप्तो वर्ज्यो, शेष १३ नेद नारकीना, ५ संज्ञी तिर्यंच पंचेंद्रियना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए १० नेद, ५ असंज्ञी तिर्यचना अप्रजाप्ता, ३ विगलेन्द्रियना अप्रजाप्ता ए १८ नेद तिर्यचना, १५ कर्मनूमिना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ३० ने त्रीस अकर्मनूमिना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए ९० मनुष्यना ने देवतामांहि १५ परमाधामी ने त्रण किलविषी ए १८ वर्जिने शेष ८१ जाति देवताना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए १६२ नेद देवताना. सर्व मळी ३०३ नेद लाने ॥ ६ ॥ मिथ्यादृष्टिमां ३०० नेद लाने ते ७ मी नरकनो अप्रजाप्तो ने तिर्यचना ३० नेद ते २२ एकेन्द्रियना अने ५ असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रियना, ३ विगलेन्द्रियना ए ८ ना प्रजाप्ता ने मनुष्यना २१३ नेद ते १०१ समुर्छिम मनुष्यना अप्रजाप्ता ने ५६ अंतरद्वीपाना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ११२, ए सर्व मळी २१३ नेद मनुष्यना; ने देवताना ३६ नेद ते १५ परमाधामी, ३ किलविषी ए १८ ना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए ३६. एम सर्व मळी ३०० नेद लाने ॥ ७ ॥ समामिथ्यात्वदृष्टिमां ९४ नेद ते ७ नरकना प्रजाप्ता, ५ संज्ञी तिर्यंच, १५ कर्मनूमिना मनुष्य, देवतामांहि

१५ परमाधामी, ३ किलविषी, ए ग्रैवेयक, ५ अनुत्तरविमानना ए ३२ वर्जिने शेष ६७ जातिना देवता ए सर्व मळी ए४ नेद् प्रजाप्ताना लाने ॥ ७ ॥ बे दृष्टि ते समकित दृष्टि ने मिथ्यात्वदृष्टि, ए २ दृष्टिमां १७ए नेद लाने. ते पहेली ६ नरकना अप्रजाप्ता ने ५ संज्ञी तिर्यंच, ५ असज्ञी तिर्यंच, ३ विगलेन्द्रिय ए १३ ना अप्रजाप्ता, १५ कर्मभूमि मनुष्यना अप्रजाप्ता ३० अकर्मनूमिना प्रजाप्ता अप्रजाप्ता मळी ६० अकर्मनूमि ए ७५ नेद मनुष्यना, देवतामां १० नवनपति, १६ वाणव्यंतर, १० जंनका, १० ज्योतिषि, १२ देवलोक, ए लोकांतिक ए ६७ नेदना अप्रजाप्ता ने ए ग्रैवेयकना प्रजाप्ता अप्रजाप्ता ए ७५ नेद देवताना. सर्व मळी १७ए नेद लाने ॥ ए ॥ त्रणे दृष्टिमां ए४ नेद लाने. ते समामिथ्यात्वीनी माफक जाणवुं ॥ १० ॥ प्रजाप्तामां २३१ नेद लाने ते ७ नरकना, २४ तिर्यंचना, १०१ संज्ञी मनुष्यना ए एए नेद देवताना. सर्व मळी २३१ भेद प्रजाप्ताना लाने ॥ ११ ॥ अप्रजाप्तामां ३३२ नेद लाने ते २३१ तो एना अप्रजाप्ता ने १०१ समुर्छिम मनुष्यना अप्रजाप्ता ए ३३२ लाने ॥ १२ ॥ साश्वतामां २५० नेद लाने ते ७ नारकीना प्रजाप्ता, तिर्य-

चना ४७ ऩेदमांथी ५ संज्ञी तिर्यंचना अप्रजाप्ता वर्जिने शेष ४३ ऩेद तिर्यंचना ने मनुष्य संज्ञी तेना १०१ ऩेदना प्रजाप्ता, एए जातिना देवताना प्रजाप्ता ए सर्व मळी २५० ऩेद लाऩे ॥ १३ ॥ अशाश्वतामांहि ३१३ ऩेद लाऩे. ते ७ नरकना अप्रजाप्ता, ५ संज्ञी तिर्यंचना अप्रजाप्ता, १०१ समुर्छिम मनुष्यना अप्रजाप्ता, १०१ संज्ञी मनुष्यना अप्रजाप्ता ए २०२ मनुष्यना, एए जातिना देवताना अप्रजाप्ता, सर्व मळी ३१३ ऩेद लाऩे ॥ १४ ॥ संज्ञीमां ४२४ ऩेद लाऩे ते १४ ऩेद नारकीना, ५ संज्ञी तिर्यंचना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए १० तिर्यंचना. संज्ञी मनुष्य १०१ ना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए २०२ मनुष्यना ने १एए ऩेद देवताना सर्व मळी ४२४ ऩेद लाऩे ॥ १५ ॥ असंज्ञीमांहि १३ए ऩेद लाऩे. ते १०१ समुर्छिम मनुष्यना अप्रजाप्ता, ३७ ऩेद तिर्यंचना, ते ४७ मांथी १० ऩेद संज्ञीना वर्ज्या, शेष ३७ ऩेद तिर्यंचना, सर्व मळी १३ए ऩेद लाऩे॥ १६॥ पांचसे त्रेसठमांहि चवे तो ३७१ ऩेद चवे. ७ नरकना प्रजाप्ता, एए देवताना प्रजाप्ता, ४७ ऩेद तिर्यंचना, ७६ जातिना जुगलियाना अप्रजाप्ता वर्जिने शेष २१७ ऩेद मनुष्यना, सर्व मळी ३७१ ऩेद लाऩे ॥१७॥

न चवे तेमां १०२ नेद लाने. ते ७ नरकना अप्रजाप्ता, ए‍ए देवताना अप्रजाप्ता, ७६ जुगलियाना अप्रजाप्ता, सर्व १०२ नेद न चवे तेमां लाने ॥ १७ ॥ आगली ३ लेश्या तेमां प्रत्येक ३ मां ४५ए नेद लाने. ते नारकीना ६ नेद, ते एकेकी लेश्या त्रण त्रण नरके लाने तेथी, ४७ नेद तिर्यंचना, ३०३ नेद मनुष्यना, ५१ जाति देवताना अप्रजाप्ता प्रजाप्ता १०२, सर्व मळी ४५ए नेद लाने ॥ १ए ॥ तेजुलेश्यामां ३४३ नेद लाने. ते बादर, पृथ्वी, पाणी, वनस्पति ए ३ ना अप्रजाप्ता, संज्ञी तिर्यंचना १० नेद, संज्ञी मनुष्यना २०२ नेद, ६४ जातिना देवताना अप्रजाप्ता प्रजाप्ता १२७, सर्व मळी ३४३ नेद लाने ॥२०॥ पद्मलेश्यामां हि ६६ नेद लाने. ते संज्ञी तिर्यंचना १० नेद, १५ कर्मभूमिना अप्रजाप्ता प्रजाप्ता ३०, देवतामां बीजो किलविषी, त्रीजो, चोथो, पांचमो देवलोक ने ए लोकांतिक ए १३ ना अप्रजाप्ता प्रजाप्ता २६. सर्व मळी ६६ नेद लाने ॥ २१ ॥ शुकल लेश्यामां ७४ नेद लाने. ते संज्ञी तिर्यंचना १० नेद, १५ कर्मनूमिना अप्रजाप्ता प्रजाप्ता ३०, ने देवतामांहि त्रीजो किलविषी १, छट्ठेथी ते बारमा देवलोक सुधी ७ देवलोक, ए ग्रैवेयक, ५ अनुत्तर विमान ए २२ ना अप्रजाप्ता प्रजाप्ता ४४.

सर्व मळी ७४ भेद लाभे ॥ २२ ॥ छए लेश्यामां ४० भेद ते १० भेद संज्ञी तिर्यंचना ने ३० भेद मनुष्यना ते १५ कर्मभूमिना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ३०, सर्व मळी ४० भेद लाभे ॥ २३ ॥ आगली ४ लेश्यामां २७७ भेद लाभे. ते प्रथम ५१ जातिना देवताना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता १०२, ने जुगलीयाना ८६ भेदना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता १७२ ने बादर, पृथ्वी, पाणी, वनस्पति ए ३ ना अप्रजाप्ता ए सर्व मळी २७७ भेद लाभे ॥ २४ ॥ उदारिक काययोगमां ३५१ भेद लाभे. ते ३०३ भेद मनुष्यना, ४८ भेद तिर्यंचना ए ३५१ भेद लाभे ॥ २५ ॥ उदारिक मिश्रयोगमां २४७ भेद लाभे ते १०१ समुर्छिंम मनुष्य, १०१ संज्ञी मनुष्यना अप्रजाप्ता, १५ कर्मभूमिना प्रजाप्ता, तिर्यंचना २४ भेद अप्रजाप्ता बादर वायुकायनो प्रजाप्तो ५ संज्ञी तिर्यंचना प्रजाप्ता सर्वे मळी २४७ भेद लाभे ॥ २६ ॥ वैक्रेय योगमां २३३ भेद लाभे ते १९८ देवताना, १४ भेद नारकीना, ५ संज्ञी तिर्यंचना प्रजाप्ता, बादर वायुकायनो प्रजाप्तो, १५ कर्मभूमिना प्रजाप्ता, सर्व मळी २३३ भेद लाभे ॥ २७ ॥ वैक्रेयना मिश्रमां २१९ भेद लाभे. ते पूर्वे २३३ भेद कह्या तेमांथी ए ग्रैवेयक, ५ अनुत्तर

विमान, ए १४ ना प्रजाप्ता वर्जिने शेष २१९ भेद लाभे ॥ २८ ॥ आहारक ने आहारकना मिश्रमां १५ कर्मभूमिना प्रजाप्ता ए १५ भेद लाभे ॥ २९ ॥ कार्मण काययोगमांहि ३४७ भेद लाभे. ते ३३२ अप्रजाप्ता ने १५ कर्मभूमिना प्रजाप्ता, सर्व मळी ३४७ भेद लाभे ॥३०॥ सत्य मनादि ४ ने सत्य वचनादि ३ ए ७ जोगमां २१२ भेद लाभे. ते ९९ जातिना देवता ने ७ नारकी, १०१ संज्ञी मनुष्य, ५ संज्ञी तिर्यंच ए सर्वेना पर्याप्ताना २१२ भेद पूर्वोक्त सात योगमां लाभे ॥ ३१ ॥ व्यवहार वचनमां २२० भेद लाभे. ते पूर्वे सत्यमनादिमां २१२ भेद कह्या तेज ने ५ असंज्ञी तिर्यंच ने ३ विगलेंद्रियना ए ८ ना प्रजाप्ता सर्वे मळी २२० भेद लाभे ॥ ३२ ॥ उदारिक शरीरमां ३५१ भेद लाभे. ते ५६३ मांथी १४ भेद नारकीना ने १९८ भेद देवताना वर्जिने शेष ३५१ भेद लाभे ॥३३ ॥ वैक्रेय शरीरमांहि २३३ भेद लाभे. ते १९८ भेद देवताना, १४ भेद नारकीना, १५ कर्मभूमिना प्रजाप्ता, ५ संज्ञी तिर्यंचना प्रजाप्ता, बादर वाउकायनो प्रजाप्तो ए २३३ भेद लाभे ॥ ३४ ॥ आहारक शरीरमां १५ कर्मभूमिना प्रजाप्ताना लाभे ॥३५॥ तेजस, कार्मण शरीरमां ५६३ भेद लाभे ॥३६॥ अणाहारकमां

३४७ नेद लाने ते कार्मण काययोगनी माफक जाणवुं ॥ ३७ ॥ आहारकमां ५६३ नेद लाने. ॥३८॥ मनसहितमां २१२ नेद लाने ते सत्य मननी माफक जाणवुं ॥३९॥ मनरहितमां ३५१ नेद लाने ते ७ नरकना अपर्जाप्ता, ४३ नेद तिर्यंचना ते ५ संज्ञी तिर्यंचना पर्जाप्ता वर्जिने शेष ४३ नेद तिर्यंचना, १०१ समुर्छिम मनुष्यना अपर्जाप्ता, १०१ संज्ञी मनुष्यना अपर्जाप्ता ए २०२, ९९ जातिना देवताना अपर्जाप्ता ए सर्व मळी ३५१ नेद लाने ॥ ४० ॥ नजरे आवे तेमां २२५ नेद लाने. ते ७ नरक, ९९ जातिना देवता, १०१ गर्नज मनुष्य, ५ संज्ञी तिर्यंच, ५ असंज्ञी तिर्यंच, ३ विगलेन्द्रिय, ५ बादर एकेन्द्रिय ए सर्वना पर्जाप्ता एम २२५ नेद लाने ॥४१॥ नजरे न आवे तेमां ३३८ नेद लाने. ते ३३२ तो अपर्जाप्ता, ५ सूक्ष्म एकेन्द्रिय ने साधारण वनस्पति ए ६ ना पर्जाप्ता ए सर्व मळी ३३८ नेद लाने ॥ ४२ ॥ गर्नजमां २१२ नेद लाने. ते २०२ संज्ञी मनुष्यना ने १० नेद संज्ञी तिर्यंचना, ए सर्व मळी २१२ नेद लाने ॥ ४३ ॥ अणगर्नजमां ३५१ नेद लाने. ते १४ नारकीना, १९८ नेद देवताना, ३८ नेद तिर्यंचना ते ४८ मांथी १० नेद संज्ञीना वर्ज्या १०१ समु-

र्छिम मनुष्य ए सर्वे मळी ३५१ नेद लाने ॥ ४४ ॥ त्रस नामीमांहि ५६३ नेद लाने ॥४५॥ स्थावर नामीमां १५० नेद लाने. ते १०१ समुर्छिम मनुष्य, १५ कर्मनूमिना अप्रजाप्ता ए ११६ ने ३४ नेद तिर्यंचना ते २२ एकेन्द्रियमांथी एक वादर वायुकायनो प्रजाप्तो वर्जिने २१ एकेन्द्रियना, ३ विगलेन्द्रियना अप्रजाप्ता, ५ संज्ञी तिर्यंचना अप्रजाप्ता, ५ असंज्ञी तिर्यंचना अप्रजाप्ता ए ३४ तिर्यंचना ए १५० नेद लाने. ॥ ४६ ॥ ज्ञान आत्मामां २०३ नेद लाने. ते सातमी नरकनो अप्रजाप्तो वर्जिने १३ नेद नारकीना, ५ संज्ञी तिर्यंचना अप्रजाप्ता प्रजाप्ता ए १० ने ५ असंज्ञी तिर्यंचना अप्रजाप्ता ने ३ विगलेन्द्रियना अप्रजाप्ता ए १० तिर्यंचना, ने १५ कर्मनूमिना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ३०, ने ६० अकर्मनूमिना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए ए० मनुष्यना ने १५ परमाधामी, ३ किलविषो ए १० ना प्रजाप्ता ने अप्रजाप्ता ए ३६ नेद वर्जिने शेष १६२ नेद देवताना ए सर्व मळी २०३ नेद लाने ॥ ४७ ॥ चारित्र आत्मामां १५ कर्मनूमिना प्रजाप्ता लाने ॥ ४० ॥ शेष ६ आत्मामांहि ५६३ नेद लाने ॥ ४ए ॥ अप्रजाप्ता मरीने १७ए नेदमां जाय ते १०१ समुर्छिम मनुष्य,

५६३ नेद

४० भेद तिर्यंचना, १५ कर्मभूमिना अपर्याप्ता ने पर्याप्ता ३०, ए १७९ भेदमांहि जाय ॥ ५० ॥ स्त्री मरीने ५६१ भेदमां जाय ते ५६३ मांथी सातमी नरकनो अपर्याप्तो ने पर्याप्तो वर्जिने शेष ५६१ मां जाय ॥ ५१ ॥ पुरुष मरीने ५६३ भेदमांहि जाय ॥ ५२ ॥ नपुंसक मरीने ५६३ भेदमांहि जाय ॥ ५३ ॥ वेदनीय समुद्घातमां ५६३ भेद लाभे ॥ ५४ ॥ कषाय समुद्घातमां ५६३ भेद लाभे ॥ ५५ ॥ मारणांतिक समुद्घातमां ३७१ भेद लाभे. ते चव्यानी माफक जाणवुं ॥ ५६ ॥ वैक्रेय समुद्घातमां २१९ भेद लाभे, ते वैक्रेय मिश्रयोगनी माफक जाणवुं ॥ ५७ ॥ तेजस समुद्घातमां १०५ भेद ते ८५ जातिना देवताना पर्याप्ता ने १५ कर्मभूमिना पर्याप्ता, ५ संज्ञी तिर्यंचना पर्याप्ता ए १०५ भेद लाभे ॥ ५८ ॥ आहारक समुद्घातमां १५ कर्मभूमिना पर्याप्ता लाभे ॥ ५९ ॥ केवल समुद्घातमां १५ कर्मभूमिना पर्याप्ता लाभे ॥ ६० ॥ आगली ३ पर्यायमां ५६३ भेद लाभे ॥ ६१ ॥ श्वासोश्वास पर्यायमां ५५२ भेद लाभे ते एकेन्द्रियना ११ अपर्याप्ता वर्ज्या, शेष ५५२ भेद लाभे ॥ ६२ ॥ भाषा पर्यायमां ३२६ भेद लाभे ते ७ नरकना ने ५ संज्ञी तिर्यंचना अप-

 

जाप्ता ने प्रजाप्ता १०, असंज्ञी तिर्यंचना ५ नेद ने ३ विगलेन्द्रियना ए ८ ना प्रजाप्ता ने संज्ञी मनुष्यना २०२ नेद ने ९९ जातिना देवताना प्रजाप्ता एम ३२६ नेद लाने ॥ ६३ ॥ मनःपर्यायमां २१२ नेद लाने. ते ७ नारकीना, ५ संज्ञी तिर्यंच ने १०१ संज्ञी मनुष्य, ९९ जातिना देवता, ए सर्वना प्रजाप्ता २१२ मां मनःपर्याय लाने ॥ ६४ ॥ विनंग ज्ञानमां २२२ नेद लाने ते ५ अनुत्तर विमानना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए १० नेद वर्ज्या, बाकी १८८ नेद देवताना ने १४ नेद नारकीना, १५ कर्मनूमिना मनुष्यना प्रजाप्ता ने ५ संज्ञी तिर्यंचना प्रजाप्ता ए २२२ नेद लाने ॥ ६५ ॥ अवधिज्ञानमां २१० नेद लाने. ते १५ परमाधामी, ३ किलविषी ए १८ वर्जिने शेष ८१ जातिना देवताना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता १६२ ने १३ नारकीना ते १४ मांथी सातमी नरकनो अप्रजाप्तो वर्जिने १३ नेद ने १५ कर्मनूमिना अप्रज्ञाप्ता ने प्रजाप्ता ए ३० ने ५ संज्ञी तिर्यंचना प्रजाप्ता ए २१० नेद लाने ॥६६॥ अवधिदर्शनमांहि २४७ नेद लाने. तेमां १९८ नेद देवताना, १४ नेद नारकीना, १५ कर्मनूमिना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ३० ने ५ संज्ञी तिर्यंचना प्रजाप्ता ए सर्वे मळी २४७

भेद लाभे ॥ ६७ ॥ परितमांहि ५६३ भेद जीवना लाभे ॥ ६८ ॥ अपरितमां ५५३ भेद जीवना लाभे. ते ५६३ मांथी ५ अनुत्तर विमानना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता १० भेद वर्ज्या, शेष ५५३ भेद लाभे ॥ ६९ ॥ संजतिमां १५ कर्मभूमिना प्रजाप्ता लाभे, ॥ ७० ॥ संजतासंजतिमां १५ कर्मभूमिना प्रजाप्ता ने ५ संज्ञी तिर्यंचना प्रजाप्ता ए २० भेद लाभे ॥ ७१ ॥ असंजतिमां ५६३ भेद लाभे. ॥ ७२ ॥ पहेला गुणठाणामां ५५३ भेद लाभे. ते ५ अनुत्तर विमानना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता १० भेद वर्ज्या, शेष ५५३ भेद लाभे॥ ७३ ॥ सास्वादान गुणठाणामां २१३ भेद लाभे. ते १३ भेद नारकीना, ते १४ मांथी ७ मी नरकनो अप्रजाप्तो वर्ज्यो ने १८ भेद तिर्यंचना, ३ विगलेन्द्रिय ने ५ असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय ए ८ ना अप्रजाप्ता ने ५ संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रियना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए १० ने ८ पूर्वे कह्या ते ए १८ ने १५ कर्मभूमिना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए ३० ने देवता ९९ जातिमांहिथी १५ परमाधामी, ३ किलविषी, ५ अनुत्तर विमान ए २३ वर्जिने शेष ७६ जातिना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए १५२ भेद देवताना, ए सर्व मळीने २१३ भेद लाभे ॥ ७४ ॥ मिश्र गुणठाणामां ९४ भेद लाभे. ते

७ नारकीना प्रजाप्ता, ५ संज्ञी तिर्यंचना प्रजाप्ता, १५ कर्मभूमिना प्रजाप्ता ए २७ ने ६७ ५६३ भेद
भेद देवताना ते ९९ भेदमांथी १५ परमाधामी, ३ किलविषी, ९ ग्रैवेयक, ५ अनुत्तर वि-
मान ए ३२ भेद वर्जिने शेष ६७ भेदना प्रजाप्ता ए सर्व मळी ९४ भेद लाभे ॥ ७५ ॥
चोथे गुणठाणे २४५ भेद लाभे. ते पूर्वे समकितमां २५३ भेद कह्या छे, तेमांथी ५ असंज्ञी
तिर्यंच पंचेन्द्रिय ने ३ विगलेन्द्रिय ए ८ भेद वर्जिने शेष २४५ भेद लाभे ॥ ७६ ॥ पांचमे
गुणठाणे २० भेद लाभे. ते १५ कर्मभूमिना, ५ संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय ए २० ना प्रजाप्ता
लाभे ॥ ७७ ॥ छट्ठे गुणठाणेथी चौदमा गुणठाणा सुधी १५ कर्मभूमिना मनुष्यना प्रजाप्ता
लाभे ॥ ७८ ॥ अजीवना ५६० भेद तेमां लोकमां ५५७ लाभे. ते धर्मास्तिकाय अधर्मास्ति-
काय ए बेना देश अने आकाशास्तिकायनो स्कंध ए ३ भेद वर्ज्या, शेष ५५७ भेद लाभे
॥ ७९ ॥ अलोकमां अजीवना ५६० भेद मांहिला ६ भेद लाभे, ते आकाशास्तिकायना
देश १, प्रदेश २, अने द्रव्यादि ४ भेद, ए ६ भेद लाभे ॥ ८० ॥ धर्मास्तिकायना स्कंधमां
अजीवना ११ भेद लाभे. ते धर्मास्तिकायनो स्कंध १, प्रदेश २, अधर्मास्तिकायनो स्कंध

३, प्रदेश ४, आकाशास्तिकायनो देश ५, प्रदेश ६ ने अद्धा समयकाल ७ ने पुद्गलास्तिकायनो स्कंध ८, देश ए, प्रदेश १०, परमाणु पुद्गल ११, ए ११ भेद लाभे ॥ ८१ ॥ अढीद्वीप बहार अजीवना १० भेद लाभे ते पूर्वे ११ भेद कह्या तेमांथी काल वर्ज्यो ॥८२॥ धर्मास्तिकायना देशमां ११ भेद, ते धर्मास्तिकायनो देश १, प्रदेश २, अधर्मास्तिकायनो देश ३, प्रदेश ४, आकाशास्तिकायनो देश ५, प्रदेश ६, काल ७, पुद्गलना ४ भेद ए ११ भेद लाभे. ॥ ८३ ॥ धर्मास्तिकायना प्रदेशमां ८ भेद लाभे ते धर्मास्तिकायनो प्रदेश १, अधर्मास्तिकायनो प्रदेश २, आकाशास्तिकायनो प्रदेश ३, काल ४, पुद्गलना ४ भेद ए आठ भेद लाभे ॥ ८४ ॥ अधर्मास्तिकायना स्कंधमां ११ भेद लाभे ते धर्मास्तिकायनी माफक जाणवुं ॥ ८५ ॥ आकाशास्तिकायना स्कंधमां ११ भेद लाभे. ते धर्मास्तिकायनो स्कंध १, प्रदेश २, अधर्मास्तिकायनो स्कंध ३, प्रदेश ४, आकाशास्तिकायनो स्कंध ५, प्रदेश ६, काल ७, पुद्गलना ४ भेद, सर्व मळी ११ भेद लाभे ॥ ८६ ॥ आकाशास्तिकायना २ भेद, लोकाकाश १, अलोकाकाश २. ते लोकाकाशना २ भेद, संपूर्ण १, अधुरो २. ते संपू-

णमां ११ भेद लाभे. ते धर्मास्तिकायनो देश १, अधर्मास्तिकायनो देश २, आकाशास्तिकायनो स्कंध ३ ए ३ जतां बाकी ११ लाभे ॥ ७७ ॥ अधूरामां ११ भेद लाभे. ते धर्मास्तिकायनो स्कंध १, अधर्मास्तिकायनो स्कंध २, आकाशास्तिकायनो स्कंध ३, ए ३ जतां बाकी ११ भेद लाभे ॥ ७८ ॥ अलोकाकाशमां २ भेद लाभे, ते आकाशास्तिकायनो देश १, प्रदेश २, ए २ लाभे ॥ ७९ ॥ आकाशास्तिकायना प्रदेशमां ७ भेद ते धर्मास्तिकायना प्रदेशनी माफक जाणवुं ॥८०॥

॥ इति जीवना ५६३ भेदनी चर्चा संपूर्ण ॥

## महादंडक ॥

॥ अथ श्री जीवाजीवाभिगमादिसूत्रथी महादंडकना बोल लिख्यते ॥

गाथा–दंडग १ लेस्सा २ ठिइ ३, उग्गाहण ४ विरहकालए ५ चेव ॥

जवण ६ गयागइ ७, संघयण ८ संठाण ९ वेदे १० य ॥ १ ॥
जोगु ११ वओग १२ सरीरं १३, गुणठाण १४ दिठ्ठी १५ य पज्जत्ती १६ ॥
पाणे १७ नाण अनाणे १८, संजइ १९ माइण आहारे २० ॥ २ ॥
आहार २१ इच्छाहारे २२, कायठिइ २३ समुग्घाय २४ कुलकोडी २५ ॥
आउ २६ देव २७ जराय २८, परिग्गहय २९ संतरं ३० चेव ॥ ३ ॥

ए ३० द्वार ते २४ दंडक उपर उतारवां ते कहे छे. ते मध्ये प्रथम दंडकद्वार कहे छे. साते नरकनो दंडक १. तेनां नाम–घमा १, वंसा २, शिला ३, अंजना ४, रिठा ५, मघा ६, माघवइ ७. हवे तेनां गोत्र कहे छे. रत्नप्रज्ञा १, शर्करप्रज्ञा २, वालुप्रज्ञा ३, पंकप्रज्ञा ४, धूमप्रज्ञा ५, तमप्रज्ञा ६, तमतमाप्रज्ञा ७ ॥ १ ॥ दस दंडक जवनपतिना कहे छे. असुरकुमार १, नागकुमार २, सुवनकुमार ३, विज्जुकुमार ४, अग्निकुमार ५, द्वीपकुमार ६, उदधिकुमार ७, दिशाकुमार ८, पवनकुमार ९, स्तनितकुमार १० ॥ ११ ॥ पृथ्वीकाय १२, अपकाय १३, तेउकाय १४, वायुकाय १५, वनस्पतिकाय १६ ॥ सत्तरमो दंडक बे

इंद्रियनो ते कीमा, पोरा, अलसीयां, करमियां, सरमियां, जलो, डीप, शंख प्रमुख ॥१७॥ तेइंद्रियनो १७ मो दंमक ते कीमी, कंथवा, जू, कीमा, मंकोमा, घीमेल, चांचम प्रमुख ॥ १७ ॥ चउरिंद्रियनो दंमक १ए मो ते जमरा, जमरी, माखी, मांस, टीम, बगा प्रमुख ॥ १ए ॥ तिर्यंच पंचेन्द्रियनो दंमक २० मो. तेमां जलचरनां ५ नेद. मच्छ कच्छ गाहा मगर सुसमार प्रमुख. स्थलचरना ४ नेद–एगखुरा १, दोखुरा २, गंमीपया ३, सणहपया ४ ॥ खेचरना ४ नेद–चर्मपंखी १, रोमपंखी २, वितंतपंखी ३, समुगपंखी ४ ॥ उरपरना ४ नेद–सर्प १, अजगर २, महोरग ३, आसालीया ४ ॥ जुजपरना अनेक नेद ते घो उंदर खीसकोली प्रमुख ॥ २० ॥ मनुष्यनो दंमक २१ मो ॥ ते मनुष्यने उपजवानां ठाम. पंदर कर्मजूमि ते असि मसि कसि एहथी आजीविका करे, अने मोक्षमार्गने साधे ते ५ जरत, ५ एरवत, ५ महाविदेह ए १५ ॥१॥ अकर्मजुमि ते असि, मसि, कसि ए त्रण प्रकारनो व्यापार नथी अने १० प्रकारना कल्पवृक्षे करी जीवे ते ५ हेमवय, ५ एरणवय, ५ हरिवास, ५ रमकवास, ५ देवकुरु, ५ उत्तरकुरु ए ३० अकर्मजूमि ॥ २ ॥ छप्पन अंतरद्वीपा

ते जंबूद्वीप मध्ये हेमवंत पर्वत अने शिषरी पर्वत थकी पूर्व अने पश्चिमनी दिशिए स-मुद्र मध्ये बे बे दाढा नीकळी छे, ते एकेकी दाढाए सात सात द्वीपा छे तेनुं मान. प्रथम ३०० जोजन गया पछी पहेलो द्वीपो छे. तिहांथकी ४०० जोजन गया पछी बीजो द्वीपो छे. तिहांथकी ५०० जोजन गया पछी त्रीजो द्वीपो छे. तिहांथकी ६०० जोजन गया पछी चोथो द्वीपो छे. तिहांथकी ७०० जोजन गया पछी पांचमो द्वीपो छे. तिहां थकी ८०० जोजन गया पछी छट्ठो द्वीपो छे. तिहांथी ९०० जोजन गया पछी सातमो द्वीपो छे. ए रीते ८ दाढाए ५६ अंतरद्वीपा छे. सर्वे अढीद्वीप मध्ये जाणवा ॥ ३ ॥ हवे समुर्छिम मनुष्य उपजवानां ठाम कहे छे ॥ उच्चारेसुवा १, पासवणेसुवा २, खेलेसुवा ३, संघाणेसुवा ४, वंतेसुवा ५, पित्तेसुवा ६, सोणिएसुवा ७, पुएसुवा ८, सुक्केसुवा ए, सुक्क पोग्गल परिसाडीयेसुवा १०, विगयजीव कलेवरेसुवा ११, इत्थीपुरिससंजोगेसुवा १२, नगर निधम्मणेसुवा १३, सव्वेसु चेव असुइठाणेसुवा १४ ॥ ४ ॥ २१ ॥ २२ मो वाणव्यंतरनो दंडक तेनां नाम–पिशाच १, भूत २, यक्ष ३, राक्षस ४, किंनर ५, किंपुरुष ६, महोरग ७, गांधर्व ८, आणपन्नी ए, पाणपन्नी १०, इसीवाइ ११, भुयवाइ १२, कंदीय १३, महाकंदीय १४, कोहंड

१५ पयंगदेव १६ ॥ ए सोलनी काय व्यंतरनी जात अने एकेकीनी काये बे बे इंद्र जाणवा ॥२२॥ २३ मो ज्योतिषीनो दंमक ते चंद्र १, सूर्य २, ग्रह ३, नक्षत्र ४, तारा ५, ए ५ चर अढी द्वीप मध्ये छे, ने पांच अचर अढीद्वीपनी बाहीर छे ॥ २३ ॥ २४ मो विमानीक देवतानो दंमक ॥ सुधर्म्म १, इशान २, सनतुकुमार ३, माहेंद्र ४, ब्रह्मलोक ५, लांतक ६, महासुक्र ७, सहसार ८, आणत ९, प्राणत १०, आरण ११, अच्चुय १२ ॥ हवे नव ग्रैवेयक कहे छे ॥ भद्दे १, सुभद्दे २, सुजाए ३, सुमाणसे ४, पियदंसणे ५, सुदंसणे ६, आमोहे ७, सुपमिबद्धे ८, जसोधरे ९ ॥ हवे पांच अनुत्तर विमाननां नाम कहे छे ॥ विजय १, विजयंत २, जयंत ३, अपराजित ४, सर्वार्थसिद्ध ५ ॥ सर्वार्थसिद्ध उपरे इसिप्पन्नारा पृथ्वी ते सिद्धिशिला तेनां बार नाम छे ते कहे छे ॥ इसीतिवा १, इसीप्पन्नारा तिवा २, तणुतिवा ३, तणुतणुतिवा ४, सिद्धितिवा ५, सिद्धालयतिवा ६, मुतीतिवा ७, मुत्तालयतिवा ८, लोयगेतिवा ९, लोगथुभियातिवा १०, लोगपमिबोहेतिवा ११, सव्वपाणभुयजीव सत्त सुहावहेतिवा ॥ १२ ॥ २४ ॥

॥ इति प्रथम दंमकद्वार संपूर्ण ॥ १ ॥

हवे बीजुं लेश्याद्वार कहे छे ॥

गाथा—नाम१ वण्ण२ रस३ गंध४, फास५ परिणाम६ लक्खण७ संठाण८ ॥
ठिइए गइ१० चवण११ द्वारा, एगारस लेस्साणं णेया ॥ १ ॥

ए ११ द्वार छ लेश्या उपर उतारवां तेमां प्रथम नामद्वार कहे छे. कृष्णलेश्या १, नील लेश्या २, कापोत लेश्या ३, तेजु लेश्या ४, पद्म लेश्या ५ अने शुक्ल लेश्या ६ ॥१॥ बीजुं लेश्याना वर्णनुं द्वार कहे छे. भाव लेश्यामां एके वर्ण नथी. द्रव्य लेश्यामां कृष्णादि पांचे वर्ण होय तेमां कृष्ण लेश्यानो वर्ण (रंग)—जेवा पाणीसहित मेघ काळा, जेवां पाडानां शींगडां काळां, जेवां अरीठानां बीज काळां, जेवुं गाडानुं खंजन, आंखनी कीकी ए करतां अनन्तगुणो काळो ॥ १ ॥ नील लेश्यानो वर्ण—जेवुं अशोक वृक्ष नीलुं, जेवी चास पक्षीनी पांख, जेवुं वैडुर्य रत्न एथी अनन्तगुणो नील लेश्यानो नीलो वर्ण छे ॥ २ ॥ कापोत लेश्यानो वर्ण जेवां अळशीनां फूल, जेवी कोयलनी पांख, जेवी पारेवानी डोक कांइक राती कांइक काळी ए करतां अनन्तगुणो अधिक कापोत लेश्यानो

वर्ण जाणवो ॥ ३ ॥ तेजु लेश्यानो वर्ण, जेवो उगतो सूर्य रातो, जेवी सुडानी चांच, जेवी दीवानी शीखा ए करतां अनन्तगुणो अधिक रातो तेजुलेश्यानो वर्ण ॥ ४ ॥ पद्म लेश्यानो वर्ण–जेवी हरताल, जेवी हळदर, जेवां शणनां फूल, ए करतां अनन्तगुणो अधिक पीळो पद्म लेश्यानो वर्ण ॥ ५ ॥ शुक्ल लेश्यानो वर्ण–जेवो शंख, जेवुं अंक रत्न, जेवुं मोगरानुं फूल, जेवुं गायनुं दूध, जेवो रूपानो हार ए करतां अनन्तगुणो अधिक श्वेत शुक्ल लेश्यानो वर्ण ॥ ६ ॥ २ ॥ त्रीजुं लेश्याना रसनुं द्वार कहे छे. कृष्ण लेश्यानो रस–जेवुं कडवुं तुंबडुं, जेवो कडवो लींबडानो रस, जेवो रोहीणी नामे वनस्पतिनो रस, एथी अनन्तगुणो अधिक कडवो रस कृष्ण लेश्यानो जाणवो ॥ १ ॥ नील लेश्यानो रस–जेवो सुंठनो तीखो रस, जेवो पींपर अने मरीनो रस, एथी अनंतगुणो अधिक तीखो रस नील लेश्यानो जाणवो ॥ २ ॥ कापोत लेश्यानो रस–जेवो कुणी काची केरीनो रस, जेवो काचा कोठनो रस, एथी अनन्तगुणो अधिक खाटो रस कापोतनो जाणवो ॥ ३ ॥ तेजु लेश्यानो रस–जेवो पाका आंबानो रस, जेवो पाका कोठानो रस एथी अनन्तगुणो

कांइक खाटो ने कांइक मीठो रस तेजु लेश्यानो जाणवो ॥ ४ ॥ पद्म लेश्यानो रस–जेवो वारुणीनो रस, जेवो आसव (सरका)नो रस, जेवो मधुनो रस एथी अनन्तगुणो मधुरो रस पद्म लेश्यानो ॥ ५ ॥ शुक्ल लेश्यानो रस–जेवो खजुरनो रस. जेवो द्राक्षनो रस, जेवो दूधनो रस, जेवो साकरनो रस एथी अनन्तगुणो अधिक मीठो रस शुक्ल लेश्यानो जाणवो ॥ ६ ॥ ३ ॥ चोथुं लेश्याना गंधनुं द्वार कहे छे. जेवो गायना मडानो, कुतराना मडानो, सर्पना मडानो एथी अनन्तगुणो अधिक अप्रशस्त, प्रथम त्रण माठी लेश्यानो गंध जाणवो ॥ १ ॥ कपुर, केवडो प्रमुख सुगंधी पदार्थ वाटतां (घुंटतां) जेवी सुगंध नीकळे ते करतां अनन्तगुणो प्रशस्त त्रण सारी लेश्यानो गंध जाणवा ॥ ५ ॥ ४ ॥ पांचमुं लेश्याना स्पर्शनुं द्वार कहे छे–जेवी करवतनी धार, जेवी गायनी जीभ, जेवुं मुंजनुं तथा वांसनुं पान, ते करतां अनन्तगुणो माठो अप्रसस्त लेश्यानो स्पर्श जाणवो ॥१॥ जेवी बूर नामे वनस्पति, जेवुं माखण, जेवां सरसवनां फूल, जेवुं मखमल ए करतां अनन्तगुणो अधिक प्रसस्त लेश्यानो स्पर्श सुंवाळो जाणवो ॥ २ ॥ ५ ॥ छठ्ठुं लेश्याना

परिणामनुं द्वार कहे छे. लेश्या त्रण प्रकारे परिणमे—जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट; तथा नव प्रकारे परिणमे ते उपर त्रण कही तेना अकेकना त्रण त्रण भेद थाय; जेमके, जघन्यनो जघन्य, जघन्यनो मध्यम, जघन्यनो उत्कृष्ट ए रीते दरेकना त्रण त्रण भेद करतां नव भेद थाय. एम नवना सत्तावीस भेद थाय. एम सत्तावीसना एकाशी भेद थाय. एम एकाशीना बसे ने तेंतालीस भेद थाय. एटले भेदे लेश्या परिणमे ॥ ६ ॥ सातमुं लेश्यानां लक्षणनुं द्वार कहे छे. तेमां प्रथम कृष्णलेश्यानां लक्षण कहे छे—पांच आश्रवनो सेवनार, त्रण अगुप्तिवंत, छकाय जीवनो हिंसक, आरंभनो तिव्र परिणामी तथा द्वेषी, पाप करवामां साहसीक, निठोर परिणामी, जीवहिंसा गुण रहित करनार, अजितेन्द्रिय एवा जोगे करी सहित होय तेने कृष्ण लेश्यानुं लक्षण जाणवुं.॥१॥ नील लेश्याना लक्षण कहे छे. इर्ष्यावंत, अमर्षवंत, तपरहित, मायावी पाप करतां लाजे नहीं, गृधी, धूतारो, प्रमादी, रसनो लोलुपी, मायानो गवेषी, आरंभनो अत्यागी, पापने विषे साहसीक ए नील लेश्यानां लक्षण जाणवां ॥ २ ॥ कापोत लेश्यानां लक्षण कहे छे—

वांका बोले, वांका काम करनार, माया करीने हरखाय, सरळपणाथी रहित, मोंढे जूदो अने पुंठे जुदो, मिथ्या-खोटां वचननो बोलनार, चोरी मत्सरनो करनार, ए कापोत लेश्यानां लक्षण जाणवां ॥ ३ ॥ तेजु लेश्यानां लक्षण कहे छे-मर्यादावंत, मायारहित, चपळपणाथी रहित, कुतूहळ रहित, विनयवंत, दमितेंद्रिय, शुभ जोगवंत, उपधान तप सहित, दृढधर्मि, प्रियधर्मि, पाप थकी बीहे, ए तेजुलेश्यानां लक्षण जाणवां ॥ ४ ॥ पद्म लेश्यानां लक्षण कहे छे-क्रोध, मान, माया, लोभ पातळा कर्या छे, प्रशान्त चित्त, आत्मानो दमणहार, योगउपध्यान सहित होय, थोडा बोलो, उपशान्त, जितेंद्रिय, ए पद्मलेश्यानां लक्षण जाणवां ॥ ५ ॥ शुक्ल लेश्यानां लक्षण कहे छे-आर्त्तध्यान रौद्रध्यानथी सर्वथा रहित, धर्मध्यान शुक्लध्यानथी सहित, दश प्रकारनी चित्त समाधीए करी सहित, आत्मानो दमणहार, इत्यादिक शुक्ल लेश्यानां लक्षण जाणवां ॥ ६ ॥ हवे आठमुं स्थानद्वार कहे छे-स्थान एटले उत्कर्ष के अपकर्ष करी लेश्यानुं परस्पर तारतम्य. असंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणीना समय जेटलां के असंख्यात लोकना आकाश प्रदेश जेटलां थाय तेटलां लेश्यानां

स्थानक छे. ज्ञावलेश्यामां संक्लिष्ट परिणाम के विशुद्ध परिणामना तारतम्यरूप असंख्यात स्थानक छे. अने द्रव्यलेश्यामां तेवा द्रव्यस्कंधो असंख्यात असंख्यात छे. एक परिणामे एक वखते जेटलां द्रव्योनुं ग्रहण कर्युं ते एक स्थानक द्रव्यलेश्या परत्वे कही शकाय. ते स्थानकना बे प्रकार. जघन्य स्थानक अने उत्कृष्ट स्थानक. जघन्यनी पासेना स्थानकोनो जघन्यमां अने उत्कृष्टनी पासेनां स्थानकोनो उत्कृष्टमां अंतर्भाव करवाथी मध्यम स्थानकोनो त्रीजो भेद आंहि गण्यो नथी. हवे छ लेश्यानां स्थानकनुं अल्पबहुत्व सर्वथी थोडा कापोत लेश्यानां स्थानक १ तेथी नील लेश्यानां स्थानक असंख्यातगुणा २ तेथी कृष्ण लेश्यानां स्थानक असंख्यातगुणा ३ तेथी तेजु लेश्यानां स्थानक असंख्यातगुणा ४ तेथी पद्म लेश्यानां स्थानक असंख्यातगुणा ५ तेथी शुक्ल लेश्यानां स्थानक असंख्यात गुणा ६ ॥ ८ ॥ नवमुं लेश्यानी स्थितिनुं द्वार कहे छे-कृष्ण लेश्यानी स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी, उत्कृष्टी ३३ सागर ने १ अंतर्मुहूर्त्त अधिकनी ॥ १ ॥ नील लेश्यानी स्थिति ज० अंतर्मुहूर्त्तनी, उत्० १०

सागर पल्यने असंख्यातमे भागे अधिकनी ॥ २ ॥ कापोत लेश्यानी स्थिति ज० अंतर्मुहूर्त्तनी, उत्० ३ सागर पल्यने असंख्यातमे भागे अधिकनी ॥ ३ ॥ तेजुलेश्यानी स्थिति ज० अंतर्मुहूर्त्तनी, उत्० २ सागर पल्यने असंख्यातमे भागे अधिकनी ॥४॥ पद्म लेश्यानी स्थिति ज० अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० १० सागर अंतर्मुहूर्त्त अधिकनी ॥ ५ ॥ शुक्ल लेश्यानी स्थिति ज० अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० ३३ सागर अंतर्मुहूर्त्त अधिकनी ॥ ६ ॥ ए स्थिति लेश्यानी समुच्चय कही. हवे ४ गतिनी स्थिति कहे छे—नरकगतिनी कापोत लेश्यानी स्थिति ज० दश हजार वर्षनी, उत्० ३ सागर पल्यने असंख्यातमे भागे अधिकनी ॥ १ ॥ नील लेश्यानी स्थिति ज० ३ सागर झाझेरीने पल्यना असंख्यातमा भाग अधिकनी, उ० १० सागर पल्यना असंख्यातमा भाग अधिकनी ॥ २ ॥ कृष्ण लेश्यानी स्थिति ज० १० सागरनी, उत्० ३३ सागर ने अंतर्मुहूर्त्ताधिकनी ॥३॥ ए नारकीनी लेश्यानी स्थिति कही. हवे तिर्यंच मनुष्यनी लेश्यानी स्थिति कहे छे— तिर्यंच अने मनुष्य ज्यां ज्यां जाय त्यां त्यां ज० उ० प्रथम पांचे लेश्यानी अंतर्मुहूर्त्तनी स्थिति जाणवी. केवलज्ञान आश्री शुक्ल लेश्यानी स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी, उत्० नव

वर्ष उणी पूर्व कोमीनी. ए लेश्या तिर्यंच मनुष्यनी कही. हवे देवतानी स्थिति कहे छे- तेमां नवनपति व्यंतर आश्रि कृष्ण लेश्यानी स्थिति ज० दश हजार वर्षनी, उत्० पल्यना असंख्यातमा नागनी ॥ १ ॥ जेटली कृष्ण लेश्यानी उत्कृष्टी स्थिति तेटली १ समयाधिक नील लेश्यानी ज० स्थिति, उत्० पल्योपमना असंख्यातमा नागनी ॥ २ ॥ जेटली उत्० नीलनी स्थिति तेटओ १ समयाधिक कापोत लेश्यानी ज० स्थिति, उत्० पल्योपमना असंख्यातमा नागनी ॥ ३ ॥ समुच्चय देव आश्रि तेजु लेश्यानी स्थिति ज० १० हजार वर्षनी, उ० २ सागर ने पल्यना असंख्यातमा नाग अधिकनी. ज्योतिषी, वैमानिक आश्रि तेजुलेश्यानी स्थिति ज० पल्य १ नी, उत्० २ सागर पल्यने असंख्यातमे नाग अ-धिकनी ॥ ४ ॥ जेटली तेजु लेश्यानी उत्० स्थिति तेटली १ समय अधिक पद्मलेश्यानी ज० स्थिति, उ० १० सागर अंतर्मुहूर्त्त अधिकनी ॥५॥ जेटली पद्म लेश्यानी उत्० स्थिति तेटली १ समयाधिक शुक्ल लेश्यानी ज० स्थिति, उत्० ३३ सागर अंतर्मुहूर्त्ताधिकनी ॥६॥ए॥ दशमुं लेश्यानी गतिनुं द्वार कहे छे—कृष्ण, नील, कापोत ए त्रण अप्रशस्त अधम लेश्या,

तेणे करी जीव डुर्गति पामे. तेजु, पद्म, शुक्क ए त्रण धर्म लेश्या, तेणे करीने जीव सुगतिए जाय ॥ १० ॥ अगीआरमुं लेश्याना चवननुं द्वार कहे छे. सघळी लेश्या प्रथम परिणमती वखते कोइ जीवने उपजवुं के चववुं नथी तथा लेश्याना छेल्ला समये कोइ जीवने उपजवुं के चववुं नथी. परजवने विषे केम चवे ते कहे छे–लेश्या परजवनी आवी थकी अंतर्मुहूर्त्त गया पछी शेष अंतर्मुहूर्त्त आउखा आफ्रा रहे थके जीव परलोकने विषे जाय. ॥ ११ ॥ समुच्चय सलेशीमां छ लेश्या लाजे १–२ नरके कापोत लेश्या २, त्रीजी नरके कापोत घणी नील थोफ्री ३, चोथी नरके नील लेश्या ४, पांचमी नरके नील घणी कृष्ण थोफ्री ५, छट्ठी नरके कृष्ण लेश्या ६, सातमी नरके महाकृष्ण लेश्या ७ ॥ १ ॥ १० जवनपतिमां लेश्या ४ लाजे ॥ ११ ॥ पृथ्वी, पाणी, वनस्पति ए त्रणना अपर्याप्तावस्थामां लेश्या ४, पर्याप्तावस्थामां ३ लेश्या ॥ १४ ॥ तेउ वाउ त्रण विगलेंड्रिय ए पांचमां पहेली ३ लेश्या ॥ १ए ॥ तिर्यंच पंचेन्द्रिय समुर्छिममां प्रथम ३ लेश्या, गर्जजमां ६ लेश्या ॥ २० ॥ मनुष्यमां पण तेज रीते जाणवी ॥ २१ ॥ वाणव्यंतरमां प्रथम ४ लेश्या ॥ २२ ॥ ज्योतिषीमां १

तेजु लेश्या ॥ २३ ॥ वैमानिकमां १–२ देवलोके तेजु लेश्या, ३–४–५ देवलोके पद्म लेश्या, छट्ठाथी सर्वार्थसिद्ध लगी शुक्ल लेश्या ॥ २४ ॥ सिद्ध अलेशी जाणवा. हवे छ लेश्याना जीवनुं अल्पबहुत्व कहे छे–सर्वथी थोडा शुक्ललेशी १ तेथी पद्मलेशी संख्यातगुणा २ तेथी तेजुलेशी सं० ३ तेथी अलेशी अनंतगुणा ४ तेथी कापोतलेशी अनं० ५ तेथी नील लेशी विसेसाहिया ६ तेथी कृष्णलेशी वि० ७ तेथी सलेशी विसेसाहिया ८ ॥ ए लेश्यानो अधिकार उत्तराध्ययन सूत्रना अध्ययन ३४ मां तथा पन्नवणा पद १७ मां तथा जीवाभिगम सूत्रमां छे, त्यांथी विस्तारे जाणवो.

॥ इति बीजुं लेश्याद्वार संपूर्ण ॥

---

अथ त्रीजुं स्थितिद्वार कहे छे ॥

समुच्चय स्थिति आश्रि जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी, उत्कृष्टी ३३ सागरनी. हवे तेनो

जुदो जुदो विवरो कहे छे. पहेली नरके ज० दश हजार वर्ष, उ० १ सागर ॥ बीजी नरके ज० १ सागर, उ० ३ सागर ॥ त्रीजी नरके ज० ३ सागर, उ० ७ सागर ॥ चोथी नरके ज० ७ सागर, उ० १० सागर ॥ पांचमी नरके ज० १० सागर, उ० १७ सागर ॥ छठ्ठी नरके ज० १७ सागर, उ० २२ सागर ॥ सातमी नरके ज० २२ सागर, उ० ३३ सागर ॥ ए प्रत्येक प्रत्येक नरकनां नाम आश्रि आयुष्य कह्यां. हवे प्रतर भेदे आयुष्य कहे छे–पहेली नरके प्रतर १३ छे. तेमां पहेले प्रतरे ज० १० हजार वर्ष, उ० ए० हजार वर्ष ॥ बीजे ज० ए० हजार वर्ष, उ० ए० लाख वर्ष ॥ त्रीजे ज० ए० लाख वर्ष, उ० पूर्व कोमी १ ॥ चोथे ज० पूर्व कोमी १, उ० सागर १ तेना भाग १० करीए तेमांनो १ भाग ॥ पांचमे ज० भाग १, उ० भाग २ ॥ छठ्ठे ज० भाग २, उ० भाग ३ ॥ सातमे ज० भाग ३, उ० भाग ४ ॥ आठमे ज० भाग ४, उ० भाग ५ ॥ नवमे ज० भाग ५, उ० भाग ६ ॥ दशमे ज० भाग ६, उ० भाग ७ ॥ अग्यारमे ज० भाग ७, उ० भाग ८ ॥ बारमे ज० भाग ८, उ० भाग ए ॥ तेरमे ज० भाग ए, उ० सागर १ ॥ १ ॥ बीजी नरके पाथमा ११

छे. त्यां अकेका सागरना ११ न्नाग करीए, तेमांना बबे न्नाग वधारीए ॥ प्रथम पाथमे जo सागर १, उo सागर १ न्नाग २ ॥ बीजे पाथमे जo सागर १ न्नाग २, उo सागर १ न्नाग ४ ॥ त्रीजे जo सागर १ न्नाग ४, उo सागर १ न्नाग ६ ॥ चोथे पाथमे जo १ सागर ने ६ न्नाग, उo १ सागर ने ८ न्नाग ॥ पांचमे जo सागर १ न्नाग ८, उo १ सागर न्नाग १० ॥ छट्ठे जo १ सागर न्नाग १०, उo २ सागर १ न्नाग ॥ सातमे जo २ सागर १ न्नाग, उo २ सागर ३ न्नाग ॥ आठमे जo २ सागर ३ न्नाग, उo २ सागर ५ न्नाग ॥ नवमे जo २ सागर ५ न्नाग, उo २ सागर ७ न्नाग ॥ दशमे जo २ सागर ७ न्नाग, उo २ सागर ए न्नाग ॥ अग्यारमे जo २ सागर ए न्नाग, उo ३ सागर ॥ २॥ त्रीजी नरके पाथमा ए त्यां एकेका सागरना ए न्नाग करीए ते प्रतर प्रतरे ४ न्नाग वधारीए ॥ प्रथम पाथमे जo ३ सागर, उo ३ सागर ४ न्नाग ॥ बीजे जo ३ सागर ४ न्नाग, उo ३ सागर ८ न्नाग ॥ त्रीजे जo ३ सागर ८ न्नाग, उo ४ सागर ३ न्नाग ॥ चोथे जo ४ सागर ३ न्नाग, उo ४ सागर ७ न्नाग ॥ पांचमे जo ४ सागर ७ न्नाग, उo ५ सागर २ न्नाग ॥ छट्ठे जo ५ सागर २

नाग, उ० ५ सागर ६ नाग ॥ सातमे ज० ५ सागर ६ नाग, उ० ६ सागर १ नाग ॥ आठमे ज० ६ सागर १ नाग, उ० ६ सागर ५ नाग ॥ नवमे ज० ६ सागर ५ नाग, उ० ७ सागर ॥ ३ ॥ चोथी नरके पाथमा ७ ॥ त्यां एकेका सागरना ७ नाग करीए तेमां त्रण त्रण नाग वधारीए ॥ प्रथम पाथमे ज० ७ सागर, उ० ७ सागर ३ नाग ॥ बीजे ज० ७ सागर ३ नाग, उ० ७ सागर ६ नाग ॥ त्रीजे ज० ७ सागर ६ नाग, उ० ८ सागर २ नाग ॥ चोथे ज० ८ सागर २ नाग, उ० ८ सागर ५ नाग ॥ पांचमे ज० ८ सागर ५ नाग, उ० ए सागर १ नाग ॥ छठे ज० ए सागर १ नाग, उ० ए सागर ४ नाग ॥ सातमे ज० ए सागर ४ नाग, उ० १० सागर ॥ ४ ॥ पांचमी नरके पाथमा ५ ॥ त्यां एकेका सागरना ५ नाग करीए तेमां १ सागरने २ नाग प्रतरे प्रतरे वधारीए ॥ प्रथम पाथमे ज० १० सागर, उ० ११ सागर २ नाग ॥ बीजे ज० ११ सागर ने २ नाग, उ० १२ सागर ४ नाग ॥ त्रीजे ज० १२ सागर ४ नाग, उ० १४ सागर १ नाग ॥ चोथे ज० १४ सागर १ नाग, उ० १५ सागर ३ नाग ॥ पांचमे ज० १५ सागर ३ नाग, उ० १७ सागर ॥ ५ ॥ छट्ठी नरके

पाथमा ३ त्यां एकेका सागरना ३ जाग करीए तेमां २ जाग १ सागर प्रतरे प्रतरे वधारीए॥ पहेले प्रतरे ज० १७ सागर, उ० १८ सागर २ जाग ॥ बीजे ज० १८ सागर २ जाग, उ० २० सागर १ जाग ॥ त्रीजे ज० २० सागर १ जाग, उ० २२ सागर ॥ ६ ॥ सातमी नरके १ पाथमो वे. त्यां ५ नरकावासा वे. तेनां नाम–काल ॥ १ ॥ महाकाल ॥ २ ॥ रौड ॥ ३ ॥ महारौड ॥ ४ ॥ ए चार नरकावासाए ज० २२ सागर, उ० ३३ सागर ॥ अपइ-ठाण पांचमा नरकावासाए ३३ सागर जघन्योत्कृष्ट ॥ हवे जवनपतिनी स्थिति कहे वे– तेमां दक्षिण दिशाना जवनपतिनी ज० १० हजार वर्षनी, उ० १ सागरनी ॥ तेनी देवीनी ज० १० हजार वर्षनी, उ० साडा त्रण पल्यनी. तेना नवनीकायना देवतानी स्थिति ज० १० हजार वर्षनी, उ० दोढ पल्यनी. तेनी देवीनी ज० १० हजार वर्षनी, उ० पोणा पल्यनी. उत्तर दिशाना जवनपतिनी ज० १० हजार वर्षनी, उ० १ सागर झाझेरो. तेनी देवीनो ज० १० हजार वर्षनी, उ० साडाचार पल्यनी ॥ नवनीकायनी ज० १० हजार वर्षनी, उ० बे पल्य देशे उणी. तेनी देवीनी ज० १० हजार वर्षनी, उ० १ पल्य देशे उणी ॥ अथ बादर

पृथ्वीनी स्थिति सघळीनी ज० अंतर्मुहूर्त्तनी ॥ हवे उत्कृष्टीनो विवरो कहे छे–सन्हानी उ० हजार वर्षनी ॥ सुद्धानी उ० १२ हजार वर्षनी ॥ वालुयानी उ० १४ हजार वर्षनी ॥ मणोशिलानी उ० १६ हजार वर्षनी ॥ शर्करानी उ० १७ हजार वर्षनी ॥ खरपृथ्वीनी उ० २२ हजार वर्षनी ॥ अपनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० ७ हजार वर्षनी ॥ तेउनी ज० अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० ३ अहोरात्रिनी ॥ वायुनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० ३ हजार वर्षनी ॥ वनस्पतिनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० १० हजार वर्षनी ॥ सूक्ष्म ५ स्थावरनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० तेटली ॥ बेंद्रियनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० १२ वर्षनी ॥ तेइंद्रियनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० ४९ दिवसनी ॥ चउरिंद्रियनी १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० ६ मासनी ॥ हवे तिर्यंच पंचेंद्रियनी स्थिति कहे छे–जलचर गर्ज्ञज समुर्छिमनी ज०॥१ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० १ पूर्वक्रोमनी॥ स्थलचर गर्ज्ञजनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० ३ पल्योपमनी ॥ समुर्छिमनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० ७४ हजार वर्षनी ॥ खेचर गर्ज्ञजनी ज० अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० पल्योपमना असंख्यातमा जागनी ॥ समुछमनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० ७२ हजार वर्षनी ॥ उरपर गर्ज्ञजनी

ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनो, उ० १ पूर्वक्रोमनी. समुर्छिमनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० ५३ हजार वर्षनो ॥ भुजपर गर्भजनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० १ पूर्वक्रोमीनी. समुर्छिमनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनो, उ० ४२ हजार वर्षनो ॥ ए तिर्यंच पंचेंद्रियनी स्थिति कही ॥ हवे मनुष्यनी स्थिति कहे छे—जे असंख्याता आयुष्यना मनुष्य छे तेनी ज० पल्योपमना असंख्यातमा भागनी ॥ जे मनुष्य संख्याता वर्षना आयुष्यना छे तेनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी ॥ ए समस्तनी जघन्य स्थिति कही ॥ हवे उत्कृष्टीनो विवरो कहे छे—देवकुरु उत्तरकुरुना मनुष्यनी स्थिति ३ पल्योपमनी ॥ हरिवास रम्यकवासे २ पल्यनी ॥ हेमवंत एरणवंते १ पल्यनी ॥ छप्पन अंतरद्वीपे पल्योपमना असंख्यातमा भागनी ॥ महाविदेहे १ पूर्वक्रोमनो ॥ भरत ऐरवते आराने मेळे आयुष्य तथा आरानुं मानादि जाणवुं ॥ प्रथम सुसमसुसम आरो ४ क्रोमाक्रोमी सागरोपमनो ॥ तेना मनुष्यनुं ३ पल्यनुं आयुष्य. अपत्यप्रतिपालणा ४९ दिवस ॥ बीजो सुसम आरो ३ क्रोमाक्रोमी सागरोपमनो. तेना मनुष्यनुं आयुष्य २ पल्योपमनुं. अपत्यप्रतिपालणा ६४ दिवस ॥

त्रीजो सुसम दुसम आरो २ कोमाकोमी सागरनो. तेना मनुष्यनुं आयुष्य १ पल्यनुं, अ-पल्यप्रतिपालणा ७९ दिवस ॥ उतरते आरे पूर्व कोमीनुं ॥ ते आरामांहि ८४ लाख पूर्व ३ वर्ष ८ मास शेष बाकी होय; त्यारे प्रथम तीर्थंकर उपजे ॥ त्रण वर्ष साम्रा आठ मास शेष बाकी होय, त्यारे ८४ लाख पूर्वनुं आयुष्य पाळीने मोक्ष जाय ॥ पांच कल्याणीक होय ॥ दुसम सुसम चोथो आरो १ कोमाकोमी सागरमांहि ४२ हजार वर्ष ओछां. तेने धुरे आयुष्य पूर्व कोमीनुं ॥ उतरते १०० वर्ष जाजेरानुं ॥ ते आरामां २३ तीर्थंकर होय, तेनुं आयुष्य कहे छे ॥ बीजा तीर्थंकरनुं ७२ लाख पूर्वनुं आयुष्य ॥ त्रीजानुं ६० लाख पूर्वनुं ॥ चोथानुं ५० लाख पूर्वनुं ॥ पांचमानुं ४० लाख पूर्वनुं ॥ छठानुं ३० लाख पूर्वनुं ॥ सातमानुं २० लाख पूर्वनुं ॥ आठमानुं १० लाख पूर्वनुं ॥ नवमानुं २ लाख पूर्वनुं ॥ दशमानुं १ लाख पूर्वनुं ॥ अग्यारमानुं ८४ लाख वर्षनुं ॥ बारमानुं ७२ लाख वर्षनुं ॥ तेरमानुं ६० लाख वर्षनुं ॥ चौदमानुं ५० लाख वर्षनुं ॥ ॥ पंदरमानुं १० लाख वर्षनुं ॥ सोलमानुं १ लाख वर्षनुं ॥ सत्तरमानुं ९५ हजार वर्षनुं ॥ अढारमानुं ८४ हजार वर्षनुं ॥ ओगणीसमानुं ५५ हजार

वर्षनुं ॥ वीसमानुं ३० हजार वर्षनुं ॥ एकवीसमानुं १० हजार वर्षनुं ॥ बावीसमानुं एक हजार वर्षनुं ॥ त्रेवीसमानुं १०० वर्षनुं ॥ चोवीसमानुं ७२ वर्षनुं आयुष्य जाणवुं ॥ ए चोथा आराना ७५ वर्ष ८॥ मास शेष थाकता होय त्यारे चरम तीर्थंकर उपजे ॥ ३ वर्ष ८॥ मास शेष थाकता होय त्यारे मोक्ष जाय ॥ पांच कल्याणीक होय ॥ पांचमो दुसम आरो २१ हजार वर्षनो ॥ धूरे आयुष्य १०० वर्ष झाझेरानुं. उतरतां २० वर्षनुं ॥ छठ्ठो दुसम दुसम आरो २१ हजार वर्षनो ॥ धुरे आयुष्य २० वर्षनुं, उतरतां १६ वर्षनुं ॥ समुर्छिम मनुष्यनुं आयुष्य जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त्तनुं जाणवुं ॥ व्यंतरनी स्थिति जघन्य १० हजार वर्षनी, उ० १ पल्यनी. तेनी देवीनी ज० १० हजार वर्षनी, उ० अर्द्ध पल्यनी ॥ ज्योतिषीनी ज० पल्यना आठमा जागनी, उ० १ पल्य झाझेरी ॥ ए समुच्चय आयुष्य कह्युं ॥ हवे जुदो जुदो विवरो कहे छे–चंद्रमानुं आयुष्य ज० पा पल्यनुं, उ० १ पल्य ने लाख वर्षनुं ॥ सूर्यनुं आयुष्य ज० पा पल्यनुं, उ० १ पल्य ने १ हजार वर्षनुं ॥ ग्रहनुं ज० पा पल्यनुं, उ० १ पल्यनुं ॥ नक्षत्रनुं ज० पा पल्यनुं, उ० अर्द्ध पल्यनुं ॥ तारानुं ज० पल्यनो आठमो जाग,

उ० पल्यनो ८ मो भाग झाझेरुं ॥ हवे देवीनुं आयुष्य कहे छे–चंद्रमानी देवीनुं आयुष्य ज० पा पल्यनुं, उ० अर्द्धपल्य ने ५० हजार वर्षनुं ॥ सूर्यनी देवीनुं ज० पा पल्यनुं, उ० अर्द्ध पल्य ने ५०० वर्षनुं ॥ ग्रहनी देवीनुं ज० पा पल्यनुं, उ० अर्द्ध पल्यनुं ॥ नक्षत्रनी देवीनुं ज० पल्यनो आठमो भाग, उ० पा पल्यनुं ॥ तारानी देवीनुं ज० पल्यनो आठमो भाग, उ० पल्यनो आठमो भाग झाझेरुं ॥ हवे वैमानिकनी स्थिति कहे छे–जघन्य १ पल्योपम, उत्० ३३ सागरनी, ए समुच्चय स्थिति जाणवी ॥ हवे तेनो जुदो विवरो कहे छे–प्रथम देवलोके ज० १ पल्यनुं, उत्० २ सागरनुं ॥ तेनी देवीनुं ज० १ पल्योपमनुं उ० ७ पल्य ते परिग्रहीतनुं तथा अपरिग्रहीतनुं ज० १ पल्यनुं, उत्० ५० पल्यनुं ॥ बीजे देवलोके ज० १ पल्य झाझेरुं, उत्० २ सागर झाझेरुं ॥ तेनी देवीनुं ज० १ पल्य झाझेरुं उत्० ए पल्य ते परिग्रहीतनुं अने अपरिग्रहीतनुं ज० १ पल्य झाझेरुं, उत्० ५५ पल्यनुं ॥ त्रीजे देवलोके ज० २ सागरनुं, उत्० ७ सागरनुं ॥ चोथे देवलोके ज० २ सागर झाझेरुं, उत्० ७ सागर झाझेरुं ॥ पांचमे देवलोके ज० ७ सागरनुं, उत्० १० सागरनुं ॥ छठ्ठे देवलोके

ज० १० सागरनुं, उत्० १४ सागरनुं ॥ सातमे देवलोके ज० १४ सागरनुं, उत्० १७ सागरनुं ॥ आठमे देवलोके ज० १७ सागरनुं, उत्० १८ सागरनुं ॥ नवमे देवलोके ज० १८ सागरनुं, उत्० १९ सागरनुं ॥ दशमे देवलोके ज० १९ सागरनुं, उत्० २० सागरनुं ॥ अग्यारमे देवलोके ज० २० सागरनुं, उत्० २१ सागरनुं ॥ बारमे देवलोके ज० २१ सागरनुं, उत्० २२ सागरनुं ॥ नव ग्रैवेयके पहेली त्रिके ज० २२ सागरनुं उत् २३ सागरनुं, ॥ एमज एकेक सागर एकेक ग्रैवेयके वधारता जवुं ॥ जावत् नवमी ग्रैवेयके ज० ३० सागरनुं, उत्० ३१ सागरनुं ॥ चार अनुत्तर विमाने ज० ३१ सागरनुं, उत्० ३३ सागरनुं ॥ सर्वार्थसिद्ध ३३ सागर जघन्योत्कृष्ट ॥ हवे प्रतरनी स्थिति कहे छे—पहेला बीजा देवलोके प्रतर १३ छे, त्यां एकेका सागरना १३ भाग करीए तेमांना बबे भाग वधारता जइए ॥ पहेले प्रतरे ज० १ पल्य, उत्० १ पल्य ने २ भाग ॥ बीजे ज० १ पल्य, उत्० १ पल्य ने ४ भाग ॥ त्रीजे ज० १ पल्य, उत्० १ पल्य ने ६ भाग ॥ चोथे ज० १ पल्य, उत्० १ पल्यने ८ भाग ॥ पांचमे ज० १ पल्य, उत्० १ पल्य ने १० भाग ॥ छट्ठे ज० १ पल्य, उत्० १ पल्य ने १२ भाग ॥

सातमे ज० १ पल्य, उत्० १ सागर १ भाग ॥ आठमे ज० १ पल्य, उत्० १ सागर ३ भाग ॥ नवमे ज० १ पल्य, उत्० १ सागर ५ भाग ॥ दशमे ज० १ पल्य, उत्० १ सागर ७ भाग ॥ अग्यारमे ज० १ पल्य, उत्० १ सागर ए भाग ॥ बारमे ज० १ पल्य, उत्० १ सागर ११ भाग ॥ तेरमे ज० १ पल्य, उत्० २ सागर ॥ त्रीजे चोथे देवलोके प्रतर १२ छे. त्यां एकेका सागरना १२ भाग करीए, तेमांना ५ भाग वधारता जइए ॥ पहेले प्रतरे ज० २ सागर, उत्० २ सागर ने ५ भाग ॥ बीजे ज० २ सागर, उत्० २ सागर १० भाग ॥ त्रीजे ज० २ सागर, उत्० ३ सागर ३ भाग ॥ चोथे ज० २ सागर, उत्० ३ सागर ७ भाग ॥ पांचमे ज० २ सागर, उत्० ४ सागर १ भाग ॥ छट्ठे ज० २ सागर, उत्० ४ सागर ६ भाग ॥ सातमे ज० २ सागर, उत्० ४ सागर ११ भाग ॥ आठमे ज० २ सागर, उत्० ५ सागर ४ भाग ॥ नवमे ज० २ सागर, उत्० ५ सागर ए भाग ॥ दशमे ज० २ सागर, उत्० ६ सागर २ भाग ॥ अग्यारमे ज० २ सागर, उत्० ६ सागर ७ भाग ॥ बारमे ज० २ सागर, उत्० ७ सागर ॥ ब्रह्मलोक देवलोके प्रतर ६ छे. त्यां एकेका सागरना ६ भाग करीए, तेमांना ३

न्नाग वधारीए ॥ पहेले प्रतरे ज० ७ सागर, उत्० ७ सागर ३ न्नाग ॥ बीजे ज० ७ सागर, उत्० ८ सागर ॥ त्रीजे ज० ७ सागर, उत्० ८ सागर ३ न्नाग ॥ चोथे ज० ७ सागर, उत्० ए सागर ॥ पांचमे ज० ७ सागर, उत्० ए सागर ३ न्नाग ॥ छठे ज० ७ सागर, उत् १० सागर ॥ लांतक देवलोके प्रतर ५ छे. त्यां एकेका सागरना ५ न्नाग करीए, तेमांना ४ न्नाग वधारीए ॥ पहेले प्रतरे ज० १० सागर, उत्० १० सागर ४ न्नाग ॥ बीजे ज० १० सागर. उत्० ११ सागर ३ न्नाग ॥ त्रीजे ज० १० सागर, उत्० १२ सागर २ न्नाग ॥ चोथे ज० १० सागर, उत्० १३ सागर १ न्नाग ॥ पांचमे ज० १० सागर, उत्० १४ सागर ॥ महाशुक्र देवलोके प्रतर ४ छे ॥ त्यां एकेका सागरना ४ न्नाग करीए, तेमांना ३ न्नाग वधारीए ॥ पहेले प्रतरे ज० १४ सागर, उत्० १४ सागर ३ न्नाग ॥ बीजे ज० १४ सागर, उत्० १५ सागर २ न्नाग ॥ त्रीजे ज० १४ सागर, उत्० १६ सागर १ न्नाग ॥ चोथे ज० १४ सागर, उत्० १७ सागर ॥ सहसार देवलोके प्रतर ४ छे ॥ त्यां एकेका सागरना ४ न्नाग करीए, तेमांनो १ न्नाग वधारीए ॥ पहेले प्रतरे ज० १७ सागर, उत्० १७ सागर १ न्नाग ॥ बीजे ज० १७ सागर,

उत्० १७ सागर २ ज्ञाग ॥ त्रीजे ज० १७ सागर, उत्० १७ सागर ३ ज्ञाग ॥ चोथे ज० १७ सागर, उत्० १८ सागर ॥ आणत देवलोके प्रतर ४ छे. त्यां एकेक सागरना ४ ज्ञाग करीए, तेमांनो १ ज्ञाग वधारीए ॥ पहेले प्रतरे ज० १८ सागर, उत्० १८ सागर १ ज्ञाग ॥ बीजे ज० १८ सागर, उत्० १८ सागर २ ज्ञाग ॥ त्रीजे ज० १८ सागर, उत्० १८ सागर ३ ज्ञाग ॥ चोथे ज० १८ सागर, उत्० १९ सागर ॥ प्राणत देवलोके प्रतर ४ छे. त्यां एक सागरना ४ ज्ञाग करीए तेमांनो एकेको ज्ञाग वधारीए ॥ पहेले प्रतरे ज० १९ सागर, उत्० १९ सागर १ ज्ञाग ॥ बीजे ज० १९ सागर, उत्० १९ सागर २ ज्ञाग ॥ त्रीजे ज० १९ सागर, उत्० १९ सागर ३ ज्ञाग ॥ चोथे ज० १९ सागर, उत्० २० सागर ॥ आरण देवलोके प्रतर ४ छे. त्यां एक सागरना ४ ज्ञाग करीए, तेमांनो एकेको ज्ञाग वधारीए ॥ पहेले प्रतरे ज० २० सागर, उत्० २० सागर १ ज्ञाग ॥ बीजे ज० २० सागर, उत्० २० सागर २ ज्ञाग ॥ त्रीजे ज० २० सागर, उत्० २० सागर ३ ज्ञाग ॥ चोथे ज० २० सागर, उत्० २१ सागर ॥ अच्युत देवलोके प्रतर ४ छे. त्यां एकेका सागरना ४ ज्ञाग करीए, तेमांनो एकेको ज्ञाग

वधारीए ॥ पहे[illegible] प्रतरे ज० २१ सागर, उत्० २१ सागर १ भाग ॥ बीजे ज० २१ सागर, उत्० २१ सागर [illegible] भाग ॥ त्रीजे ज० २१ सागर, उत्० २१ सागर ३ भाग ॥ चोथे ज० २१ सागर, उत[illegible]० २२ सागर ॥ ते उपर नव नव ग्रैवेयके एकेक सागर वधारीए ॥ त्यां प्रतर नथी [illegible] ॥ हवे देवीनो विचार कहे छे–सौधर्म देवलोके अपरिग्रहित देवीनां ६ लाख विमान छे [illegible] ॥ तेमां जेनुं १० पल्यनुं आयुष्य छे ते सनत्कुमार इंद्रने भोग आवे ॥ २० पल्यनी ब्रह्मलोक देवलोकना देवताने भोग आवे ॥ ३० पल्यनी महाशुक्रना देवताने भोग आवे ॥ ४० पल्यनी आणतना देवताने भोग आवे ॥ ५० पल्यनी आरणना देवताने भोग आवे ॥ ईशान देवलोके ४ लाख विमान छे ॥ तेनुं एक पल्य झाझेरानुं आयुष्य छे. ते ईशानना देवताने भोग आवे ॥ १५ पल्यनी देवी माहेंद्रना देवताने भोग आवे ॥ २५ पल्यनी देवी लांतकना देवताने भोग आवे ॥ ३५ पल्यनी देवी सहस्रारना देवताने भोग आवे ॥ ४५ पल्यनी देवी प्राणतना देवताने भोग आवे ॥ ५५ पल्यनी देवी अच्युतना देवताने भोग आवे ॥ पहेले बीजे देवलोके भोग मनुष्यनी रीते ॥ त्रीजे चोथे तफावी जाय ॥ पांचमे

छठ्ठे स्पर्शभोग ॥ सातमे आठमे रूपभोग ॥ नवमे दशमे शब्दभोग ॥ अग्यारमे बारमे नजर मेळानो भोग ॥ ते उपरांत अल्प विकार, असंख्य सुख छे ॥

इति त्रीजुं स्थितिद्वार संपूर्ण ॥ ३ ॥

---

हवे चोथुं अवगाहना द्वार कहे छे ॥

सर्व जीवनी अवगाहना जघन्य आंगुलना असंख्यातमा भागनी जाणवी ॥ उत्कृष्टीनो विवरो कहे छे—पहेली नरके पोणा आठ धनुष्य ने ६ आंगुल ॥ बीजीए १५॥ धनुष्य १२ आंगुल ॥ त्रीजीए ३१। धनुष्य ॥ चोथीए अवगाहना ६२॥ धनुष्य ॥ पांचमीए १२५ मनुष्य ॥ छठ्ठीए २५० धनुष्य ॥ सातमीए ५०० धनुष्यनी काया जाणवी ॥ हवे प्रतर प्रतरनी जुदी अवगाहना कहे छे—पहेली नरके १३ प्रतर छे. तेमां प्रथम पाथडे ३ हाथनी काया. ते उपर २ हाथ ८॥ आंगुल वधारीए ॥ बीजे पाथडे १ धनुष्य १ हाथ ८॥ आंगुल ॥ त्रीजे १ धनुष्य. ३ हाथ १७॥ आंगुल ॥ चोथे २ धनुष्य

२ हाथ १॥ आंगुल ॥ पांचमे ३ धनुष्य १० आंगुल ॥ छट्ठे ३ धनुष्य २ हाथ १८॥ आंगुल ॥ सातमे ४ धनुष्य १ हाथ ३ आंगुल ॥ आठमे ४ धनुष्य ३ हाथ ११॥ आंगुल ॥ नवमे ५ धनुष्य १ हाथ २० आंगुल ॥ दशमे ६ धनुष्य ४॥ आंगुल ॥ अग्यारमे ६ धनुष्य २ हाथ १३ आंगुल ॥ बारमे ७ धनुष्य २१॥ आंगुल ॥ तेरमे ७ धनुष्य ३ हाथ ६ आंगुल ॥ बीजी नरके पाथमा ११ छे ॥ त्यां ३ हाथ ३ आंगुल पाथडे पाथडे वधारीए ॥ प्रथम पाथडे ७ धनुष्य ३ हाथ ६ आंगुल ॥ बीजे ८ धनुष्य २ हाथ ए आंगुल ॥ त्रीजे ए धनुष्य १ हाथ १२ आंगुल ॥ चोथे १० धनुष्य १५ आंगुल ॥ पांचमे १० धनुष्य ३ हाथ १८ आंगुल ॥ छट्ठे ११ धनुष्य २ हाथ २१ आंगुल ॥ सातमे १२ धनुष्य २ हाथ ॥ आठमे १३ धनुष्य १ हाथ ३ आंगुल ॥ नवमे १४ धनुष्य ६ आंगुल ॥ दशमे १४ धनुष्य ३ हाथ ए आंगुल ॥ अग्यारमे १५ धनुष्य २ हाथ १२ आंगुल ॥ त्रीजी नरके पाथमा ए छे ॥ त्यां ७ हाथ, १ए॥ आंगुल पाथडे पाथडे वधारीए ॥ प्रथम पाथडे १५ धनुष्य २ हाथ १२ आंगुल ॥ बीजे १७ धनुष्य २ हाथ ७॥ आंगुल ॥ त्रीजे १ए धनुष्य २ हाथ ३ आंगुल ॥ चोथे

२१ धनुष्य १ हाथ २१॥ आंगुल ॥ पांचमे २३ धनुष्य १ हाथ १० आंगुल ॥ छट्ठे २५ धनुष्य १ हाथ १३॥ आंगुल ॥ सातमे २७ धनुष्य १ हाथ ए आंगुल ॥ आठमे २ए धनुष्य १ हाथ ४॥ आंगुल ॥ नवमे ३१ धनुष्य १ हाथ ॥ चोथी नरके पाथरा ७ छे ॥ त्या ५ धनुष्य २० आंगुल, एकेके पाथरे वधारीए ॥ पहेले पाथरे ३१ धनुष्य १ हाथ ॥ बीजे ३६ धनुष्य १ हाथ २० आंगुल ॥ त्रीजे ४१ धनुष्य २ हाथ १६ आंगुल ॥ चोथे ४६ धनुष्य ३ हाथ १२ आंगुल ॥ पांचमे ५२ धनुष्य ० आंगुल ॥ छट्ठे ५७ धनुष्य १ हाथ ४ आंगुल ॥ सातमे ६२ धनुष्य २ हाथ ॥ पांचमी नरके पाथरा ५ छे. त्यां २५ धनुष्य २ हाथ १२ आंगुल एकेके पाथरे वधारीए. प्रथम पाथरे ६२ धनुष्य २ हाथ ॥ बीजे ७० धनुष्य १२ आंगुल ॥ त्रीजे ए३ धनुष्य ३ हाथ॥ चोथे १०ए धनुष्य १ हाथ १२ आंगुल ॥ पांचमे १२५ धनुष्य ॥ छट्ठी नरके पाथरा ३ छे ॥ त्यां एकेके पाथरे ६२ धनुष्य २ हाथ वधारीए ॥ प्रथम पाथरे १२५ धनुष्य ॥ बीजे १०७ धनुष्य २ हाथ ॥ त्रीजे २५० धनुष्य ॥ सातमी नरके ५०० धनुष्यनी काया छे ॥ ते नवधारणी काया जाणवी ॥ वैक्रेय करे तो जघन्य आंगुलनो संख्यातमो

भाग, उत्कृष्टी वैक्रेय करे तो बमणी काया करे ॥ ए नारकीनी अवगाहना करी ॥ हवे भवनपति वाणव्यंतर ज्योतिषी वैमानिक देवलोक बे सुधी भवधारणी ७ हाथनी काया ॥ त्रीजे चोथे ६ हाथ ॥ पांचमे छठ्ठे ५ हाथ ॥ सातमे आठमे ४ हाथ ॥ उपरना ४ देवलोके ३ हाथनी काया ॥ ए देवता उत्तर वैक्रेय करे तो ज० अंगुलनो संख्यातमो भाग, उत्० लाख जोजन करे. एथी उपरना देवता उत्तर वैक्रेय न करे. नव ग्रैवेयके २ हाथनी काया ॥ चार अनुत्तर विमाने १ हाथनी काया ॥ सर्वार्थसिद्ध विमाने १ हाथ माठेरी काया ॥ ए अवगाहना उच्छेद आंगुले करी सर्वनी जाणवी ॥ हवे सिद्धनी अवगाहना ज० १ हाथ ८ आंगुल, मध्यम ४ हाथ १६ आंगुल, उत्० ३३३ धनुष्य ३२ आंगुल ॥ बादर, पृथ्वी, पाणी, तेउ, वाउ अने सूक्ष्म एकेंद्रिय ए सर्वेनी ज० उ० आंगुलना असंख्यातमा भागनी अवगाहना जाणवी ॥ प्रत्येक वनस्पतिनी ज० अंगुलनो असंख्यातमो भाग, उ० हजार जोजन जाझेरी कमलाना डोडाने न्याये ॥ सूक्ष्म वनस्पतिना असंख्यात शरीरे एक सूक्ष्म वायुनुं शरीर थाय ॥ सूक्ष्म वायुना असंख्य शरीरे एक सूक्ष्म तेउनुं शरीर थाय ॥

सूक्ष्म तेउना असंख्य शरीरे एक सूक्ष्म अपनुं शरीर थाय॥ सूक्ष्म अपना असंख्य शरीरे एक सूक्ष्म पृथ्वीनुं शरीर थाय॥ सूक्ष्म पृथ्वीने असंख्य शरीरे एक बादर वायुनुं शरीर थाय ॥ बादर वायुने असंख्य शरीरे एक बादर तेउनुं शरीर थाय॥ बादर तेउने असंख्य शरीरे एक बादर अपनुं शरीर थाय ॥ बादर अपने असंख्य शरीरे एक बादर पृथ्वीनुं शरीर थाय ॥ एटले केवम्यो थयो ते उपर चूर्णपीसिका दासीनुं दृष्टांत कहे छे–बत्रीस वर्षनो जुवान जोध बळवंत पुरुष रत्नने एरण उपर मुकीने गाढा घणनो प्रहार करे तो ते रत्न एरणमां खुंचे पण भांगे नहि ॥ एवुं रत्न ते चूर्णपीसिका दासी आंगळी ने अंगुठा वच्चे चांपीने तेनो साथीयो काढे एवी बळवंत ते रत्नने वज्रमय खरल उपर मुके, वज्रमय लोढावती २१ वार पीसे, वाटे तो ते जीव केटलाएक विलय जाय, केटलाएक किलामना पामे, केटलाएके जाएयुं पण नथी ॥ वळी नगरने दृष्टांते–जेम कोइ नगर मोटुं होय, ते नगरने क्यांक पासे जुरू होय, ते जुरू करतां केटलाएक वीलय जाय, केटलाएक कीलामना पामे, केटलाके जाएयुं पण नथी, एवुं सूक्ष्म शरीर छे ॥ बे इंद्रि-

य शंख प्रमुखनुं शरीर १२ जोजननुं ॥ तेइंद्रिय खजुरा प्रमुखनुं गाउ ३ नुं ॥ चउरिंद्रिय भमरा प्रमुखनुं गाउ ४ नुं ॥ जलचरनुं खाडीमांहि ए जोजनना मछ ॥ लवण समुद्रमांहि ५०० जोजनना मछ ॥ कालोदधीमां ७०० जोजननां मछ ॥ स्वयंभूरमण समुद्रमां १००० जोजननां मछ छे ॥ ए जलचर समुर्छिम अने गर्भज बन्ने जाणवा ॥ स्थलचर समुर्छिमनुं शरीर पृथक् गाउनुं ॥ गर्भजनुं ६ गाउनुं ॥ उरपर समुर्छिमनुं पृथक् जोजननुं ॥ गर्भजनुं १ हजार जोजननुं ॥ भुजपर समुर्छिमनुं पृथक् धनुष्यनुं ॥ गर्भजनुं पृथक् गाउनुं ॥ खेचर समुर्छिम ने गर्भजनुं पृथक् धनुष्यनुं ॥ वैक्रेय ज० अंगुलनो संख्यातमो भाग करे, उत्० नवसें जोजननो काया करे ॥ मनुष्यनी काया देवकुरु उत्तरकुरुना युगलियानो ३ गाउनो हरिवास रम्यक्वासे २ गाउनी ॥ हेमवय एरणवये १ गाउनी ॥ छपन्न अंतरद्वीपे ८०० धनुष्यनो ॥ पांच महाविदेहे ५०० धनुष्यनी ॥ भरत अैरवते आराना प्रमाणे अवगाहनानुं मान जाणवुं ॥ पहेले आरे ३ गाउ ॥ बीजे आरे २ गाउ ॥ त्रीजे आरे १ गाउ ॥ उतरते आरे ५०० धनुष्य ॥ त्यां तीर्थंकरनी काया५००धनुष्यनी ॥ चोथे आरे ५०० धनुष्यनी ॥ उतरते आरे ७ हाथ॥

ते आरे बीजा तीर्थंकरनुं ४५० धनुष्यनुं शरीर ॥ त्रीजानुं ४०० धनुष्यनुं ॥ चोथानुं ३५० धनुष्यनुं ॥ पांचमानुं ३०० धनुष्यनुं ॥ छठानुं २५० धनुष्यनुं ॥ सातमानुं २०० धनुष्यनुं ॥ आठमानुं १५० धनुष्यनुं ॥ नवमानुं १०० धनुष्यनुं ॥ दशमानुं ए० धनुष्यनुं ॥ अग्यारसमानुं ७० धनुष्यनुं ॥ बारमानुं ७० धनुष्यनुं ॥ तेरमानुं ६० धनुष्यनुं ॥ चौदमानुं ५० धनुष्यनुं ॥ पनरमानुं ४५धनुष्यनुं ॥ सोलमानुं ४० धनुष्यनुं ॥ सत्तरमानुं ३५ धनुष्यनुं ॥ अढारमानुं ३० धनुष्यनुं ॥ ओगणीसमानुं २५ धनुष्यनुं ॥ वीसमानुं २० धनुष्यनुं ॥ एकवीसमानुं १५ धनुष्यनुं ॥ बावीसमानुं १० धनुष्यनुं ॥ तेवीसमानुं ९ धनुष्य १ हाथनुं ॥ चोवीसमानुं १ धनुष्य ३ हाथनुं ॥ पांचमे आरे ७ हाथनुं, उतरते आरे १ हाथनुं ॥ छठे आरे १ हाथ, उतरते आरे मूढा हाथनी ॥ सर्व जीव उपजताने आंगुलना असंख्यातमा जागनी अवगाहना जाणवी, अने उत्तर वैक्रेय करे तो लाख जोजननी काझेरी जाणवी ॥

इति चोथुं अवगाहनाद्वार संपूर्ण ॥ ४ ॥

हवे पांचमुं विरहद्वार कहे छे ॥

समुच्चय ४ गतिनो विरहकाल ज० १ समयनो, उ० १२ मुहूर्त्तनो. सर्व जीवनो विरह ज० एक समयनो सर्वत्र जाणवो ॥ हवे उत्कृष्टो प्रत्येक प्रत्येकनो जुदो जुदो विरहकाल कहे छे–प्रथम नरके २४ मुहूर्त्त ॥ बीजीए ७ दिवस ॥ त्रीजीए १५ दिवस ॥ चोथीए १ मास ॥ पांचमीए २ मास ॥ छठ्ठीए ४ मास ॥ सातमीए ६ मास ॥ भवनपतिनो २४ मुहूर्त्त ॥ पांच एकेंद्रिय अविरहिया समय समय उपजे अने समय समय चवे ॥ संख्याताने ठामे संख्याता, असंख्याताने ठामे असंख्याता अने अनंताने ठामे अनंता उपजे अने चवे ॥ विगलेंद्रियनो अंतमुहूर्त्तनो विरह ॥ तिर्यंच पंचेंद्रियसमुर्छिमनो विरह अंतर्मुहूर्त्तनो ॥ गर्भजानो १२ मुहूर्त्त ॥ मनुष्य समुर्छिमनो २४ मुहूर्त्त ॥ गर्भज मनुष्यनो १२ मुहूर्त्त ॥ व्यंतर ज्योतिषी अने पहेले बीजे देवलोके २४ मुहूर्त्त ॥ त्रीजे देवलोके ९ दिवस २० मुहूर्त्त ॥ चोथे देवलोके १२ दिवस १० मुहूर्त्त ॥ पांचमे देवलोके २२ दिवस १५ मुहूर्त्त ॥ छट्ठे देवलोके ४५ दिवस ॥ सातमे देवलोके ८०

दिवस ॥ आठमे देवलोके १०० दिवस ॥ नवमे दशमे संख्यातामास ॥ अग्यारमे बारमे संख्याता वर्ष ॥ पहेली त्रिके संख्याता वर्षना सेंकमा ॥ बीजी त्रिके संख्याता वर्षनां सहस्र ॥ त्रीजी त्रिके संख्याता वर्षना लाखनो विरह ॥ चार अनुत्तर विमाने पल्यनो असंख्य.ातमो ज्ञाग ॥ सर्वार्थसिद्धे पल्यनो संख्यातमो ज्ञाग विरह ॥ मोक्ष जावानो विरह ज० १ समय, उत्० ६ मास ॥

इति पांचमुं विरहद्वार संपूर्ण ॥ ५ ॥

---

हवे छठुं जवनद्वार कहे छे ॥

प्रथम सात नरकनी विगत ॥ रत्नप्रज्ञा पृथ्वी केम कही ? तेमां १६ जातिना रत्नना १६ कांम छे. एकेको हजार जोजननो छे. एटले १६ हजार जोजननो खर कांम छे ॥ आउबल कांम ८० हजार जोजननो छे ॥ चोराशी हजार जोजननो पंकबल कांम छे ॥ १ ॥ शर्करप्रज्ञा केम कही ? तेमां कांकरा छे ॥ २ ॥ वालु-

प्रन्ना केम कही ? तेमां वेलु छे ॥ ३ ॥ पंकप्रन्ना केम कही ? तेमां कादव छे ॥ ४ ॥ धूम-
प्रन्ना केम कही ? तेमां धुमाडो छे ॥ ५ ॥ तमप्रन्ना केम कही ? तेमां अंधकार छे ॥ ६ ॥
तमतमाप्रन्ना केम कही ? तेमां अंधकारमां अंधकार छे ॥७॥ साते पृथ्वी जाडी केटली
छे ते कहे छे ॥ प्रथम पृथ्वी १ लाख ८० हजार जोजन जाडी छे ॥ बीजी पृथ्वी १ लाख
३२ हजार जोजन जाडी छे ॥ त्रीजी पृथ्वी १ लाख २८ हजार जोजन जाडी छे ॥ चोथी
पृथ्वी १ लाख २० हजार जोजन जाडी छे ॥ पांचमी पृथ्वी १ लाख १८ हजार जोजन
जाडी छे ॥ छठी १ लाख १६ हजार जोजन जाडी छे ॥ सातमी नरकनो पिंड १ लाख
८ हजार जोजन जाडीनो छे, ते शेने आधारे रह्यो छे ? पहेलीए २० हजार जोजन घनो-
दधि छे, असंख्याता जोजननां सहस्रनो घनवात छे, असंख्याता जोजन सहस्रनो तनुवात
छे ॥ असंख्याता जोजनना सहस्रनो आकाश छे ॥ एमज साते नरके जाणवुं ॥ सातमी
नरके एटलो विशेष जे हेठे अलोक छे ॥ हवे त्रीछो अलोक केटले दूर छे ते कहे छे ॥
पहेली नरकथी बार जोजने त्रीछो अलोक छे ॥बीजीए एक जोजनना त्रण भाग करीए

तेमांना २ नाग वधारीए ॥ छेल्ला सुधी बीजीए जोजन १२ त्रइया नाग २ ॥ त्रीजीए जोजन १३ नाग १ त्रइयो ॥ चोथीए १४ जोजन ॥ पांचमीए १४ जोजन त्रइया नाग २॥ छठीए १५ जोजन त्रइयो नाग १ ॥ सातमीए १६ जोजन ॥ एटले अलोक छे ॥ एकेकी नरके वलयाने आकारे त्रण वलय छे ॥ पेली नरके ६ जोजननो घनोद्धि छे ॥ साढाचार जोजननो घनवात छे. १॥ जोजननो तनवात छे. एकएक नरके एकएक त्रइयो नाग वधारतां जाव सातमी नरके आठ जोजननो घनोद्धि छे. वळी एकेकी नरके पा पा जोजन घनवातमां वधारतां वधारतां जाव सातमी नरके ६ जोजननो घनवात छे॥वळी एकेकी नरके एक जोजनना १२ नाग करीए एवो एकेको नाग वधारतां जाव सातमी नरके बे जोजननो तनवात छे ॥ सात पृथ्वी ऊालरने संस्थाने छे. साते नरके ४ए पाथडा छे. तेनी विगत— पहेली नरके १३ पाथडा छे ॥ बीजीए ११ ॥ त्रीजीए ए ॥ चोथीए ७ ॥ पांचमीए ५ ॥ छठीए ३ ॥ सातमीए १ ॥ ए सर्व ४ए पाथडा छे ॥ एकेको पाथडो ३ हजार जोजननो जाडो छे ॥ ते मध्ये १ हजार जोजननो हेठे जाडो छे ॥ एक हजार जोजननो उपर जाडो

छे ॥ वच्चे १ हजार जोजननी पोलार छे, तेमां नारकीनो वास छे ॥ एकेको पाथडो असंख्याता जोजनना सहस्रनो लांबो पहोळो छे॥ हवे पाथडानुं आंतरो कहे छे-प्रथम नरके १२ आंतरा छे ॥ एकेके पाथडे आंतरो ११५८३ जोजन १ गाउ ६६६ धनुष्य २ हाथ १६ आंगळ एटलो छे ॥ बीजी नरके १० आंतरा छे, त्यां एकेक पाथडे आंतरो ए७०० जोजननो छे ॥ त्रीजी नरके आंतरा ८ छे, त्यां एकेक पाथडे १२३७५ जोजननो आतरो छे ॥ चोथी नरके आंतरा ६ छे, त्यां एकेक पाथडे आंतरो १६१६६ जोजन २ गाउ १३३३ धनुष्य ३२ आंगळनो छे ॥ पांचमी नरके आंतरा ४ छे, त्यां एकेक पाथडे आंतरो २५२५० जोजननो छे ॥ छठी नरके आंतरा बे छे, त्यां एकेक पाथडे आंतरो ५२५०० जोजननो छे ॥ ए समस्त पाथडाना आंतरा कह्या ॥ हवे पृथ्वीना पिंडनुं मान कहे छे ॥ प्रथम नरके १ लाख ८० हजार जोजननो पिंड छे, ते मांहिलो १ हजार जोजन उपर मुकीए, एक हजार जोजन हेठे मुकीए, वच्चे १ लाख ७८ हजार जोजननी पोलार छे तेमां १३ पाथडा ने १२ आंतरा छे. ए रीते तारतमपणे ७ पृथ्वी सुधी एमज जाणवुं ॥

सातमी नरके साढी बावन हजार जोजन उपर मुकीए, साढी बावन हजार जोजन हेठे मुकीए, वच्चे ३ हजार जोजननी पोलार छे. त्यां १ पाथडो छे ॥ साते नरके थइ ८४ लाख नरकावासा छे तेनी विगत–पहेली नरके ३० लाख नरकावासा छे, बीजीए २५ लाख, त्रीजीए १५ लाख, चोथीए १० लाख, पांचमीए ३ लाख, छठीए १ लाख पांच उणा ॥ सातमीए पांच नरकावासा छे ॥ ते मध्ये एक नरकावासो संख्याता जोजननो छे ॥ ४ नरकावासा असंख्याता जोजनना छे जे संख्याता जोजनना नरकावासा छे त्यां संख्याता नारकीनो वास छे ॥ जे असंख्याता जोजनना छे त्यां असंख्याता नारकीनो वास छे ॥ हवे संख्याताnुं मान कहे छे ॥ कोइ एक देवता ८॥ लाख जोजननुं एक डगलुं भरतां ६ मास सुधी चाले ॥ छठ्ठे मासे पार पामे, कोइ न पामे ते असंख्याता जोजनना जाणवा ॥ जे असंख्याता जोजनना छे तेनो पार न पामे ॥ संख्याता जोजनना छे तेनो पार पामे ॥ एटले नानो ते लाख जोजननो छे. मोटो ते असंख्याता जोजननो छे ॥ हवे ४९ पाथडे मध्य भागे ४९ इंद्रक नरकावासा छे, तेनां नाम कहे छे–सीमंत १, रोरुक २, रंत्र ३, उद्भ्रांत ४,

संभ्रांत ५, असंभ्रांत ६, विभ्रांत ७, तप्त ८, शीत ९, वक्रांत १०, अवक्रांत ११, विकल १२, रौरव १३ ॥ ए १३ प्रथम नरकना क्रमे प्रतरना इंद्रक जाणवा ॥ १ ॥ स्तनिक १, स्तनक २, मणक ३, चणक ४, घट्ट ५, संघट्ट ६, जिब्भ ७, अपजिब्भ ८, लोल ९, लोलावत्त १०, घणलोलुक ११, ए बीजी नरके प्रतरना क्रमे ११ इंद्रक जाणवा ॥ २ ॥ तप्त १, तपिक २, तपन ३, तापन ४, विदाघ ५, प्रज्वलित ६, उज्वलित ७, संज्वलित ८, संप्रज्वलित ९, ए त्रीजी नरके प्रतरना क्रमे ९ इंद्रक जाणवा ॥ ३ ॥ आर १, तार २, मार वच ४, तम ५, खाडखड ६, खंडखड ७, ए चोथी नरके प्रतरना क्रमे ७ इंद्रक जाणवा ॥ ४ ॥ खात १, तमस, उस ३, अंध ४, तिमिस ५. ए ५ मी नरके प्रतरना क्रमे ५ इंद्रक जाणवा ॥ ५ ॥ वाही १, बादल २, लल्लक ३ ए ७ठी नरके प्रतरना क्रमे ३ इंद्रक जाणवा ॥ ६ ॥ अपइठाण १, ए सातमी नरके प्रतर १ नो इंद्रक ( महोटो ) नरकावासो जाणवो ॥ ७ ॥ हवे साते नरके थइ आवलीका बद्ध ९६५३ नरकावासा छे तेमां केटलाएक त्र्यंश छे, केटलाएक चउरंश छे, केटलाएक वाटला छे, बाकीना पुष्पाविकिर्ण जाणवा ॥ रत्नप्रभा

पृथ्वीना उपला पिंडथकी ४२ हजार जोजन नीचे गया पछी चमरेंद्रनी राजधानी छे त्यां ७ क्रोड, ७२ लाख जवनपतिनां जवन छे, तेनी विगत–४ क्रोड ६ लाख जवन दक्षिण दिशे छे, ३ क्रोड ६६ लाख जवन उत्तर दिशे छे॥ दक्षिण दिशामां प्रथम असुर कुमारनां जवन ३४ लाख छे, नागकुमारनां ४४ लाख छे, त्रीजाने ३८ लाख, चोथाने ४० लाख, पांचमाने ४० लाख, छठाने ४० लाख, सातमाने ४० लाख, आठमाने ४० लाख, नवमाने ५० लाख, दशमाने ४० लाख जवन छे॥ उत्तर दिशामां असुर कुमारनां ३० लाख जवन छे, बीजाने ४० लाख, त्रीजाने ३४ लाख, चोथाने ३६ लाख, पांचमाने ३६ लाख, छठाने ३६ लाख, सातमाने ३६ लाख, आठमाने ३६ लाख, नवमाने ४६ लाख, दशमाने ३६ लाख, एटला जवनपतिनां जवन छे॥ हवे १० जवनपतिना मुगटनां चिह्न कहे छे–असुर कुमारने चुडामणीनुं, बीजाने नागनी फेणनुं, त्रीजाने गरुडपंखीनुं, चोथाने वज्रनुं, पांच-माने कळसनुं, छठाने सिंहनुं, सातमाने घोडानुं, आठमाने गजनुं, नवमाने मगरमच्छनुं, दशमाने सरावला संपुष्टनुं, ए चिह्न करी आप आपणी जाति जाणवी॥ हवे एनो वर्ण

कहे छे–असुर काळा, नागने उदहि पंडुरा, सुवन, दिशा ने स्तनित ए त्रण सोवनवर्णे, विज्जु, अग्नि ने दीव ए त्रण रक्तवर्णे. पवननो लीलो वर्ण ॥ ए दशे जवनपतिना वर्ण जाणवा ॥ हवे तेनां वस्त्र कहे छे–असुर कुमारनां रक्त वस्त्र ॥ नाग १, उदहि २, विज्जु ३, दीव, ४, अग्नि ५ ए ५ नां लीलां वस्त्र ॥ दिशा स्तनित ने सुवन ए त्रणनां श्वेत वस्त्र ॥ वायुकुमार ने संध्याना राग सरखां वस्त्र जाणवां ॥ ए १० जवनपतिनां वस्त्र कह्यां ॥ हवे रत्नप्रजा पृथ्वीनो उपलो पिंक हजार जोजननो छे. ते मध्ये १०० जोजन उपर मुकीए, १०० हेठे मुकीए, तेनी वच्चे १६ व्यंतरनां असंख्यातां नगर छे. उत्० जंबूद्वीप जेवमा ॥ मज्जिम महाविदेह जेवमा ॥ जघन्य जरतक्षेत्र जेवमा॥ एनी जाति ध्वजाने चिह्ने करी जाणवी ते कहे छे ॥ पहेलाने कलंबु वृक्षनुं, बीजाने शाली वृक्षनुं, त्रीजाने वम वृक्षनुं, चोथाने पाडली वृक्षनुं, पांचमाने अशोक वृक्षनुं, छठाने चंपक वृक्षनुं, सातमाने नागवृक्षनुं, आठमाने टींवरु वृक्षनुं, ए आप आपणां चिह्न कह्यां ॥ हवे तेनो वर्ण कहे छे–पिशाच, यक्ष, महोरग ने गंधर्व ए ४ श्यामवर्णे ॥ किंनर

नीला ॥ राक्षस, किंपुरिस श्वेतवर्णे ॥ जूत कृष्ण वर्णे ॥ ए ० नो वर्ण जाणवो ॥ हवे लोकनुं मान कहे ले ॥ त्रिठी दिशे असंख्याती जोजननी कोमाकोमीनुं ले ॥ तेमज उंची दिशे तथा नीची दिशे असंख्याता जोजननी कोमाकोमीनुं ले ॥ हवे असंख्यात जोजननी कोमाकोमीनुं मान कहे ले ॥ जंबूद्वीपनी ४ पोले ४ देवांगना ४ बलिपींम समकाळे उठा-ळे, अने शीघ्र गतिना धणी ६ देवता जंबूद्वीप पाखली एक चपटीमांहि २१ फेरा देइ ते ४ बलिपिंम समकाळे अध्धरथी झीली ले नीचे पमवा न दे, एवो शीघ्र गतिना धणी ६ देवता ६ दिशे चाल्या ॥ तेवारे कोइ एक व्यवहारीयाने घेर एक दीकरानो जन्म थयो, तेनुं आयुष्य १ हजार वर्षनुं, तेना ७ परिया एवे आउखे थया तोए लोकनो पार पाम्या ? नोइणट्ठे समट्ठे ॥ तेनां नाम गोत्र क्षय गया तोपण लोकनो पार पाम्या ? नोइणट्ठे समट्ठे ॥ तो स्वामी केटला लगी गया ? घणुं गया अने थोरुं बाकी रह्या ॥ मेरु पर्वतनो कंद त्यां रुचक प्रदेश थकी लोकनुं मान मपाय ॥ ते लोकने विषे असंख्याता द्वीपसमुद्र ले ॥ ते असंख्यातानुं मान अढी उद्धार सागरे जेटला रोमखंम होय अथवा

२५ कोमाकोमी पल्योपमे जेटला रोमखंम होय तेटला द्वीप समुद्र छे ॥ अथवा वारुणी द्वीप पछी संसारमांहि जेटली शुन्न वस्तुनां नाम छे तेने वर अने वरावन्नास शब्द जोमतां एकेक वस्तुने नामे त्रण त्रण द्वीप समुद्रनां नाम थाय तेवी रीते पण एकेके नामे असंख्याता द्वीपसमुद्र छे, यावत् विन्नास समुद्रसुधी ते पण असंख्यात ज गणवा ॥ पछी त्यांथी एकेके नामे देव १, नाग २, जक्ष ३, नूत ४, अने स्वयंनूरमण एम पांच द्वीप तथा समुद्र छे ५ ॥ हवे समस्त द्वीप अने समुद्रनो मध्यतो जंबूद्वीप ज छे ते जंबूद्वीप पूर्ण चंद्रमाने अथवा पूर्ण पुमलाने आकारे छे ॥ बाकी सर्व द्वीपसमुद्र वलयाने आकारे छे ॥ जंबूद्वीप १ लाख जोजननो छे तेनी विगत–प्रथम दक्षिण उत्तरे पहोळानुं मान कहे छे–५२६ जोजन ६ कलानो नरतक्षेत्र पहोळो छे, तेने छेमे १०५२ जोजन १२ कलानो चूलहीमवंत पर्वत छे, तेने छेमे २१०५ जोजन ५ कलानुं हेमवय क्षेत्र छे, तेने छेमे ४२१० जोजन १० कलानो महाहेमवंत पर्वत छे, तेने छेडे ८४२१ जोजन १ कलानुं हरिवास क्षेत्र छे, तेने छेमे १६८४२ जोजन २ कलानो निषध पर्वत छे, तेने छेमे ३३६८४ जोजन ४ कलानो महावि-

देहनो विभाग छे, तेने छेडे १६८४२ जोजन २ कलानो नीलवंत पर्वत छे, तेने छेडे ८४२१ जोजन १ कलानुं रम्यग्वास क्षेत्र छे, तेने छेडे ४२१० जोजन १० कलानो रूपी पर्वत छे, तेने छेडे २१०५ जोजन ५ कलानुं एरणवय क्षेत्र छे, तेने छेडे १०५२ जोजन १२ कलानो शिखरी पर्वत छे, तेने छेडे ५२६ जोजन ६ कलानुं ऐरवतक्षेत्र छे, ए सर्वे दक्षिण उत्तर पोहोळा कह्या ॥ हवे पूर्व पश्चिम लांबा कहे छे ॥ १४५२८ जोजन ११ कलानो भरतक्षेत्र लांबुं छे, ३७६७४ जोजन १६ कला देशे ऊणो हेमवय क्षेत्र लांबुं छे, ७३९०१ जोजन १७॥ कला हरिवास क्षेत्र लांबुं छे, एक लाख जोजन महाविदेह क्षेत्र लांबुं छे, ७३९०१ जोजन १७॥ कला रम्यक्वास क्षेत्र लांबुं छे, ३७६७४ जोजन १६ कला देशे ऊणुं एरणवय क्षेत्र लांबुं छे, १४५२८ जोजन ११ कला एरवत क्षेत्र लांबुं छे, ए क्षेत्र लांबां कह्यां ॥ हवे वासधर पर्वतनुं लांबापणुं कहे छे ॥ २४९३२ जोजन हेमवंत पर्वत लांबो छे, ५३९३१ जोजन महाहेमवंत पर्वत लांबो छे, ९४१५६ जोजन २ कलानो निषधने नीलवंत पर्वत लांबो छे, ५३९३१ जोजन झाझेरो रूपी पर्वत लांबो छे, २४९३२ जोजन शिखरी

पर्वत लांबो छे, ए वासधर पर्वतनुं लांबापणुं कह्युं ॥ हवे ऊंचापणुं कहे छे ॥ चूलहिमवंत पर्वत अने शिखरी पर्वत १०० जोजनना ऊंचा छे, १०० गाउ नीचे धरतीमां छे. महाहेमवंत पर्वत अने रूपीपर्वत २०० जोजन ऊंचा छे, २०० गाउ नीचे धरतीमां छे. निषध नीलवंत पर्वत ४०० जोजन ऊंचा छे, ४०० गाउ नीचे धरतीमां छे. मानुष्योतर पर्वत १७२१ जोजन उंचा छे, १७२१ गाउ नीचे धरतीमां छे ॥ जंबूद्वीप पूर्व पश्चिम लाख जोजननो छे तेनुं पहोलपणुं कहे छे ॥ ५८४२ बे वनमुख छे, ३५० जोजन ६ अंतर नदी छे, ४००० जोजनना ८० वखारा पर्वत छे, ४४००० जोजनना बे भद्रसाल वन छे. १०००० जोजन मेरु पर्वत जाडो छे, ३५४०४ जोजन विजयनुं पहोलपणुं छे, ए जंबूद्वीपनुं पहोलपणुं कह्युं. तेनी परिधि ३१६२२७ जोजन ३ गाउ १२८ धनुष्य १३॥ आंगुलनी जाणवी. ए जंबूद्वीपने चारे दिशे ४ दरवाजा छे. तेनुं अंतर ७९०५२ जोजन देशे ऊणुं छे. जंबूद्वीपनुं क्षेत्रफल सातसें नेवु कोडी, ५६ लाख, ९४ हजार, १५० जोजन अने पोणा बे गाउ तथा साडीबासठ हाथ थाय अर्थात् जोजन जोजनना ककडा करीए तो उपर कह्या तेटला थाय ॥

जंबूद्वीप पहोळो १ लाख जोजननो छे तेने फरतो २ लाख जोजननो लवण समुद्र छे, तेने फरतो ४ लाख जोजननो धातकी खंड छे, तेने फरतो ८ लाख जोजननो कालोदधि समुद्र छे, तेने फरतो १६ लाख जोजननो पुष्करद्वीप छे ॥ मेरुपर्वत ९९००० जोजन उंचो छे. एक हजार जोजन धरतीमां उंडो छे. तेना मध्य भागथी दक्षिण उत्तरे पुष्करार्द्ध सुधी गणीए, एम करतां ४५ लाख जोजन थाय ते मनुष्यक्षेत्र जाणवुं. तेनी परिधि १ कोडी ४२ लाख ३० हजार २४९ जोजन थाय. उपरांत द्वीपसमुद्र ठाम बमणां जाणवा ॥ हवे जंबुद्वीपनी नदीओनो विचार कहे छे ॥ जंबूद्वीप मध्ये मेरु पर्वतनी दक्षिण दिशे ७ नदी शाश्वती छे तेनी विगत ॥ प्रथम गंगा अने सिंधु चूलहिमवंत पर्वतथी निकली छे ॥ मूले जाडपणे ६। जोजन–पूर्व पश्चिम भरत मध्ये चाली, समुद्रमां भळी. त्यां पहोळपणुं ६२॥ जोजननुं छे. गंगा नदीनो परिवार १४००० नदीनो छे. सिंधु नदीनो परिवार १४००० नदीनो छे ॥ त्रीजी रोहितंसा नदी ते पण चूलहेम-वंतना पद्मद्रहथी उत्तरी, पेले पासे हेमवय क्षेत्र मध्ये चाली. मूले पहोलपणुं

१२॥ जोजननो छे, अंते समुद्रमां जली, त्यां १२५ जोजन पहोलपणो छे ॥ चोथी रोहिता नदी ते महाहेमवंतना द्रहथी उतरी, ते आ वाजु हेमवंत क्षेत्र मध्ये चाली. मूले पहोळपणुं १२॥ जोजननुं छे. अंते समुद्र मध्ये जळी, त्यां पहोळपणुं १२५ जोजननुं छे. ए बन्ने नदीनो परिवार २८००० नदीनो छे ॥ पांचमी हरिकांता नदी छे ॥ छठी हरिसलीला नदी. ते महाहेमवंतनां द्रह थकी उतरी ते पहेले पासे हरिवास क्षेत्र मध्ये चाली. मूले पहोलपणुं २५ जोजननुं छे, अंते समुद्र मध्ये मळी. पूर्व पश्चिमने पासे, त्यां २५० जोजन पहोलपणुं छे. ए वेउनो परिवार ५६००० नदीनो छे ॥ सातमी सीता नदी ते निषध पर्वतना द्रह थकी उतरी, ते पहेले पासे देवकुरुक्षेत्र मध्ये चाली. मूले पहोलपणुं ५० जोजननुं छे. अंते समुद्र मध्ये जळी, त्यां ५०० जोजन पहोळी छे. तेनो परिवार ५३२००० नदीनो छे ॥ हवे मेरुनी उत्तरनी दिशाए ७ शाश्वती नदी छे. प्रथम सीतोदा नदी ते नीलवंत पर्वतना द्रहथी उतरी, उत्तर कुरुक्षेत्र मध्ये चाली. मूले पहोळपणुं ५० जोजननुं छे, अंते समुद्रमां जळी त्यां ५०० जोजन पहोळी छे,

तेनो परिवार ५३२००० नदीनो छे ॥ बीजी नारीकंता, त्रीजी नरकंता, ए बे रूपी पर्वतना द्रहथी उतरी, ते आ तरफ रम्यक्वास क्षेत्र मध्ये चाली. मूले पहोळपणुं २५ जोजन, अंते समुद्रमां जळी, त्यां २५० जोजन पहोळी छे, ए बेनो परिवार ५६००० नदीनो छे ॥ चोथी रूपकुला, पांचमी सोवन्नकुला ॥ ते मध्ये रूपकुला नदी रूपी पर्वतना द्रहथकी उतरी, ते ऐरणवय क्षेत्र मध्ये चाली, मूले १२॥ जोजन पहोळपणुं छे, अंते समुद्र मध्ये जळी, त्यां १२५ जोजन पोहोळी छे, अने सोवन्नकुला नदी शिखरी पर्वतना द्रह थकी उतरी, ते आ तरफ ऐरणवय क्षेत्र मध्ये चाली, मूले १२॥ जोजननुं पहोळपणुं छे, अंते समुद्र मध्ये जळी, त्यां १२५ जोजन पहोळी छे, ए बेनो परिवार २८००० नदीनो छे ॥ छठी रत्ता, सातमी रतवइ ॥ ते शिखरी पर्वतना द्रहथकी उतरी, ते ऐरवत्त क्षेत्रे पेले पासे पूर्व पश्चिम दिशे चाली, मूले ६। जोजन पहोलपणुं छे, अंते समुद्र मध्ये जळी, त्यां ६२॥ जोजन पहोळी छे. ए बे नदीनो परिवार १४००० नदीनो छे ॥ सर्व मळी १४५६००० नदीनो परिवार छे ॥ हवे पर्वत आश्री कहे छे ॥ सर्व मळी अढी द्वीप मध्ये १३४९ शाश्वता

पर्वत छे ॥ हवे ४ समुद्र प्रत्येक प्रत्येक रसना छे ते कहे छे ॥ लवण समुद्र खारो १ ॥ मद्य सरिखो वारुणी २ ॥ खीर समुद्र दूध सरिखो ३ ॥ घय समुद्र घृत सरिखो ४ ॥ कालोदधि, पुष्कर अने स्वयंभूरमण ए त्रण समुद्र स्वछ पाणीना छे, बाकी सर्व समुद्र इक्षु रसना छे सर्व समुद्र १००० जोजन ऊंडा छे ॥ हवे ज्योतिषीनो विचार कहे छे ॥ द्वीप समुद्र मध्ये चंद्रमा, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, तारा सघळे छे, तेनो विवरो ॥ जंबुद्वीप मध्ये २ चंद्रमा २ सूर्य छे ॥ लवण समुद्र मध्ये ४ चंद्रमा ४ सूर्य छे ॥ धातकी खंड मध्ये १२ चंद्रमा १२ सूर्य छे ॥ कालोदधि समुद्र मध्ये ४२ चंद्रमा ४२ सूर्य छे ॥ पुष्करार्द्ध मध्ये ७२ चंद्रमा ७२ सूर्य छे ॥ पुष्करद्वीप मध्ये १४४ चंद्रमा १४४ सूर्य छे ॥ पुष्कर समुद्र मध्ये ४९२ चंद्रमा ४९२ सूर्य छे ॥ वारुणी द्वीप मध्ये १६७० चंद्रमा १६७० सूर्य छे ॥ वारुणी समुद्र मध्ये ५७३६ चंद्रमा ५७३६ सूर्य छे ॥ क्षीर द्वीप मध्ये १९५७४ चंद्रमा १९५७४ सूर्य छे ॥ क्षीर समुद्र मध्ये ६६७६४ चंद्रमा ६६७६४ सूर्य छे ॥ घृत द्वीप मध्ये २२७२७७ चंद्रमा २२७२७७ सूर्य छे ॥ घृत समुद्र मध्ये ७७९४२४ चंद्रमा ७७९४२४ सूर्य छे ॥ इक्षु

द्वीप मध्ये २६६११२० चंद्रमा २६६११२० सूर्य छे ॥ इक्षु समुद्र मध्ये ९०८५६३२ चंद्रमा ९०८५६३२ सूर्य छे ॥ नंदीश्वर द्वीप मध्ये ३१०२०२८८ चंद्रमा ३१०२०२८८ सूर्य छे ॥ नंदीश्वर समुद्र मध्ये १०५९०९८८० चंद्रमा १०५९०९८८० सूर्य छे ॥ अरुणद्वीप मध्ये ३६१५९८९७६ चंद्रमा ३६१५९८९७६ सूर्य छे ॥ अरुण समुद्र मध्ये २५८२३८६२१८ चंद्रमा, २५८२३८६२१८ सूर्य छे ॥ ते उपरांत द्वीपसमुद्र, जे संख्याता जोजनना छे, त्यां संख्याता चंद्रमा अने संख्याता सूर्य छे ॥ जे द्वीप समुद्र असंख्याता जोजननां छे त्यां असंख्याता चंद्रमा अने असंख्याता सूर्य छे. ॥ ज्योतिष चक्र अढि द्वीप मध्ये चर छे ॥ अढि द्वीप बहार ज्योतिष चक्र स्थिर छे तेनुं परिमाण अढी द्विपना ज्योतिषी विमान करतां अरुधुं छे अने ज्योति पण अरुधी छे ॥ अर्द्ध कोठाने संस्थाने छे ते स्फाटिक रत्नमय छे ॥ प्रथम पृथ्वी रत्नप्रभा थकी ७९० जोजन मध्ये ज्योतिष चक्र नथी, ते ऊपर ११० जोजन मध्ये ज्योतिष चक्र छे ॥ ७९० जोजने तारानां विमान छे ॥ ८०० जोजने सूर्यनुं विमान छे ॥ ८८० जोजने चंद्रमानुं विमान छे ॥ ८८४ जोजने नक्षत्रनां विमान छे ॥ ८८८ जोजने

बुद्धनुं विमान छे ॥ ८८१ जोजने शुक्रनो विमान छे ॥ ८८४ जोजने बृहस्पतिनुं विमान छे ॥ ८८७ जोजने मंगळनुं विमान छे ॥ ९०० जोजने शनिश्चरनुं विमान छे ॥ एक चंद्रमानो परिवार ८८ ग्रह २८ नक्षत्र, ६६ हजार ए सें ७५ एटली कोमाकोमी तारानां विमान छे ॥ तेटलो परिवार सूर्यनो पण जाणवो ॥ चंद्रमानुं विमान एक जोजनना ६१ नाग करीए तेमांना ५६ नागनुं लांबुं पहोळुं ने २८ नागनुं उंचुं ने जाकुं छे ॥ त्रिगुणी जाझेरी परिधि छे ॥ सूर्यनुं विमान ६१ या ४८ नागनुं लांबुं पहोळुं छे ने २४ नागनुं उंचु ने जाकुं छे ॥ त्रिगुणी जाझेरी परिधि छे ॥ ग्रहनां विमान २ गाउ लांबां पहोळां छे ॥ एक गाउना उंचा ने जाकां छे, त्रिगुणी जाझेरी परिधि छे ॥ नक्षत्रनां विमान १ गाउ लांबां पहोळां छे अर्द्ध गाउनां उंचा ने जाकां छे ॥ त्रिगुणी जाझेरी परिधि छे ॥ तारानां विमान अर्द्ध गाउ लांबां पहोळां छे॥पा गाउ उंचा ने जाकां छे, त्रिगुणी जाझेरी परिधि छे ॥ चंद्रमानुं विमान १६ हजार देवता उपाडे छे ॥ ते ४ हजार हाथीने रूपे दक्षिण दिशे ॥ ४ हजार सिंहने रूपे पूर्व दिशे ॥ ४ हजार घोमाने रूपे उत्तर दिशे ॥ ४ हजार वृषनने रूपे पश्चिम

दिशे उपाडे छे ॥ तेम सूर्यने पण जाणवुं ॥ एरीते ४ दिशे ८ हजार देवता ग्रहनां विमानने उपाडे छे, तेमज ४ हजार देवता नक्षत्रनां विमानने उपाडे छे, तेमज २ हजार देवता तारानां विमानने उपाडे छे ॥ चारे दिशे चारे रूपे चंद्रमानी माफक जाणवुं ॥ चालवानी गति चंद्रमानी मंद गति छे, तेथी सूर्यनी गति उतावळी, तेथी ग्रहनी गति उतावळी, तेथी नक्षत्रनी गति उतावळी, तेथी तारानी गति उतावळी ॥ चंद्रमाना एक विमानथी बीजा चंद्रमाना विमानने १ लाख जोजन फाफेरानुं आंतरुं छे ॥ एक सूर्यथी बीजा सुर्यने १ लाख जोजन फाफेरुं आंतरु छे ॥ सूर्य चंद्रमाने ५० हजार जोजननुं आंतरुं छे ॥ चंद्रमा ने सूर्यनां विमानने ५० हजार जोजननुं आंतरुं छे ॥ हवे ज्योतिषीना उत्कृष्ट व्याघात आश्रि आंतरां कहे छे ॥ १२२४२ जोजन आंतरुं छे ते केम ? १० हजार जोजन मेरुनो कंद छे अने ११२१ जोजन ज्योतिषी चक्र मेरु थकी अळगुं फरे छे ॥ ते बेउ पासानां आंतरां अने मेरुनो कंद सर्व मळी उ० १२२४२ जोजन आंतरु थाय ॥ ज० २६६ जोजन आंतरुं ते किम ? निषध नीलवंत पर्वतना कुट २५० जोजन पहोळा छे ते थकी ८ जोजन ज्योतिषचक्र अळगुं

फरे छे ते बेउ पासानुं आंतरुं अने कुटनो कंद सर्व मळी २६६ जोजन थाय ॥ हवे निर्व्याघाते आंतरुं ॥ निर्व्याघात ते शुं ? ज्यां पर्वत कुट आडुं नथी ते ॥ त्यां उ० गाउ २ नुं आंतरुं ॥ ज० ५०० धनुष्यनुं आंतरुं जाणवुं ॥ ए आंतरुं कह्युं ॥ हवे सूर्यनुं तेज उंचुं १०० जोजन अने नीचुं १८०० जोजन तपे ॥ ते केम ? रत्नप्रभा पृथ्वी थकी पश्चिमना पासानी पांचमी विजय १००० जोजन उंडी छे अने रत्नप्रभा पृथ्वी थकी ८०० जोजन सूर्य उंचो छे ॥ सर्व मळी एटलुं थाय ॥ ४७२६३ जोजनने एक जोजनना, ६० भाग करीए तेमांना २१ भाग एटलुं त्रीछुं तेज करे ॥ एनां विमान समस्त वाटला संस्थाने छे ॥ हवे ज्योतिषचक्रथी असंख्यात जोजननी कोडाकोडी उंचा जइए त्यारे त्यां बार देवलोक नव ग्रैवेयक अने पांच अनुत्तर विमान आवे छे ॥ ते शेने आधारे छे ? पहेलुं, बीजुं देवलोक घनोदधिने आधारे छे, तेनी उपरना ३ देवलोक घन वा ने आधारे छे, ते उपरना ३ देवलोक घनोदधि अने घनवातने आधारे छे, ते उपर ४ देवलोक, ए ग्रैवेयक अने ५ अनुत्तर विमान ए सर्व आकाश प्रतिष्ठित छे ॥ पहेला बीजा देवलोकनां तला

२६०० जोजनना जाम्रां छे ॥ ते उपरना २ देवलोकनां तळां २५०० जोजननां जाम्रां छे ॥ ते उपरना २ देवलोकनां तळां २४०० जोजननां जाम्रां छे ॥ ते उपरना ४ देवलोकनां तळां २३०० जोजननां जाम्रां छे ॥ नव ग्रैवेयकनां तळां २२ सें जोजननां जाम्रां छे ॥ पांच अनुत्तर विमाननां तळां २१ सें जोजननां जाम्रां छे ॥ पहेला बीजा देवलोकनां विमान ५०० जोजन उंचां छे ॥ ते उपरना २ देवलोकनां विमान ६०० जोजन उंचां छे ॥ ते उपरना २ देवलोकनां विमान ७०० जोजन उंचां छे ॥ ते उपरना २ देवलोकनां विमान ८०० जोजन उंचां छे ॥ ते उपरना ४ देवलोकनां विमान ९०० जोजन उंचां छे ॥ ते उपर ए ग्रैवेयकनां विमान १००० जोजन उंचां छे ॥ पांच अनुत्तर विमान ११०० जोजन उंचां छे ॥ पहेला ४ देवलोक अर्द्धचंद्राकार छे ॥ ते उपरना ४ देवलोक पूर्णचंद्राकारे छे ॥ ते उपरना ४ देवलोक अर्द्धचंद्राकारे छे ॥ नव ग्रैवेयक बेडाने आकारे छे ॥ चार अनुत्तर विमान अर्द्धचंद्राकारे छे ॥ पांचमुं पूर्णचंद्राकारे छे ॥ पहेला बीजा देवलोके ५ वर्ण छे ॥ ते उपरना २ देवलोके ४ वर्ण छे, काळो नथी ॥ ते उपरना २ देवलोके ३ वर्ण

छे, कालो नीलो नथी ॥ ते उपरना २ देवलोके बे वर्ण छे, पीळो ने धोळो ॥ ते उपरना ४ देवलोक, ए ग्रैवेयके धोळो वर्ण छे ॥ पांच अनुत्तर विमाने उत्कृष्टो श्वेत वर्ण छे ॥ बार देवलोक ए ग्रैवेयक अने ५ अनुत्तर विमाने १० प्रकारना मनोज्ञ जोग छे॥ मनोज्ञ शब्द १ ॥ मनोज्ञ रूप २ ॥ मनोज्ञ गंध ३ ॥ मनोज्ञ रस ४ ॥ मनोज्ञ स्पर्श ५ ॥ मनोज्ञ कान्ति ६ ॥ मनोज्ञ लावण्य बोलवानुं ७ ॥ मनोज्ञ गति चालवानी ८ ॥ मनोज्ञ आज्ञ-रणनी ज्योति ए ॥ मनोज्ञ आयुष्यनी स्थिति १० ॥ हवे देवलोकमां प्रतर ६२ छे तेनी विगत ॥ पहेले बीजे थइ १३ प्रतर छे ॥ त्रीजे चोथे १२ प्रतर छे ॥ पांचमे ठ प्रतर छे ॥ छठे ५ प्रतर छे ॥ उपला ६ देवलोके चार चार प्रतर छे ॥ ए ग्रैवेयकनां ए प्रतर छे ॥ पांच अनुत्तर विमाननुं १ प्रतर छे ॥ हवे विमाननी संख्या कहे छे ॥ पहेला सौ-धर्मे ३२ लाख विमान छे ॥ बीजे २८ लाख विमान छे ॥ त्रीजे १२ लाख विमान छे ॥ चोथे ८ लाख विमान छे ॥ पांचमे ४ लाख विमान छे ॥ छठे ५० हजार विमान छे ॥ सातमे ४० हजार विमान छे ॥ आठमे ६ हजार विमान छे ॥ नवमे दशमे ४०० विमान

छे ॥ अग्यारमे वारमे ३०० विमान छे ॥ पहेली त्रीके १११ विमान छे ॥ बीजी त्रीके १०७ विमान छे ॥ त्रिजी त्रीके १०० विमान छे ॥ पांच अनुत्तरनां ५ विमान छे ॥ सर्व मळी ८४९७०२३ विमान छे ॥ तेमां केटलांएक संख्याताने केटलाएक असंख्याता जोजननां छे ॥ तेमां सर्व देवलोके थई २५८६ वाटला विमान छे ॥ २६०० त्र्यंश विमान छे ॥ २६०४ चउरंस विमान छे ॥ सर्व मळी आवलीकाबंध विमान ७०७४ छे ॥ बाकी ८४८९१४९ पुष्पाविकीर्णक छे ॥ हवे सर्वार्थसिद्ध विमानथी १२ जोजन उंची सिद्धिशिला छे, ते ४५ लाख जोजन लांबी पहोळी छे, आठ जोजन मध्ये जाडी छे, छेडे मांखीनी पांखथी पातळी छे ॥ तेनी परिधि १४२३०२४९ जोजन १ गाउ १७ धनुष्य ६ हाथ १३ आंगळ झाझेरी छे ॥ उज्वल जेवो शंख, अंकरत्न, जेवो मचकुंद, जेवुं दुधनुं फीण, जेवो रूपानो पट, जेवां चंद्रमानां किरण, जेवुं दहींनुं खोट, तेथी ते अधिक उजळी छे ॥ ते उपर एक जोजनने २४ मे अग्र विभागे सिद्ध रह्या छे ॥ लोकने मस्तके रह्या छे ॥ अलोकथी ४ आंगळ नीचे रह्या छे ॥ ३१ गुणे करी विराजमान छे ॥ ते ३१ गुण कहे छे ॥ पांच ज्ञानावर्णीय

क्षय कर्या, ए दर्शनावर्णीय क्षय कर्या, बे वेदनीय क्षय कर्या, समकित मोहनीय, चारित्र मोहनीय क्षय कर्या, ४ गतिनां आउखां क्षय कर्या, शुन्न नाम अशुन्न नाम क्षय कर्या, उंच गोत्र नीच गोत्र क्षय कर्या, दानांतराय, लान्नांतराय, न्नोगांतराय, उपन्नोगांतराय, वीर्यांतराय क्षय कर्या ॥ ए ३१ गुणे करी सहित सिद्ध छे ॥ हवे १४ राज कहे छे ॥ सात पृथ्वी नीचे ७ राज छे ॥ रत्नप्रन्नाथी उंचुं सौधर्म देवलोक सुधी १ राज ॥ सौधर्मथी माहेंद्र देवलोक सुधी २ राज ॥ माहेंद्रथी लांतक सुधी ३ राज ॥ लांतकथी सहसार सुधी ४ राज ॥ सहसारथी अच्युत सुधी ५ राज ॥ अच्युतथी ए ग्रैवेयक सुधी ६ राज ॥ ए ग्रैवेयकथी लोकना अंत सुधी ७ राज ॥ एटले ७ राज काझेरा नीचा ने ७ राज माठेरा उंचा जाणवा ॥

इति न्नवनद्वार संपूण ॥ ६ ॥

---

हवे सातमुं गतागतिद्वार कहे छे ॥

हवे कया दंमकमांथी कया दंमकमां जाय, क्यांथी आवे ते कहे छे ॥ नरकमां

तिर्यंच पंचेन्द्रिय समुर्च्छिम अने गर्भज अने मनुष्य गर्भज ए बेमांथी आवे ॥ नरकना नीकळ्या तिर्यंच पंचेंद्रिय गर्भज ने गर्भज मनुष्यमां जाय ॥ ए समुच्चय कह्यो ॥ हवे विस्तारथी कहे छे ॥ नरकमां क्यांनो आवे कइ नरके जाय ? पहेली नरके तिर्यंच पंचेंद्रिय समुर्च्छिम ने गर्भज जाय ॥ बीजी नरके भुजपर जाय ॥ त्रीजी सुधी खेचर जाय ॥ चोथी सुधी चउपद सिंहादिक जाय ॥ पांचमी सुधी उरपर सर्प जाय ॥ छट्ठी सुधी स्त्री जाय ॥ सातमी सुधी नर नपुंसक मच्छादिक जाय ॥ हवे नरकना नीकळ्या क्यां आवे ते कहे छे ॥ सातमी नरकनो नीकळ्यो मनुष्य न थाय पण तिर्यंच पंचेंद्रिय गर्भजमां जाय ॥ पांमे तो समकित पामे, पण विरती कशी न पामे ॥ छठी नरकनो नी-कळ्यो तिर्यंच पंचेंद्रिय गर्भज अने मनुष्य गर्भजमां आवे, पामे तो देशविरती, पण सर्व-विरती न पामे ॥ पांचमी नरकनो नीकळ्यो तिर्यंच गर्भज ने मनुष्य गर्भजमां आवे, पामे तो सर्वविरती, पण केवल ज्ञान न पामे ॥ चोथी नरकनो नीकळ्यो तिर्यंच गर्भज ने मनुष्य गर्भजमां आवे, पामे तो केवल ज्ञान पामे, पण तीर्थंकरपद न पामे ॥ त्रीजी

नरकनो नीकळ्यो तीर्थंकरपद पामे, पण वासुदेव बलदेवनी पदवी न पामे ॥ बीजी नरकनो नीकळ्यो वासुदेवनी पदवी पामे, पण चक्रवर्त्तीनी पदवी न पामे ॥ पहेली नरकनो नीकळ्यो चक्रवर्त्ती विगेरे सघळी पदवी पामे ॥ हवे ज्ञवनपतिमां तिर्यंच पंचेंड्रिय-समुर्च्छिम अने गर्ञ्ञज, मनुष्य गर्ञ्ञज ए बेमांथी आवे ॥ त्यांनो नीकळ्यो बादर पृथ्वी अप ने प्रत्येक वनस्पति, तिर्यंच पंचेंड्रिय गर्ञ्ञज, मनुष्य गर्ञ्ञज एटलामां आवे॥ पृथ्वी-मां नारकी वर्जी बाकी २३ दंरुक थकी आवे, त्यांनो नीकळ्यो नारकी देवता वर्जी बाकी १० दंरुकमां जाय ॥ अपमां नारकी वर्जी २३ दंरुकनो आवे, त्यांनो नीकळ्यो नारकी देवता वर्जी १० दंरुकमां जाय ॥ वनस्पतिमां नारकी वर्जि बाकी २३ दंरुकमांथी आवे, त्यांनो नीकळ्यो नारकी देवता वर्जी १० दंरुकमां जाय ॥ तेउ वायुमां नारकी देवता वर्जी बाकी १० दंरुकमांथी आवे, त्यांनो नीकळ्यो नारकी देवता मनुष्य वर्जी नव दंरुकमां जाय ॥ विगलेंड्रिय त्रणे १० दंरुकमां जाय ॥ एमां नारकी देवता वर्जी बाकी १० दंरुकमांथी आवे ॥ तिर्यंच समुर्च्छिम पंचेंड्रियमां नारकी दवता वर्जी बाकी

१० दंडकमांथी आवे, एमांथी नीकळ्या ज्योतिषी वैमानिक वर्जी बाकी २२ दंडकमां जाय ॥ हवे गर्भज तिर्यंचमां २४ दंडकथी आवे, चोवीसे दंडकमां जाय ॥ उपर आठमा देवलोक उपरांत न जाय ॥ हवे मनुष्य गर्भजमां तेउवाउ वर्जी २२ दंडकमांथी आवे, त्यांना नीकळ्या २४ दंडके जाय ॥ हवे मनुष्य समुर्छिममां तेउवायु नारकी देवता वर्जी बाकी ८ दंडकमांथी आवे, त्यांना नीकळ्या देवता नारकी वर्जी बाकी १० दंडकमां जाय ॥ वाणव्यंतरमां तिर्यंच पंचेंद्रिय समुर्छिम ने गर्भज अने गर्भज मनुष्यमांथी आवे, त्यांना नीकळ्या बादर पृथ्वी अप ने प्रत्येक वनस्पति, तिर्यंच पंचेंद्रिय गर्भज, मनुष्य गर्भज एमां जाय ॥ ज्योतिषीमां तिर्यंच पंचेंद्रिय गर्भज अने मनुष्य गर्भजमांथी आवे, त्यांना नीकळ्या बादर पृथ्वी अप ने प्रत्येक वनस्पति तिर्यंच पंचेंद्रिय गर्भज, मनुष्य गर्भजमां जाय ॥ वैमानिक पेहला बीजा देवलोकमां तिर्यंच पंचेंद्रिय गर्भज, मनुष्य गर्भजमांथी आवे, त्यांना नीकळ्या बादर पृथ्वी अप ने प्रत्येक वनस्पति, तिर्यंच पंचेंद्रिय गर्भज, मनुष्य गर्भज ए पांचमां जाय ॥ त्रीजा देवलोकथी मांडी आठमा सुधी

तिर्यंच पंचेंद्रिय गर्भज अने मनुष्य गर्भज एमांथी आवे, त्यांना नीकळ्या तिर्यंच गर्भज पंचेंद्रिय अने मनुष्य गर्भजमां जाय ॥ नवमा देवलोकथी सर्वार्थसिद्ध सुधी मनुष्य गर्भजमांथी आवे, त्यांना नीकळ्या गर्भज मनुष्यमां जाय ॥ मनुष्य गर्भज मोक्ष पण जाय, पण त्यांथी आवे नहि ॥ हवे १ समये मोक्ष जाय तेनी संख्या अने क्यांथी केटला जाय ते कहे छे ॥ पहेली ३ नरकना नारकीना जीव मनुष्य गर्भजमां आवे ॥ एक समये १० मोक्ष जाय ॥ ए संज्ञा सघळे जाणवी ॥ चोथीना ४ जाय ॥ पांचमी छठी सातमीना नीकळ्या न जाय ॥ भवनपतिना देवताना १० जाय ॥ तेनी देवीनां ५ जाय ॥ पृथ्वी अपना ४ जाय ॥ तेउ वायुना न जाय ॥ वनस्पतिना ६ जाय ॥ विगलेंद्रियना ४ ज्ञान पामे, पण मोक्ष न जाय ॥ तिर्यंच पंचेंद्रियना १० जाय ॥ तिर्यंचणीना १० जाय ॥ मनुष्य गतिना १० जाय ॥ पुरुष लिंगे १० जाय ॥ स्त्रीलिंगना २० जाय ॥ नपुंसकलिंगना १० जाय व्यंतरना १० जाय ॥ तेनी देवीना ५ जाय ॥ ज्योतिषीना १० जाय ॥ तेनी देवीना २० जाय ॥ वैमानिकना १०८ जाय ॥ तेनी देवीना २० जाय ॥ उंचा लोकमांथी ४ जाय ॥ नीचा लोकमांथी २० जाय ॥

त्रीछा लोकमांथी १०८ जाय ॥ समुद्रमांथी २ जाय ॥ शेष जळमांथी ३ जाय ॥ उत्कृष्टी अवगाहनानां २ जाय ॥ मध्यम अवगाहनानां १०८ जाय ॥ जघन्य अवगाहनाना ४ जाय ॥ स्वलिंगना १०८ जाय ॥ अन्यलिंगे १० जाय ॥ गृहलिंगे ४ जाय ॥ नंदनवनमांथी २ जाय ॥ पुरुषथी पुरुष थइने १०८ जाय ॥ बाकी ८ जांगे १० जाय ॥ पुरुषथी स्त्रीलिंगे थइ १० जाय ॥ पुरुषथी नपुंसकलिंगे थइ १० जाय ॥ स्त्रीथी पुरुषलिंगे थइ १० जाय ॥ स्त्रीथी स्त्री थइने १० जाय ॥ स्त्रीथी नपुंसक थइ १० जाय ॥ नपुंसकथी पुरुष थइ १० जाय ॥ नपुंसकथी स्त्री थइ १० जाय ॥ नपुंसकथी नपुंसक थइ १० जाय ॥ एक समये जे जे गतिना मनुष्यमां आवी उत्कृष्टा मोक्ष एक समये जाय ते कह्या ॥ हवे १५ जेदे सिद्ध थाय ते कहे छे ॥ तीर्थ सिद्धा १ ॥ अतीर्थ सिद्धा २ ॥ तीर्थंकर सिद्धा ३ ॥ अतीर्थंकर सिद्धा ४ ॥ स्वयंबुद्ध सिद्धा ५ ॥ प्रत्येक बुद्ध सिद्धा ६ ॥ बोधबोहि सिद्धा ७ ॥ स्वलिंग सिद्धा ८ ॥ अन्यलिंग सिद्धा ९ ॥ गृहलिंग सिद्धा १० ॥ पुरुषलिंग सिद्धा ११ ॥ स्त्रीलिंग सिद्धा १२ ॥ नपुंसक लिंग सिद्धा १३ ॥ एक सिद्धा १४ ॥ अनेक सिद्धा १५ ॥ हवे

स्वलिंग सिद्धा ते कहे छे ॥ पहेले समये १०८ मोक्ष जाय ॥ बीजे समये १०२ जाय ॥ त्रीजे समये ए६ जाय ॥ चोथे समये ७४ जाय ॥ पांचमे समये ७२ जाय ॥ छठे समये ६० जाय ॥ सातमे समये ४८ जाय ॥ आठमे समये ३२ जाय ॥

इति गतागतिद्वार संपूर्ण ॥ ७ ॥

---

हवे आठमुं संघयणद्वार कहे छे ॥

वज्रऋषभ नाराच संघयण १ ॥ ऋषभ नाराच संघयण २ ॥ नाराच संघयण ३ ॥ अर्द्धनाराच संघयण ४ ॥ किलकु संघयण ५ ॥ छेवटु संघयण ६ ॥ हवे वज्रऋषभ नाराच संघयण ते केने कहिये ? जे अस्थिनां छेमा परस्पर वींटाया होय वच्चे अस्थिनी खिली अने उपर अस्थिनो पाटो एवी रीते देहनी संधि सर्वे होय, ते प्रथम संघयण जाणवुं॥ ऋषभ नाराच ते केने कहिये ? तेने बन्ने पासे अस्थिना छेमा विंटाया होय अने उपर पाटो होय वच्चे खिली न होय, ए बीजुं संघयण जाणवुं ॥ २ ॥ त्रीजुं नाराच ते केने कहिये ? तेने बन्ने पासे अस्थिनां छेमा विंटाया होय अने वच्चे खिली पाटो न होय,

ए त्रीजुं संघयण जाणवुं ॥ ३ ॥ चोथुं अर्द्धनाराच संघयण ते केने कहिये ? अस्थिनो छेडो एक बाजुनो विंटायो होय, बीजो सामो अस्थिनो छेडो अडकी रहे, अने बीजी पासे खीली होय, ते चोथुं संघयण जाणवुं ॥ ४ ॥ पांचमुं किलकु संघयण ते केने कहिये? संधिनो अस्थि बन्ने उपरना छेडे आवी रहे अने वच्चे खीली होय पण उपर पाटो नहि अने बन्ने अस्थिना प्रांत परस्पर विंटाया नहि ते पांचमुं संघयण जाणवुं ॥ ५ ॥ छट्ठुं छेवट्ठु संघयण ते केने कहिये ते संघयण वच्चे खिली नहि पाटो नहि, बन्ने बाजु अस्थिनां छेडा परस्पर विंटाया नहि एवा अव्यवस्थित अस्थिना सांधा, सामसामा अडकी रहे अने अति नबलुं ते छठुं छेवट्ठु संघयण जाणवुं ॥ ६ ॥ नारकी देवता असंघयणी, ५ एकेंद्रिय, ३ विगलेंद्रिय, तिर्यंच पंचेंद्रिय समुर्छिम ने मनुष्य समुर्छिम एटलाने छेवट्ठु संघयण ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय गर्भज ने मनुष्य गर्भजमां संघयण ६ लाभे ॥ सिद्ध असंघयणी जाणवा ॥

इति संघयणद्वार संपूर्ण ॥ ७ ॥

हवे नवमुं संठाणद्वार कहे छे ॥

समचउरंस संस्थान १ ॥ निगोह परिमंडल संस्थान २ ॥ सादि संठाण ३ ॥ वामन संठाण ४ ॥ कुब्ज संठाण ५ ॥ हुंड संठाण ६ ॥ हवे समचउरंस संठाण ते केने कहिये? जे चारे बाजु सरखुं होय ॥ पद्मासन बेठां जेटलुं बन्ने जानुनुं आंतरुं ॥ तेटलुं वळी आसनने ललाटनुं आंतरुं ॥ वळी तेटलुंज आंतरुं डावा जानुथी जमणा स्कंध सुधी, अने जमणा जानुथी डाबा स्कंध सुधी, एटले चारे बाजु सरखुं आंतरुं होय ते समचउरंस संठाण जाणवुं ॥ १ ॥ निगोह परिमंडल संठाण ते केहने कहिये ? जे वडवृक्षनी माफक उपर पूर्ण अने नाभीथी नीचे हीनांग ते बीजुं संठाण जाणवुं ॥ २ ॥ सादि संठाण ते केहने कहिये? जे नाभी नीचे युक्तमान प्रमाण, पग कटी जानु प्रमुख सर्व रुडुं होय, अने नाभीथी उपल्यो सर्व पाडवो होय, हैयुं हाथ माथुं मुख प्रभृति सर्व अति कुराकृति होय ते त्रीजुं संठाण जाणवुं ॥ ३ ॥ कुब्ज संठाण ते केने कहिये? जे संस्थाने हाथ पग मस्तक ग्रीवा एटलां प्रमाणोपेतवाळां होय, अने उदर पुंठ मुख प्रमुख वांकुं होय ते चोथुं संठाण

जाणवुं ॥ ४ ॥ वामन संठाण ते केने कहिये ? जे पूर्वना चोथाथी उपरांतुं होय ते पांचमुं संठाण जाणवुं ॥ ५॥ हुंम ते केहने कहिये ? रुंढ मूंढ मृगापुत्र लोढीयानी माफक अंगे अवयवे करी अलक्षण होय, सर्वांगे पारुवो ते छठुं हुंम संठाण जाणवुं ॥ ६ ॥ नारकी जवधारणीय अने वैक्रेय शरीर करे तोये हुंम संठाण ॥ देवताने जवधारणीय सम चउरंस संठाण, वैक्रेय शरीर करे तो नाना संठाण संठिया, बार देवलोक सुधी वैक्रेय करे, ते उपरांत न करे॥ पृथ्वीने हुंम संठाण पण चंद्राकारे तथा मसुरनी दाळने आकारे छे॥ अपने हुंम संठाण पण जळना परपोटानो आकार छे॥ तेउने हुंम संठाण पण सोयना भारानी अणीनो आकार छे॥ वायुने हुंम संठाण पण ध्वजा पताकानो आकार छे॥ वनस्पतिने हुंम संठाण पण नाना प्रकारनो आकार छे॥ विगलेंद्रिय,समुर्छिम तिर्यंच पंचेंद्रिय,मनुष्य समुर्छिमने हुंम संठाण ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय गर्भज, ने मनुष्य गर्भजने छए संठाण होय॥

इति संठाणद्वार संपूर्ण ॥ ए ॥

हवे दसमुं वेद द्वार कहे छे ॥

वेद ३, ते स्त्रीवेद १ ॥ पुरुषवेद २॥ नपुंसकवेद ३ ॥ नारकी, एकेंद्रिय, विगलेंद्रिय, तिर्यंच पंचेंद्रिय समुर्छिम, समुर्छिम मनुष्य ए सर्वने १ नपुंसक वेद जाणवुं ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय गर्भज ने मनुष्य गर्भजमां वेद ३ लाभे ॥ देवतामां वेद २ ॥ स्त्रीवेद १ पुरुषवेद २ ॥ ते भवनपति आदि देइ २ देवलोक सुधी वेद २ लाभे ॥ उपर सघळा पुरुषवेदी जाणवा ॥ अल्प बहुत्व कहे छे ॥ सर्वथी थोमा गभवकंतिय मणुसा १ ॥ मनुसणी संखेज्ज गुणी २ ॥ बादर तेउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ३ ॥ अणुत्तरोववाइया देवा असंखेज्ज गुणा ४ ॥ उवरीमगेविज्जगादेवा असंखेज्जगुणा ५ ॥ मज्झिमगेविज्जगादेवा संखेज्जगुणा ६॥ हेठीमगेविज्जगादेवा संखेज्जगुणा ७ ॥ अचूएकप्पे देवा संखेज्जगुणा ८ ॥ आरणे कप्पे देवा संखेज्जगुणा ए ॥ पाणए कप्पे देवा संखेज्जगुणा १० ॥ आणए कप्पे देवा संखेज्जगुणा ११ ॥ अहेसत्तमाए पुढवीए नेरइया असंखेज्जगुणा १२ ॥ छठीतमाए पुढवीए नेरइया असंखेज्जगुणा १३ ॥ सहसारे कप्पे देवा असंखेज्जगुणा १४ ॥ महा कप्पे देवा असंखेज्जगुणा

१५ ॥ पंचमाए धूम्मप्पन्नाए पुढवीए नेरइया असंखेज्जगुणा १६ ॥ लंतए कप्पे देवा असंखेज्जगुणा १७ ॥ चउत्थीए पंकप्पन्नाए पुढवीए नेरइया असंखेज्जगुणा १८ ॥ बंभलोए कप्पे देवा असंखेज्जगुणा १९ ॥ तच्चाए वालुयप्पन्नाए पुढवीए नेरइया असंखेज्जगुणा २० ॥ माहिंदकप्पेदेवा असंखेज्जगुणा २१ ॥ ॥ सणंकुमार कप्पेदेवा असंखेज्जगुणा २२ ॥ दोच्चाए सक्करप्पन्नाए पुढवीए नेरइया असंखेज्जगुणा २३ ॥ समुच्छिम मणुसा असंखेज्जगुणा २४ ॥ इसाणे कप्पे देवा असंखेज्जगुणा २५ ॥ इसाणे कप्पे देवीओ संखेज्जगुणी २६ ॥ सुहम्मे कप्पे देवा संखेज्जगुणा २७ ॥ सुहम्मे कप्पे देवीओ संखेज्जगुणी ॥ २८ ॥ भवणवासी देवा असंखेज्जगुणा २९ ॥ भवणवासिणी देवीओ संखेज्जगुणी ३० ॥ इमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए नेरइया असंखेज्जगुणा ३१ ॥ खहयर पंचिंदिय तिरिख जोणिया पुरिसा असंखेज्जगुणा ३२ ॥ खहयर पंचिंदिय तिरिख जोणिणीओ संखेज्जगुणी ३३ ॥ थलयर पंचिंदिय तिरिख जोणिया पुरिसा संखेज्जगुणा ३४ ॥ थलयर पंचिंदिय तिरिख जोणिणीओ संखेज्जगुणी ३५ ॥ जलयर पंचिंदिय तिरिख जोणिया पुरिसा

संखेज्जगुणा ३६ ॥ जलयर पंचिंदिय तिरिख जोणिणीओ संखेज्जगुणी ३७ ॥ वाणवंतर देवा संखेज्जगुणा ३८ ॥ वाणवंतरवासि देवीओ संखेज्जगुणी ३९ ॥ जोइसिया देवा संखेज्जगुणा ४० ॥ जोइसिणी देवीओ संखेज्जगुणी ४१ ॥ खहयर पंचिंदिय तिरिख जोणिया नपुंसगा संखेज्जगुणा ४२ ॥ थलयर पंचिंदिय तिरिख जोणिया नपुंसगा संखेज्जगुणा ४३ ॥ जलयर पंचिंदिय तिरिख जोणिया नपुंसगा संखेज्जगुणा ४४ ॥ चउरिंदिया पज्जत्ता संखेज्जगुणा ४५ ॥ पंचिंदिया पज्जत्ताय विसेसाहिया ४६ ॥ बेइंदिया पज्जत्ता विसेसाहिया ४७ ॥ तेइंदिया पज्जत्ता विसेसाहिया ४८ ॥ पंचिंदिया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ४९ ॥ चउरिंदिया अपज्जत्ता विसेसाहिया ५० ॥ तेइंदिया अपज्जत्ता विसेसाहिया ५१ ॥ बेइंदिया अपज्जत्ता विसेसाहिया ५२ ॥ पत्तेय सरीर बायर वणस्सइकाइया पज्जत्ता असंखेज्जगुणा ५३ ॥ बायर निगोदा पज्जत्ता असंखेज्जगुणा ५४ ॥ बादर पुढवी काइया पज्जत्ता असंखेज्जगुणा ५५ ॥ बादर आउकाइया पज्जत्ता असंखेज्जगुणा ५६॥ बादर वाउकाइया पज्जत्ता असंखेज्जगुणा ५७॥ बादर तेउकाइया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा

५८ ॥ पत्तेय सरीर बादर वणस्सइकाइया अपजात्ता असंखेज्जगुणा ५९ ॥ बादर निगोदा अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ६० ॥ बादर पुढवीकाइया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ६१ ॥ बादर आउकाइया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ६२ ॥ बादर वाउकाइया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ६३ ॥ सुहुम तेउकाइया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ६४ ॥ सुहुम पुढवी काइया अपज्जत्ता विसेसाहिया ६५ ॥ सुहुम आउकाइया अपज्जत्ता विसेसाहिया ६६ ॥ सुहुम वाउकाइया अपज्जत्ता विसेसाहिया ६७ ॥ सुहुम तेउकाइया पज्जत्ता संखेज्जगुणा ६८ ॥ सुहुम पुढवी काइया पज्जत्ता विसेसाहिया ६९ ॥ सुहुम आउकाइया पज्जत्ता विसेसाहिया ७० ॥ सुहुम वाउकाइया पज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ७१ ॥ सुहुम निगोदा अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ७२ ॥ सुहुमनिगोदा पज्जत्ता संखेज्जगुणा ७३ ॥ अभवसिद्धिया अणंतगुणा ७४ ॥ पडिवाइ सम्मदिट्ठि अणंतगुणा ७५ ॥ सिद्ध अणंतगुणा ७६ ॥ बादर वणस्सइ काइया पज्जत्ता अणतगुणा ७७ ॥ पज्जत्ता विसेसाहिया ७८ ॥ बादर वणस्सइ काइया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ७९ ॥ बादर अपज्जत्ता विसेसाहिया ८० ॥ समुच्चय बादर विसेसाहिया ८१ ॥ सुहुम

वणस्सइ काइया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ७२ ॥ सुहुम अपज्जत्ता विसेसाहिया ७३ ॥ सुहुम वणस्सइ काइया पज्जत्ता संखेज्जगुणा ७४ ॥ सुहुम पज्जत्ता विसेसाहिया ७५ ॥ समुच्चय सुहुमा विसेसाहिया ७६ ॥ जवसिद्धिया विसेसाहिया ७७ ॥ निगोद जीवा विसेसाहिया ७८ ॥ वणस्सइ काइया जीवा विसेसाहिया ७९ ॥ एगिंदिया जीवा विसेसाहिया ८० ॥ तिरिखजोणिया विसेसाहिया ८१ ॥ मिछदिट्ठी विसेसाहिया ८२ ॥ अविरया जीवा विसेसाहिया ८३ ॥ सकसाइया विसेसाहिया ८४ ॥ छउमत्थजीवा विसेसाहिया ८५ ॥ सजोगी जीवा विसेसाहिया ८६ ॥ संसारत्थाजीवा विसेसाहिया ८७ ॥ सव्वजीवा विसेसाहिया ८८ ॥ ए अठाणुं बोलनो अल्प बहुत्व जाणवो ॥ सर्वथी थोडा पुरुषवेद ॥ १ ॥ तेथी स्त्रीवेद संख्यातगुणी ॥ २ ॥ तेथी नपुंसकवेद अनंतगुणा ॥ ३ ॥ मनुष्य पुरुषथी मनुष्यणी स्त्री २७ गुणी अधिक ॥ देवताथी देवी ३२ गुणी अधिक ॥ तिर्यंचथी तिर्यंचणी ३ गुणी अधिक ॥ पुरुषनो विषय खडना पुळा सरिखो ॥ स्त्रीनो विषय बकरानी लिंडीना ताप सरिखो ॥ नपुंसकनो विषय नगरना दाह सरिखो ॥ जवनपति व्यंतर ज्योतिषी वैमानिक

पहेला बीजा देवलोक सुधीमां मनुष्यनी माफक जोग छे ॥ ते उपरना बे देवलोके स्पर्शनो जोग छे ॥ ते उपरना बे देवलोके रूपनो जोग छे ॥ ते उपरना बे देवलोके शब्दनो जोग छे ॥ ते उपरना ४ देवलोके मननो जोग छे ॥ ते उपरांत देवताने जोग नथी.

॥ इति वेदद्वार संपूर्ण ॥ १० ॥

---

हवे जोगद्वार कहे छे ॥

जोग १५, तेमां मनना ४ ते साचुं मन १ ॥ जूठुं मन २ ॥ मिश्र मन ३॥ व्यवहार मन ४॥ वचनना जाग ४ ते साचुं वचन १ ॥ जूठुं वचन २ ॥ मिश्र वचन ३ ॥ व्यवहार वचन ४ ॥ कायाना जोग ७ ते उदारिक १ ॥ उदारिकनो मिश्र २ ॥ वैक्रेय ३ ॥ वैक्रेयनो मिश्र ४ ॥ आहारक ५ ॥ आहारकनो मिश्र ६ ॥ कार्मण कायजोग ७॥ नारकी देवताने जोग ११ ते मनना ४ ॥ वचनना ४ ॥ कायाना ३ ते वैक्रेय १ वैक्रेयनो मिश्र २ कार्मणकाय जोग ॥ ॥ पृथ्वी १ अप २ तेउ ३ वनस्पति ४ ए ४ ने जोग ३॥

उदारिकनो १ उदारिकनोमिश्र २ कार्मण कायजोग ३ ॥ वायुने जोग ५ ते उदारिक १ ॥ उदारिकनो मिश्र २ ॥ वैक्रेय ३ ॥ वैक्रेयनो मिश्र ४ ॥ कार्मणकाय जोग ५ ॥ विगलेंड्रियने जोग ४ ते उदारिक १ ॥ उदारिकनो मिश्र २ ॥ कार्मण काय जोग ३ ॥ व्यवहार जाषा ४ ॥ तिर्यंच पंचेंड्रिय समुर्छिमने विगलेंड्रियनी माफक जाणवुं ॥ तिर्यंच पंचेंड्रिय गर्नजने जोग १३ ते मनना ४ ॥ वचनना ४ ॥ उदारिक १ ॥ उदारिकनो मिश्र २ ॥ वैक्रेय ३ ॥ वैक्रेयनो मिश्र ४ ॥ कार्मण काय जोग ५ ॥ ए ५ कायाना मली १३ जोग जाणवा ॥ मनुष्य समुर्छिमने जोग जेम विगलेंड्रियने तेम जाणवा ॥ मनुष्य गर्नजने जोग १५ जाणवा ॥ सिद्ध अजोगी कहीये ॥

इति जोगद्वार संपूर्ण ॥ ११ ॥

---

हवे उपयोग द्वार कहे ढे ॥

उपयोग १२, ते मतिज्ञान १ ॥ श्रुतज्ञान २ ॥ अवधिज्ञान ३ ॥ मनःपर्यवज्ञान ४ ॥

केवलज्ञान ५ ॥ मतिअज्ञान ६ ॥ श्रुतअज्ञान ७ ॥ विजंगज्ञान ८ ॥ चक्षुदर्शन ९ ॥ अचक्षु-दर्शन १० ॥ अवधिदर्शन ११ ॥ केवलदर्शन १२ ॥ ए १२ उपयोग २४ दंमक उपर उतारे छे ॥ नारकीने उपयोग ९, ते केवलज्ञान, केवलदर्शन, मनःपर्यवज्ञान ए ३ वर्जीने बाकीना ९ जाणवा ॥ तेमां समदृष्टिने ६ उपयोग, ३ अज्ञान नहि ॥ मिथ्यात्वीने ६ उपयोग, ३ ज्ञान नहि ॥ देवताने ९ उपयोग समुच्चये नारकीनी परे ॥ तेमां समदृष्टिने ६ उपयोग, ३ अज्ञान नहि ॥ मिथ्यात्वीने ६ उपयोग, ३ ज्ञान नहि ॥ नवरं अनुत्तर विमाने ६ उपयोग, त्यां ३ अज्ञान नहि ॥ पांच एकेंड्रियने ३ उपयोग, ते मति अज्ञान १ ॥ श्रुत अज्ञान २ ॥ अचक्षुदर्शन ३ ॥ बेइंड्रिय तेइंड्रियने उपयोग ५ ते मतिज्ञान १ ॥ श्रुतज्ञान २ ॥ मतिअज्ञान ३ ॥ श्रुत अज्ञान ४ ॥ अचक्षु दर्शन ५ ॥ चउरिंड्रियने ६ उपयोग तेमां चक्षुदर्शन वध्यो ॥ तिर्यंच पंचेंड्रिय समुर्छिमने चउरिंड्रियनी माफक ॥ तिर्यंच पंचेंड्रिय गर्जजने नेरइयानी माफक ॥ मनुष्य समुर्छिमने उपयोग ४ ते मति अज्ञान १ ॥ श्रुत-अज्ञान २ ॥ चक्षुदर्शन ३ ॥ अचक्षुदर्शन ४ ॥ मनुष्य गर्जज ने उपयोग १२ लाजे ॥

सिद्धने उपयोग २ ते केवलज्ञान १, केवलदर्शन २ ॥

इति उपयोगद्वार संपूर्ण ॥ १२ ॥

---

हवे शरीरद्वार कहे छे ॥

शरीर ५, ते उदारिक १ ॥ वैक्रय २ ॥ आहारक ३ ॥ तेजस् ४ ॥ कार्मण ५ ॥ देवताने ३ शरीर, ते वैक्रेय १ ॥ तेजस् २ ॥ कार्मण ३ ॥ नारकीने पण तेमज जाणवुं ॥ पुढवी, अप, तेउ, वनस्पतिने ३ शरीर, ते उदारिक १ ॥ तेजस् २ ॥ कार्मण ३ ॥ वायराने शरीर ४ ते वैक्रेय वध्युं ॥ विगलेंद्रियने शरीर ३ ते उदारिक १ ॥ तेजस् २ ॥ कार्मण ३ ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय समुर्छिम तथा मनुष्य समुर्छिमने ३ शरीर, ते उदारिक १ ॥ तेजस् २ ॥ कार्मण ३ ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय गर्नजने शरीर ४, ते वैक्रेय वध्युं ॥ मनुष्य गर्नजने शरीर ५ ॥ सिद्ध अशरीरी कहिये ॥

इति शरीरद्वार संपूर्ण ॥ १३ ॥

---

हवे गुणठाणाद्वार कहे छे ॥

गुणठाणा १४ ते मिथ्यात्व १॥ साश्वादान २ ॥समामिथ्यात्व ३ ॥ अव्रत्ति समदिठि ४ ॥ देशविरति ५॥ प्रमत्त ६॥ अप्रमत्त ७ ॥ निवृत्ति बादर ८ ॥ अनिवृत्ति बादर ९ ॥ सूक्ष्मसंपराय १० ॥ उपशातमोह ११ ॥ क्षीणमोह १२॥ सजोगी केवली १३ अयोगी केवली १४ ॥ नारकी देवताने गुणठाणा ४, ते मिथ्यात्व १ ॥ साश्वादान २ ॥ मिश्र ३ ॥ अविरति समदृष्टि ४ ॥ ए ग्रैवेयके गुणठाणा ३ ॥ मिथ्यात्व १ ॥ साश्वादान २ ॥ अविरति ३ ॥ अनुत्तर विमाने गुणठाणुं १ ॥ अविरति सम्यक्दृष्टि ॥ विगलेंद्रियने गुणठाणा २, ते मिथ्यात्व १ ॥ साश्वादान २ ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय समुर्छिमने गुणठाणा २, ते मिथ्यात्व १ ॥ साश्वादान २ ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय गर्भजने गुणठाणा ५, ते मिथ्यात्व आदि यावत् देशविरति ॥ मनुष्य समुर्छिमने गुणठाणुं १, मिथ्यात्व ॥ मनुष्य गर्भजने गुणठाणा १४ जाणवां ॥ सिद्धने गुणठाणुं एके नहि ॥

इति गुणठाणाद्वार संपूर्ण ॥ १४ ॥

 

हवे दृष्टिद्वार कहे छे ॥

दृष्टि ३, ते समकित १ ॥ मिथ्यात्व २ ॥ मिश्रदृष्टि ३ ॥ नारकी देवताने ३ दृष्टि लाजे ॥ नव ग्रैवेयकमां दृष्टि २, ते समकित १ ॥ मिथ्यात्व २ ॥ अनुत्तर विमाने दृष्टि १ समकित ॥ एकेंद्रियने दृष्टि १ मिथ्यात्व ॥ विगलेंद्रिय तिर्यंच पंचेंद्रिय समुर्छिमने दृष्टि २, ते समकित १ ॥ मिथ्यात्व २ ॥ मनुष्य समुर्छिमने दृष्टि १ मिथ्यात्व ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय गर्जज, मनुष्य गर्जजने दृष्टि ३ लाजे ॥ सिद्धमां दृष्टि १ समकितनी लाजे ॥

इति दृष्टिद्वार संपूर्ण ॥ १५ ॥

---

हवे पर्याप्तिद्वार कहे छे ॥

पर्या ६, ते आहार पर्या १ ॥ शरीर पर्या २ ॥ इंद्रिय पर्या ३ ॥ श्वासोश्वास पर्या ४ ॥ जाषा पर्या ५ ॥ मनः पर्या ६ ॥ नारकी देवताने ५ पर्या ॥ जाषा मन साथे बांधे ॥ एकेंद्रिय ५ ने मनुष्य समुर्छिमन पर्या ४ पहेली जाणवी ॥ ३ विगलेंद्रियने तिर्यंच पंचें-

ड्रिय समुर्छिमने पर्या ५ पहेली ॥ तिर्यंच पंचेंड्रिय गर्न्नजने मनुष्य गर्न्नजने पर्या ६ जाणवी ॥ सिद्धने पर्या नथी ॥

इति पर्याद्वार संपूर्ण ॥ १६ ॥

---

हवे प्राणद्वार कहे छे ॥

प्राण १०, ते इंड्रिय ५, ३ जोग ८, श्वासोच्छ्वास ए, आउखुं १० ॥ नारकी देवताने प्राण १० ॥ एकेंड्रियने प्राण ४ ॥ स्पर्शेंड्रिय १ ॥ कायबल २ ॥ श्वासोच्छ्वास ३ ॥ आउखुं ४ ॥ बेइंड्रियने प्राण ६ तेमा मुख अने वचन ए बे वध्या ॥ तेइंड्रियने प्राण ७ ते नासिका वधी ॥ चउरिंड्रियने प्राण ८ ते चक्षु वधी ॥ तिर्यंच पंचेंड्रिय समुर्छिमने प्राण ए ते कान वध्यो ॥ मनुष्य समुर्छिमने प्राण ८ ते मनबल वचनबल ए बे नहि ॥ तिर्यंच पंचेंड्रिय गर्न्नजने, मनुष्य गर्न्नजने प्राण १० ॥ सिद्धने ड्रव्य प्राण नथी पण नाव प्राण ४ छे ॥

इति प्राणद्वार संपूर्ण ॥ १७ ॥

---

हवे नाण अनाणद्धार कहे छे ॥

ज्ञान ५, ते मतिज्ञान १ ॥ श्रुतज्ञान २ ॥ अवधिज्ञान ३ ॥ मनःपर्यवज्ञान ४ ॥ केवलज्ञान ५ ॥ त्रण अज्ञान ते मति अज्ञान १ ॥ श्रुत अज्ञान २ ॥ विज्ञंग ज्ञान ३ ॥ नारकीने ज्ञान ३ प्रथम, अज्ञान ३ नी नजना ॥ नवनपति वाणव्यंतरने ज्ञान ३ प्रथम, अज्ञान ३ नी नजना ॥ ज्योतिषी वैमानिकने ज्ञान ३ प्रथम, अज्ञान ३ नियमा ॥ नवरं अनुत्तर विमाने ज्ञान ३ प्रथम छे, अज्ञान नथी ॥ एकेंड्रिय ५ ने मतिअज्ञान १ ॥ श्रुत अज्ञान २ ॥ विगलेंड्रिय ने तिर्यंच पंचेंड्रिय समुर्छिमने मतिनाण श्रुतनाण ॥ मति-अनाण श्रुतअनाण ॥ तिर्यंच पंचेंड्रिय गर्नजने ज्ञान ३ अने अज्ञान ३ नी नजना ॥ मनुष्य समुर्छिमने मतिअज्ञान श्रुतअज्ञान ॥ मनुष्य गर्नजने ज्ञान ५, अज्ञान ३ नी नजना ॥ पहेली नरके नारकी उत्कृष्टो ४ गाउ देखे, जघन्य ३॥ गाउ देखे ॥ बीजी नरके नारकी उत्० ३॥ गाउ देखे, ज० गाउ ३ देखे ॥ त्रीजी नरके उत्० गाउ ३ देखे, ज० २॥ गाउ देखे ॥ चोथी नरके उत्० २॥ गाउ, ज० २ गाउ देखे ॥ पांचमी नरके

उत्० २ गाउ, ज० १॥ गाउ देखे ॥ छठीए उ० १॥ अने ज० १ गाउ देखे ॥ सातमीए उ० १ गाउ देखे, ज० अर्द्धगाउ देखे ॥ एवुं चारे दिशे देखे ॥ हवे असुर कुमार ज० २५ जोजन देखे, उ० असंख्याता द्वीपसमुद्र देखे ॥ तेना नवनिकाय ज० २५ जोजन, उ० संख्याता द्वीपसमुद्र देखे ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय गर्भज ज० आंगुलनो असंख्यातमो भाग, उ० संख्याता द्वीपसमुद्र देखे ॥ मनुष्य गर्भज ज० अंगुलनो असंख्यातमो भाग, उ० असंख्याता द्वीप समुद्र देखे ॥ वली जेवडो लोक तेवडां असंख्याता खांडुयां अलोक-मांहि देखे ॥ व्यंतर ज० २५ जोजन देखे, उ० संख्याता द्वीपसमुद्र देखे ॥ ज्योतिषी ज० उ० संख्याता द्वीपसमुद्र देखे ॥ वैमानिक पहेला बीजा देवलोकना देवता ज० २५ जोजन देखे, उ० नीचे पहेली नरक सुधी देखे, त्रिछुं असंख्याताद्वीप समुद्र देखे, ऊंचे पोताना विमानना ध्वजा सुधी देखे ॥ त्रीजा चोथानां बीजी नरक सुधी देखे ॥ ऊंचु त्रिछुं पहेला २ देवलोकनी माफक जाणवुं॥ पांचमा छठाना त्रीजी नरक सुधी देखे॥ ऊंचु त्रिछुं तेमज जाणवुं ॥ सातमा आठमाना चोथी नरक सुधी देखे ॥ ऊंचुं त्रिछु जिम

पढमे ॥ नवमा, दशमा, अग्यारमा, बारमाना पांचमी नरक सुधी देखे ॥ उंचु त्रिछुं जिम पढमे ॥ नव ग्रैवेयकना छठी नरक सुधी देखे ॥ उंचु त्रिछुं जिम पढमे ॥ चार अनुत्तर विमान ना सातमी नरक सुधी देखे ॥ उंचु त्रिछुं जिम पढमे ॥ सर्वार्थसिद्धना आखी लोकनाली कांइक उणी देखे ॥ सिद्ध लोकालोक समस्त देखे ॥

इतिनाण अनाणद्वार संपूर्ण ॥ १७ ॥

---

हवे १८ मुं संजतिद्वार कहे छे ॥

संजति आदि आठे बोले चोवीस भेद कहे छे ॥ संजति १ ॥ असंजति २ ॥ संजतासंजति ३ ॥ व्रति १ ॥ अव्रति २ ॥ व्रताव्रति ३ ॥ पच्चखाणी १ ॥ अपच्चखाणी २ ॥ पच्चखाणापच्चखाणी ३ ॥ पंमिया १ ॥ अपंमिया २ ॥ पंमियापंमिया ३ ॥ सुत्ता १ ॥ जागरियां २ ॥ सुत्ताजागरिया ३ ॥ संवुमा १ ॥ असंवुमा २ ॥ संवुमासंवुमा ३ ॥ धम्मिया १ ॥ अधम्मिया २ ॥ धम्माधम्मिया ३ ॥ धम्मववसाइया १ ॥ अध-

म्मववसाइया २ ॥ धम्माधम्मववसाइया ३ ॥ ए आठे बोलना त्रण२ प्रकार जाणवा ॥ नारकी देवता एकेंड्रिय विगलेंड्रिय तिर्यंच पंचेंड्रिय समुर्च्छिम, मनुष्य समुर्च्छिम ए सर्व असंजति, अव्रति, अपच्चखाणी, अपंम्रिया, अजागरा, असंवुडा, अधम्मिया, अधम्मववसाइया एटला बोल जाणवा ॥ तिर्यंच पंचेंड्रिय गर्जज संजतासंजति आदि देइ यावत् धम्माधम्मववसाइया ए १६ बोल जाणवा ॥ मनुष्य गर्जजमां एकेका बोलना त्रण त्रण प्रकार गणतां २४ बोल लाने ॥ सिद्धने एमानो एके बोल न लाने ॥

इति संजतिद्वार संपूर्ण ॥ १ए ॥

---

हवे २० मुं आहारद्वार कहे छे ॥

आहारना त्रण प्रकार॥ ओज आहार जे समस्त जीव उपजतां करे ते कहीए१ ॥ रोम आहार जे त्वचाए करी ग्रहण करे ते कहीए २ ॥ कवल आहार ते कवल नरी पुद्गल ग्रहण करे ते कहीए ३ ॥ नारकीने आहार २ ते ओज अने रोम॥ चिंतव्या पछी अशुन अने अमनोज्ञपणे परिणमे ॥ देवताने आहार २ ओज अने रोम ॥ चिंतव्या पछी

शुभ मनोज्ञकारिया परिणमे ॥ एकेंद्रिय पांचेने आहार २ ते ओज अने रोम, ते शुभाशुभपणे परिणमे ॥ ३ विगलेंद्रिय तिर्यंच पंचेंद्रिय समुर्छिम अने गर्भज, मनुष्य गर्भज एटलाने आहार ३ जाणवा ॥ मनुष्य समुर्छिमने आहार २ ते ओज अने रोम ॥ सिद्ध अणाहारी जाणवा ॥

इति आहार द्वारसंपूर्ण ॥ २० ॥

हवे बीजे प्रकारे २१ मुं आहारद्वार कहे छे ॥

आहार ३, ते सचित्त १ ॥ अचित्त २ ॥ मिश्र ३ ॥ नारकी देवता अचित्त आहार लिये, बाकी सघळा त्रण आहार लिये, सिद्ध एके आहार न लिये ॥

इति २१ मुं आहारद्वार संपूर्ण ॥ २१ ॥

हवे २२ मुं इछा आहारद्वार कहे छे ॥

संसारी जीवने आहार लेवानी इछा उपजे ते कहे छे ॥ नारकीने अंतर्मुहूर्त्ते आहारनी इछा

उपजे ॥ असुर कुमारने जघन्य चउत्थ भक्ते, उत्कृष्ट सागर १ जाजेरुं आउखुं छे, तेने १ हजार जाजेरा वर्षे आहारनी इछा उपजे ॥ तेना नवनिकायने ज० चउत्थ भक्ते, उ० पृथक् दिवसे ॥ व्यंतरने ज० चउत्थ भक्ते, उ० पृथक् दिवसे ॥ ज्योतिषीने जघनोत्कृष्ट पृथक् दिवसे॥ वैमानिकने ज० पृथक् दिवसे, उ० ज्यां जेटला सागर आयु त्यां तेटला हजार वर्षे आहार लेवानी इछा उपजे ॥ ज्यां जाजेरा सागर त्यां जाजेरा हजार वर्षे आहारनी इछा उपजे॥ एकेंद्रिय पांचेने समये समये आहारनी इछा उपजे ॥ विगलेंद्रियने अंतर्मुहूर्ते इछा उपजे ॥ तिर्यंच पंचेंद्रियने छठ भक्ते आहारनी इछा उपजे ॥ मनुष्यने अठम भक्ते इछा उपजे ॥ देवकुरु उत्तरकुरुए अठम भक्ते ॥ हरिवास रम्यकवासे छठ भक्ते ॥ हेमवय एरणवए चउत्थ भक्ते आहारनी इछा उपजे ॥ सिद्ध अणाहारा ॥

इति २२ मुं इछा आहारद्वार संपूर्ण ॥ २२ ॥

हवे २३ मुं कायस्थितिद्वार कहे छे ॥

नारकी देवताने जेने जेटली आयुस्थिति छे तेने तेटली कायस्थिति जाणवी ॥

पुढवी अप तेउ वायुमां गयो थको जीव कालथी असंख्याती उत्सार्प्पिणी अवसार्प्पिणी काल रहे ॥ क्षेत्रथी असंख्याता लोक पुरे ॥ ते लोकनुं मान–लोकक्षेत्र मांहि १ मनथी कल्पीने आंगुल क्षेत्र भाग चिंतवीए, ते १ आंगुल क्षेत्रमांहि एटला आकाश प्रदेश छे ॥ ते आकाश प्रदेश समये समये एकेको काढीए तो ते १ आंगुल क्षेत्रे असंख्याती उत्स-र्प्पिणी अवसर्प्पिणीए अवहराय कहेतां छलवाय ॥ एक हाथ तथा १ धनुष्य तथा १ गाउ क्षेत्र छलवातां केटलो काल थाय? ते असंख्याती उत्सार्प्पिणी अवसार्प्पिणी काल छलवाता थाय ॥ एम आखो लोक छलवातां पण एटलो काल थाय, एटले १ लोके, एम असंख्याता लोक छलवातां जेटलो काल थाए तेटली असंख्याती उत्सार्प्पिणी अवसर्प्पिणी जाणवी ॥ ए उत्कृष्टो काल कह्यो ॥ जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी स्थिति जाणवी ॥ बादर काय पृथिव्यादि एकेकी मांहि गयो थको ७० कोडाकोडी सागर रहे ॥ ए उत्कृष्टो काळ जाणवो, ज० अंतर्मुहूर्त्त रहे ॥ वनस्पति कायमां गयो थको काले अनंती उत्सार्प्पिणी अवसर्प्पिणी काल रहे ॥ क्षेत्रे अनंता लोक पुरे॥ असंख्याता पुद्गल परावर्त्तन करे ॥ ते

असंख्यातानुं मान कहे छे ॥ आवली १ ने असंख्यातमे भागे जेटला समय थाय, तेटला पुद्गल परावर्त्तन करे, ज० अंतर्मुहूर्त्त ॥ १ ॥ एकली सूक्ष्म निगोद्मां गयो थको काले असंख्याती उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणी काल रहे ॥ क्षेत्रे असंख्याता लोक पुरे ॥ २ ॥ सूक्ष्म अने बादर निगोद् ए बेमां गयो थको, काले अनंती उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणी काल रहे ॥ क्षेत्रे अनंता लोक अढि पुद्गल परावर्त्तन करे ॥ ३ ॥ एकली बादर निगोद्मां गयो थको ७० कोडाकोडी सागर रहे ॥ ४ ॥ प्रत्येकमां गयो थको ७० कोडाकोडी सागर रहे ॥ ५ ॥ बादर निगोद् प्रत्येक वनस्पतिमां गयो थको, काले असंख्याती उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणी काल रहे ॥ क्षेत्रे अंगुलनो असंख्यातमो भाग, ते तेना जेटला आकाश प्रदेश थाय तेटला पुद्गल परावर्त्तन करे ॥ बेइंद्रियमांहि गयो थको संख्याता वर्ष रहे ॥ तेइंद्रियमांहि गयो थको संख्याता दिवस रहे ॥ चउरिंद्रियमांहि गयो थको संख्याता मास रहे ॥ पंचेंद्रिय तिर्यंचमांहि गयो थको केटलो काल रहे ? जे असंख्याता आउखानां तिर्यंच छे तेने तेज भव कायस्थिति ॥ जे संख्याता आउखानां तिर्यंच ते उत्कृष्टा सत्तठ भव

करे ॥ मनुष्यने पण एमज तिर्यंचनी परे जाणवुं, ज० समस्तने अंतर्मुहूर्त्तनी स्थिति जाणवी ॥

इति कायस्थितिद्वार संपूर्ण ॥ २३ ॥

---

हवे २४ मुं समुद्घातद्वार कहे छे ॥

समुद्घात ७, ते वेदनीय समुद्घात १ ॥ कषाय समुद्घात २ ॥ मारणांतिक समुद्घात ३ ॥ वैक्रेय समुद्घात ४ ॥ तेजस् समुद्घात ५ ॥ आहारक समुद्घात ६ ॥ केवल समुद्घात ७ ॥ नारकीने पहेली ४ ॥ देवताने पहेली ५ ॥ पुढवी अप तेउ वनस्पति ए ४ ने पहेली ३ ॥ वायुने पहेली ५ ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय समुर्च्छिम अने मनुष्य समुर्छिमने पहेली ३ ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय गर्भजने पहेली ५ ॥ मनुष्य गर्भजने ७ समुद्घात लाभे ॥ सिद्धमां एके समुद्घात न लाभे ॥

इति समुद्घातद्वार संपूर्ण ॥ २४ ॥

---

हवे २५ मुं कुलकोमीद्वार कहे बे ॥

समस्त संसारी जीवनी एक कोमी सामी सत्ताणु लाख कुलकोमी बे ॥ नारकीनी २५ लाख कुलकोमी ॥ देवतानी २६ लाख ॥ पृथ्वीनी १२ लाख ॥ अपनी ७ लाख ॥ तेउनी ३ लाख ॥ वाउनी ७ लाख ॥ वनस्पतिनी २८ लाख कुलकोमी ॥ बेइंद्रियनी ७ लाख ॥ तेइंद्रियनी ८ लाख ॥ चउरिंद्रियनी ए लाख ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय जलचरनी १२॥ लाख ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय थलचरनी १० लाख ॥ खेचरनी १२ लाख ॥ उरपरनी १० लाख ॥ जुजपरनी ए लाख ॥ मनुष्यनी १२ लाख कुलकोमी॥ कुलकोमीनो शुं अर्थ? कुल ते जे जोनी थकी उपजे ॥ जेम एक बाणने पोमळे वींढीनां कुल घणां उपजे, तेम एकेंद्रियने घणाय कुल उपजे ॥ ते कुलनी कोमी कहे बे ॥

गाथा—एगंदिएसु पंचसु बार, सगति सत्त अठवीसाय ॥
विगलेसु सत्त अठ नव, जल खह चउपय उरग जूयगे ॥ १ ॥
अद्धतेरस बारस, दस दस नवगं नरामरे निरए ॥

वारस वीस पणविस, हुंति कुलकोमी लखाइं ॥ २ ॥
इगकोमि सत्त नवइ, लक्खा सड्ढा कुलाण कोमीणं ॥
इइ संगहणी ग्गंथे, कहिता पूव्वसूरिहिं ॥ ३ ॥
सिद्धने कुलकोमी एके नहि ॥ इति कुलकोमीद्वार संपूर्ण ॥ २५ ॥

---

हवे २६ मुं सोपकर्मी नोपकर्मी आयुष्यनुं द्वार कहे छे ॥

बे प्रकारे आयुष्य छे ॥ एक नोपकम्र्मी, बीजुं सोपकम्र्मी ॥ नारकी देवता तीर्थंकर चक्रवर्त्ती बलदेव वासुदेव असंख्याता वर्षनां आयुष्यनां तिर्यंच मनुष्य जुगलीया ए सर्वेनुं नोपकम्र्मी आयुष्य जाणवुं. बाकी सर्वमां नोपकम्र्मी सोपकम्र्मी ए बन्ने आयुष्य होय ॥ सिद्धमां आयुष्य बेमानुं एके नहि ॥

इति नोपकम्र्मी सोपकम्र्मी आयुष्यद्वार संपूर्ण ॥ २६ ॥

---

हवे २७ मुं देवद्वार कहे छे ॥

गाथा—नाम १ गुण २ उववाय ३, ठिइ ४ विउ ५ चवण ६ संचिठणा ७ ॥
अंतर ८ अप्पाबहुयं ए, नवद्दारा पण देवाणं णेया ॥ १ ॥

ए ए द्वार तेमां प्रथम नामद्वार कहे छे ॥ जविय द्रव्य देव ॥ १ ॥ नरदेव २ ॥ धर्मदेव ३ ॥ देवाधिदेव ४ ॥ जावदेव ५ ॥ १ ॥ हवे बीजुं गुणद्वार कहे छे ॥ मनुष्य तथा तिर्यंच पंचेंद्रिय जेने देवतामां उपजवुं छे तेने जविय द्रव्य देव कहिये ॥ १ ॥ चौद्रत्न नव निधान जेने होय तेने नरदेव कहिये ॥ २ ॥ साधुना सत्याविश गुणे करी सहित अने समणेतिवा १ ॥ माहणेतिवा २ ॥ खंतीतिवा ३ ॥ दंतीतिवा ४ ॥ गुत्तीतिवा ५ ॥ मुत्तीतिवा ६ ॥ इसीतिवा ७ ॥ मुणीतिवा ८ ॥ विरतीतिवा ए ॥ विउ तिवा १० ॥ लुहेतिवा ११ ॥ जिक्खुतिवा १२ ॥ तीरत्थीतिवा १३ ॥ ए १३ नामेयुक्त होय तेने धर्मदेव कहिये ३ ॥ अढार दोष रहित ने बारगुणे करी सहित होय तेने देवाधिदेव कहिये ॥ अढार दोष ते कहे छे ॥ अज्ञान १ ॥ क्रोध २ ॥ मद ३ ॥ मान ४ ॥

 

माया ५ ॥ लोभ ६ ॥ रति ७ ॥ अरति ८ ॥ निद्रा ९ ॥ शोक १० ॥ असत्य ११ ॥ चोरी १२ ॥ मच्छर १३ ॥ भय १४ ॥ प्राणिवध १५ ॥ प्रेम १६ ॥ क्रीडाप्रसंग १७ ॥ हास्य १८ ॥ ए १८ दोष रहित ने १२ गुणे करी सहित ॥ ते १२ गुण कहे छे ॥ ज्यां ज्यां भगवंत उभा रहे बेसे समवसरे त्यां त्यां दश बोल सहित ते भगवंतथी बारगुणो उंचो तत्काल अशोकवृक्ष थइ आवे. स्वामिने छांयडो करे ॥ १ ॥ भगवंत ज्यां ज्यां समवसरे त्यां त्यां पांचवर्णा अचेत फुलनी वृष्टि थाय, ढिंचण प्रमाणे ढगला थाय ॥२॥ भगवंतनी जोजन प्रमाणे वाणी विस्तरे, सहुना मननो संशय हरे ॥ ३ ॥ भगवंतने चोविस जोडा चामर विंझाय ॥ ४ ॥ स्फटिक रत्नमय पादपीठ सहित सिंहासन स्वामिने आगळे थाय ॥५॥ भामंडल अंबोडाने ठेकाणे तेज मंडल विराजे, दिशो दिशनां अंधकार टाळे ॥६॥ आकाशे साडीबार क्रोड गेबी वाजां वागे ॥७॥ भगवंतनी उपर त्रण छत्र उपराउपरी बिराजे ॥८॥ अनंतज्ञानातिशय ॥९॥ अनंत अर्चातिशय परमपूज्यपणुं ॥१०॥ अनंत वचनातिशय॥११॥ अनंत अपायापगमातिशय ते सर्व दोष रहितपणुं॥१२॥ए १२ गुणे करी सहित तथा

चोत्रीस अतिशय,पांत्रिस वचनातिशय आदे दइने अनंतगुणे करी सहित होय तेने देवाधिदेव कहिये ॥ ४ ॥ नावदेव ते केने कहिये ॥ नवनपति १ ॥ वाणव्यंतर २ ॥ ज्योतिषी ३ ॥ वैमानिक ४ ॥ ए चार जातिना देवताने नावे प्रवर्ते ठे तेने नावदेव कहिये ॥ ५ ॥ २ ॥ हवे त्रिजुं उववाय द्वार कहे ठे ॥ नविय द्रव्य देवमां मनुष्य तिर्यंच १ ॥ जुगलीया २ ॥ सर्वार्थ सिद्ध ३ ॥ ए त्रण ठाम वर्जिने बाकी सर्व ठामना आवी उपजे ॥ १ ॥ नरदेवमां ४ जातिना देवताने पहेली नरक, ए ५ ठामना आवी उपजे ॥ २ ॥ धर्म देवमां ठठी सातमी नरक ॥ तेउ वाउ मनुष्य तिर्यंच जुगलीया, ए ६ ठाम वर्जिने शेष सर्व ठामना आवी उपजे ॥ ३ ॥ देवाधिदेवमां पहेली बीजी त्रिजी नरक ने किल्बिषी वर्जिने, वैमानिक देवना आवी उपजे ॥ ४ ॥ नावदेवमां संज्ञी तिर्यंच पंचेंद्रिय १ संज्ञी मनुष्य २ ए २ ठामना आवी उपजे ॥ ५ ॥ ३ ॥ हवे चोथुं स्थिति द्वार कहे ठे ॥ नविय द्रव्य देवनी जघ० अंत०, उत्० ३ पल्यनी १ ॥ नरदेवनी जघ० सातसें वर्षनी, उत्० चोराशीलाख पूर्वनी २ ॥ धर्मदेवनी जघ० अंत०, उत्० देश उणी पूर्व क्रोडिनी ३ ॥ देवाधिदेवनी जघ० बहुतेर

वर्षनी, उत्० ७४ लाख पूर्वनी ४ ॥ नावदेवनी जघ० दशहजार वर्षनी, उत्० ३३ सागरनी ५ ॥ ६ ॥ हवे पांचमुं ऋद्धि तथा विकुवणा द्वार कहे छे ॥ नविय द्रव्य देवमां जेने वैक्रेय लब्धि उपजी होय तेनेज होय ॥ नरदेवने तो होयज ॥ धर्मदेवमां जेने लब्धि उपजी होय तेने होय ॥ नाव देवने तो होयज ॥ ए ४ वैक्रेय रूप करे तो ज० १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उत्० संख्याता करे ॥ शक्ति तो असंख्याता रूप करवानी छे पण करे नहि ॥ देवाधिदेवनी शक्ति घणी छे पण करे नहि ॥ ५ ॥ हवे छठुं चवण द्वार कहे छे ॥ नविय द्रव्य देव चवी देवता थाय १ ॥ नरदेव चवी नरके जाय २ ॥ धर्म देव चवी वैमानिक तथा मोक्षमां जाय ३ ॥ देवाधिदेव तो मुक्ति जाय ४ ॥ नाव देव चवीने बादर पृथवी पाणी वनस्पतिमां ने गर्नज मनुष्य तिर्यचमां जाय ॥ ५ ॥ ६ ॥ हवे सातमुं सचिठणा द्वार कहे छे ॥ संचिठणा ते देवनो देवपणे रहे तो केटला काळ रहे ते ॥ नविय द्रव्य देवनी संचिठणा जघ० अंत०, उत्० ३ पल्योपमनी १ ॥ नरदेवनी जघ० सातसें वर्षनी, उत्० ७४ लाख पूर्वनी २ ॥ धर्म देवनी जघ० १ समयनी, उत्० देशे उणी पूर्व क्रोमिनी ३ ॥ देवाधि-

देवनी जघ० बहुंत्तेर वर्षनी, उत्० ७४ लाख पूर्वनी ४ ॥ नावदेवनी जघ० दश हजार वर्षनी, उत्० ३३ सागरनी ५ ॥ ७ ॥ हवे आठमुं अंतरद्वार कहे छे ॥ नवियद्रव्य देवनुं आंतरुं पडे तो जघ० दश हजार वर्ष ने अंतर्मुहूर्त्त अधिकनुं, उत्० अनंता काळनुं आंतरुं पडे १ ॥ नरदेवनुं जघ० १ सागर जाफेरुं, उत्० अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तन देशे उणुं २ ॥ धर्मदेवनुं जघ० २ पल्य जाफेरुं, उत्० अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तन देशे उणुं ३ ॥ देवाधिदेवनुं आंतरुं नथी ४ ॥ नावदेवनुं जघ० अंत०, उत्० अनंता काळनुं ॥ ५ ॥ ८ ॥ हवे नवमुं अल्पबहुत्वद्वार कहे छे ॥ सर्वथी थोडा नरदेव १ ॥ तेथी देवाधिदेव संख्यातगुणा २ ॥ तेथी धर्मदेव संख्यातगुणा ३ ॥ तेथी नविय द्रव्यदेव असंख्यात गुणा ४ ॥ तेथी नावदेव असंख्यातगुणा ५ ॥ ए ॥ ए अधिकार न० श० १२ में उ० ए में छे ॥

इति २७ मुं देवद्वार संपूर्ण ॥ २७ ॥

---

हवे २८ मुं जरा सोगद्वार कहे छे ॥

जे शरीरे करी वेदे ते जरा वेदनीय॥ मने करी वेदे ते शोक वेदनीय॥ नारकी देवता

ने तिर्यंच गर्भज, मनुष्य गर्भजने जरावेदनीय, अने शोक वेदनीय ए बे लाभे ॥ पांच एकेंद्रियने त्रण विगलेंद्रियने तिर्यंच मनुष्य समुर्च्छिम एटलाने एक जरा वेदनीय होय॥ सिद्धने एके वेदनीय नहि ॥

इति जरासोगद्वार संपूर्ण ॥ २८ ॥

---

हवे २९ मुं परिग्रहद्वार कहे छे ॥

परिग्रह ३ प्रकारे ॥ कर्म परिग्रह १ ॥ शरीर परिग्रह २ ॥ बाह्य भंमतोवगरण परिग्रह ३ ॥ नारकी, पांच एकेंद्रियने कर्म परिग्रह १ ॥ शरीर परिग्रह २ ॥ देवता, त्रण विगलेंद्रिय, तिर्यंच पंचेंद्रिय, अने मनुष्यने त्रण परिग्रह ॥ कर्म परिग्रह १ ॥ शरीर परिग्रह २ ॥ बाह्यभंमतोवगरण परिग्रह ३ ॥ सिद्धने परिग्रह एके नहि ॥

इति परिग्रहद्वार संपूर्ण ॥ २९ ॥

---

हवे ३० मुं सांतर निरंतरद्वार कहे छे ॥

पांचसें त्रेसठ भेद जीवनां ते १४ भेद नारकीनां ॥ १ ॥ ४८ भेद तिर्यंचनां ॥ २ ॥ ३०३ भेद मनुष्यनां ॥ ३ ॥ १९८ भेद देवतानां ॥ ४ ॥ एवं सर्व मळी ५६३ भेद जीवनां छे ॥ ते जीव सांतर निरंतर उपजे के चवे ? उत्तर पहेली नरके नारकी सांतर निरंतर उपजे अने निरंतर उपजे तो आवलीकानें १ असंख्यातमे भागे ॥ जेटला समय थाय तेटला समय लगे उपजे अने चवे ॥ आंतरुं पडे तो २४ मुहूर्त्तनुं १॥ बीजी नरके सांतर निरंतर एमज जाणवो ॥ आंतरुं पडे तो ७ दिवसनुं ॥ २ ॥ त्रीजी नरके सांतर निरंतर एमज, आंतरु पडे तो १५ दिवसनुं ३ ॥ चोथी नरके सांतर निरंतर एमज ॥ आंतरुं पडे तो मास १ नुं ४ ॥ पांचमी नरके सांतर निरंतर एमज ॥ आंतरुं पडे तो मास २ नुं ५ ॥ छठी नरके सांतर निरंतर एमज ॥ आंतरुं पडे तो मास ४ नुं ६ ॥ सातमी नरके सांतर निरंतर एमज ॥ आंतरुं पडे तो मास ६ नुं ७ ॥ भवनपतिे सांतर निरंतर एमज ॥ आंतरुं पडे तो २४ मुहूर्त्तनुं ॥ पांच एकेंद्रिय निरंतरज उपजे

॥ अने चवे पण निरंतरज, उपजवा चववामा आंतरुं नथी ॥ त्रण विगलेंद्रियने सांतर निरंतर एमज ॥ आंतरुं पडे तो अंतर्मुहूर्त्तनुं ॥ तिर्यंच समुर्च्छिमने सांतर निरंतर एमज ॥ आंतरुं पडे तो अंतर्मुहूर्त्तनुं ॥ तिर्यंच गर्भजने सांतर निरंतर एमज ॥ आंतरुं पडे तो मुहूर्त्त १२ नुं ॥ मनुष्य समुर्च्छिमने सांतर निरंतर एमज ॥ आंतरुं पडे तो २४ मुहूर्त्तनुं ॥ मनुष्य गर्भजने सांतर निरंतर एमज, ॥ आंतरुं ज० अंत०, उत्० १२ मुहूर्त्तनुं ॥ वाणव्यंतर ज्योतिषी पहेला बीजा देवलोके सांतर निरं० एमज, आंत० २४ मुहूर्त्तनुं ॥ त्रीजे देवलोके सांतर निरंतर एमज ॥ आंतरु पडे तो ए दिवस अने २० मुहूर्त्तनुं ॥ चोथे देवलोके सांतर निरंतर एमज, ॥ आंतरुं पडे तो १२ दिवसने १० मुहूर्त्तनुं ॥ पाचमे देवलोके सांतर निरंतर एमज ॥ आतरुं पडे तो २२॥ दिवसनुं ॥ छठे देवलोके सांतर निरं० एमज, आं० ४५ दिवसनुं॥ सातमे देवलोके सांतर निरं० एमज, आं० ८० दिवसनुं ॥ आठमे देवलोके सांतर निरं० एमज, आं० १०० दिवसनुं ॥ नवमे दशमे देवलोके सांतर निरं० एमज, आं० संख्याता मासनुं ॥ अग्यारमा बारमा देवलोके सांतर निरं० एमज, आं० संख्याता वर्षनुं ॥ नवग्रैवेयके पहेली त्रिके सांतर नि-

रं०एमज, ऑां० संख्याता वर्षना सेंकमानुं ॥ बीजी त्रिके सांतर निरं०एमज,ऑां० संख्याता वर्षनां हजारनुं ॥ त्रिजी त्रिके सांतर निरं० एमज, आंतरुं संख्याता वर्षनां लाखनुं॥ चार अनुत्तर विमाने सांतर निरं० एमज, ऑां० पल्यनां असंख्यातमा नागनुं॥ सर्वार्थसिद्ध विमाने सांतर निरंतर एमज ॥ उपजे तो आवलीकाने असंख्यातमे नागे जेटला समय थाय तेटला समय लगे उपजे अने चवे ॥ ऑांतरुं पल्यना संख्यातमा नागनुं पमे ॥ सिद्धनुं जघन्य ऑांतरुं १ समयनुं, अने उत्कृष्टुं ऑांतरुं ६ मासनुं ॥ चार गतिमां समुच्चय पंचेंद्रिय आश्रि ऑांतरुं ज० १ समयनुं, उ० १२ मुहूर्त्तनुं ॥ इंद्रस्थाननुं ज० १ समयनुं, उ० ६ मासनुं ऑांतरुं पमे ॥

इति सांतर निरंतरद्वार संपूर्ण ॥ ३० ॥

॥ इति श्री महादंमक संपूर्ण ॥

---

# चार ध्यानना बोल ॥

अथ श्री उववाइ प्रमुख सिद्धांतथी ४ ध्यानना बोल लिख्यते ॥ सारुं मालुं चिंतववुं ते ध्यान ॥ ते ध्यान ४ ॥ आर्त्तध्यान १ ॥ रौद्रध्यान २ ॥ धर्मध्यान ३ ॥ शुक्लध्यान ४ ॥ तेमां प्रथम आर्त्तध्यानना ४ भेद ॥ अमनोज्ञ शब्द रूप गंध रस स्पर्शनी जोगवाइ आवी मळी छे, ते कोण जाणे माराथी क्यारे दूर थशे, ए दूर थाय तो सारुं एवी मनने विषे चिंता उपजे ते आर्त्तध्यानी जीव कहिये, ए पहेलो भेद ॥ १ ॥ हवे बीजो भेद कहे छे ॥ मनोज्ञ शब्द रूप गंध रस स्पर्श शुभ जोगवाइए आवी मळ्यां छे ते घणा दिवस रहे तो सारुं थाय, दूर न थाय तो ठीक एवी मनने विषे चिंता करे ते आर्त्तध्यानी जीव कहिये, ए बीजो भेद ॥ २ ॥ शरीरने विषे आतंकादिक रोग आवी उपज्या ते श्वास १॥ खास २ ॥ ज्वर ३ ॥ दाह ४॥ कुक्षि शूल ५ ॥ भगंदर ६ ॥ हरस ७ ॥ अजिरण ८ ॥ दृष्टिशूल ९ ॥ अरुचि १० अक्षिवेदना ११ ॥ कर्णवेदना १२ ॥ कंडु १३ ॥ उदररोग १४ ॥

कुष्टी रोग १५ ॥ पृष्टिशूल १६ ॥ ए १६ प्रकारना रोगनी पीडा घणी आवी उपनी छे तिवारे ते जाणे के ए क्यारे दूर थशे, एम घणो घणो विलाप करे, ए जाय तो सारुं थाय एम चिंतवे तेने आर्त्तध्यानी जीव कहिये, ए त्रिजो भेद ॥ ३ ॥ ५ इंद्रियना कामभोग विषय सुख खावा पीवा पहेरवा ओढवा ए आदि घणा आवी मळ्यां छे तेने एम जाणे के ते दूर न थाय तो सारुं एम घणी घणी लालच मनमां आणे तेन आर्त्तध्यानी जीव कहिये, ए चोथो भेद ॥ ४ ॥ ए आर्त्तध्यानना ४ भेद कह्यां ॥ हवे आर्त्तध्यानना ४ लक्षण कहे छे ॥ कंदनता कहेता गाढे गाढे शब्दे करी रोवे आक्रंद शब्द करे ए, आर्त्तध्याननुं पहेलुं लक्षण ॥ १ ॥ शोचनता कहेता शोच करे बेठो बेठो गाले हाथ दइने घणो शोच करे, ए बीजुं लक्षण ॥ २ ॥ तिप्पणिया कहेता विजोग पडे कोइ वाहली वस्तुनो अश्रुपात करे, हा हा !! मारी वस्तु गइ एम कहीने अश्रु पाडे, ए त्रीजुं लक्षण ॥ ३ ॥ विलपनता कहेता विलाप करे, दीनपणुं धरे, अनेरा आगळ दीनपणुं भाखे, ए चोथुं लक्षण ॥ ४ ॥ ए ८ बोल आर्त्तध्याननां कह्यां ॥ इति प्रथम आर्त्तध्यानाधिकारः ॥१॥ हवे बीजुं रौद्र ध्या-

न तेना ४ भेद ॥ हिंसानुबंधी कहेता हिंसाकारी जीवने हणवानुं ध्यान चिंतवे, तथा हिंसा करीने आनंद माने १ ॥ मृषानुबंधी कहेता मृषावाद बोलवानुं ध्यान चिंतवे, तथा मृषावाद बोलीने आनंद माने २ ॥ स्तेनानुबंधी कहेता चोरी करवानुं ध्यान चिंतवे, तथा चोरी करीने आनंद माने ३ ॥ संरक्षणानुबंधी कहेता मारवो कुटवो बांधवो बंधीखाने नखाववानो ध्यान चिंतवे, तथा पूर्वोक्त काम करी आनंद माने ४॥ हवे रौद्र ध्यानना ४ लक्षण कहे छे ॥ उसणदोसे कहेता जाणी प्रिछीने उत्तरगुण दशविध पच्चखाणने विषे दोष लगावे १ ॥ बहुदोसे कहेता मूलगुण ५ महाव्रतने विषे वारंवार दोष लगावे २ ॥ अन्नाणदोसे कहेता अज्ञान शास्त्र भणे, भणीने प्ररुपे, अज्ञान शास्त्र सांभळे, सांभळीने ते अधर्मने धर्म करी जाणे, धर्म अर्थे हिंसा करे ३ ॥ आमरणांत दोसे कहेता मरणनां अंत लगे पण मिथ्यात्वथी निवर्त्ते नहि, अने हिंसा पापने विषे प्रवर्त्ते, माठी चिंतवणानां परिणाम मरणांत लगे राखे तथा ते मरणने अंते पण पाप आलोवे नहि, निंदे नहि, प्रायश्चित्त प्रतिवर्जे नहि, मिछामिदुक्कडं पण देवे नहि ४ ॥ ए ४ रौद्रध्यानना लक्षण

कह्या ॥ ए ८ भेद बीजा रौद्रध्यानना थया ॥ इति द्वितीय रौद्राधिकारः ॥ २ ॥ धर्मध्यानना ४ भेद ॥ आज्ञाविचय कहेतां समकित सहित १२ व्रत श्रावकना, ११ श्रावकनी पडिमा, ५ महाव्रत साधुना, १२ पडिमा भिक्षुनी, ज्ञान दर्शन चारित्र तप छकायनी रक्षा, ए वीतरागनी आज्ञा आराधवी, चतुर्विध तीर्थना गुण कीर्त्तन करवां, ए प्रथम भेद॥ १ ॥ अपायविचय कहेतां संसारमांहि जीव मिथ्यात्व १ ॥ अव्रत २ ॥ प्रमाद ३ ॥ कषाय ४ ॥ अशुभ जोग ५ ॥ तथा १८ पाप स्थानक, छकायनी हिंसा ए दुःखनां कारण जाणी, आश्रव मार्ग छांडी संवर मार्ग आदरवो, जेम जीव दुःख न पामे, ए बीजो भेद ॥२॥ विपाकविचय कहेतां जीवे जेवे रसे करी शुभाशुभ कर्म उपराज्यां छे ते शुभाशुभ कर्मना उदयथी सुख दुःख भोगवे छे ते भोगवतां राग द्वेष करवो नहि, समभाव राखीये जेथी परम सुख पामीए, ए त्रीजो भेद ॥ ३ ॥ संस्थाविचय कहेतां लोकना आकारनो तथा परिमंडलादि संठाणनो तथा ५ इंद्रियना आकारनो चिंतववो, ए चोथो भेद ॥ ४ ॥ हवे धर्मध्याननां ४ लक्षण कहे छे ॥ आज्ञारुचि १ ॥ निसर्गरुचि २ ॥ सूत्ररुचि ३ ॥ उपदेशरुचि ४ ॥ तेमां

आज्ञारुचि कहेतां वीतरागनी आज्ञा अंगीकार करवानी रुचि उपजे १ ॥ निसर्गरुचि कहेतां स्वजावथी अथवा सांजळवाथी तथा जातिस्मरण ज्ञाने करी श्रुत सहित चारित्र धर्म पाळवानी रुचि उपजे २ ॥ सूत्ररुचि कहेतां कालिक उत्कालिक तद्व्यतिरिक्त सूत्र सांजळवानी–जणवानी रुचि उपजे ३॥ उपदेशरुचि कहेतां मिथ्यात्व १ ॥ अव्रत २ ॥ प्रमाद ३ ॥ कषाय ४ ॥ जोगे ५ ॥ करी उपार्ज्यां कर्म, सम्यकत्व १ ॥ व्रत २ ॥ अप्रमाद ३ ॥ अकषाय ४ ॥ अजोगे ५ ॥ करी खपाविये, तथा ५ इंद्रियना विषय शब्द रूप गंध रस स्पर्शे करी उपार्ज्यां कर्म ते तप रूप संवरे करी खपाविये, एवो तीर्थंकरनो उपदेश सांजळी तप संवर आदरिये ॥ जेम दुःख न पामीए एवी धर्म करवानी रुचि उपजे तेने उपदेशरुचि कहीए ४ ॥ हवे धर्मध्यानना ४ आलंबन कहे छे ॥ वाचना १ ॥ पृच्छना २ ॥ पर्यटना ३ ॥ धर्मकथा ४ ॥ तेमां विनय सहित ज्ञानने अर्थे निर्जराने अर्थे गीतार्थ गुरुनी समीपे वांचणी लइए ते वाचना १ ॥ अपूर्व ज्ञान पामवाने अर्थे विनय सहित गुर्वादिकने प्रश्न पुछीए ते पृच्छना २ ॥ पूर्व अपूर्व सूत्र जणया छीए त अस्खलित

करवाने अर्थे उपयोग सहित सूत्रार्थनी वारंवार सज्झाय करीए ते पर्यटना ३॥ वीतरागे जेवा भाव प्ररुप्या छे ते भाव ग्रहीने शंकादि रहितपणे पोतानी निर्जरा अथवा परोपकार अर्थे सभा मध्ये तेवा प्ररुपे ते धर्मकथा ४ ॥ हवे धर्मध्याननो ४ अनुप्रेक्षा कहे छे ॥ एकत्वानुप्रेक्षा १ ॥ अनित्यानुप्रेक्षा २ ॥ अशरणानुप्रेक्षा ३ ॥ संसारानुप्रेक्षा ४ ॥ तेमां एकत्वानुप्रेक्षा ते जीव निश्चयनये एकलो ज छे, बीजा पुद्गलिक पदार्थो जूदा छे, खावापीवा मोजमजाओ करवी ए बधी कर्मथी थाय छे ने ते कर्म पुद्गल छे माटे कर्म पुद्गल उपरथी प्रीति उतारी एक पोतानो आत्मा अनंत ज्ञानमयी उपर उपयोग राखवो एवा एकत्वपणानी भावना, त एकत्वानु प्रेक्षा १ ॥ अनित्यानुप्रेक्षा ते रूपी पुद्गलना अनेक प्रकारे यत्न करीए तोपण रहे नहि ते भणी नित्य एक श्री जैनधर्म ते परम सुखदायी पोताना आत्माने माटे आत्मा जाणीने समकितादिक संवरे करी पुष्ट करीए जेथी निराबाध सुख पामीए ते अनित्यानुपेक्षा २ ॥ अशरणानुप्रेक्षा ते आ भवने विषे पहोंचता जोवने एक समकितपूर्वक जैन धर्म विना बीजुं कोई शरण नथी एम जाणो धर्मनुं शरण अंगीकार

करीए, ते अशरणानुप्रेक्षा ३ ॥ संसारानुप्रेक्षा ते आ जीवने संसाररूप समुद्रने विषे परिभ्रमण करता जगतना जीवने जैन धर्मरूप द्वीपानो आधार छे, बीजुं कोई शरण नथी ते संसारानुप्रेक्षा ४ ॥ ए धर्मध्यानना १६ भेद कह्या ॥ इति तृतीय धर्मध्यानाधिकारः॥३॥ हवे शुक्लध्यानना ४ भेद ॥ पृथक्त्ववितर्कसविचारी १ ॥ एकत्ववितर्कअविचारी २ ॥ सूक्ष्म क्रिय अप्रतिपाति ३ ॥ समुच्छिन्नक्रिया अनिवृत्ति ४ ॥ पृथक्त्ववितर्कसविचारी ते अनंत द्रव्यरूप आ जगत छे एमांथी एक द्रव्यनुं स्वरूप ग्रहण करी एनी उत्पत्ति व्यय अने ध्रुवताना जूदा जूदा पर्यायनुं अर्थथी व्यंजनमां अने व्यंजनथी अर्थमां मने करी विचारवो ते १ ॥ एकत्ववितर्क अविचारी ते उत्पत्ति आदि जे द्रव्यना पर्याय तेनुं एकत्व अभेदपणुं अवलंबीने रहेवुं, परम अविचारी कहेतां अर्थ व्यंजननुं विचाररहितपणुं २ ॥ सूक्ष्मक्रिय अप्रतिपाति कहेतां मन वचननो योग रोके ते छतां पण अर्द्धकाय योगना रोकवाथी सूक्ष्म क्रियाने नथी पडयानो स्वभाव जेनो परिणामना वधवाथी अप्रतिपाती, ए पायो निर्वाण जवाने काले केवलीने होय ३॥ समुछिन्नक्रियअनिवृत्ति कहेतां व्यय करी छे क्रिया,

कायिक्यादि शैलेशी अवस्थाने विषे योगना रुंधवाथी जेणे ते तथा अपाठा वळवानो स्वजाव ठे जेने विषे ते ४ ॥ हवे शुक्लध्याननां ४ लक्षण कहे ठे ॥ विवेक १ ॥ व्युत्सर्ग २॥ अव्वहे ३॥ असंमोहिता ४ ॥ तेमां विवेक कहेतां जीव विवेकपणे चिंतवे–अरे जीव! जीव काया जूदां ठे एम जाणीने काया उपर ममता न आणवी, ए काया तो पुद्गल ठे, विणशवानो स्वजाव ठे, ए प्रथम लक्षण कह्युं १ ॥ व्युत्सर्ग कहेतां कायाने वोसरावीने काउसग्ग करे, कायोत्सर्ग करीने निकाचित कर्मने त्रोमे अथवा देवता, मनुष्य, तिर्यंच संबंधि अनेक परिसह उपजे, ते खमे अने धर्मथी रुगाव्या रुगे नहि, चळाव्या चळे नहि, सम्यक् प्रकारे ते खमे शुद्ध परिणामे, ए बीजुं लक्षण कह्युं २ ॥ अव्वहे कहेतां अहो! जीव रोगादिक आवीने उपन्या थका कायरपणुं वेदे नहि, मोढुं बगामे नहि, जीव तारां संच्यां कर्म ते तारां उपराजेल ठे, ते तो समजावे करीने खमे, ए त्रीजुं लक्षण कह्युं ३ ॥ असंमोहिया कहेतां कोइ बीजानी चक्रवर्त्ति, बळदेव, वासुदेव तथा देवतानी ऋद्धि देखीने तथा परनी सुख साह्यबी देखीने मूर्छा आणे नहि ॥ अरे जीव! जे जाव सवारे

हता ते भाव संध्याए नहि, अने जे भाव संध्याए हता ते भाव सवारे नहि ॥ जे जीव सुता हता ते उठया नहि, अने जे जीव उठया ते सुता नहि, एम अशाश्वती ऋद्धिने विषे मूर्छाय नहि, वांछे पण नहि, मनमां भली पण जाणे नहि ॥ अरे जीव! ए ऋद्धि तो जीव घणी वार पाम्यो, पामे छे, अने पामशे पण जीवने कांइ त्राण शरणं नथी, एम जाणीने दया, शील, संतोष, तप, संयम आदरीए तो अनंता मोक्षनां सुख पामीए, ए शुक्लध्याननुं चोथुं लक्षण कह्युं ४ ॥ हवे शुक्लध्याननां ४ आलंबन कहे छे ॥ खंति १ ॥ मुत्ति २ ॥ अज्जवे ३ ॥ मद्दवे ४ ॥ तेमां खंति कहेतां क्षमा करवी ॥ क्षमा उपरांत तप नथी माटे क्रोधनो त्याग करवो १ ॥ मुत्ति कहेतां निर्लोभपणुं आणवुं ॥ रे जीव! लोभ ते पापनुं मूळ छे ते माटे लोभनो त्याग करवो २ ॥ अज्जवे कहेता सरलपणुं आणवुं. माया कपटनो त्याग करवो. रे जीव ! कपट करतां भली गति न पामे एम जाणी माया न करवी ३ ॥ मद्दवे कहेतां अति उत्कर्षपणुं ते मान टाळवुं. रे जीव! मान करतां थका विनयधर्मनो नाश करे, एम जाणी मान न करवुं ४ ॥ हवे शुक्ल

ध्याननी ४ अणुपेहा कहे छे ॥ अवायाणुपेहा १ ॥ असुन्नाणुपेहा २ ॥ अणंतवत्तियाणुपेहा ३ ॥ विपरिणामाणुपेहा ४ ॥ तेमां अवायाणुपेहा कहेता रे जीव! तुं पांच आश्रवे करी समये समये नारे थाय छे एवुं विचारी आश्रवथी निवर्त्तवुं तथा अहो जीव! रागद्वेषथी जीवने दुःख उपजे छे अथवा रागद्वेषथी छुटीने ए जीव क्यारे मुक्ति जाशे, एवुं चिंतवे १ ॥ असुन्नाणुपेहा कहेतां रे जीव! काया तो अशुचिनो जंमार छे तथा अशुचिए करीने उपनी छे एम जाणीने अशुचि परिहरे, ए संसारनुं स्वरूप एवुं जाणीने जे शुन्न कर्मना अशुन्न थाय छे अने अशुन्न कर्मना शुन्न थाय छे तेणे करीने जीव नारे थाय छे ते क्यारे एवा शुन्नाशुन्न कर्मथी छूटीशुं एवुं ध्यान चिंतविए तो परम आनंद सुख पामीए २ ॥ अणंतवत्तियाणुपेहा कहेतां ए जीव तो अमर छे, अजर छे, अलक्ष छे, अरूपि छे, मरे नहि पण आयुष्य आश्री अनित्य छे, नित्य नहि, एम जाणीने रे जीव! धर्मने विषे प्रमाद न करवो तथा नव करे छे तेनुं अनित्यपणो चिंतवे ॥ नरक, तिर्यंच, मनुष्य, देवता ए ४ गतिनुं अनित्यपणुं चिंतवे एवुं अनित्यपणुं नरत चक्रवर्त्तिए चिंतव्युं ॥ रे जीव ! एवी

चिंतवणा चिंतवीए तो परमानंद, अतुल्य, निराबाध उत्कृष्टा सुख पामीए ३ ॥ विपरिणामाणुपेहा कहेतां ए जीव तो अनादि काळनो छे अने अनादि काळथी ज ४ गति २४ दंडकने विषे परिभ्रमण करे छे पण चोर्याशी लाख जीवाजोनीथी परिभ्रमण करवुं मटयुं नथी ते माटे एम जाणीने शुद्ध निर्मळ धर्म आदरीए, पाळीए, फरसीए ए रीते करीने जन्म जरा मरण मटाडीए जेथी परमसुख पामीए तथा विपरिणामाणुपेहा कहेतां विविध प्रकारनां सगपण करीने हुं विचर्यो, एकेक जीव साथे ते ४ गति संसारमां मात पिता भाइ बहेन भार्या पुत्रपणे अनंतिवार सगाइ करी तथा राजा युवराजा शेठ सेनापतिपणुं अनंति वार पाम्यो तथा वैरभावपणे एकेक जीवथी तें रे जीव ! अनंति वार वैर बांध्युं तथा अनंतिवार मित्रपणुं एकेक जीवथी तें रे जीव ! कीधुं, एवुं जाणी संसारथी विरक्त थइ शुभ लेश्या आणीए तो परम आनंद सुख आत्मा पामे ४ ॥ ए १६ भेदे शुक्ल ध्यान थयुं विशेष विस्तार ठाणांग उववाइ सूत्रनी वृत्तिथी जाणवो ॥ इति चतुर्थ शुक्ल ध्यानाधिकारः ४ ॥

इति ४ ध्यानना बोल संपूर्ण ॥

# देशबंध सर्वबंधना बोल ॥

प्रथम १२ ठेकाणे उदारिक शरीर लाभे ॥ समुच्चय उदारिक शरीर १ ॥ समुच्चय एकेंद्रिय २ ॥ ५ स्थावर ७ ॥ ३ विगलेंद्रिय १० ॥ तिर्यंच ११ ॥ मनुष्य १२ ॥ समुच्चय उदारिक उदारिकना सर्वबंधपणे रहेतो जघ० उत्० १ समय, अने उदारिकना देशबंधपणे रहेतो ज० १ समय, ते केम ? वायु तिर्यंच मनुष्य उदारिकना धणीए वैक्रेय कर्युं होय अने उदारिक प्रवेश काले प्रथम समय सर्वबंध करीने वळी उदारिकना देशबंधमां आवीने एक समय रहीने मरे ते माटे ज० १ समय, उत्० ३ पल्यमां १ समय उणानी स्थिति १॥समुच्चय एकेंद्रियना सर्व बंधनी स्थिति ज० उ० १ समयनी, देशबंधनी ज० १ समय, उत्० २२ हजार वर्षमां १ समय उणानी २॥ पृथ्वी पाणी तेउ वनस्पति, ३ विगलेंद्रिय ए ७ ना सर्वबंधनी स्थिति ज० उ० १ समयनी, देशबंधनी ज० १ खुलक भवमां ३ समय उणानी, उत्० पोतपोताना आयुष्यमांथी १ समय उणानी ए ॥ वाउकायना सर्वबंधनी स्थिति

जं० उं० १ समयनी, देशबंधनी ज० १ समयनी, वाउकाय वैक्रेय करीने देशबंधमां आवी १ समय रहीने मरे माटे, उत्० ३ हजार वर्षमां १ समय उणानी १० ॥ तिर्यंच मनुष्यना सर्वबंधनी स्थिति ज० उ० १ समयनी, देशबंधनी ज० १ समयनी ते वाउकायवत्, उत्० ३ पल्यमां १ समय उणानी १२ ॥ इति स्थितिद्वार ॥ हवे अंतरद्वार कहे छे ॥ समुच्चय उदारिकना सर्वबंधनुं आंतरुं ज० खुलकभव ३ समय उणानुं, उत्० ३३ सागर पूर्वकोडि ने १ समय अधिकनुं, ते बे समय वाटना छे ते पूर्वकोडिमां १ समय उणो छे तेमां घालीए एटले १ समय वध्यो ॥ देशबंधनुं आंतरुं ज० १ समयनुं, उत्० ३३ सागर ने ३ समय अधिकनुं, ते १ समय सर्वबंधनो ने २ समय वाटना एवं ३ समय अधिक जाणवा १ ॥ समुच्चय एकेंद्रियना सर्वबंधनुं आंतरुं ज० खुड्डाग भव ३ समय उणानुं, ते केम ? २ समय वाटना ने १ समय सर्वबंधनो एवं ३ समय, उत्० २२ हजार वर्ष ने १ समय अधिकनुं, देशबंधनुं आंतरु ज० १ समयनुं, ते सर्वबंधनुं टळ्युं, उत्० अंतर्मुहूर्त्तनुं ते केम ? उदारिक वाउकाय वैक्रेय करीने अंतर्मुहूर्त्त

रहीने वळी उदारिकनो सर्वबंध करीने देशबंध थाय ते कारणे २ ॥ पृथ्वी पाणी तेउ वनस्पति, ३ विगलेंद्रिय ए ७ ना सर्वबंधनुं आंतरुं ज० खुड्डाग भव ३ समय उणानुं, उत्० पोतपोताना आयुष्य उपर १ समय अधिकनुं ॥ देशबंधनुं ज० १ समयनुं, उत्० ३ समयनुं ते २ समय वाटनाने १ समय सर्वबंधनो एवं ३ समयनु ए ॥ वायराना सर्व बंधनुं आंतरुं ज० खुड्डागभव ३ समय उणानुं, उत्० ३ हजार वर्षने १ समय अधिकनुं ॥ देशबंधनुं ज० १ समयनुं, उत्० अंतर्मुहूर्त्तनुं १० ॥ तिर्यंच मनुष्यना सर्वबंधनुं आंतरुं ज० खुड्डागभव ३ समय उणानुं, उत्० पूर्व क्रोडने १ समय अधिकनुं ॥ देशबंधनुं आंतरु ज० १ समयनुं, उत्० अंतर्मुहूर्त्तनुं १२ ॥ ए पोतपोतानी जाति मांहि आंतरुं पडे छे ॥ हवे विशेषांतर द्वार कहे छे ॥ एकेंद्रिय मरीने नोएकेंद्रिय थाय वळी नोएकेंद्रिय मरीने एकेंद्रिय थाय तेना सर्वबंधनुं आंतरुं ज० २ खुड्डागभव ३ समय उणानुं, उत्० बे हजार सागर झाझेरानुं ॥ देशबंधनुं आंतरुं ज० खुड्डागभव १ समय अधिकनुं, उत्० बे हजार सागर झाझेरानुं ॥ पृथ्वी पाणी तेउ वाउ, ३ विगलेंद्रिय तिर्यंच मनुष्य ए ए मरीने अनेरे

गामे जाय, जइने पाछा आपणे गामे आवे ॥ ए ए ना सर्वबंधनुं ज० २ खुड्डागजव ३ समय उणानुं, उत्० वनस्पति कालनुं, देशबंधनुं ज० खुडागजव १ समय अधिकनुं, उत्० वनस्पति कालनुं ॥ वनस्पति मरीने नोवनस्पति थाय, वळी नोवनस्पति मरीने वनस्पति थाय तेना सर्वबंधनुं ज० खुड्डागजव ३ समय उणानुं, उत्० पुढवीकालनुं ॥ देशबंधनुं आंतरुं ज० खुड्डागजव १ समय अधिकनुं, उत्० पुढवीकालनुं ॥ हवे अल्प बहुत्वद्वार कहे छे ॥ सर्वथी थोडा उदारिकना सर्वबंधक, ते पहेला समयना छे माटे १ ॥ तेथी उदारिकना अबंधक विसेसाहिया २ ॥ तेथी उदारिकना देशबंधक असंख्यातगुणा ३ ॥ इति उदारिकना सर्वबंध देशबंधनुं स्वरूप संपूर्ण ॥ अथ वैक्रेयना सर्वबंध देशबंधनुं स्वरूप कहे छे ॥ समुच्चय वैक्रेयना सर्वबंधनी स्थिति ज० १ समयनी, उ० २ समयनी ते केम ? कोई मनुष्य तथा तिर्यंचे वैक्रेय मांड्युं ॥ वैक्रेयनो पहेलो समय सर्वबंधनो करीने तेज समये मरे, मरीने देवता तथा नारकीमां विग्रहगति विना उपजे तेवारे बीजे समये सर्वबंध करे ए रीते २ समय जाणवा ॥ देशबंधनी ज० १ समयनी, उत्० ३३ सागरमां १ समय उणानी ॥ एकेंद्रिय

वाउकाय १ तिर्यंच २ मनुष्य ३ ए ३ ना सर्वबंधनी ज० उ० १ समयनी ॥ देशबंधनी ज० १ समयनी, उ० अंतर्मुहूर्तनी ॥ नारकी देवताना सर्वबंधनी ज० उ० १ समयनी ॥ देशबंधनी ज० दश हजार वर्षमां ३ समय उणानी, उ० ३३ सागरमां १ समय उणानी ॥ हवे अंतरद्वार कहे छे ॥ समुच्चय वैक्रेयना सर्वबंधनुं आंतरुं ज० १ समयनुं, उत्० वनस्पति कालनुं ॥ देशबंधनुं आंतरुं ज० १ समयनुं, उत्० वनस्पति कालनुं ॥ वाउकाय तिर्यंच मनुष्यना वैक्रेय शरीरना सर्वबंधनुं आंतरुं ज० अंतर्मुहूर्त्तनुं, वाउकायनुं उ० पल्योपमना असंख्यातमा भागनुं आंतरुं, तिर्यंच मनुष्यनुं उ० प्रत्येक पूर्व क्रोडिनुं ॥ एम देशबंधनुं पण आंतर जाणवुं ॥ ए पोतपोतानी जातिमां आंतरुं पडे ॥ हवे विशेषांतर द्वार कहे छे ॥ एकेंद्रिय मरीने नोएकेंद्रिय थाय वळी नोएकेंद्रिय मरीने एकेंद्रिय थाय तेना सर्वबंधनुं आंतरुं ज० अंतर्मुहूर्त्तनुं, उत्० अनंतकालनुं ॥ देशबंधनुं आंतरुं पण एमज जाणवुं ॥ वाउकाय १ तिर्यंच २ मनुष्य ३ ए ३ ना सर्वबंध देशबंधनुं आंतरु ज० अंतर्मुहूर्त्तनुं, उ० वनस्पतिकालनुं ॥ नारकी देवताना सर्वबंधनुं आंतरुं ज० १० हजार वर्ष ने अंतर्मुहूर्त्त अधिकनुं, उ० वनस्पति कालनुं ॥ देशबंधनुं आंतरुं पण एमज ॥ ७ नारकी, १० भवनपति, १६ वाणव्यंतर,

ज्योतिषी, वैमानिक ८ देवलोक सुधी वैक्रेयना सर्वबंधनुं आंतरुं पोतपोतानी स्थिति उपरे अंतर्मुहूर्त्त अधिकनुं, उ० अनंतकालनुं ॥ देशबंधनुं आंतरुं ज० अंतर्मुहूर्त्तनुं, उ० वनस्पति कालनुं ॥ नवमा देवलोकथी नव ग्रैवेयक सुधीना सर्वबंधनुं आंतरुं ज० पोतपोताना आउखा उपर पृथक् वर्ष अधिकनुं, उ० अनंतकालनुं ॥ देशबंधनुं आंतरुं ज० पृथक् वर्षनुं, उ० अनंतकालनुं ॥ चार अनुत्तर विमानना सर्वबंधनुं आंतरुं ज० ३१ सागरने पृथक् वर्ष अधिकनुं, उ० संख्यात सागरनुं ॥ देशबंधनुं आंतरुं ज० पृथक् वर्षनुं, उ० संख्यात सागरनुं ॥ सर्वार्थसिद्धना सर्वबंध देशबंधनुं आंतरुं नथी ॥ हवे अल्पबहुत्वद्वार कहे छे ॥ सर्वथी थोडा वैक्रेय शरीरना सर्वबंधक १ ॥ तेथी देशबंधक असंख्यात गुणा २ ॥ तेथी अबंधक अनंतगुणा ३ ॥ २ ॥ इति वैक्रेयना देशबंध सर्वबंधनुं स्वरूप संपूर्ण ॥ हवे आहारकना देशबंध सर्वबंधनुं स्वरूप कहे छे ॥ आहारकना सर्व बंधनी स्थिति ज० उ० १ समयनी, देशबंधकनी स्थिति ज० उ० अंतर्मुहूर्त्तनी ॥ आहारकना सर्वबंधनुं आंतरुं ज० अंतर्मुहूर्त्तनुं, उ० अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तन देशे उणानुं ॥ हवे अल्पबहुत्वद्वार कहे छे ॥ सर्वथी थोडा आहारकना सर्वबंधक १ ॥ तेथी देशबंधक संख्यातगुणा २ ॥ तेथी अबंधक अनंत-

गुणा ३ ॥ ३ ॥ हवे तैजस् कार्मणनुं स्वरूप कहे छे ॥ तैजस् कार्मणना सर्वबंध नहि ॥ देशबंधना २ नेद ॥ आदि नहि अंत नहि ते अनव्य १ ॥ आदि नहि अंत छे ते नव्य २ ॥ हवे एनुं अल्पबहुत्व कहे छे ॥ सर्वथी थोमा अनव्य १ ॥ तेथी नव्य अनंतगुणा २ ॥ सर्वथी थोमा तेजस् कार्मणना अबंधक १ ॥ तेथी देशबंधक अनंतगुणा २ ॥ ५ ॥ हवे ११ बोलनुं अल्पबहुत्व कहे छे ॥ सर्वथी थोमा आहारकना सर्वबंधक १ ॥ तेथी आहारकना देशबंधक संख्यातगुणा २ ॥ तेथी वैक्रेय शरीरना सर्वबंधक असंख्यातगुणा ३ ॥ तेथी वैक्रेयना देशबंधक असंख्यातगुणा ४ ॥ तेथी तेजस् कार्मणना अबंधक अनंतगुणा ५ ॥ तेथी उदारिकना सर्वबंधक अनंतगुणा ६ ॥ तेथी उदारिकना अबंधक विसेसाहिया ७ ॥ तेथी उदारिकना देशबंधक असंख्यातगुणा ८ ॥ तेथी तेजस् कार्मणना देशबंधक विसेसाहिया ए ॥ तेथी वैक्रेयना अबंधक विसेसाहिया १० ॥ तेथी आहारकना अबंधक विसेसाहिया ११ ॥

इति देशबंध सर्वबंधना बोल संपूर्ण ॥

# संख्याता असंख्याताना बोल ॥



अनुयोगद्धार सूत्र मध्ये संख्याता असंख्याता अनंताना २० भेद कह्या छे तेनो विस्तार किंचित् मात्र लिख्यते ॥ संख्याताना ३ भेद ॥ जघन्य संख्यातो १ ॥ मध्यम संख्यातो २ ॥ उत्कृष्ट संख्यातो ३ ॥ ए ३ भेद ॥ असंख्याताना नव भेद ॥ जघन्य परित असंख्यातो १ ॥ मध्यम परित असंख्यातो २ ॥ उत्कृष्ट परित असंख्यातो ३ ॥ जघन्य जुत्त असंख्यातो ४ ॥ मध्यम जुत्त असंख्यातो ५ ॥ उत्कृष्ट जुत्त असंख्यातो ६ ॥ जघन्य असंख्यातो असंख्यातो ७ ॥ मध्यम असंख्यातो असंख्यातो ८ ॥ उत्कृष्ट असंख्यातो असंख्यातो ए ॥ ए ए भेद ॥ अनंताना ८ भेद ॥ जघन्य परित अनंतो १ ॥ मध्यम परित अनंतो २ ॥ उत्कृष्ट परित अनंतो ३ ॥ जघन्य जुत्त अनंतो ४ ॥ मध्यम जुत्त अनंतो ५ ॥ उत्कृष्ट जुत्त अनंतो ६ ॥ जघन्य अनंतो अनंतो ७ ॥ मध्यम अनंतो अनंतो ८ ॥ ए ८ भेद ॥ संख्याताना ३ भेद, असंख्याताना ए भेद, अनंताना ८ भेद ॥ ए सर्व मळी २०

ભેદ નામથી કહ્યા ॥ હવે વિસ્તારે વીસ ભેદનો અર્થ સમજણપૂર્વક કહે છે ॥ જઘન્ય સંખ્યાતો તે બે ૧ ॥ મધ્યમ સંખ્યાતો તે ત્રણથી માંડીને ઉત્કૃષ્ટા સંખ્યાતા માંહેથી ૧ ઓછો તેટલા સુધી મધ્યમ સંખ્યાતો કહીએ, એનાં સંખ્યાતાં રૂપ થાય ૨ ॥ ઉત્કૃષ્ટો સંખ્યાતો કહે છે ॥ જંબૂદ્વીપ પ્રમાણે પાલો કલ્પી સરસવને દાણે સગ સુધી ભરીને પછી ૧ દાણો દ્વીપે અને એક દાણો સમુદ્રે મુકતાં મુકતાં સર્વ પાલાના કણ ખુટી જાય, પછી જે દ્વીપસમુદ્રે છેલ્લો દાણો આવ્યો તેવડો મોટો બીજો પાલો કલ્પવો તે સરસવને દાણે ભરીને વળી એક દાણો દ્વીપસમુદ્રે મુકતાં જે દ્વીપસમુદ્ર સુધી છેલ્લો દાણો પહોંચે તેવડો મોટો ત્રીજો પાલો કલ્પવો ॥ એવા પાલા કેટલા કલ્પવા ? ઉત્તર—અસંલપ્પા કહેતાં ગણ્યા ન જાય એટલા પાલા ૧૯૪ અંકથી અધિક શિખા સહિત સરસવે કરી ભરવા ॥ પૂરેપૂરા શિખા સુધી જેટલા પાલાના કણ તેટલો ઉત્કૃષ્ટો સંખ્યાતો જાણવો એ ૩ ભેદ સંખ્યાતાના કહ્યા ॥ હવે અસંખ્યાતાના એ ભેદ કહે છે ॥ જે ઉત્કૃષ્ટો સંખ્યાતો તે ઉપર એક દાણો અધિક મુકીએ ત્યારે જઘન્ય પરિત અસંખ્યાતો થાય, તે ઉપરાંત જ્યાસુધી ઉત્કૃષ્ટા પરિત અસં-

संख्याता असंख्याताना ॥८७॥

बोल.

ख्यातामांथी १ ओछो तेने मध्यम परित असंख्यातो कहीए २ ॥ हवे उत्कृष्टो परित असंख्यातो ते केम थाय ? उत्तर–जघन्य परित असंख्याताना रूप जेटलां थयां छे तेटली जघन्य परित असंख्यातनी राशी मांडीए, ते राशी मांडीने पछी मांहोमांहे राशी संघाते अभ्यास कीजे ॥ ते गुणा करीए ते केम? असत्कल्पनाये ५ नी राशी मांडीए, तेने चारवार गणतां

| | |
|---|---|
| ५ | २५ |
| ५ | १२५ |
| ५ | ६२५ |
| ५ | ३१२५ |

पांच पंचा २५ ॥ २५ पंचा १२५ ॥ १२५ पंचा ६२५ ॥ ६२५ पंचा ३१२५ थाय तेम जघन्य परित असंख्यातने जघन्य परित असंख्यातगुणा करीए तेटलां रूप थाय तेमांथी एक रूप उणुं करीए, एटले उत्कृष्टो परित असंख्यातो थाय ३ ॥ हवे उत्कृष्टो परित असंख्यातो कह्यो तेमां १ दाणो नांखीए, एटले जघन्य जुत्त असंख्यातो थाय, एक आवलिकाना समय तेटला जाणवा ४ ॥ ते उपरांत ज्यासुधी उत्कृष्टा जुत्त असंख्याताना छठो भेद छे तेमा १ रूप ओछुं त्यांसुधी सर्व मध्यम जुत्त असंख्यातो पांचमो भेद कहीए ५ ॥ हवे उत्कृष्टो जुत्त असंख्यातो केम थाय ? उत्तर–जघन्य जुत्त असंख्यातो चोथे भेदे आवलिकाना समय कह्या, तेने मांहोमांहि गुणां करता जेटला रूप थाय तेमा १ रूप ओछुं करीए

त्यारे उतकृष्टो जुत्त असंख्यातो कहीए ॥ ए छट्ठो भेद ६ ॥ हवे उतकृष्टो जुत्त असंख्यातो कह्यो तेमां १ रूप प्रक्षेपीए एटले सातमो भेद जघन्य असंख्यातो असंख्यातो थाय ७ ॥ ते उपरांत ज्यांसुधी उतकृष्टो असंख्यातो असंख्यातामां १ रूप ओछुं तेने मध्यम असंख्यातो असंख्यातो कहीए॥ ए आठमो भेद ८ ॥ हवे उतकृष्टो असंख्यातो असंख्यातो केम थाय ? उत्तर–जघन्य असंख्यातो असंख्यातो सातमो भेद छे तेने मांहोमांहि गुणा करतां जेटलां रूप थाय तेमां १ रूप ओछुं करीए, त्यारे उतकृष्टो असंख्यातो असंख्यातो थाय ए ॥ ए ए भेद असंख्याताना कह्या ॥ हवे अनंताना ८ भेद कहे छे ॥ जे उतकृष्टो असंख्यातो असंख्यातो कह्यो, ते उपर १ रूप अधिक करीए, त्यारे जघन्य परित अनंतो थाय १ ॥ ते उपरांत ज्यांसुधी उतकृष्ट परित अनंतामांहि १ ओछो तेने मध्यम परित अनंतो कहीए २ ॥ हवे उत्कृष्टो परित अनंतो केम थाय ? उत्तर–जघन्य परित अनंतो पहेलो भेद कह्यो, तेने मांहोमांहि गुणा करतां जेटलां रूप थाय ते मध्ये १ रूप ओछुं करीए, त्यारे उतकृष्टो परित अनंतो थाय ३ ॥ हवे जघन्य परित अनंतो

संख्याता असंख्याता ना ॥८८॥

कहे छे ॥ तेने मांहोमांहि गुणा करतां जेटलां रूप थाय तेने जघन्य जुत्त अनंतो चोथो भेद कहीए तेटला अभव्यसिद्धिया जीव जाणवा ४ ॥ ते उपरांत ज्यांसुधी उत्कृष्टो जुत्त अनंतामांहि १ रूप ओछुं तेने मध्यम जुत्त अनंतो कहीए ५ ॥ हवे उत्कृष्टो जुत्त अनंतो केम थाय ? उत्तर–जघन्य जुत्त अनंते अभव्य जीव कह्या तेने मांहोमांहि गुणा करतां जेटलां रूप थाय तेमां १ रूप ओछुं करीए, त्यारे उत्कृष्टो जुत्त अनंतो थाय ६ ॥ हवे उत्कृष्टो जुत्त अनंतो कह्यो ते मध्ये १ रूप प्रक्षेपिए, त्यारे जघन्य अनंतानंतो थाय ७ ॥ पछी सातमा अनंता उपरे जेटलां रूप मुकीए, ते सर्व आठमा अनंता मध्ये जाणवां॥ ते मध्यम अनंतानंतो जाणवो ॥ ८ ॥ नवमो अनंतो नथी ॥ प्रकरण मध्ये नवमो अनंतो कहेल छे पण सूत्र मते नथी ॥

इति संख्याता असंख्याता अनंताना बोल संपूर्ण ॥

---

बोल.

# पांच शरीरना बोल ॥

अथ पन्नवणा सूत्रना पद २१ थी १६ द्वारे ५ शरीरना बोल लिख्यते ॥

गाहा—नाम १ ऽत्थ २ संठाण ३ सामी ४,

उग्गाहणा ५ पुग्गलच्चयण ६ संजोयणा ७ ॥

दव्व ८ पएस ए दव्वपएसठयाए १०,

सुहुम बायर ११ उग्गाहणा अप्पाबहु १२ ॥ १ ॥

पओयण १३ विसय १४ ठिइ १५,

अंतर १६ सोलस द्वारा इमे ॥

पण सरीरोवरि एए,

उत्तारेयव्वा निउण बुद्धिहिं ॥ २ ॥

ए १६ द्वार ॥ तेमां प्रथम नामद्वार कहे छे ॥ उदारिकशरीर १ ॥ वैक्रेय शरीर २ ॥

आहारक शरीर ३ ॥ तैजस् शरीर ४ ॥ कार्मण शरीर ५ ॥ १ ॥ हवे बीजुं अर्थद्वार कहे छे ॥ उदारिक कहेतां प्रधान सर्व शरीरथी ॥ तीर्थंकर गणधरादिकनुं शरीर तथा मुक्ति जावानो स्वन्नाव तथा उदारिक कहेतां मोटुं सहस्र योजनमान, नवधारणीक तेने उदारिक शरीर कहीए ॥ १ ॥ वैक्रेय शरीर ते केने कहीए ? रूप परावर्त्तन करवानी शक्ति तथा एक अनेक नाना मोटा खेचर नुचर दृश्य अदृश्य इत्यादिक विविध क्रियाए नवा रूप बनावे तेने वैक्रेय शरीर कहीए ॥ ते बे प्रकारे छे ॥ नवप्रत्ययिक १ ॥ लब्धिप्रत्ययिक २ ॥ नवप्रत्ययिक नारकी देवताने होय १, लब्धिप्रत्ययिक मनुष्य तिर्यंचने होय २ ॥ २ ॥ आहारक शरीर ते केने कहीए ? चौद पूर्वधारी साधु, तीर्थंकर महाराजनी ऋद्धि देखवा नणी तथा संशय टाळवा निमित्त उत्तम पुद्गलो ग्रहीने ज० मुढा हाथनुं, उ० १ हाथनुं शरीर करे तेने आहारक शरीर कहीए ॥ ते स्फटिकनी परे अति निर्मळ, कोइ न देखे एवु होय ३ ॥ तैजस् शरीर ते तेजना पुद्गले निष्पन्न तेने तैजस् शरीर कहीए ॥ अदृश्य नुत आहारने पचावे तथा लब्धिवंत तेजुलेश्या मुके तेने तेजस् शरीर कहीए ४ ॥

कार्मण शरीर ते केने कहीए ? कर्म पुद्गलथी निपज्युं तेने कार्मण शरीर कहीए ॥ जेना उदयथी जीव पुद्गल ग्रहीने ते कर्मादिरूपपणे परिणमावे तथा आहारने खेंचे तेने कार्मण शरीर कहीए ५॥ २ ॥ हवे त्रीजुं संठाणद्वार कहे छे ॥ उदारिक शरीरमां संठाण ६ ॥ १ ॥ वैक्रेय शरीरमां देवताने संठाण एक समचउरंस ॥ नारकीमां संठाण एक हुंम ॥ मनुष्य तिर्यंचमां वैक्रेय करतां समचउरंस तथा नाना प्रकारनुं ॥ वायुकायनां वैक्रेयमा एक हुंम ॥२॥ आहारक शरीरमां संठाण १ समचउरंस॥ ३ ॥ तैजस् कार्मणमां ६ संठाण लाजे ॥४-५॥३॥ चोथुं स्वामीद्वार कहे छे॥ उदारिक शरीरना स्वामी मनुष्य तिर्यंच १ ॥ वैक्रेय शरीरना स्वामी देवता नारकी तथा लब्धिप्रत्ययिक मनुष्य तिर्यंच २ ॥ आहारक शरीरना स्वामी चउद पूर्वी साधु ३ ॥ तैजस् कार्मण शरीरना स्वामी सर्व संसारी जीव ४ ॥ ५ ॥ ४ ॥ हवे पांचमुं अवगाहनाद्वार कहे छे ॥ उदारिक शरीरनी अवगाहना जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो जाग, उत्कृष्टि हजार जोजन जाझेरी १ ॥ वैक्रेय शरीरनी अवगाहना जवप्रत्ययिक जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो जाग, उ० ५०० धनुष्यनी ॥ लब्धि-

प्रत्ययिकनी ज० अंगुलनो संख्यातमो जाग, ज० लाख जोजन जाफेरी ॥ २ ॥ आहारक शरीरनी अवगाहना ज० मुढा हाथनी, ज० एक हाथनी ६ ॥ तैजस कार्मणनी अवगाहना ज० अंगुलनो असंख्यातमो जाग, ज० चउद राजलोक प्रमाणे ४–५ ॥ ५ ॥ हवे छठुं पुद्गलचयणद्वार कहे छे ॥ उदारिक १ ॥ तैजस् २ ॥ कार्मण ३ ॥ ए ३ शरीर त्रण चार पांच छ दिशिनो आहार ले ॥ वैक्रेय आहारक ए बे छए दिशिनो आहार ले ५ ॥ ६ ॥ हवे सातमुं संयोजनाद्वार कहे छे ॥ उदारिक शरीरमां वैक्रेयने आहारकनी जजना ॥ तैजस् कार्मणनी नियमा १ ॥ वैक्रेयमां उदारिकनी जजना ॥ आहारक नथी ॥ तैजस् कार्मणनी नियमा २ ॥ आहारक शरीरमां उदारिकनी नियमा ॥ वैक्रेय नथी ॥ तैजस् कार्मणनी नियमा ३ ॥ तैजस् शरीरमां उदारिक वैक्रेय आहारकनी जजना ॥ कार्मणनी नियमा ॥ ४ ॥ कार्मण शरीरमां उदारिक वैक्रेय आहारकनी जजना ॥ तैजस्नी नियमा ४–५ ॥ ७ ॥ हवे आठमुं द्रव्यठयाए द्वार कहे छे ॥ सर्वथी थोडा आहारकना द्रव्यठया ते जघन्य १,२,३ ॥ उत्कृष्टा पृथक् हजार ॥ १ ॥ तेथी वैक्रेयना द्रव्यठया असंख्यातगुणा २ ॥ तेथी उदारिकना द्रव्यठया असंख्यातगुणा

३॥ तेथी तेजस् कार्मण दव्वठयाए दोवितुला ने उदारिकथी अनंतगुणा अधिक ४॥८॥ हवे न-
वमुं पएसठयाए द्वार कहे छे ॥ सर्वथी थोमा आहारकना प्रदेश १॥ तेथी वैक्रेयना प्रदेश असं-
ख्यातगुणा २॥ तेथी उदारिकना प्रदेश असंख्यातगुणा ३॥ तेथी तेजस्ना प्रदेश अनंत-
गुणा ४॥ तेथी कार्मणना प्रदेश अनंतगुणा ५ ॥ए॥ दशमुं दव्वपएसठयाए द्वार कहे
छे ॥ सर्वथी थोमा आहारकना दव्वठया १॥ तेथी वैक्रेयना दव्वठया असंख्यातगुणा २॥
तेथी उदारिकना दव्वठया असंख्यातगुणा ३॥ तेथी आहारकना पएसठया असंख्यात-
गुणा ४॥ तेथी वैक्रेयना पएसठया असंख्यातगुणा ५॥ तेथी उदारिकना पएसठया
असंख्यातगुणा ६॥ तेथी तेजस् कार्मण दोवितुला ने दव्वठया अनंतगुणा ७–८॥ तेथी
तेजस्ना पएसठया अनंतगुणा ए॥ तेथी कार्मणना पएसठया अनंतगुणा १०॥१०॥
अग्यारमुं सूक्ष्म बादर द्वार कहे छे ॥ सर्वथी थोमा बादर पुद्गल उदारिकनां १॥ तेथी वैक्रेय-
नां पुद्गल सूक्ष्म २॥ तेथी आहारकनां पुद्गल सूक्ष्म ३॥ तेथी तेजस्नां पुद्गल सूक्ष्म
४॥ तेथी कार्मणना पुद्गल सूक्ष्म ५॥ ११॥ हवे बारमुं अवगाहनानो अल्पाबहुत्व

 

द्वार कहे छे ॥ सर्वथी थोडी उदारिकनी जघन्य अवगाहना १ ॥ तेथी तेजस् कार्मणनो मांहोमांहि तुल्य ने जघन्य अवगाहनां विसेसाहिया ३ ॥ तेथी वैक्रेयनो जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी ४ ॥ तेथी आहारकनी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी ५ ॥ तेथी आहारकनी उत्कृष्टी अवगाहना विसेसाहिया ६ ॥ तेथी उदारिकनी उत्कृष्टी अवगाहना संख्यातगुणी ७ ॥ तेथी वैक्रेयनी उत्कृष्टी अवगाहना संख्यातगुणी ८ ॥ तेथी तेजस् कार्मणनी मांहोमांहि तुल्य ने उत्० अवगाहना असंख्यातगुणी १० ॥ १२ ॥ हवे तेरमुं प्रयोजनद्वार कहे छे ॥ उदारिकनुं प्रयोजन मुक्ति जावानुं १ ॥ वैक्रेयनुं प्रयोजन अनेक रूप करवानुं २ ॥ आहारकनुं प्रयोजन संशय टाळवानुं ३ ॥ तेजस्नुं प्रयोजन आहार पचाववानुं ४ ॥ कार्मणनुं प्रयोजन आहार खेंचवानुं अने आठ कर्म ग्रहण करीने संसार परिभ्रमण करवानुं ५ ॥ १३ ॥ चउदमुं विषयद्वार कहे छे ॥ उदारिकनो विषय पन्नरमा रुचक द्वीपताइं १ ॥ वैक्रेयनो विषय असंख्याता द्वीप समुद्रताइं २ ॥ आहारकनो विषय अढी द्वीपताइं ३ ॥ तेजस् कार्मणनो विषय सर्व लोकमां जवानो

४–५ ॥ १४ ॥ पंदरमुं स्थितिद्वार कहे छे ॥ उदारिकनी स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी, उत्कृष्टि ३ पल्योपमनी १ ॥ वैक्रेयनी जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी, उत्कृष्टि ३३ सागरनी २ ॥ आहारकनी ज० उ० अंतर्मुहूर्त्तनी ३ ॥ तेजस् कार्मणनी स्थिति बे प्रकारनी ॥ अणाइया अपज्जवसीया ते अभव्य आश्रि आदि नथी ने अंत पण नथी अने अणाइया सपज्जवसीया ते भव्य आश्रि आदि नथी ने अंत छे ॥ १५ ॥ हवे सोलमुं अंतरद्वार कहे छे ॥ उदारिकनुं आंतरुं पडे तो जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनुं, उत्० तेत्रीस सागरोपमनुं १ ॥ वैक्रेय शरीरनुं आंतरुं पडे तो ज० अंतर्मुहूर्त्तनुं, उत्० अनंतो काल यावत् वणस्सईकालो २ ॥ आहारकनुं आंतरुं पडे तो ज० अंतर्मुहूर्त्तनुं, उत्० अर्द्ध पुद्गल परावर्तन देशे उणानुं ३ ॥ तेजस् कार्मणनुं आंतरुं नथी ४–५ ॥ तथा अंतर बीजा प्रकारे ॥ आहारिक शरीर वर्जि ४ शरीर लोकमां सदा लाभे पण तेनुं अंतर पडतुं नथी, अने आहारिक शरीरनुं अंतर पडे तो उत्कृष्ट ६ मासनुं अंतर पडे ॥ १६ ॥

इति पांच शरीरना बोल संपूर्ण ॥

# पांच इंद्रिय ॥

अथ श्री पन्नवणा सूत्रना पंदरमा पदना पहेला उद्देशाथी पांच इंद्रियना बोल लिख्यते ॥

गाथा ॥ नाम १ संठाण २ बाहल्लं ३, पुहत्तं ४ कइपएस ५ उगाढे ६ ॥

अप्पाबहु ७ पुट्ठ ८ पविट्ठे ९, विसय १० अणागार ११ आहारे १२ ॥ १ ॥

हवे प्रथम नाम द्वार कहे छे ॥ १ श्रोत्रेंद्रिय, २ चक्षुइंद्रिय, ३ घ्राणेंद्रिय, ४ रसेंद्रिय, ५ स्पर्शेंद्रिय ॥ १ ॥

हवे बीजुं संस्थान द्वार कहे छे ॥ १ श्रोत्रेंद्रियनुं संस्थान कदंब वृक्षनां फूल सरखुं, २ चक्षुइंद्रियनुं संस्थान मसूरनी दाळ अथवा अर्ध चंद्रमा सरखुं, ३ घ्राणेंद्रियनुं संस्थान अतिमुक्तक पुष्प अथवा धमण सरखुं, ४ रसेंद्रियनुं संस्थान छरपलानी धार सरखुं, ५ स्पर्शेंद्रियनुं संस्थान नाना प्रकारनुं ॥ २ ॥

हवे त्रीजुं बाहुल्यद्वार कहे छे ॥ पाचे इंद्रियनुं जाडपणुं जघन्य उत्कृष्ट आंगुलना

असंख्यातमा भागनुं ॥ ३ ॥

हवे चोथुं पृथक्त्वद्वार कहे छे ॥ श्रोत्र, १ चक्षु ने २ घ्राण ए त्रण इंद्रियनुं लांबपणुं जघन्य उत्कृष्ट आंगुलना असंख्यातमा भागनुं, ३ रसेंद्रियनुं लांबपणुं जघन्य आंगुलना असंख्यातमा भागनुं, उत्कृष्ट पृथक् ते २ थी ए आंगुलनुं ४ ॥ स्पर्शेंद्रियनुं लांबपणुं जघन्य आंगुलना असंख्यातमा भागनुं, उत्कृष्ट हजार योजन झाझेरुं ५ ॥ ४ ॥

हवे पांचमुं प्रदेश द्वार कहे छे ॥ पांच इंद्रियना अनंत अनंत प्रदेश छे ॥ ५ ॥

हवे छठुं अवगाह द्वार कहे छे. पांच इंद्रिय छे तेमां दरेक इंद्रिय आकाशना प्रदेश असंख्यात असंख्यातने अवगाही रहेल छे ॥ दरेक इंद्रियना अनंत अनंत कर्कश अने भारे स्पर्श छे, तेम अनंत अनंत हलका अने मृदु स्पर्श छे, ए स्थूल दृष्टिनी अपेक्षाए जाणवुं ॥ ६ ॥

हवे सातमुं अल्पबहुत्व द्वार कहे छे, तेमां प्रथम प्रदेशनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथी थोडा चक्षु इंद्रियना प्रदेश १ ॥ तेथी श्रोत्रेंद्रियना प्रदेश संख्यातगुणा २ ॥ तेथी घ्राणें-

ड्रियना प्रदेश संख्यातगुणा ३ ॥ तेथी रसेंड्रियना प्रदेश असंख्यातगुणा ४ ॥ तेथी स्पर्शें- ड्रियना प्रदेश संख्यातगुणा ५ ॥

बीजो इंड्रियोनो आकाश प्रदेश अवगाही रह्यानो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथी थोडा चक्षु इंड्रियना अवगाह्या आकाश प्रदेश १ ॥ तेथी श्रोत्रेंड्रियना अवगाह्या आकाश प्रदेश संख्यातगुणा २ ॥ तेथी घ्राणेंड्रियना अवगाह्या आकाश प्रदेश संख्यातगुणा ३ ॥ तेथी रसेंड्रियना अवगाह्या आकाश प्रदेश असंख्यातगुणा ४ ॥ तेथी स्पर्शेंड्रियना अवगाह्या आकाश प्रदेश संख्यातगुणा ५ ॥

हवे त्रिजो इंड्रियोना प्रदेश अने आकाश प्रदेशने अवगाही रहेल इंड्रियो ए बेनो साथे अल्पबहुत्व ॥ सर्वथी थोडा चक्षु इंड्रियना अवगाह्य आकाश प्रदेश १ ॥ तेथी श्रोत्रेंड्रियना अवगाह्य संख्यातगुणा २ ॥ तेथी घ्राणेंड्रियना अवगाह्य संख्यातगुणा ३ ॥ तेथी रसेंड्रियना अवगाह्य असंख्यातगुणा ४ ॥ तेथी स्पर्शेंड्रियना अवगाह्य संख्यातगुणा ५ ॥ तेथी चक्षु इंड्रियना प्रदेश अनंतगुणा ६ ॥ तेथी श्रोत्रेंड्रियना प्रदेश संख्यातगुणा ७ ॥ तेथी घ्रा-

णेंद्रियना प्रदेश संख्यातगुणा ८ ॥ तेथी रसेंद्रियना प्रदेश असंख्यातगुणा ए ॥ तेथी स्पर्शेंद्रियना प्रदेश संख्यातगुणा १० ॥

हवे चोथो इंद्रियोमां कर्कश ज्ञारे स्पर्शनो अल्प बहुत्व ॥ सर्वथी थोमा चक्षु इंद्रियना कर्कश ज्ञारे स्पर्श १ ॥ तेथी श्रोत्रेंद्रियना अनंतगुणा २ ॥ तेथी घ्राणेंद्रियना अनंतगुणा ३ ॥ तेथी रसेंद्रियना अनंतगुणा ४ ॥ तेथी स्पर्शेंद्रियना अनंतगुणा ५ ॥ सर्वथी थोमा स्पर्शेंद्रियना लघुमृदु स्पर्श १ ॥ तेथी रसेंद्रियना अनंत गुणा २ तेथी घ्राणेंद्रियना अनंतगुणा ३ ॥ तेथी श्रोत्रेंद्रियना अनंतगुणा ४ ॥ तेथी चक्षु इंद्रियना अनंतगुणा ५ ॥

हवे उठो इंद्रियोमां कर्कश १ ज्ञारे २ लघु ३ मृदु ४ ए चारे स्पर्शनो साथे अल्पबहुत्व ॥ सर्वथी थोमा चक्षु इंद्रियना कर्कश ज्ञारे स्पर्श १ ॥ तेथी श्रोत्रेंद्रियना कर्कश ज्ञारे स्पर्श अनंत गुणा २ ॥ तेथी घ्राणेंद्रियना अनंतगुणा ३ ॥ तेथी रसेंद्रियना अनंतगुणा ४ ॥ तेथी स्पर्शेंद्रियना अनंतगुणा ५ ॥ तेथी स्पर्शेंद्रियना लघु मृदु स्पर्श अनंतगुणा ६ ॥ तेथी रसेंद्रियना लघु मृदु स्पर्श अनंतगुणा ७ ॥ तेथी घ्राणेंद्रियना लघु मृदु

 

स्पर्श अनंतगुणा ७ ॥ तेथी श्रोत्रेंद्रियना लघु मृदु स्पर्श अनंतगुणा ॥ ए ॥ तेथी चक्षु-इंद्रियना लघु मृदु स्पर्श अनंतगुणा १० ॥ ७ ॥

हवे आठमुं पृष्ट द्वार कहे छे ॥ इंद्रियोने जे पुद्गलो आवी स्पर्शे ते पुद्गलोने इंद्रियो ग्रहे ते पृष्ट कहीए. पांच इंद्रियोमां चक्षु इंद्रिय विना चार इंद्रियोने पुद्गलो आवी स्पर्शे छे पण चक्षु इंद्रियने आवी स्पर्शता नथी ॥ ७ ॥

हवे नवमुं प्रविष्ट द्वार कहे छे. जे इंद्रियोने विषे अभिमुख ( सामां ) पुद्गलो आवीने प्रवेश करे तेने प्रविष्ट कहीए ॥ पांच इंद्रियमां चक्षु इंद्रिय विना चार इंद्रिय प्रविष्ट छे ने चक्षु इंद्रिय अप्रविष्ट छे ॥ ए ॥

हवे दशमुं विषयद्वार कहे छे ॥ पांचे इंद्रियोनो जघन्य विषय आंगुलना असंख्यातमा भागनो, उत्कृष्ट जुदो जुदो कहे छे ॥ एकेन्द्रियनो स्पर्शेंद्रियनो विषय ४०० धनुष्य, बेइंद्रियनो रसेंद्रियनो ६४ धनुष्य अने स्पर्शेंद्रियनो ७०० धनुष्यनो, तेइंद्रियनो घ्राणेंद्रियनो १०० धनुष्य, रसेंद्रियनो १२७ धनुष्य अने स्पर्शेंद्रियनो १६०० धनुष्यनो,

चउरिंद्रियनो चक्षुइंद्रियनो २९५४ धनुष्यनो, घ्राणेंद्रियनो २०० धनुष्यनो, रसेंद्रियनो २५६ धनुष्यनो अने स्पर्शेंद्रियनो ३२०० धनुष्यनो, असंज्ञी पंचेंद्रियनो श्रोत्रेंद्रियनो १ योजननो, चक्षुइंद्रियनो ५९०८ धनुष्यनो, घ्राणेंद्रियनो ४०० धनुष्यनो, रसेंद्रियनो ५१२ धनुष्यनो अने स्पर्शेंद्रियनो ६४०० धनुष्यनो, संज्ञी पंचेंद्रियना श्रोत्रेंद्रियनो १२ योजननो, चक्षुइंद्रियनो १ लाख योजन जाझेरानो, घ्राणेंद्रियनो ९ योजननो, रसेंद्रियनो ९ योजननो, स्पर्शेंद्रियनो ९ योजननो ॥ १० ॥

हवे अग्यारमुं अनाकार (उपयोग) द्वार कहे छे, तेमां प्रथम जघन्य उपयोगकाळनो अल्पबहुत्व॥सर्वथी थोडो चक्षुइंद्रियनो जघन्य उपयोगकाळ १॥ तेथी श्रोत्रेंद्रियनो जघन्य उपयोगकाळ विशेषाधिक २ ॥ तेथी घ्राणेंद्रियनो जघन्य उपयोगकाळ विशेषाधिक ३ ॥ तेथी रसेंद्रियनो जघन्य उपयोगकाळ विशेषाधिक ४ ॥ तेथी स्पर्शेंद्रियनो जघन्य उपयोगकाळ विशेषाधिक ५ ॥

हवे बीजो उत्कृष्ट उपयोगकाळनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथी थोडो चक्षुइंद्रियनो उत्कृष्ट

पांच ||९५|| उपयोगकाळ १ ॥ तेथकी श्रोत्रेंद्रियनो उत्कृष्ट उपयोगकाळ विशेषाधिक २ ॥ तेथकी घ्राणेंद्रियनो उत्कृष्ट उपयोगकाळ विशेषाधिक ३ ॥ तेथकी रसेंद्रियनो उत्कृष्ट उपयोगकाळ विशेषाधिक ४ ॥ तेथकी स्पर्शेंद्रियनो उत्कृष्ट उपयोगकाळ विशेषाधिक ५ ॥ इंद्रिय.

हवे जघन्य उत्कृष्ट बन्नेनो उपयोगकाळनो अल्पबहुत्व जेळुं कहे छे. सर्वथी थोको चक्षुइंद्रियनो जघन्य उपयोगकाळ १ ॥ तेथी श्रोत्रेंद्रियनो जघन्य उपयोगकाळ विशेषाधिक २ ॥ तेथी घ्राणेंद्रियनो जघन्य उपयोगकाळ विशेषाधिक ३ ॥ तेथी रसेंद्रियनो जघन्य उपयोगकाळ विशेषाधिक ४ ॥ तेथी स्पर्शेंद्रियनो जघन्य उपयोगकाळ विशेषाधिक ५ ॥ तेथी चक्षुइंद्रियनो उत्कृष्ट उपयोगकाळ विशेषाधिक ६ ॥ तेथी श्रोत्रेंद्रियनो उत्कृष्ट उपयोगकाळ विशेषाधिक ७ ॥ तेथी घ्राणेंद्रियनो उत्कृष्ट उपयोगकाळ विशेषाधिक ८ ॥ तेथी रसेंद्रियनो उत्कृष्ट उपयोगकाळ विशेषाधिक ९ ॥ तेथी स्पर्शेंद्रियनो उत्कृष्ट उपयोगकाळ विशेषाधिक १० ॥ ११ ॥

हवे बारमुं आहारद्वार कहे छे श्रोत्रेंद्रिय आदि पांच इंद्रियो द्रव्यथी अनंत ||९५||

प्रदेशी स्कंधनो आहार करे अर्थात् ग्रहण करे १ ॥ क्षेत्रथी असंख्यात आकाशप्रदेशने अवगाही रहेल पुद्गलने ग्रहण करे २ ॥ कालथी एक समयथी मांमी असंख्यात समयनी स्थितिवाळा पुद्गलने ग्रहण करे ३ ॥ जावथकी वर्ण गंध रस अने स्पर्शवाळा पुद्गलोने आहारपणे ग्रहण करे ४ ॥ १२ ॥

इति पांच इंद्रियना बोल संपूर्ण ॥

## पुद्गल परावर्त्तन ॥

अथ श्री जगवती शतक १२ माना उद्देशा चोथाथी पुद्गलपरावर्त्तनना बोल लिख्यते ॥

गाथा—नाम १ गुण २ संखा ३ कालं ४, कालोवमं ५ च कालअप्पाबहु ६ ॥

पुग्गल मज्झे पुग्गल ७, पुग्गल कारणे अप्पाबहु ८ ॥ १ ॥

प्रथम नामद्वार कहे ठे ॥ पुद्गल परावर्त्तननां ७ नाम ॥ उदारिक पुद्गल पराव-

र्त्तन १ ॥ वैक्रेय पु० २ ॥ तेजस् पु० ३ ॥ कार्मण पु० ४ ॥ मन पु० ५ ॥ वचन पु० ६ ॥ श्वासोश्वास पु० ७ ॥ १ ॥ हवे बीजुं गुणद्वार कहे छे ॥ जे लोकमां जेटला पुद्गल छे ते सर्व उदारिक शरीरपणे लइने मुके त्यारे एक उदारिकनुं पुद्गल परावर्त्तन थाय ॥ एम ७ पुद्गल परावर्त्तन जाणवां ॥ २ ॥ हवे त्रिजुं संख्याद्वार कहे छे ॥ ते संख्याना चार बोल. प्रथम बोल एक जीव आश्रि. बीजो बोल घणा जीव आश्रि. त्रीजो बोल एक जीव मांहोमांहे आश्रि. चोथो बोल घणा जीव मांहोमांहे आश्रि ॥ हवे तेमां संख्यानो प्रथम बोल कहे छे ॥ जे एक वचने एक नारकीने जीवे पूर्वे उदारिक पुद्गल परावर्त्तन अनंती २ वार कीधां अने आगळ कोइ करशे, कोइ नहि करशे ॥ जे करशे ते ज० १-२-३, उत्० अनंतां करशे ॥ एम साते कहेवां ॥ एम यावत् वैमानिक देवने जीवे पूर्वे उदारिक पुद्गल परावर्त्तन अनती अनंती वार कीधां अने आगळ कोइ करशे, कोइ नहि करशे ॥ जे करशे ते ज० १-२-३, उत्० अनंतां करशे ॥ एम साते कहेवां ॥ एम एक वचने १६८ प्रश्न थाय ॥ १ ॥ हवे संख्यानो बीजो बोल कहे छे ॥ बहुवचने

सर्व नारकीने जीवे पूर्वे उदारिक पुद्गल परावर्त्तन अनंतां कीधां अने घणा नारकी आगळ अनंतां करशे एम यावत् सात पुद्गल परावर्त्तन कहेवां ॥ एम यावत् सर्व वैमानिक देवने जीवे कीधां ॥ एम १६८ प्रश्न थाय ॥ एवं २ संख्याना थइने ३३६ प्रश्न थाय ॥ ए संख्याना २ बोल कह्या ॥ ३ ॥ हवे संख्यानो त्रीजो बोल कहे छे ॥ एक नारकीने जीवे नारकीपणे पूर्वे उदारिक पुद्गल परावर्त्तन नथी कीधां, आगळ पण नहि करे १ ॥ अने एक नारकीने जीवे नारकीपणे पूर्वे वैक्रेय पुद्गल परावर्त्तन अनंतां कीधां, आगळे कोई करशे ने कोई नहि करशे अने जे करशे ते ज० १–२–३, उत्० अनंता करशे ॥ एम यावत् श्वासोश्वास पुद्गल परावर्त्तन सुधी कहेवुं ॥ एम यावत् एक नारकीये वैमानिक देवपणे ॥ पछी जे जे दंडके जे जे पुद्गल परावर्त्तन होय तेनो हा कहीए अने न होय तेनी ना कहीए, एम एक नारकीनो दंडक २४ दंडके उतारतां १६८ प्रश्न थाय, तेम २४ दंडक २४ दंडके उतारवा ॥ एक वचने ४०३२ प्रश्न थाय ॥ ए संख्यानो त्रीजो बोल कह्यो ४ ॥ हवे संख्यानो चोथो बोल कहे छे ॥ बहु वचने सर्व नारकीये नारकीपणे पूर्वे

उदारिक पुद्गल परावर्त्तन नथी कीधां अने आगळे पण नहि करे १ ॥ अने सर्व नारकीये नारकीपणे पूर्वे वैक्रेय पुद्गल परावर्त्तन अनंता कीधां अने आगळ पण घणा नारकी अनंतां करशे २ ॥ एम यावत् श्वासोश्वास सुधी कहेवुं ॥ एम यावत् सर्व नारकीये वैमानिक देवपणे १६० प्रश्न थाय ॥ एम २४ दंडके २४ दंडक बहु वचने उतारतां ४०३२ प्रश्न थाय ॥ एम एक वचन ने बहु वचनना भेगा करतां ८०६४ प्रश्न थाय ॥ ए संख्याद्वारनो चोथो बोल कह्यो ॥ चारे बोलना मळीने कुल संख्या ८४०० भांगा थया ॥ हवे एनो विशेष खुलासो कहे छे ॥ सर्व जीवे उदारिक पुद्गल परावर्त्तन १० दंडके अनंती २ वार कीधां ते १० दंडक कहे छे ॥ ५ एकेंद्रिय ॥ ३ विगलेंद्रिय ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय ॥ मनुष्य ॥ ए १० दंडकने विषे कीधां ॥ वैक्रेय पुद्गल परावर्त्तन १७ दंडके अनंती २ वार कीधां ते १७ दंडक कहे छे ॥ नारकी १ ॥ दश भवनपति १० ॥ वायुनो १ ॥ संज्ञी तिर्यंच पंचेंद्रिय प्रजाप्तानो १ ॥ संज्ञी मनुष्य प्रजाप्तानो १ ॥ वाणव्यंतर १ ॥ ज्योतिषी १ ॥ वैमानिक १ ॥ ए १७ दंडकने विषे कीधां ॥ तैजस् १ ॥ कार्मण २ ॥ श्वासोश्वास ३ ॥ पुद्गल परावर्त्तन २४ दंडके

अनंती अनंती वार कीधां ॥ मन पुद्गल परावर्त्तन संज्ञी पंचेंद्रिय प्रजापाना १६ दंमकने विषे अनंती अनंतीवार कीधां ॥ वचन पुद्गल परावर्त्तन ५ एकेंद्रिय वर्जिने शेष १ए दंमके अनंती अनंतीवार कीधां ॥ ए संख्यानुं द्वार चार बोले संपूर्ण ॥ ३ ॥ हवे चोथुं कालद्वार कहे छे ॥ अनंतां कालचक्र मंमल वही जाय, त्यारे एक उदारिक पुद्गल परावर्त्तन थाय ॥ एम ७ पुद्गल परावर्त्तन जाणवां ॥ ४ ॥ हवे पांचमुं कालनी उपमानुं द्वार कहे छे ॥ अनंत सूक्ष्म परमाणुए एक व्यवहार परमाणु नीपजे १ ॥ अनंत व्यवहार परमाणुए एक उसनसनियो नीपजे २ ॥ आठ उसनसनिये एक सन्हसनीयो नीपजे ३ ॥ आठ सन्ह-सनिये एक उर्ध्वरेणु नीपजे ४ ॥ आठ उर्ध्वरेणुए एक त्रसरेणु नीपजे ५ ॥ आठ त्रसरेणुए एक रथरेणु नीपजे ६ ॥ आठ रथरेणुए एक देवकुरु उत्तरकुरु क्षेत्रना मनुष्यनो वालाग्र नीपजे ७ ॥ आठ वालाग्रे एक हरिवास रम्यक्वास क्षेत्रना मनुष्यनो वालाग्र नीपजे ८ ॥ आठ वालाग्रे हेमवय एरणवय क्षेत्रना मनुष्यनो वालाग्र नीपजे ए ॥ आठ वालाग्रे पूर्व पश्चिम महाविदेहना मनुष्यनो वालाग्र नीपजे १० ॥ ८ वालाग्रे १ लिख नीपजे ॥ तेवी ८

लीखे १ जु नीपजे ॥ ८ जुए १ जव मध्य नाग नीपजे ॥ ८ जव मध्य नागे १ उच्छित अंगुल निपजे ॥ ६ उच्छित अंगुले १ पगनुं पहोळपणुं निपजे ॥ बे पगे १ विहत्थ निपजे ॥ बे विहत्थे एक हाथ निपजे ॥ बे हाथे एक कुक्षि निपजे ॥ बे कुक्षिए १ धनुष निपजे ॥ बे हजार धनुषे १ गाउ निपजे ॥ चार गाउए १ जोजन निपजे ॥ तेवो १ जोजन प्रमाणे लांबो पहोळो उंडो कूवो कल्पीए, पछी १ वालाग्रना असंख्याता खंड कल्पीने करीए, तेवे वालाग्रे कुवो ठांसी ठांसीने नरीए ॥ पछी ते उपर चक्रवर्त्यादिकनुं कटक चाल्युं जाय, तोपण ते वालाग्र नमे नहि. तथा गंगा नदीनो प्रवाह उपरथी चाले तो एक रज पण तणाय नहि. तथा अग्निने दवे पण न बळे ॥ एवो कुवो ठांसीने नरीए पछी ते कुवामांथी सो सो वर्षे एक एक वालाग्र काढीए ॥ ते वर्षनुं लक्षण तथा मान कहे छे ॥ जे असंख्याता समय वहि जाय त्यारे १ आवलिका थाय ॥ संख्याति आवलिकाये १ उश्वास थाय ॥ तेम संख्याति आवलिकाए १ निःश्वास थाय ॥ १ उश्वास १ निःश्वास नेगा थइने एक प्राण थाय ॥ सात प्राणे १ स्तोक थाय ॥ सात स्तोके १ लव थाय ॥

७७ लवे एक मुहूर्त्त थाय ॥ ३७७३ श्वासोश्वासे १ मुहूर्त्त थाय ॥ ३० मुहूर्ते १ अहोरात्र थाय ॥ १५ अहोरात्रे १ पक्ष थाय ॥ बे पक्षे १ मास थाय ॥ बे मासे १ ऋतु थाय ॥ ६ ऋतुए १ वर्ष थाय ॥ पांच वर्षे १ जुग थाय ॥ वीस जुगे १०० वर्ष थाय ॥ एवा सो सो वर्षे कुवामांथी एकेक वाळ काढीए ॥ एम काढतां काढतां ज्यारे कुवो खाली थाय त्यारे १ पल्योपम थाय ॥ एवा १० क्रोडाक्रोडी पल्योपमे १ सागरोपम थाय ॥ वीस क्रोडाक्रोडी सागरोपमे १ कालचक्र थाय ॥ एवा अनंतां कालचक्रे १ उदारिक पुद्गल परावर्त्तन थाय ॥ ए कालनी उपमानुं द्वार कह्युं ॥ ५ ॥ हवे छठुं कालना अल्पबहुत्वनुं द्वार कहे छे ॥ एवा अनंत कालचक्र वही जाय त्यारे १ कार्मण पुद्गल परावर्त्तन थाय १ ॥ अनंतां कार्मण पुद्गल परावर्त्तन वही जाय, त्यारे १ तैजस् पुद्गल परावर्त्तन थाय २ ॥ एवां अनंतां तैजस् पुद्गल परावर्त्तन वहि जाय, त्यारे १ उदारिक पुद्गल परावर्त्तन थाय ३ ॥ एवां अनंतां उदारिक पुद्गल परावर्त्तन वही जाय, त्यारे १ श्वासोश्वास पुद्गल परावर्त्तन थाय ४ ॥ एवां अनंतां श्वासोश्वास पुद्गल परावर्त्तन वही जाय, त्यारे १ मन पुद्गल

 

परावर्त्तन थाय ॥ ५ ॥ एवा अनंतां मन पुद्गल परावर्त्तन वही जाय, त्यारे १ वचन पुद्गल परावर्त्तन थाय ६ ॥ एवां अनंतां वचन पुद्गल परावर्त्तन वही जाय, त्यारे १ वैक्रेय पुद्गल परावर्त्तन थाय ७ ॥ ६ ॥ हवे सातमुं पुद्गल मध्ये पुद्गलनुं द्वार कहे छे ॥ एक कार्मण पुद्गल परावर्त्तनमांहि अनंतां कालचक्र वही जाय १ ॥ एक तैजस् पुद्गल परावर्त्तनमांहि अनंतां कार्मण पुद्गल परावर्तन वही जाय २ ॥ एक उदारिक पुद्गल परावर्त्तनमांहि अनंतां तैजस् पुद्गल परावर्त्तन वही जाय ३ ॥ एक श्वासोश्वास पुद्गल परावर्त्तनमांहि अनंतां उदारिक पुद्गल परावर्त्तन वही जाय ४ ॥ एक मन पुद्गल परावर्त्तनमांहि अनंतां श्वासोश्वास पुद्गल परावर्त्तन वही जाय ५ ॥ एक वचन पुद्गल परावर्त्तनमांहि अनंतां मन पुद्गल परावर्तन वही जाय ६ ॥ एक वैक्रेय पुद्गल परावर्त्तनमांहि अनंतां वचन पुद्गल परावर्त्तन वही जाय ७ ॥ ७ ॥ हवे आठमुं अल्पबहुत्वद्वार कहे छे ॥ सर्वथी थोडा जीवे वैक्रेय पुद्गल परावर्त्तन कीधां १ ॥ तेथी अनंतगुणा अधिक जीवे वचन पुद्गल परावर्त्तन कीधां २ ॥ तेथी अनंतगुणा अधिक जीवे मन पुद्गल परावर्त्तन

कीधा ३ ॥ तेथी अनंतगुणा अधिक जीवे श्वासोश्वास पुद्गल परावर्त्तन कीधां ४ ॥ तेथी अनंतगुणा अधिक जीवे उदारिक पुद्गल परावर्त्तन कीधां ५ ॥ तेथी अनतगुणा अधिक जीवे तैजस् पुद्गल परावर्त्तन कीधां ६ ॥ तेथी अनंतगुणा अधिक जोवे कार्मण पुद्गल परावर्त्तन कीधां ७ ॥ ८ ॥ ए ७ पुद्गल परावर्त्तननो विचार जाणीने समकित सहित जिनाज्ञा प्रमाण करीने, ज्ञान दर्शन चारित्र तपनी आराधना करीए, जेथी पुद्-गल परावर्त्तन न करवा पडे ॥

इति पुद्गल परावर्त्तनना बोल संपूर्ण ॥

---

## पांच ज्ञानना बोल ॥

---

अथ श्री नंदीसूत्रथी ५ ज्ञानना बोल लिख्यते ॥ प्रथम ज्ञान १ ज्ञेय २, ज्ञानी ३ ए ३ बोलनुं जाणपणुं करवुं ॥ जेणे करी वस्तु जाणीये ते ज्ञान १ ॥ ज्ञेय ते जाणवायोग्य

वस्तु २ ॥ ज्ञानी ते जाणनार पुरुष ३ ॥ ज्ञानना ५ भेद ॥ मतिज्ञान १ ॥ श्रुतज्ञान २ ॥ अवधिज्ञान ३ ॥ मनःपर्यव ज्ञान ४ ॥ केवल ज्ञान ५ ॥ सम्यक्दृष्टिनुं मतिज्ञान ॥ मिथ्या-दृष्टिनुं मति अज्ञान ॥ सम्यक्दृष्टिनुं श्रुत ते श्रुतज्ञान ॥ मिथ्यादृष्टिनुं श्रुत ते श्रुत अज्ञान॥ मतिज्ञान ने श्रुतज्ञान ए २ ज्ञान मांहोमांहि खीरनीरनी पेरे मळी रह्यां छे, जीव अभ्यंतर शरीरनी पेठे ॥ हवे इहां बे ज्ञानने विषे आचार्य विशेष कहे छे ॥ मतिये करी जाणे ते मतिज्ञान ॥ श्रुते करी जाणे ते श्रुतज्ञान ॥ मतिज्ञान वर्त्तमानकाल ग्राही छे ने श्रुतज्ञान त्रिकाळ ग्राही छे, तेथी मति श्रुत ज्ञान बे जूदां कह्यां छे ॥ मतिज्ञानना २ भेद ॥ श्रुतनिश्रित १ ॥ अश्रुत निश्रित २ ॥ अश्रुत निश्रितना ४ भेद ॥ औत्पातिकी १ ॥ वैनयिकी २ ॥ कार्मिकी ३ ॥ पारिणामिकी ४ ॥ तेमां औत्पातिकी बुद्धि ते अण सांभळी अणधारी तत्काळ बुद्धि उपजे ते १ ॥ वैनयिकी बुद्धि ते गुरुनो विनय करवाथी शास्त्रना अर्थनो फेलावो थाय ते २ ॥ कार्मिकी बुद्धि ते जोतां लखतां चितरतां भणतां गणतां अनेक प्रकारे कला प्रमुख अभ्यास करतां अभ्यासमां अत्यंत कुशल थाय ते ३ ॥ पारि-

णामिकी बुद्धि ते जेम जेम वय परिणमे तेम तेम बहुश्रुत थाय ४ ॥ श्रुतनिश्रितना ४ भेद ॥ अवग्रह १ ॥ इहा २ ॥ अवाय ३ ॥ अने धारणा ४ ॥ तेमां अवग्रह ते निर्देश न थइ शके तेवी रीते पदार्थना सामान्य अंशनुं ग्रहण करवुं ते १ ॥ गृहीत अर्थनी पर्यालोचना करवी ते इहा २ ॥ अवगृहित अने इहित अर्थनो निश्चय करवो ते अवाय ॥ जेमके आ बाळक छे ॥ आ गाय छे इत्यादि ३ ॥ निश्चित अर्थने धारी राखवो ते धारणा ४ ॥ अवग्रहना बे भेद ॥ व्यंजनावग्रह १ ॥ अने अर्थावग्रह २ ॥ पदार्थनो प्रथम समये अव्यक्त संबंधरूप बोध थाय ते व्यंजनावग्रह १ ॥ अने व्यक्त संबंधरूप बोध थाय ते अर्थावग्रह २ ॥ व्यंजनावग्रह आंख अने मन सिवाय बीजी चार इंद्रियोथी थाय छे, त्यारे अर्थावग्रह छए इंद्रियथी थाय छे ॥ व्यंजनावग्रह ते शब्दादि रूपे परिणत द्रव्यनो उपकरणेंद्रियथी अवग्रह परिच्छेद अर्थात् अव्यक्त बोध थाय ते अथवा दीवे करी पदार्थ प्रगट करीये तेम उपकरणेंद्रिये करी पोताने संबंधे रह्या पदार्थ शब्दादिनुं ग्रहवुं अव्यक्तरूपे परिच्छेद ते व्यंजनाग्रह, चक्षु इंद्रिय ने मन विना शेष चार इंद्रियनो थाय छे ॥ चक्षु अने

मनने अप्राप्तकारिपणुं छे, तेथी अर्थावग्रह सर्व इंद्रियोनो थाय छे ॥ अवग्रह १ समय ॥ इहा अवाय अंतर्मुहूर्त्त ॥ धारणा संख्याता असंख्याता कालनी ॥ व्यंजनावग्रह ४ प्रकारे ते कहे छे ॥ श्रोत्रेंद्रिय व्यंजनावग्रह ते श्रोत्रेंद्रिये शब्दना पुद्गल ग्रहीने शब्द सांभळवो एवुं यावत् स्पर्शेंद्रिय व्यंजनावग्रह ते स्पर्शेंद्रिये करी खरखरादिक स्पर्शना पुद्गलनो अर्थ समुच्चय ग्रहवो ४ ॥ हवे अर्थावग्रहना ६ प्रकार ते कहे छे ॥ श्रोत्रेंद्रिय अर्थावग्रह ते श्रोत्रेंद्रिये करी शब्दना समुच्चय अर्थनो परमार्थ ग्रहे एवं यावत् नोइंद्रिय ( मन ) नी विचारणादिकना समुच्चय अर्थना परमार्थनुं ग्रहवुं ॥ हवे व्यंजनावग्रह समजवाने २ दृष्टांत कहे छे ॥ जगाडता पुरुषने दृष्टांते ॥ जेम कोइ पुरुष सुतो छे तेने कोई जगाडे, अमुक एम बोलावे, असंख्यात समये पुद्गल स्पर्शे, उपयोग वर्त्ते, हुं इति बोले, ए प्रतिबोधकनुं दृष्टांत १ ॥ बीजुं सरावलानुं ते सरावलामां कोइ एक बिंदु नांखे एम बिंदु नांखतां नांखतां ठेठ सुधी भरे ने पाणी छली जाय, तेम कानमां पुद्गल पुरां भराय, त्यारे ते सुतो पुरुष हुंकारो करे पण नहि के केनो शब्द छे २ ॥ ए बे दृष्टांत कह्यां ॥ एकंदर मतिज्ञानना २८ भेद थया

ने ४ भेद व्यंजनावग्रहना, ६ भेद अर्थावग्रहना, ६ भेद इहाना, ६ भेद अवायना अने ६ भेद धारणाना, एवं २८ ॥ हवे मतिज्ञान संक्षिप्त ४ प्रकारे छे ॥ तेमां द्रव्यथी मतिज्ञानी सामान्य प्रकारे सर्व द्रव्यने जाणे ने देखे एवं क्षेत्र कालभावथी पण जाणवुं ॥ शब्द स्पर्श्यो सांभळे॥ भाषानां पुद्गलो समश्रेणीए होय॥ पोतानी पासेनी श्रेणिमां रहेल बीजां पुद्गलोने भाषापणे परिणमावतां जाय॥ ते बन्ने मिश्रित पुद्गलोने सांभळे पण एकलां मुलगां पुद्गलोने न सांभळे ॥ ए मतिज्ञान परोक्ष २८ भेदे करी कह्युं १ ॥ हवे श्रुतज्ञान परोक्ष कहे छे ॥ श्रुतज्ञानना १४ भेद ॥ अक्षरश्रुत १ ॥ अनक्षरश्रुत २ ॥ संज्ञीश्रुत ३ ॥ असंज्ञीश्रुत ४॥ सम्यक्श्रुत ५ ॥ मिथ्याश्रुत ६ ॥ सादिश्रुत ७ ॥ अनादिश्रुत ८ ॥ सपर्यवसितश्रुत ९ ॥ अपर्यवसितश्रुत १० ॥ गमिकश्रुत ११ ॥ अगमिकश्रुत १२ ॥ अंगप्रविष्टश्रुत १३ ॥ अंगबाहिरश्रुत १४ ॥ हवे अक्षरश्रुतना ३ भेद ॥ संज्ञाक्षर १ ॥ व्यंजनाक्षर २ ॥ लब्ध्यक्षर ३ ॥ तेमां अकारादि वर्णात्मक अक्षरना संठाणनो आकार ते संज्ञाक्षर ते ब्राह्म्यादि लिपिना भेदथी अनेक प्रकारनुं १ ॥ व्यंजनाक्षर ते व्यंजन ( अक्षर ) अका-

रादि ह्रस्व दीर्घ प्रमुखनुं उच्चारवुं २ ॥ लब्ध्यक्षर ते अकारादि अक्षरोनुं जाणपणुं संज्ञी जीवोने उपजे ते. ५ प्रकारनुं श्रोत्रेंद्रिय लब्ध्यक्षर यावत् नोइंद्रिय (मन) लब्ध्यक्षर ॥ ५ तेमां श्रोत्रेंद्रिय लब्ध्यक्षर ते काने शब्द सांभळीने कहे जे ए भेरि प्रमुखनो शब्द छे, ते वारे तेने भेरी प्रमुख ए अक्षरना ज्ञाननी प्राप्ति थइ ॥ एवं नोइंद्रिय लब्ध्यक्षर तेमने विचारतां सांभळ्युं जे फलाणुं छे ए अक्षरनुं ज्ञान थयुं ते ३ ॥ १ ॥ हवे अनक्षर श्रुतना अनेक भेद छे ॥ अक्षरना उच्चार विना शब्द बोले ते ॥ उच्छ्वास निःश्वास करवो, थुंकवुं, खुंखारो करवो, छिंकवुं, विगेरे २ ॥ संज्ञीश्रुतना ३ भेद ॥ कालिकोपदेश १ ॥ हेतूपदेश २ ॥ दृष्टिवादोपदेश ३ ॥ संज्ञी ते जेने इहा अपोहा यावत् विमंसा होय, ते संज्ञी ॥ जेने ए नहि, ते असंज्ञी ॥ कालिकोपदेश ते घणा कालनी संज्ञा ते कालिकी तेनो ते उपदेश, जेम चक्षुवाळो दीवावडे करी स्फुट अर्थने जाणे तेम ए, पण मनोलब्धिये संपन्न मनोद्रव्यना अवष्टंभनथी उपन्या विचारे पूर्वापर अनुसंधान करी यथावस्थित स्फुट अर्थने जाणे १ ॥ हेतूपदेश संज्ञा ते युक्तायुक्त विचारपूर्वक इष्ट प्रवृत्ति अनिष्ट

निवृत्ति करवी ते ॥ तेवी संज्ञावाळा जीव हेतूपदेश संज्ञाए करी संज्ञी कहेवाय २ ॥ दृष्टिवादोपदेश संज्ञी ते ज्ञान सहित समकितदृष्टि जीव सूत्रना क्षयोपशमे करी युक्तायुक्त जाणे ते ३ ॥ असंज्ञी श्रुत ते भावार्थरहित विचारशून्य उपयोगशून्य पूर्वापर आलोचनरहित भणे भणावे इत्यादिक ४ ॥ सम्यक् श्रुत ते अरिहंत देव केवलज्ञानी केवलदर्शनी देवाधिदेव १२ गुणे करी युक्त, १८ दोषरहित, अनंत गुणे करी सहित, देवाधिदेवना प्ररूप्या अर्थ तथा गणधरे पाठ गुंथ्या भांख्या १४–१३–१२–११–१० पूर्वधारिनुं रच्युं ते समश्रुत कहीये ने तेथी उणा पूर्वसुधीना रच्या ते समश्रुत होय ने मिथ्याश्रुत पण होय ५ ॥ मिथ्याश्रुत ते जे अज्ञानी मिथ्यादृष्टिए स्वछंदबुद्धिए करी रच्या भारत रामायण यावत् ४ वेद अंगोपांग सहित ते मिथ्यादृष्टिने मिथ्यात्वपणे ग्रह्या मिथ्यात्व श्रुत ॥ सम्यक् दृष्टिने सम्यक्त्वपणे ग्रह्या समश्रुत अथवा मिथ्यादृष्टिने ए सम्यक्त्व श्रुत होय शामाटे के सम्यक्त्वना हेतुपणाथी मिथ्यादृष्टि पोतानां शास्त्र विचारतां केटलाक स्वपक्षदृष्टिने त्यजे छे ६ ॥ सादि १ ॥ सपर्यवसित २॥ अने अनादि ३ ॥ अपर्यवसित ४ ॥

ते आ १२ अंग पर्यायास्तिक नयनी अपेक्षाये सादि १ सपर्यवसित २ छे ॥ ने द्रव्यास्तिक नयनी अपेक्षाये अनादि १ अपर्यवसित २ छे। ते संक्षेपथी ४ भेदे छे ॥ द्रव्यथी १ ॥ क्षेत्रथी २ ॥ कालथी ३ ॥ भावथी ४ ॥ द्रव्यथी सम्यक् श्रुत एक जीव आश्रि सादि, सपर्यवसित अने घणा जीव आश्री अनादि, अपर्यवसित ॥ क्षेत्रथी पांच भरत अने पांच इरवत आश्रि सादि सपर्यवसित, पंच महाविदेह आश्रिने अनादि अपर्यवसित ॥ कालथी अवसर्पिणी उत्सर्पिणीने आश्रिने सादि १ सपर्यवसित २ ॥ नोअवसर्पिणी नोउत्सर्पिणीने आश्रिने अनादि १ अपर्यवसित २ ॥ भावथी जे जेवारे जिन प्ररूप्या भाव कह्या प्ररूप्या तेवारे ते भावने आश्रिने सादि १ सपर्यवसित २ ॥ क्षयोपसम भावने आश्रिने अनादि १ अपर्यवसित २ ॥ अथवा भव्य सिद्धिकनुं श्रुत सादि १ सपर्यवसित २ ॥ अभव्य सिद्धिकनुं श्रुत अनादि १ अपर्यवसित २ ॥ त्रीजे चोथे भांगे श्रुतनो अनादि भाव कह्यो, ते जघन्य ने मध्यमथी जाणवो ॥ तेनुं मान सर्वाकाश लोकाकाश तेना प्रदेश तेने अनंतवार गुणीये ॥ एक आकाश प्रदेशे अनंता अगुरु

लघु पर्यायना भावथी पर्याय अक्षर निपजे ते केवल ज्ञान तेनो अनंतमो भाग सदा जीवने उघाड़ो छे ॥ जो ते आवरे तो जीव अजीवपणाने पामे ॥ जेम गाढ मेघनो समुदाय छते पण चंद्र सूर्यनी तमाम प्रभानो नाश न होय, तेम ए न्याये जीवनो पण ज्ञानभाव जाणवो ॥ ए रीते मतिश्रुतनो अनादिभाव अंगीकार करवो ७–८–९–१० ॥ हवे गमिकश्रुत ते जेमां सरखा गमा छे ते दृष्टिवाद श्रुत ११ ॥ अगमिक श्रुत ते जेमां सरखा गमा अलावा नही तेवा आचारांगादि श्रुत १२ ॥ अंगप्रविष्ट श्रुत ते १२ अंग गणधरकृत मूल सूत्र १३ ॥ शेष जे श्रुत ते अनियमथी अनंग प्रविष्ट कहेवाय छे ॥ अनंग प्रविष्ट ( अंग बाह्य ) तेना बे भेद ॥ आवश्यक १ ॥ आवश्यक व्यतिरिक्त २ ॥ आवश्यक ते सामायकादि छ अध्ययन ॥ आवश्यक व्यतिरिक्तना २ भेद ॥ कालिक १ ॥ उत्कालिक २ ॥ कालिक उत्कालिकनो विस्तार सिद्धांत प्रमाणना बोलथी जाणी लेवो १४ ॥ यावत् १२ अंग गणिपिटक अनंता जीवो आज्ञाए विराधीने अनंते काले पूर्वे ४ गति संसारमां भम्या ॥ वर्तमानकाले संख्याता जीव विराधीने भमे छे ॥ भविष्य काले अनंता जीव

विराधीने भमशे ॥ एमज ए १२ अंग आज्ञाये आराधीने पूर्व काले अनंता जीवो तर्या ॥ वर्त्तमान काले आराधीने तरे छे ॥ भविष्य काले आराधीने तरशे ॥ ते श्रुत ज्ञाननी स्थिति ४ भेदे ॥ द्रव्यथी १ ॥ क्षेत्रथी २ ॥ कालथी ३ ॥ भावथी ४ ॥ द्रव्यथी श्रुतज्ञानी उपयुक्त थको सर्व द्रव्यने जाणे देखे, एवं क्षेत्रथी १ ॥ कालथी २ ॥ भावथी ३ ॥ पण जाणी लेवुं ॥ सूत्र ज्ञानी अनंतां द्रव्यने जाणे देखे, ते मेरु आदि अदृष्ट पदार्थने पण शिष्यने अर्थे आलेखीने (चितरीने) देखाडे तेनाथी, ते श्रोताने ए बुद्धि थाय के ए भगवान् आचार्य साक्षात् देखवानी परे कहे छे ॥ एम क्षेत्रादिने विषे पण जाणवुं ॥ इति परोक्ष श्रुत ज्ञान समाप्त २ ॥ प्रत्यक्ष ज्ञानना २ भेद ॥ इंद्रिय प्रत्यक्ष ते श्रोत्रेंद्रिय यावत् स्पर्शेंद्रिय प्रत्यक्ष १ ॥ नोइंद्रिय प्रत्यक्षना ३ भेद ॥ अवधिज्ञान प्रत्यक्ष १ ॥ मनःपर्यवज्ञान प्रत्यक्ष २ ॥ केवलज्ञान प्रत्यक्ष ३ ॥ अवधिज्ञान प्रत्यक्षना २ भेद ॥ भव-प्रत्ययिक १ ॥ क्षायोपशमिक २ ॥ भवप्रत्ययिक देवता नारकी बेने होय ॥ क्षायोपशमिक संज्ञी तिर्यंच पंचेंद्रिय मनुष्यने होय, तेना हेतु ए छे के तदावरणीय कर्म उदय आ-

ध्याना क्षये करीने, अनुदय आव्याना उपशमे करी, अवधिज्ञान उत्पन्न थाय अथवा अप्रमादी गुणवंत साधुने अवधिज्ञान उत्पन्न थाय ते संक्षेपथी छ प्रकारे कह्युं छे ॥ आनुगामिक १ ॥ अनानुगामिक २ ॥ वर्द्धमान ३ ॥ हायमान ४ ॥ पडिवाइ ५ ॥ अपडिवाइ ६ ॥ तेमां आनुगामिक ते ज्यां जाय त्यां साथे आवे तेना २ भेद ॥ अंतःगत १ ॥ मध्यगत २ ॥ तेमां अंतःगत ते आत्माना पर्यंत वर्ति प्रदेशे रह्युं तथा उदारिक शरीरने अंते रह्युं ॥ अंतःगतना ३ भेद ॥ पुरतो अंतःगत १ ॥ मार्गतो अंतःगत २ ॥ पार्श्वतो अंतःगत ३ ॥ तेमां पुरतो अंतःगत ते जेम कोइ पुरुष बळतो पुळो, बळती दीवी, बळतुं उंबाडीयुं, बळतुं ज्योतिनुं भाजन, मणीरत्न प्रमुख एटलांवानां लइने आगळ करीने चाले तेनी आगळ प्रकाश थाय अने पाछळ बेउ पासे अंधारुं थाय तेम पुरतो अंतःगत अवधिज्ञाननुं एवुं आवरण क्षयोपशम थयुं के जेणे करी आगलुं क्षेत्र देखे, पण पुंठे बेउ पासे न देखे ए पुरतो अंतःगत १ ॥ मग्गओ (मार्गतो) अंतःगत ते ए पूर्वोक्त छ बोलने लइ पाछले करी चाले तेने आगले बेउ पासे अंधारुं ॥ पाछले अजवाळुं थाय, तेम मग्गओ अंतःगत अवधिज्ञाननुं

एवुं आवरण क्षयोपशम थयुं के जेणे करी पाछलुं क्षेत्र देखे, ने आगळ बे पख्खे न देखे ए मग्गओ अंतःगत ॥ पासओ (पार्श्वतो) अंतःगत ते पूर्वोक्त छ बोल लेइने खावे जमणे पासे लेइने चाले तेने खावे जमणे पख्खे ज प्रकाश करे अने जमणे पख्खे छ वाना होय तो जमणे प्रकाश करे अने खावे पख्खे प्रकाश न करे, तेम पासओ अंतःगत अवधिज्ञानना आवरणनो क्षयोपशम थये जेणे करी बे पासे क्षेत्र देखे, आगळ पाछळ क्षेत्र न देखे, ए पासओ अंतःगत ३ ॥ १ ॥ हवे मध्यगत अवधिज्ञान कहे छे ॥ ए पूर्वोक्त छ वानां लेइ माथे मुकीने चाले तेने छ दिशे अजवाळुं करे, ते मध्यगत अवधिज्ञानना आवरणनो क्षयोपशम थाय के जेणे करी छ दिशिनुं क्षेत्र देखे ए मध्यगत २ ॥ शिष्ये गुरुने पूछयुं के, स्वामी अंतःगत मध्यगतमां फेर शुं? गुरु कहे छे ॥ अंतःगत अवधिज्ञान ते आगळ तथा पाछळ तथा पासे एक कोरे संख्याता असंख्यातां जोजन सुधी क्षेत्र देखे अने मध्यगत अवधिज्ञान तो छए दिशे देखे ॥ संख्यातां असंख्यातां जोजन प्रमाण अवगाढ द्रव्यने जाणे ॥ आनुगामिक अवधिज्ञानना जीवना प्रदेशनो विचित्र क्षयोपशम होवाथी अंतःगतादि जुदा २ भेदो

जाणवा १ ॥ अणाणुगामिक ते जेम कोइक पुरुषे तापणी करी होय, दीवो करी मूक्यो होय, तेनी समीपे आसपास क्षेत्र देखे, पण आघो जाय त्यारे देखे नहि, तेम ज्यां अवधि उपजे ते ज क्षेत्रे रह्यो थको जाणे देखे, पण आघो जाय त्यारे देखे नहि ॥ २ ॥ हवे वर्द्ध-मान ते प्रशस्त अध्यवसायना स्थानके करी वध्युं छे चारित्र जेने तथा विशुध्यमान छे चारित्र जेने एवा अणगारने सर्वथी सर्व दिशे अवधिज्ञान वधे ॥ जेटला त्रि समयाहारक सूक्ष्म निगोदना शरीरनी अवगाहना तेटलुं जघन्य क्षेत्र जाणे देखे, उत्० अग्निकायना जीव अजितनाथने वारे घणा होय, ते अग्निकायना जीव एकेक आ-काश प्रदेशे एकेको मुकीये एम आंतरा रहित मुकता मुकतां असंख्यात लोक नराय अलोकमां लोक जेवडा असंख्याता खांडुआ प्रमाणे क्षेत्र देखवानी शक्ति प्रगटे, एटली अवधिज्ञाननी समर्थाइ होय, एटलुं क्षेत्र जाणे देखे ॥ हवे क्षेत्र ने कालथी देखवुं कहे छे ॥ जे क्षेत्रथी अंगुलनो असंख्यातमो जाग जाणे देखे, ते कालथी आवलिकाना असं-ख्यातमा जागना कालनी आगली पाछली वात जाणे देखे ॥ जे अवधिज्ञानी क्षेत्रथी अंगुलनो

संख्यातमो जाग जाणे देखे, ते कालथी आवलिकाना संख्यातमा जागनी वात जाणे देखे ॥ जे अवधिज्ञानी क्षेत्रथी अंगुल प्रमाणे जाणे देखे, ते कालथी आवलिकानी माठेरी वात जाणे देखे ॥ जे अवधिज्ञानी प्रत्येक अंगुल क्षेत्र जाणे देखे, ते कालथी आवलिका पुरीनी आगली पाछली वात जाणे देखे ॥ जे अवधिज्ञानी क्षेत्रथी हाथ प्रमाणे क्षेत्र जाणे देखे, ते कालथी अंतर्मुहूर्त्त प्रमाणे कालनी आगली पाछली वात जाणे देखे ॥ जे अवधिज्ञानी क्षेत्रथी गाउक्षेत्रने जाणे देखे, ते कालथी एक दिवस माठेरानी वात जाणे देखे ॥ जे अवधिज्ञानी क्षेत्रथी जोजन प्रमाणे क्षेत्र जाणे देखे, ते कालथी प्रत्येक दिवसनी वात जाणे देखे ॥ जे अवधिज्ञानी क्षेत्रथी २५ जोजन जाणे देखे, ते कालथी पक्ष माठेरानी वात जाणे देखे ॥ जे अवधिज्ञानी क्षेत्रथी जरतक्षेत्र जाणे देखे, ते कालथी पक्ष पूरानी वात जाणे देखे ॥ जे अवधिज्ञानी क्षेत्रथी जंबूद्वीप जाणे देखे, ते कालथी मास झाझेरानी वात जाणे देखे ॥ जे अवधिज्ञानी क्षेत्रथी अढीद्वीपने जाणे देखे, ते कालथी वर्षनी वात जाणे देखे ॥ जे अवधिज्ञानी

क्षेत्रथी १५ मा रुचकद्वीपने जाणे देखे, ते कालथी प्रत्येक वर्षनी वात जाणे देखे ॥ जे अवधिज्ञानी क्षेत्रथी नाना संख्याता जोजनना द्वीपने जाणे देखे, ते कालथी संख्याता कालनी वात जाणे देखे ॥ जे अवधिज्ञानी क्षेत्रथी असंख्याता द्वीपने जाणे देखे, ते कालथी असंख्याता कालनी वात जाणे देखे ॥ एम उर्द्धलोक अधोलोक तिर्छो लोक ए त्रण लोके वधतां वधतां असंख्याता लोक प्रमाणे जाणे देखे॥ एटली समर्थाइ प्रगटे ते वर्द्धमान अवधिज्ञान ४ प्रकारे ते द्रव्यथी १ ॥ क्षेत्रथी २ ॥ कालथी ३ ॥ भावथी ४ ॥ वृद्धिनी रीत कहे छे ॥ ज्यारे कालथी जाणवानी वृद्धि होय, त्यारे द्रव्यथी, क्षेत्रथी, भावथी, जाणवानी वृद्धि होय १ ॥ ज्यारे क्षेत्रथी जाणवानी वृद्धि होय, त्यारे कालथी जाणवानी भजना होय, ने द्रव्य भावथी जाणवानी नियमा वृद्धि होय, २ ॥ ज्यारे द्रव्यथी जाणवानी वृद्धि होय, त्यारे क्षेत्रथी कालथी जाणवानी भजना होय, अने भावनी वृद्धि होय ३ ॥ ज्यारे भावथी जाणवानी वृद्धि होय, त्यारे द्रव्य क्षेत्र कालथी जाणवानी भजना होय ४ ॥ सर्वथी काल सूक्ष्म छे ॥ आंख मिंची उघाडीये तेमां

असंख्याता समय थाय, ते मांहिलो एक समय छे माटे १ ॥ तेथी क्षेत्र असंख्यातगणुं सूक्ष्म छे, केमके एक अंगुल प्रमाणे क्षेत्र लइये, तेमां असंख्याती श्रेणी छे, तेमांथी एक श्रेणी लइये ॥ ते श्रेणी अंगुल प्रमाणे लांबी ने एक आकाश प्रदेश प्रमाणे पहोळी तेमांथी समय २ एकेक प्रदेश हरतां २ असंख्याता कालचक्रना समय वही जाय, तोपण ते खूटे नहि एवो कालथी क्षेत्र सूक्ष्म छे २ ॥ तेथी द्रव्य अनंतगणुं सूक्ष्म छे, केमके एक अंगुल प्रमाणे श्रेणी लइये, तेमां असंख्यात श्रेणीयो छे, ते मांहेली एक श्रेणी एक अंगुल प्रमाणे लांबी एक आकाश प्रदेश प्रमाणे पहोळी, तेमां असंख्याता आकाश प्रदेश छे ॥ एकेक प्रदेशे अनंता २ परमाणु द्रव्य छे ॥ अनंतद्वीपप्रदेशी स्कंध एवां द्रव्य अनंतां छे ते समये २ एकेको द्रव्य हरतां अनंता कालचक्रना समय वही जाय, तोपण खूटे नहि, एटलां एक प्रदेश उपर द्रव्य छे, एम सर्व प्रदेश उपर छे, एवुं क्षेत्रथी द्रव्य सूक्ष्म छे ३ ॥ द्रव्यथी भाव अनंतगुणो सूक्ष्म छे, केमके एक अंगुल प्रमाणे क्षेत्र लइए, तेमां असंख्याती श्रेणीयो छे, तेमांथी एक श्रेणी लइये, ते श्रेणी एक अंगुल प्रमाणे लांबीने एक

प्रदेशनी पहोळी, तेमां असंख्याता प्रदेश छे ॥ एकेक प्रदेशमां अनंता परमाणु प्रमुख द्रव्य छे ॥ एकेक द्रव्यमां अनंता पर्यव छे ॥ जेमके एक परमाणुमां, १ वर्ण ॥ १ गंध ॥ १ रस ॥ २ स्पर्श छे ॥ एक वर्णमां एक गुण कालो, यावत् अनंत गुण कालो, ए ५ बोलना अनंता भेद कहेवा, एम द्विप्रदेशी स्कंधमां, बे वर्ण, बे गंध, बे रस, चार स्पर्श, ए दश जातिना अनंता भेद छे ॥ एक त्रिप्रदेशी स्कंधमां, त्रण वर्ण, बे गंध, त्रण रस, चार स्पर्श, ए बार जातिना अनंता भेद छे ॥ एम सर्व द्रव्यना पर्यव कहेवा, ते पर्याय समय समय एकेको अपहरतां अनंता कालचक्रना समय वही जाय, त्यारे एक परमाणुना पर्यव थाय ॥ एम द्विप्रदेशी स्कंधना अनंता पर्यव छे ॥ एम अनंतानंत प्रदेशी स्कंधना अनंत पर्यव छे ॥ एम एक प्रदेश संबंधी अनंतां द्रव्यना अनंतानंत भेद पर्यव छे ॥ एम संपूर्ण लोकना अनंता पर्यव छे माटे द्रव्यथी पर्याय ( भाव ) अनंतगुणो सूक्ष्म छे ४ ॥ हवे ४ ने उपमा दइ बतावे छे ॥ कालने चणानी ? ॥ क्षेत्रने जुवारनी २ ॥ द्रव्यने तलनी ३ ॥ भावने खसखसनी उपमा ४ ॥ ए ४ उपमाए करी समजवुं

३ ॥ हायमान ते अप्रशस्त-माठा अध्यवसाये करी, अशुभ जोगे करी, अशुभ लेश्याए करी, अशुभ ध्याने करी, अवधिज्ञानना पर्यव हीणा पडे तेनुं आवरण थाय ॥ जेम वधतुं हतुं तेम घटतुं जाय ४ ॥ पडिवाइ अवधिज्ञान ते जघन्य अंगुलना असंख्यातमा भागनुं क्षेत्र देखीने पडि जाय, एम संख्यातमो भाग, वालाग्र, प्रत्येक वालाग्र ॥ लीख, प्रत्येक लीख ॥ जु, प्रत्येक जु ॥ जवमध्य, प्रत्येक जवमध्य ॥ अंगुल, प्रत्येक अंगुल ॥ पग, प्रत्येक पग ॥ वेंत, प्रत्येक वेंत ॥ हाथ, प्रत्येक हाथ ॥ कुक्षि, प्रत्येक कुक्षि ॥ धनुष, प्रत्येक धनुष ॥ गाउ, प्रत्येक गाउ ॥ जोजन, प्रत्येक जोजन ॥ लाख, प्रत्येक लाख ॥ क्रोड, प्रत्येक क्रोड ॥ सो क्रोड, प्रत्येक सो क्रोड ॥ हजार क्रोड, प्रत्येक हजार क्रोड ॥ लाख क्रोड, प्रत्येक लाख क्रोड ॥ क्रोडाक्रोड, प्रत्येक क्रोडाक्रोड ॥ एम यावत् संख्यात क्रोडाक्रोड, असंख्यात क्रोडाक्रोड, जोजन प्रमाणे क्षेत्र देखीने पडी जाय, उ० लोकने देखीने पडी जाय॥ जे पडे ते जेम दीवो करी मुके ते दीवो पवनने जोगे करी ओलवाइ जाय, तेम पडिवाइ अवधिज्ञान आव्युं जाय ५ ॥ अपडिवाइ अवधिज्ञान ते जे अलोकना एक पण आकाश

प्रदेशने देखे, ते अपमिवाइ एवुं ज्ञान तीर्थंकरने जन्मथी होय ६ ॥ हवे अवधिज्ञानी केटलुं जाणे ते कहे छे ॥ पहेली नरकना नारकी ज० साडात्रण गाउ, उ० ४ गाउ देखे॥ बीजीना ज० ३ गाउ, उ० साडात्रण गाउ देखे ॥ एम एकेक नरके ज० उ० मांथी अर्धो-अर्ध जोजन घटाडतां सातमी नरकना नारकी ज० अर्द्ध गाउ, उ० १ गाउ देखे॥ असुर कुमार ज० २५ जोजन देखे, उ० असंख्याता द्वीपसमुद्र देखे ॥ नवनिकायना देव तथा व्यंतर ज० २५ जोजन देखे, उ० संख्याता द्वीपसमुद्र देखे ॥ ज्योतिषी ज० उ० संख्याता द्वीपसमुद्र देखे ॥ पहेला बीजा देवलोकना देवता उंचुं पोताना विमाननी ध्वजा लगी देखे ॥ नीचुं रत्नप्रभानो हेठलो चरिमांत जाणे देखे ॥ तिछुं ज० अंगुलनो असंख्यातमो भाग जाणे देखे, उ० असंख्याता द्वीपसमुद्र जाणे देखे ॥ त्रीजाथी मांडी अनुत्तर विमाननना देव सुधी, उंचुं पोतपोताना विमाननी ध्वजा सुधी देखे ॥ तीछुं ज० अंगुलनो असंख्यातमो भाग, उ० असंख्यात द्वीपसमुद्र जाणे देखे ॥ नीचुं देखे तो त्रीजा चोथा देवलोकना देवता बीजी नरकना हेठला चरिमांत सुधी जाणे देखे ॥ पांचमा छठा देव-

लोकना देवता त्रीजी नरकना हेठला चरिमांत सुधी ॥ सातमा आठमा देवलोकना देवता चोथी नरकना हेठला चरिमांत सुधी ॥ ए-१०-११-१२ ए ४ देवलोकना देवता पांचमी नरकना हेठला चरिमांत सुधी ॥ पहेलीथी छठी ग्रैवेयक सुधीना देवता छठी नरकना हेठला चरिमांत सुधी ॥ सातमी ग्रैवेयकथी मांमी नवमा ग्रैवेयक सुधीना देवता सातमी नरकना हेठला चरिमांत सुधी ॥ पांच अनुत्तर विमानना देव कांइक उणो लोक देखे ॥ संज्ञी तिर्यंच पंचेंद्रिय ज० अंगुलनो असंख्यातमो जाग, उ० असंख्याता द्वीपसमुद्र देखे ॥ संज्ञी मनुष्य पंचेंद्रिय ज० अंगुलनो असंख्यातमो जाग, उ० अलोकमध्ये लोक जेवमा असंख्याता खांमुआ जाणे देखे ॥ अवधिज्ञाननुं संठाण ( देखवानो आकार ) कहे छे ॥ नारकी त्रापाने आकारे देखे ॥ जवनपति पालाने आकारे ॥ व्यंतर पमहने आकारे ॥ ज्योतिषी झालरने आकारे ॥ बार देवलोकना देव उर्द्ध्वमुख मृदंगने आकारे ॥ नव ग्रैवेयकना देव फूलचंगेरीने आकारे ॥ पांच अनुत्तर विमानना देव जवनालिका तथा कुंवारिकाना कंचुवाने आकारे ॥ संज्ञी तिर्यंच पंचेंद्रिय तथा संज्ञी मनुष्य नाना प्रकारने आकारे

देखे ॥ नारकी देवता तीर्थंकरने अभ्यंतर अवधिज्ञान ॥ तिर्यंचने बाहिर अवधिज्ञान ॥ मनुष्यने अभ्यंतर ने बाहिर अवधिज्ञान होय ॥ नारकी देवताने अणुगामी १ ॥ अपडिवाइ २ ॥ अवस्थित ३ ॥ ए प्रकारनुं अवधिज्ञान होय ॥ तिर्यंच ने मनुष्यने अनुगामी १ ॥ अनानुगामी २ ॥ वर्द्धमान ३ ॥ हायमान ४ ॥ पडिवाइ ५ ॥ अपडिवाइ ६ ॥ अवस्थित ७ ॥ अनवस्थित ८ ॥ ए प्रकारनुं अवधिज्ञान होय ॥ हवे अवधिज्ञान संक्षेपथी ४ प्रकारे कहे छे ॥ द्रव्यथी अवधिज्ञानी ज० अनंतां रूपी द्रव्यने जाणे देखे, उ० अनंतां रूपी द्रव्यने जाणे देखे १ ॥ क्षेत्रथी अवधिज्ञानी ज० अंगुलनो असंख्यातमो भाग जाणे देखे, उ० अलोकमां लोक जेवडा असंख्याता खांडुआ जाणे देखे ॥ कालथी अवधिज्ञानी ज० आवलिकानो असंख्यातमो भाग जाणे देखे, उ० असंख्याता उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल गयानी अन आवतांनी वात जाणे देखे ३ ॥ भावथी अवधिज्ञानी ज० अनंता भावने जाणे देखे, उ० अनंता भावने ते सर्व भावना अनंतमा भागने जाणे देखे ४ ॥ इति प्रत्यक्ष अवधिज्ञान समाप्त ३ ॥ हवे प्रत्यक्ष मनःपर्यव ज्ञाननुं स्वरूप कहे छे ॥ मनः

पर्यव ज्ञान मनुष्य,संज्ञी,कर्मनूमि,संख्याता वर्षनी स्थितिवाळा,पर्याप्ता,समदृष्टि,संयति,अप्रमादी,लब्धिवंत, एटला बोलवाळाने होय ॥ मनःपर्यव ज्ञानना २ नेद॥ ऋजुमति १॥विपुलमति २॥ ऋजुमति कांइक विपुलमतिनी अपेक्षाए ओबुं जाणे देखे, माटे नेद जूदा पाम्या ठे ॥ हवे मनःपर्यवज्ञान संक्षेपथी ४ प्रकारे कहे ठे ॥ द्रव्यथी अनंत अनंत प्रदेशी स्कंधने जाणे देखे ए ऋजुमति विपुलमतिथी विशेष जाणे देखे १ ॥ क्षेत्रथी अंगुलनो असंख्यातमो नाग, उ० हेतुं रत्नप्रनाना उपला ने हेठला क्षुलक प्रतर सुधी ॥ उंचुं ज्योतिषीना उपला तळा सुधी ॥ त्रिबुं अढि द्वीप सुधी ॥ ऋजुमति अढि अंगुल ओबुं ने विपुलमति पूरुं जाणे देखे २॥ कालथी पल्योपमनो असंख्यातमो नाग, उ० पल्योपमनो असंख्यातमो नाग अतीत अनागत कालने जाणे देखे ॥ ए ऋजुमति विपुलमति एथी विशेष जाणे देखे ३ ॥ नावथी अनंता नाव ते सर्व नावने अनंतमे नागे जाणे देखे॥ विपुलमति एथी कांइ विशेष जाणे देखे ४॥ इति प्रत्यक्ष मनःपर्यव ज्ञान समाप्त ४॥ हवे प्रत्यक्ष केवलज्ञान कहे ठे ॥ सर्व प्रत्यक्ष निरावरण संपूर्ण ज्ञान ते केवलज्ञान ॥ तेना २ नेद ॥ नवस्थ केवल

ज्ञान १॥ सिद्धस्थ केवल ज्ञान २ ॥ नवस्थ केवल ज्ञानना बे नेद ॥ सजोगी नवस्थ केवल ज्ञान १ ॥ अजोगी नवस्थ केवल ज्ञान २ ॥ सिद्धस्थ केवल ज्ञानना २ नेद ॥ अनंतर सिद्धस्थ केवल ज्ञान १ ॥ परंपर सिद्धस्थ केवल ज्ञान २ ॥ हवे केवलज्ञान संक्षेपथी ४ प्रकारे कहे छे ॥ द्रव्यथी सर्व द्रव्यने १ ॥ क्षेत्रथी सर्व क्षेत्रने २ ॥ कालथी सर्व कालने ३ ॥ नावथी सर्व नावने जाणे देखे ४ ॥ केवल ज्ञाने करी तीर्थंकर अर्थने जाणी प्ररूपवा योग्य अर्थने कहे ते वचनजोगे करी गणधरादि सूत्र गुंथे ॥ इति प्रत्यक्ष केवल ज्ञान समाप्त ॥

इति पांच ज्ञानना बोल संपूर्ण ॥

## सप्रदेशी अप्रदेशीना बोल ॥

अथ नगवती शतक ६ उद्देशा ४ थाथी काल आश्री सप्रदेशी अप्रदेशीना बोल लिख्यते ॥

गाथा–सपएसा १ आहारग २ नविय ३, सन्नि ४ लेस्सा ५ दिठी ६ संजय ७ कसाए ८ ॥

सप्रदेशी अप्रदेशीना ॥१११॥

नाणे ए जोगु १० वओगे ११, वेएय १२ सरीर १३ पज्जत्ती १४ ॥ १ ॥

ए चौद द्वारनी गाथा कही॥ हवे ते चौद द्वार उपर एक जीव आश्री अथवा घणा जीव आश्री सप्रदेशी अप्रदेशीनो विचार कहे छे॥ सप्रदेशी एटले एकथी वधारे समयनी स्थितिवाळो, अप्रदेशी एटले प्रथम समयवर्ती अर्थात् जीवने अमुक भाव प्राप्त थयाने एकज समय थयो होय ते अप्रदेशी अने बे त्रण आदि अनेक समय थया होय ते सप्रदेशी कहेवाय ॥ तेमां प्रथम सप्रदेशी द्वार कहे छे॥ समुच्चय एक जीव काल आश्री केम सप्रदेशी? के अप्रदेशी? उत्तर–नियमा सप्रदेशी॥ एक नारकी काल आश्री केम सप्रदेशी ? के अप्रदेशी ? उत्तर–सिय सप्रदेशी, सिय अप्रदेशी॥ एवं यावत् वैमानिक अने सिद्ध सुधी पचीस दंडक कहेवा ॥ हवे घणा जीव काल आश्री केम सप्रदेशी ? के अप्रदेशी? उत्तर–नियमा सप्रदेशी॥ घणा नारकी काल आश्री केम सप्रदेशी ? के अप्रदेशी? उत्तर–त्रण भांगा ॥ सर्व सप्रदेशी १, अथवा सप्रदेशी घणा अने अप्रदेशी एक २, अथवा सप्रदेशी घणा अने अप्रदेशी घणा ३॥ एवं एकेंद्रिय वर्जीने वैमानिक सुधी वीश दंडक कहेवा ॥ पांच स्थावर काल आश्री

सप्रदेशी घणा अने अप्रदेशी घणा ॥ इति प्रथम द्वार संपूर्ण ॥ १ ॥ बीजुं आहारक द्वार कहे छे ॥ आहारक एक जीव आश्री केम सप्रदेशी ? के अप्रदेशी ? उत्तर–सिय सप्रदेशी, सिय अप्रदेशी ॥ एम नारकीथी वैमानिक सुधी चोवीश दंडकना एक एक जीव कहेवा॥ घणा जीव आश्री समुच्चय जीवने पांच स्थावरमां तो सप्रदेशी घणा अने अप्रदेशी घणा ॥ शेष नरकादि १ए दंडकमां घणा जीवोमां प्रत्येक प्रत्येक दंडकमां ३ भांगा उपर प्रमाणे जाणवा ॥ अणाहारिक आश्री समुच्चय एक जीव केम सप्रदेशी ? के अप्रदेशी ? उत्तर–सिय सप्रदेशी, सिय अप्रदेशी॥ एम नारकादि चोवीश दंडक अने सिद्ध पचीस दंडक कहेवा ॥ घणा जीव आश्री समुच्चय जीव ने पांच एकेंद्रियमां सप्रदेशी घणा ने अप्रदेशी घणा अने शेष नारकादि ओगणीश दंडकना घणा जीवोमां प्रत्येक प्रत्येकमां छ (६) भांगा जाणवा ॥ सर्व सप्रदेशी होय १, अथवा सर्व अप्रदेशी होय २, अथवा एक सप्रदेशी अने एक अप्रदेशी ३, अथवा सप्रदेशी एक अने अप्रदेशी घणा ४, अथवा सप्रदेशी घणा अने अप्रदेशी एक ५, अथवा सप्रदेशी घणा अने अप्रदेशी घणा ६, एना भांगा तो ७ थाय पण

समदेशी अप्रदे- शीना ॥११२॥

इहां ७ विवर्या छे॥ घणा सिद्ध आश्री भांगा ३ पूर्वोक्त॥इति बीजुं आहारकद्वार संपूर्ण॥ बोल.
२ ॥ त्रीजुं भव्यद्वार कहे छे॥ भव्य समुच्चय एक जीव आश्री नियमा सप्रदेशी ॥ शेष
चोवीस दंडकना एक एक जीव सिय सप्रदेशी, सिय अप्रदेशी ॥ घणा जीव आश्री समु-
च्चय जीव तो नियमा सप्रदेशी अने नरकादि १ए दंडकना घणा जीवोमां प्रत्येकमां भांगा
३ पूर्वोक्त॥ पांच स्थावरमां सप्रदेशी घणा अप्रदेशी घणा॥ एम अभव्य पण समुच्चय जीवने
चोवीश दंडक कहेवा ॥ नोभविनोअभवि, समुच्चय एक जीव सिय सप्रदेशी,सिय अप्रदेशी॥
एम एक सिद्ध पण कहेवा ॥ घणा जीव आश्री समुच्चय जीवने सिद्धभगवानमां प्रत्येकमां
३ भांगा पूर्वोक्त॥ इति त्रीजुं भव्यद्वार संपूर्ण ॥ ३ ॥ चोथुं संज्ञीद्वार कहे छे॥ संज्ञी एक
जीव काल आश्री सिय सप्रदेशी, सिय अप्रदेशी ॥ एम सोल दंडक संज्ञीना एक जीव
आश्री कहेवा॥ घणा जीव आश्री समुच्चय जीवने सोल दंडकमां प्रत्येकमां त्रण भांगा
पूर्वोक्त॥ असंज्ञी समुच्चय एक जीव अने बावीश दंडकमां सिय सप्रदेशी, सिय अप्रदेशी॥
घणा जीव आश्री एकेंडियमां सप्रदेशी घणा, अप्रदेशी घणा॥ घणा नारकी असंज्ञी आश्री

ज्ञांगा ६ पूर्वोक्त ॥ एम दश ज्ञवनपति, मनुष्य अने वाणव्यंतर मळी बार दंरुक कहेवा ॥ शेष त्रण विकलेंड्रिय, तिर्यंच पंचेंड्रिय असंज्ञी घणा जीव आश्री प्रत्येकमां त्रण ज्ञांगा पूर्वोक्त ॥ नोसंज्ञीनोअसंज्ञी आश्री समुच्चय एक जीव सिय सप्रदेशी, सिय अप्रदेशी ॥ एम मनुष्य अने सिद्ध एक जीव आश्री कहेवा ॥ घणा जीव, घणा मनुष्य अने घणा सिद्धमां नोसंज्ञीनोअसंज्ञी आश्री प्रत्येकमां त्रण ज्ञांगा पूर्वोक्त ॥ इति चोथुं संज्ञीद्वार संपूर्ण ॥४॥ पांचमुं लेश्याद्वार कहे छे ॥ सलेशी तो एक जीव ने घणा जीव ओघिक प्रथम द्वारवत् जाणवा ॥ कृष्णलेशी, नीललेशी अने कापोतलेशी एक जीवने घणा जीव आश्री आहारकवत् कहेवा ॥ नवरं दंरुक बावीस कहेवा ॥ तेजु लेश्या समुच्चय जीव अने पंदर दंरुकमां त्रण ज्ञांगा पूर्वोक्त ॥ पृथ्वीकाय, अप्काय अने वनस्पतिकायमां प्रत्येक प्रत्येकमां ६ ज्ञांगा पूर्ववत् कहेवा ॥ पद्मलेश्या अने शुक्ललेश्यामां समुच्चय जीव, तिर्यंच पंचेंड्रिय, मनुष्य अने वैमानिक प्रत्येकमां ३ ज्ञांगा पूर्वोक्त ॥ अलेशी जीव अने सिद्धमां ३ ज्ञांगा पूर्वोक्त ॥ मनुष्यमां ६ ज्ञांगा पूर्वोक्त ॥ इति पांचमुं लेश्याद्वार संपूर्ण ॥ ५ ॥

हवे ६ ठुं दृष्टिद्वार कहे छे ॥ समदृष्टि, समुच्चय जीव, सोळ दंडक अने सिद्ध भगवान प्रत्येकमां ३ भांगा पूर्ववत् ॥ त्रण विकलेंद्रिय प्रत्येकमां ६ भांगा पूर्ववत् ॥ मिथ्यादृष्टि, समुच्चय जीव, ओगणीश दंडकमां प्रत्येकमां ३ भांगा पूर्वोक्त ॥ पांच स्थावरमां सप्रदेशी घणा, अप्रदेशी घणा॥ मिश्रदृष्टि, समुच्चय जीव, सोल दंडक प्रत्येकमां ६ भांगा पूर्वोक्त ॥ इति दृष्टिद्वार संपूर्ण ॥६॥ हवे सातमुं संयतिद्वार कहे छे ॥ समुच्चय संयति, समुच्चय जीव अने मनुष्यमां ३ भांगा पूर्वोक्त ॥ असंयति समुच्चय जीवना ओगणीश दंडकमा ३ भांगा ॥ पांच स्थावर असंयति आश्री सप्रदेशी घणा, अप्रदेशी घणा ॥ संयतासंयति, समुच्चय जीव, तिर्यंच पंचेंद्रिय अने मनुष्य प्रत्येकमां त्रण भांगा पूर्वोक्त ॥ नोसंयतिनोअसंयतिनोसंयतासंयति समुच्चय जीव ने सिद्धमां प्रत्येकमां ३ भांगा पूर्वोक्त ॥ इति संयतिद्वार संपूर्ण ॥ ७ ॥ हवे आठमुं कषायद्वार कहे छे॥ सकषाय समुच्चय जीव ने ओगणीश दंडकमां प्रत्येकमां ३ भांगा पू० ॥ पांच स्थावरमां सप्रदेशी घणा, अप्रदेशी घणा ॥ क्रोधकषायी आश्री समुच्चय जीव ने पांच स्थावरमां सप्रदेशी घणा, अप्रदेशी घणा ॥ देवता

आश्री तेर दंडकमां प्रत्येकमा ६ भांगा पूर्ववत् ॥ शेष नरकादि ७ दंडकमां प्रत्येकमां ३
भांगा पूर्ववत् ॥ मानकषायी, मायाकषायीमां समुच्चय जीव ने पांच स्थावरमां क्रोध कषायी
माफक ॥ नारकी अने देवता आश्री तेर दंडकमां ६ भांगा पूर्ववत् ॥ शेष पांच दंडकमां
३ भांगा पू० ॥ लोभकषायी समुच्चय जीव अने पांच स्थावर प्रत्येकमां क्रोधवत् ॥ नार-
कीमां ६ भांगा पूर्ववत् ॥ १८ दंडकमां प्रत्येकमा ३ भांगा ॥ अकषायी समुच्चय जीव,
मनुष्य अने सिद्धमां प्रत्येकमां ३ भांगा ॥ इति कषायद्वार संपूर्ण ॥ ८ ॥ हवे नवमुं
नाणद्वार कहे छे ॥ समुच्चय ज्ञानी, समुच्चय जीव, सोल दंडक अने सिद्ध भगवान प्रत्येकमां
३ भांगा पूर्ववत् ॥ त्रण विकलेंद्रिय प्रत्येकमां ६ भांगा पूर्ववत् ॥ एम सिद्ध वर्जीने मतिज्ञानी,
श्रुतज्ञानी पण १९ दंडकमां कहेवा ॥ अवधिज्ञानी, समुच्चय जीव अने सोले दंडक प्रत्ये-
कमां ३ भांगा ॥ मनःपर्यव ज्ञानी अने केवल ज्ञानी, समुच्चय जीव अने मनुष्यमां प्रत्येकमां
३ भांगा पूर्ववत् ॥ समुच्चय अज्ञानी, मति अज्ञानी अने श्रुत अज्ञानी, समुच्चय जीव अने
१९ दंडक प्रत्येकमां ३ भांगा पूर्ववत् ॥ पांच स्थावरमां सप्रदेशी घणा, अप्रदेशी घणा ॥ विभंग

 

ज्ञानी, समुच्चय जीव अने सोल दंडक प्रत्येकमां ३ नांगा पूर्ववत् ॥ इति नाणद्वार संपूर्ण ॥ ए ॥ हवे १० मुं जोगद्वार कहे छे ॥ सजोगी, समुच्चय जीव, ओघिक प्रथम द्वारवत् ॥ मनजोगी, समुच्चय जीव अने सोल दंडक ॥ वचन जोगी, समुच्चय जीव ने १ए दंडक ॥ अने कायजोगी, समुच्चय जीव ने १ए दंडक ॥ प्रत्येकमां ३ नांगा पूर्ववत् ॥ पांच स्थावरमां सप्रदेशी घणा, अप्रदेशी घणा ॥ अजोगी, समुच्चय जीव अने सिद्धमां ३ नांगा ॥ मनुष्यमां ६ नांगा अलेशीवत् ॥ इति योगद्वार संपूर्ण ॥१०॥ हवे ११ मुं उपयोगद्वार कहे छे ॥ सागारोवउत्ता अने अणागारोवउत्ता, समुच्चय जीव अने पांच स्थावरमां सप्रदेशी घणा, अप्रदेशी घणा ॥ शेष १ए दंडक अने सिद्ध आश्री प्रत्येकमां ३ नांगा पूर्ववत् ॥ इति उपयोगद्वार संपूर्ण ॥ ११ ॥ हवे १२ मुं वेदद्वार कहे छे ॥ सवेदी, समुच्चय जीव ने चोवीश दंडकमां सकषायवत् ॥ स्त्रीवेदी, समुच्चय जीव ने पंदर दंडक, पुरुष वेदी, समुच्चय जीव ने १५ दंडक, प्रत्येकमां ३ नांगा पूर्ववत् ॥ नपुंसक वेदी, समुच्चय जीव अने ७ दंडक प्रत्येकमां ३ नांगा पूर्ववत् ॥ पांच स्थावरमां सप्रदेशी घणा, अप्रदेशी घणा ॥ अवेदी, समुच्चय जीव, मनुष्य अने

सिद्ध अकषायवत् ॥ इति वेदद्वार संपूर्ण ॥ १२ ॥ हवे १३ मुं शरीरद्वार कहे छे ॥ सशरीरी, समुच्चय जीवने २४ दंमक ओघिक प्रथम द्वारवत् ॥ उदारिक शरीर आश्रि समुच्चय जीवने पांच स्थावरमां सप्रदेशी घणा, अप्रदेशी घणा ॥ शेष पांच दंमकमां प्रत्येकमां उदारिक शरीर आश्री ३ नांगा पूर्ववत् ॥ वैक्रेय शरीर आश्री, समुच्चय जीवने वाउकायमां सप्रदेशी घणा, अप्रदेशी घणा ॥ शेष सोल दंमकमां प्रत्येकमां ३ नांगा ॥ आहारक शरीर आश्री समुच्चय जीवने मनुष्यमां ६ नांगा पूर्ववत् ॥ तेजस कार्मण शरीर आश्री समुच्चय जीवने चोवीश दंमक ओघिक प्रथम द्वारवत् ॥ अशरीरी, समुच्चय जीवने सिद्धमां ३ नांगा ॥ इति शरीरद्वार संपूर्ण ॥ १३ ॥ हवे १४ मुं पर्याप्तिद्वार कहे छे ॥ आहारप्रजा, शरीरप्रजा, इंद्रियप्रजा अने श्वासोच्छ्वासप्रजा ए चार प्रजाना पर्याप्ता आश्री समुच्चय जीवने पाच स्थावरमां सप्रदेशी घणा, ने अप्रदेशी घणा ॥ शेष ओगणीश दंमकमां प्रत्येकमां ३ नांगा पूर्ववत् ॥ नाषाप्रजा ने मनप्रजामां संज्ञीवत् ॥ आहारप्रजाना अपर्याप्ता अणाहारकवत् ॥ शरीरप्रजाना अपर्याप्ता, इंद्रियप्रजाना अपर्याप्ता, श्वासोच्छ्वास प्रजाना अपर्याप्ता,

समुच्चय जीवने पांच स्थावरमां सप्रदेशी घणा अने अप्रदेशी घणा ॥ शेष नारकी देवताना १३ दंकक अने मनुष्यमां ६ नांगा ॥ शेष प्रत्येकमां ३ नांगा ॥ नाषा मन अप्रजाप्ता आश्री समुच्चय जीव, ३ विकलेंड्रिय, तिर्यंच पंचेंड्रिय प्रत्येकमां ३ नांगा ॥ शेष नारकी, तेर दंकक देवता अने मनुष्य प्रत्येकमां ६ नांगा पूर्ववत् ॥ १४ ॥ इति सप्रदेशी अप्रदेशीना बोल संपूर्ण॥ विशेष विस्तार सूत्र श्री नगवतीजी शतक ६ उदेशा चोथाथी जाणवो ॥ पण आमां ओछुं अधिकुं विपरीत थयुं होय तो मिछामि दुक्कडं ॥ तमेव सच्चं निसंकं जं जिणेहिं पवेइयं ॥

## पढमापढमना बोल ॥

अथ श्री नगवती श० १० माने उद्देशा १ लाथी १४ द्वारे पढमापढमना बोल लख्या छे ॥

गाथा ॥ जीवा १ हारग २ जव ३ सण्णि ४, लेस्सा ५ दिठि ६ संजय ७ कसाए ८ ॥
नाणे ए जोगु १० वञ्जोगे ११, वेए १२ य सरीर १३ पज्जत्ती १४ ॥ १ ॥
जो जेणपत्त पुव्वो, जावो सो तेण अपढमो होइ ॥
सेसेसु होइ पढमो, अपत्त पुव्वेसु जावेसु ॥ २ ॥

जावार्थ–जे जीव जे जाव पूर्वे पाम्यो ते जावे करी ते अप्रथम ( अपढम ) १ ॥ जे जाव पूर्वे नथी पाम्यो, ते जावने पामवुं ते प्रथम (पढम) २ ॥

हवे पहेलुं जीवद्धार कहे ठे ॥

एक वचन आश्री जीव, जीवजावे अप्रथम (अपढम) केमके जीवपणुं तो ठे ज ॥ कांइ नवुं पामवुं नथी, ते अपेक्षाए १ ॥ एवं नारकीथी मांकी वैमानिकना दंकक सुधी ते ते जावे अपढमपणुं कहेवुं २५ ॥ सिद्ध, सिद्ध जावे पढम केमके सिद्धपणुं पूर्वे पाम्यो नथी, तेनुं प्रथम पामवापणुं थयुं ते अपेक्षाए २६ ॥ ए एक वचन आश्रि २६ दंकक थया ॥ बहुवचन आश्रि कहे ठे ॥ जीवो, जीवजावे अपढम ॥ अपेक्षा पूर्ववत् समजवी १ ॥ एवं

नारकीथी मांडी वैमानिकना दंडक सुधी, ते ते नावे अपढमपणुं कहेवुं २५ ॥ सिद्धो, सिद्ध नावे प्रथम, तेनी अपेक्षा पूर्ववत् समजवी २६ ॥ ए ५२ दंडके करी जीवद्वार संपूर्ण ॥ १ ॥

हवे बीजुं आहारकद्वार कहे छे ॥

एक वचन आश्रि एक आहारक जीव, आहारक नावे अपढम (अप्रथम) केमके आहारकपणुं पूर्वे अनंति वार पाम्या ते अपेक्षाए १ ॥ एवं नारकीथी मांडी वैमानिकना दंडक सुधी ते ते नावे अपढमपणुं कहेवुं २५ ॥ ए एक वचन आश्रि २५ दंडक थया ॥ बहुवचन आश्रि पण २५ दंडक एज रीते जाणवा ॥ ए ५० दंडक थया ॥ सिद्धने अनाहारकपणुं छे माटे एक वचने बहुवचने पुछवा नहि ॥ एक वचन आश्रि अनाहारक जीव, अनाहारक नावे कोइ प्रथम (पढम) केमके सिद्धने अनाहारकपणानो नाव प्रथम प्राप्त थयो छे ते अपेक्षाए ॥ कोइ अप्रथम (अपढम) केमके विग्रह गतिने विषे अनाहारकपणुं अनंति वार पाम्यो ते अपेक्षाए १ ॥ एवं नारकीथी मांडी वैमानिकना दंडक सुधी ते ते

नावे एक अपढमज कहेवा केमके विग्रहगतिने विषे अनाहारकपणुं अनंति वार पामवाथी २५ ॥ सिद्ध अनाहारकनावे प्रथम ( पढम ) केमके सिद्धने अनाहारकपणुं प्रथम प्राप्त थयुं छे ते अपेक्षाए २६ ॥ ए एक वचन आश्रि २६ दंमक थया ॥ बहुवचन आश्रि २६ दंमक पूर्ववत् जाणवा ॥ ए ५२ दंमक थया ॥ एवं आहारक अनाहारकना सर्व मळी १०२ दंमक थया ॥ इति आहारकद्वार संपूर्ण ॥ २ ॥

हवे त्रिजुं नव्यद्वार कहे छे ॥

एक वचन आश्रि नव्यसिद्धिक जीव, नव्यसिद्धिक नावे अपढम ( अप्रथम ) केमके नव्यनुं नव्यपणुं अनादि छे, माटे नव्यपणे प्रथम ( पढम ) नहि, एम अनव्य सिद्धिकपणुं पण अपढम ज जाणवुं १ ॥ एवं नारकीथी मांमी वैमानिकना दंमक सुधी, ते ते नावे अपढम कहेवा २५ ॥ एवं बहुवचने पण २५ दंमक अपढम ज कहेवा ॥ एवं ५० दंमक थया ॥ एवं ५० दंमक अनव्यसिद्धिकना पण कहेवा ॥ नोनव्यसिद्धिकनोअ-नव्यसिद्धिकना जीव नोनव्यसिद्धिकनोअनव्यसिद्धिकने नावे पढम (प्रथम), नो-

जव्यसिद्धिकनोअजव्यसिद्धिकपणानुं प्रथम पामवापणुं ढे ते अपेक्षाए १ ॥ एवं सिद्धना दंमकमां पण ते जावने पामवा आश्रिमां पढमपणुं कहेवुं ॥ एकेक वचने २, एवं बहु वचने पण २ दंमक जाणवा ॥ एवं ४ दंमक थया ॥ सर्व मळी १०४ दंमक थया ॥ इति जव्यद्वार संपूर्ण ॥

हवे चोथुं संज्ञीद्वार कहे ढे ॥

एक वचन आश्रि संज्ञी जीव, संज्ञी जावे अपढम ( अप्रथम ) केमके संज्ञीपणुं पूर्वे अनंति वार पाम्यो ते अपेक्षाए १ ॥ एवं नारकीथी मांमी, ५ स्थावर, ३ विगलेंद्रियना ए ८ दंमक वर्जिने वैमानिकना दंमक सुधी, ते ते जावे अपढमपणुं कहेवुं १७ ॥ ए एक वचन आश्रि १७ दंमक थया, एवं बहु वचने पण १७ दंमक अपढम, एवं ४२ दंमक थया ॥ असंज्ञी जीव, असंज्ञीजावे अपढम ( अप्रथम ) १ ॥ एवं नारकीथी मांमी वाणव्यंतर सुधी, ते ते जावे अपढम कहेवा ॥ ज्योतिषी वैमानिकमां असंज्ञी उपजे नहि, माटे असंज्ञीपणुं लाजे नहि, तेथी ए २ दंमक वर्जवा ॥ ए एक वचन आश्रि २३ दंमक थया ॥ एवं बहु

वचने पण २३ दंडके अपढमपणुं कहेवुं, ए ४६ दंडक थया ॥ नोसंज्ञीनोअसंज्ञी जीव, नोसंज्ञीनोअसंज्ञी नावे पढम (प्रथम) केमके ए नावनुं प्रथम पामवापणुं छे, ते अपेक्षाए १ ॥ मनुष्यने सिद्धमां पण पढम (प्रथम) पणुं ज लाने ॥ ए ३ दंडक एक वचने थया ॥ एवं बहु वचन आश्रि पण त्रणे दंडके प्रथमपणुंज कहेवुं ॥ ए ६ दंडक ॥ सर्व मळीने ७६ दंडक थया ॥ ए संज्ञीद्वार संपूर्ण ॥ ४ ॥

हवे पांचमुं लेश्याद्वार कहे छे ॥

एक वचन आश्रि सलेशी जीव, सलेशी नावे अपढम केमके पूर्वे सलेशीपणानुं अनंति वार पामवुं थयुं छे, ते अपेक्षाए १ ॥ नारकीथी मांकी वैमानिक सुधीमां, ते ते नावे अपढमपणुं होय २५ ॥ ए एक वचन आश्रि २५ दंडक, एवं बहु वचन आश्रि पण २५ दंडके अपढमपणुं लाने ॥ ए ५० दंडक थया ॥ एवं समुच्चय कृष्णलेशी जीव, कृष्णलेशी नावे अपढम १ ॥ नारकीथी मांकी वाणव्यंतर सुधी, २२ दंडके पण अपढम ॥ ए २३ दंडक एक वचनना, एवं २३ बहु वचनना दंडक, सर्व मळी कृष्णलेशीना ४६ दंडक ॥ एवं नीललेशीना

४६ ॥ कापोतना ४६ ॥ तेजुलेशीना एक वचने १ए दंमक, बहु वचने १ए. एवं ३० दंमके अपढमपणुं ॥ पद्मलेशीना ४ दंमक एक वचने ४ ॥ बहु वचने ४ ॥ एवं ० दंमके अपढमपणुं ॥ शुक्ललेशीना पण ० दंमके अपढमपणुं कहेवुं ॥ अलेशी जीव, अलेशी नावे पढम ( प्रथम ) केमके अलेशीपणानुं प्रथम पामवापणुं ढे, ते अपेक्षाए १ ॥ एवं मनुष्य ने सिद्धमा पण पढमपणुं ॥ ए एक वचने ३ दंमक, एवं बहु वचने ३ दंमके प्रथमपणुं, ए ६ दंमक थया ॥ एवं २४० दंमक सर्व मळीने थया ॥ इति लेश्याद्वार संपूर्ण ॥ ५ ॥

हवे ढठुं दृष्टिद्वार कहे ढे ॥

एक वचन आश्रि समदृष्टि जीव, समदृष्टि नावे कोइ प्रथम, ते कोइ समदृष्टिपणुं प्रथम पाम्यो ते अपेक्षाए ॥ कोइ अपढम, ते तेणे प्रतिपतित ( पमवा ) थी समदृष्टिपणुं फरीथी लाध्युं ते अपेक्षाए १ ॥ एवं नारकीथी मांमी ५ स्थावर वर्जिने वैमानिक सुधी, प्रथम सम्यक्त्वना लाने करी, प्रथम द्वितीयादि लाने करी अपढम २० ॥ सिद्ध समदृष्टिनावे प्रथम १ ॥ ए २१ दंमक एक वचनना थया ॥ एवं २१ दंमक बहु वचनना, ते समदृष्टिनावे प्रथम,

ए ४२ दंरुक थया ॥ मिथ्यादृष्टि जीव, मिथ्यादृष्टिनावे अपढम १ ॥ एवं नारकीथी वैमानिक सुधी अपढम कहेवा २५ ॥ ए एक वचनना २५ दंरुक, एवं बहु वचन आश्रि पण २५ दंरुक, एवं ५० दंरुक थया॥ समामिथ्यादृष्टि जीव, समामिथ्यादृष्टिनावे एक वचने, समुच्चय जीवने सोल दंरुक, सिय पढम, सिय अपढम॥ पढम केमके नवी दृष्टि पामवापणुं बे तेथी १ ॥ एवं नारकीथी मांमी, ५ स्थावर, ३ विगलेंद्रिय, ए ८ दंरुक वर्जि १६ दंरुके प्रथमपणुं, ए १७ दंरुक एक वचनना, ने १७ दंरुक बहु वचनना, ए ३४ दंरुके सिय पढम, सिय अपढमपणुं ॥ सर्व मळी १२६ दंरुक थया ॥ इति दृष्टिद्वार संपूर्ण ॥ ६ ॥

हवे सातमुं संयतद्वार कहे बे ॥

एक वचन आश्रि संयत जीव, संयतनावे कोइ प्रथम, कोइ अपढम, अपेक्षा समदृष्टिवत् १॥ मनुष्य संयत नावे कोइ पढम, कोइ अपढम २॥ ए एक वचने २ दंरुक, एवं बहुवचन आश्रि बे दंरुके अपढमपणुं कहेवुं ॥ ए ४ दंरुक थया ॥ असंयत जीव, असंयत नावे अपढम, असंयतपणुं अनंती वार पाम्यो ते अपेक्षाए १ ॥ एवं नारकीथी मांमी वैमानिक

सुधी, २४ दंडक ते ते जावे अपढमपणुं कहेवुं २५ ॥ ए २५ दंडक एक वचन आश्रि, एवं २५ दंडक बहुवचन आश्रि अपढम जाणवा ॥ ए ५० दंडक थया ॥ संयतासंयति आश्री समुच्चय जीव, तिर्यंच पंचेंद्रिय अने मनुष्य ३ दंडक एक जीव आश्री, तेम त्रण दंडक घणा जीव आश्री ॥ एम ६ ए दंडक थया ॥ संयतासंयती जाव आश्री, सिय प्रथम सिय अप्रथम जावना समदृष्टिवत् ॥ नोसंयतनोअसंयत जीव, नोसंयतनोअसंयत जावे पढम केमके एनुं प्रथम पामवापणुं छे ते अपेक्षाए ॥ सिद्धमां पण एज रीते पढमपणुं कहेवुं ॥ ए एक वचन आश्रि २ दंडक ॥ एवं बहु वचन आश्रि बे दंडके प्रथमपणुं कहेवुं ॥ सर्व मळीने ६४ दंडक थया ॥ इति संयतद्वार संपूर्ण ॥ ७ ॥

हवे आठमुं कषाय द्वार कहे छे ॥

एक वचन आश्रि सकषायी जीव, सकषाय जावे अपढम केमके सकषायपणाने अनादिपणुं छे तेथी १ ॥ नारकीथी मांडी वैमानिक सुधी सकषाय जावे अप्रथम २५ ॥ ए एक वचनना २५ दंडक ॥ एवं बहु वचन आश्रि पण २५ दंडके ते ते जावे अपढमपणुं कहेवुं ॥

ए ५० दंमक थया ॥ एवं क्रोधकषायीना ५० दंमक ॥ मानकषायीना ५० दंमक ॥ माया-कषायीना ५० दंमक ॥ लोजकषायीना ५० दंमक॥ सर्वत्र अपढमपणुं कहेवुं ॥ अकषायी जीव, अकषायी जावे कोइ पढम, ते यथाख्यात चारित्रनो प्रथम लाज पामवाथी ॥ कोइ अपढम, ते यथाख्यात चारित्रनो द्वितीयादि लाज पामवाथी १ ॥ एवं मनुष्य १ ॥ ते ते जावे कोइ पढम, कोइ अपढम जाणवा २॥ सिद्ध, अकषायी जावे पढम जाणवा, केमके सि-द्धपणाने अनुगत अकषायजावनुं प्रथम पामवापणुं बे तेथी ३ ॥ ए ३ दंमक एक वचन आश्रि॥ एवं बहु वचन आश्रि ३ दंमके पूर्वोक्त एक वचननी रीते ज्यां जे लाजे त्यां ते कहेवुं ॥ एवं ६ दंमक थया ॥ सर्व मळी २५६ दंमक थया॥ इति कषायद्वार संपूर्ण ॥ ७ ॥

हवे नवमुं ज्ञानद्वार कहे बे ॥

एक वचन आश्रि ज्ञानी जीव, ज्ञानजावे कोइ पढम, केमके कोइ ज्ञानीपणानो लाज प्रथम पामे ते अपेक्षाए ॥ कोइ अपढम ( अप्रथम )केमके कोइ पमिवाइपणाथी ज्ञाननो लाज फरीथी पाम्यो ते अपेक्षाए १ ॥ एवं नारकीथी मांमी ५ स्थावर वर्जिने वैमानिक

सुधी, ज्ञानन्नावे पढम अपढमपणुं कहेवुं २० ॥ सिद्ध ज्ञानन्नावे पढम, केमके प्रथम लान्न पामवाथी २१ ॥ ए एक वचने २१ दंरुक ॥ एवं बहु वचने २१ दंरुक, पण पूर्वोक्त रीते जाणवा ॥ ए ४२ दंरुक थया ॥ एवं मतिज्ञानना ४० दंरुक, ते पूर्वोक्तमांथी सिद्धना एक वचन ने बहु वचन आश्रिना २ दंरुक वर्जवा ॥ एवं श्रुतज्ञानना ४० दंरुक पण ए रीते जाणवा ॥ एवं अवधिज्ञानना एक वचने बहु वचने ३४ दंरुक, ते पूर्वोक्त ४० थी, ३ विगलेंद्रियना एक बहु वचने ६ दंरुक वर्ज्या, ते दंरुके पढम अपढमपणुं पूर्ववत् जाणवुं ॥ एवं मनःपर्यव ज्ञानना एक बहु वचने ४ दंरुके पण एमज जाणवुं ॥ केवलज्ञानी, ते ते न्नावे एक बहु वचने ६ दंरुके पूर्ववत् जाणवुं ॥ अज्ञानी अज्ञानन्नावे अपढम, अपेक्षा अनादि काळथी अज्ञाननुं पामवापणुं बे ते अपेक्षाए १ ॥ एवं नारकीथी वैमानिक सुधी, ते ते न्नावे अपढमपणुं लान्ने २५ ॥ ए एक वचनना २५ दंरुक ॥ एवं बहु वचन आश्रि २५ दंरुक एमज जाणवा ॥ एवं ५० दंरुक थया ॥ एमज मतिअज्ञानीना एक बहु वचने ५० दंरुक जाणवा ॥ एवं श्रुतअज्ञानना पण, एक बहु वचने ५० दंरुके पूर्ववत् जाणवुं ॥ विन्नंगज्ञानना

३४ दंडक ते, ५ स्थावर, २ विगलेंद्रियना एक वचनना १९ दंडक वर्जीने अपढमपणुं होय ॥ सर्व मळीने ३५० दंडक थया ॥ इति ज्ञानद्वार संपूर्ण ॥ ए ॥

हवे दशमुं जोगद्वार कहे छे ॥

एक वचन आश्रि सयोगी सयोगीभावे अपढम, अनादि काळथी ए भावनुं पामवा-पणुं छे ते अपेक्षाए १ ॥ एवं नारकीथी मांडी वैमानिक सुधी ते ते भावे अपढमपणुं कहेवुं २५ ॥ ए एक वचने २५ दंडक ॥ एवं बहु वचन आश्रि पण २५ दंडके अपढमपणुं कहेवुं ॥ ए ५० दंडक थया ॥ एवं मनयोगीना एक वचने १७ दंडक, बहु वचने १७ दंडक, ए ३४ दंडके ते ते भावे अपढमपणुं जाणवुं ॥ वचनजोगीना एक वचने २० दंडक ॥ बहु वचने २० दंडक ॥ ए ४० दंडके अपढमपणुं कहेवुं ॥ काययोगीने ५० दंडके ते ते भावे सयोगीनी परे कहेवुं ॥ अजोगी जीव अजोगीभावे प्रथम, प्रथम लाभनी अपेक्षाए १ ॥ एवं मनुष्य सिद्धने भावे पढम, ए एक वचनना ३ दंडक ॥ एवं बहु वचनना ३ दंडक, ए ६ दंडके पढमपणुं कहेवुं ॥ ए १०० दंडक थया ॥ इति जोगद्वार संपूर्ण ॥ १० ॥

हवे अग्यारमुं उपयोग द्वार कहे छे ॥

एक वचन आश्रि सागारोवउत्ता, सागारोवउत्ता भावे कोइ अपढम, केमके अनादि-पणुं छे ते अपेक्षाए ॥ कोइ पढम, केमके सागारने अणागार उपयोगे करी विशेषित सिद्ध-पणाने प्रथम ( पढम )पणानो ज भाव छे ते अपेक्षाए १ ॥ एम नारकीथी मांमी वैमानिकना दंमक सुधी अपढमपणुं कहेवुं २५ ॥ सिद्धमां पढम ( प्रथम ) पणुं कहेवुं, ओघिक अपेक्षा दंमकवत् २६ ॥ एवं बहु वचनना २६ दंमक पण पूर्वोक्त रीते जाणवा ॥ ए ५२ दंमक थया ॥ एवं अणागारोवउत्ताना ५२ दंमके एक वचने बहु वचने पढम–अपढम पूर्वोक्त सागारो-वउत्तानी रीते समजी लेवुं ॥ सर्व मळी १०४ दंमक थया ॥ इति उपयोग द्वार संपूर्ण ॥११॥

हवे १२ मुं वेदद्वार कहे छे ॥

एक वचन आश्रि सवेदी जीव, सवेदी भावे अपढम, केमके अनादि काळथी एनो लाभ पामवाथी १ ॥ एवं नारकीथी मांमी वैमानिक सुधी ते ते भावे अपढमपणुं जाणवुं २५ ॥ ए एक वचने २५ दंमक ॥ एवं २५ दंमक बहु वचन आश्रि पण अपढम जाणवा ॥ ए ५०

दंरुक थया॥ एवं स्त्रीवेदना एक बहु वचने ३२ दंरुके॥ एवं पुरुषवेदना एक बहु वचने ३२ दंरुके॥ एवं नपुंसकना २४ दंरुके अपढमपणुं कहेवुं॥ अवेदी जीव अवेदीभावे कोइ पढम, केमके अवेदी भावनो प्रथम लाभ पामवाथी॥ कोइ अपढम, केमके अवेदी भावनो द्वितीयादि लाभ पामवाथी १॥ एवं मनुष्यने दंरुके पण ते ते भावे पढम अपढमपणुं जाणवुं॥ सिद्धमां अवेदीभावे, पढमपणुं ज लाभे, द्वितीयादि लाभनो अभाव छे तेथी॥ ए ३ दंरुक एकवचनना, एवं ३ दंरुक बहुवचनना पण जाणवा॥ ए ६ दंरुक थया॥ सर्व मळी १४४ दंरुक थया॥ इति वेदद्वार संपूर्ण॥ १२॥

हवे १३ मुं शरीरद्वार कहे छे॥

एक वचन आश्रि सशरीरी जीव, सशरीरी भावे अपढम, अनादिकाळथी एनो लाभ पामवाथी॥ एवं नारकीथी मांरुी वैमानिकना दंरुक सुधी ते ते भावे अपढमपणुं कहेवुं २५॥ ए एक वचनना २५ दंरुके ने बहुवचनना २५ दंरुके ते ते भावे अपढमपणुं जाणवुं॥ ए ५० दंरुक थया॥ एवं उदारिक शरीरना एकबहुवचने २२ दंरुके॥ एवं वैक्रेयना एकबहु-

वचनं ३६ दंमके अपढमपणुं कहेवुं ॥ आहारक शरीरी जीव, आहारक शरीरनावे कोइ पढम, केमके एनो प्रथम लान पामवाथी १ ॥ कोइ अपढम, केमके परिवाइने आहारकनो द्वितीयादि लान पामवाथी १ ॥ एवं मनुष्यने दंमके पण जाणवुं २ ॥ ए २ दंमक एक वचनना ने २ दंमक बहुवचनना जाणवा ॥ ए ४ दंमक थया ॥ एवं तैजस्ना ५० दंमक एकवचन बहुवचन आश्रिना ॥ एवं कार्मणना ५० दंमक एक बहुवचन आश्रिना, ते ते नावे सशरीरीवत् जाणवा ॥ अशरीरी जीव, अशरीरीनावे पढम, केमके सिद्धने अशरीरी नावनो प्रथम लान ठे ते अपेक्षाए, ए एकवचने एक दंमक, बहुवचने बीजो, ए बे दंमक थया ॥ सर्व मळी २१५ दंमक थया ॥ इति शरीरद्वार संपूर्ण ॥ १३ ॥

हवे १४ मुं पर्यासिद्वार कहे ठे ॥

एक वचन आश्रि ५ पर्यासिए पर्यासि जीव, पर्यासिनावे अपढम, केमके पर्यासिनुं अनंति वार पामवापणुं ठे तेथी १ ॥ एवं नारकीथी मांमीने वैमानिक सुधी, ते ते नावे अपढमपणुं २० ॥ ए एकवचनना २०, ने बहुवचनना २०, एवं ४० दंमके अपढमपणुं कहेवुं ॥

तेमां ५ स्थावरना एकवचन बहुवचनना १० दंमक वर्ज्या ॥ एवं आहार पर्याप्तिना एक बहुवचने ते ते नावे ५० दंमक ॥ शरीर पर्याप्तिना ५० ॥ इंद्रिय पर्याप्तिना ५० ॥ श्वासोश्वास पर्याप्तिना ५० ॥ नाषा मन पर्याप्तिना ४० दंमक ॥ सर्व मळी २०० दंमके अपढमपणुं कहेवुं ॥ ५ अपर्याप्तिए अपर्याप्ति जीव, अपर्याप्ति नावे अपढम ( अप्रथम) १ ॥ एवं नारकीथी मांमी वैमानिक सुधी, ते ते नावे अपढमपणुं कहेवुं २० ॥ ए एकवचनना २० दंमके ने बहु वचनना २० दंमके, सर्व मळी ४० दंमके अपढमपणुं कहेवुं ॥ एवं आहार अपर्याप्तिना एकवचन बहु वचने ५० दंमके ॥ एवं शरीर अपर्याप्तिने ५० दंमके ॥ एवं इंद्रिय अपर्याप्तिने ५० दंमके ॥ एवं श्वासोश्वास अपर्याप्तिने ५० दंमके ॥ एवं नाषामन अपर्याप्तिने ४० दंमके ॥ सर्व मळी २०० ॥ एवं पर्याप्ति अपर्याप्तिना सर्व दंमक नेगा करतां ५६० दंमके अपढमपणुं कहेवुं ॥ इति पर्याप्तिद्वार संपूर्ण १४ ॥ सर्व मळीने दंमक २५९० थया ॥

इति पढम अपढमना बोल संपूर्ण ॥

# चरमाचरमना बोल ॥



अथ श्री भगवती शतक १८ मा ने उद्देशा पहेलाथी चरमाचरमना बोल लिख्यते ॥ गाथा ॥ जीवा १ हारग २ भव ३ सण्णि ४, लेस्सा ५ दिठी य ६ संजय ७ कसाए ८ ॥ नाणे ९ जोगु १० वओगे ११, वेएय १२ सरीर १३ पज्जत्ती १४ ॥ १ ॥

हवे प्रथम जीवद्वार कहे छे ॥ एकवचन आश्रि जीव, जीवभावे अचरम, केमके जीवपणानो नाश नथी ते अपेक्षाए १ ॥ एवं नारकीथी मांडी वैमानिक सुधी, ते ते भावे कोइ चरम, केमके नरकादिथी नीकळ्याने सिद्धगमनथी फरी नरकादिने विषे जावुं नथी ते अपेक्षाए १॥ कोइ अचरम ते पूर्वोक्तथी विपरीत २५ ॥ एवं सिद्ध, सिद्धभावे अचरम, केमके सिद्धपणानो नाश नथी ते अपेक्षाए ॥ ए २६ दंडक एक वचनना, एवं २६ दंडक बहुवचनना, ए ५२ दंडक थया ॥ इति प्रथम जीवद्वार १ ॥ हवे बीजुं आहारकद्वार कहे छे ॥ आहारक जीव, आहारक भावे कोइ चरम, केमके फरीथी आहारकपणुं न पामशे, सिद्धि-

गमनथी, ते अपेक्षाए ॥ कोइ जीव अचरम १ ॥ नारकीथी मांमी वैमानिक सुधी, ते ते नावे कोइ चरम, केमके–नरकादिपणे फरी आहारकपणुं न पामशे, ते अपेक्षाए ॥ कोइ अचरम । फरीथी नरकादिपणे आहारकपणुं पामवाथी २५ ॥ ए २५ दंमक एकवचनना, एवं बहुवचनना २५ दंमक, एवं ५० दंमक थया ॥ अनाहारक जीव अनाहारकपणे अचरम, केमके अनाहारकपणाने अनाशपणुं ठे तेथी १॥ एवं नारकीथी मांमी वैमानिक सुधी अनाहारकनावे कोइ चरम, केमके नरकादिपणे फरी अनाहारकपणुं न पामशे ते अपेक्षाए, कोइ अचरम २५॥ सिद्ध अनाहारकपणे अचरम, अनाहारकपणानो नाश नथी ते अपेक्षाए २६ ॥ ए एक वचनना २६ दंडक, एवं बहु वचनना २६ दंमक ॥ सर्व मळी ५२ दंमक थया ॥ इति आहारक द्वार ॥ २ ॥ हवे त्रिजुं नव्यद्वार कहे ठे ॥ नव्यसिद्धिक जीव, नव्यसिद्धिक नावे चरम, केमके मोक्षगमनथी ते नावनो नाश थवाथी १ ॥ एवं नारकीथी मांमो वैमानिक सुधी, ते ते नावे कोइ चरम, सिद्धपणुं पामवे करी॥ कोइ अचरम २५ ॥ ए २५ दंमक एकवचने, ने २५ बहुवचने, एवं ५० दंमक थया ॥ अनव्यसिद्धिक

जीव, अनव्यसिद्धिक नावे अचरम, अनव्यना नव्यपणे अनाव ठे तेथी १ ॥ एवं नार- 
कीथी मांडी वैमानिक सुधी ते ते नावे अचरम २५ ॥ ए २५ दंडक एक वचनना, ने २५ बहु-
वचनना, ए ५० दंडक थया ॥ नोनव्यसिद्धिकनोअनव्यसिद्धिक जीव, नोनव्यनो-
अनव्य नावे अचरम, केमके तने सिद्धपणुं ठे तेथी ॥ वळी सिद्धपणाना पर्यायनुं अनप-
गम ( अनाश ) पणुं ठे तेथी १ ॥ एवं सिद्धने पण जाणवुं २ ॥ ए २ दंडक एकवचने, २
दंडक बहुवचने, एवं ४ दंडक थया ॥ सर्व मळी १०४ दंडक थया ॥ इति नव्यद्वार ३ ॥
हवे चोथुं संज्ञीद्वार कहे ठे ॥ संज्ञी जीव, संज्ञीनावे कोइ चरम, कोइ अचरम, युक्ति आहा-
रकवत् ॥ एवं नारकीथी मांडी वैमानिक सुधी ते ते नावे कोइ चरम, कोइ अचरम १७ ॥
ए एकवचने १७ दंडक, बहुवचने १७ दंडक, सर्व मळी ३४ दंडक थया ॥ असंज्ञी जीव,
असंज्ञीनावे कोइ चरम, कोइ अचरम १ ॥ एवं नारकीथी मांडी वाणव्यंतर सुधी जाणवुं
२३ ॥ ए एकवचने २३, बहुवचन २३, सर्व ४६ दंडक थया ॥ नोसंज्ञीनोअसंज्ञी जीव,
नोसंज्ञीनोअसंज्ञीनावे अचरम १ ॥ मनुष्य ते ते नावे चरम, केमके मनुष्यने केवलीपणे 

फरी मनुष्यपणानो अलाभ ठे तेथी २॥ सिद्ध ते ते भावे अचरम, केमके ते भावना पर्यायनुं ( अनपगम ) अनाशपणुं ठे तेथी ३ ॥ ए ३ एकवचने, ३ बहुवचने, एवं ६ दंडक थया ॥ सर्व मळी ७६ दंडक थया ॥ इति संज्ञीद्वार ॥ ४ ॥ हवे पांचमुं लेश्याद्वार कहे ठे ॥सलेशी जीव,सलेशी भावे कोइ चरम, केमके जे निर्वाण पामशे ते सलेशीपणाना चरम, कोइ अचरम १ ॥ एवं नारकीथी मांमी वैमानिक सुधी कोइ चरम, कोइ अचरम २५ ॥ ए एकवचनना २५ ॥ बहुवचनना २५ ॥ सर्व मळी ५० दंडक थया ॥ एवं कृष्णलेशीना एक बहुवचने ४६ दंडके ॥ नीललेशीना ४६ दंडके॥ कापोतलेशीना ४६ दंडके॥ एवं तेजुलेशीना एक बहुवचने ३७ दंडके ॥ पद्मलेशीना एक बहु वचने ७ दंडके ॥ शुक्ललेशीना एक बहुवचने ७ दंडके ॥ सर्वत्र कोइ चरम कोइ अचरम ॥ अलेशी जीव, अलेशीभावे अचरम १॥ मनुष्य ते ते भावे चरम, अपेक्षा नोसंज्ञीनोअसंज्ञीवत् २ ॥ सिद्ध ते ते भावे अचरम, केमके ते भावना पर्यायनुं अनाशपणुं ठे तेथी २ ॥ ए ३ एकवचने, ने ३ बहुवचने, ६ दंडक थया ॥ सर्व मळी २४७ दंडक थया ॥ इति लेश्याद्वार ॥ ५ ॥ हवे ठवुं दृष्टिद्वार कहे ठे॥

समदृष्टि जीव समदृष्टि भावे अचरम केमके समदृष्टिथी पमतो छते पुनर्भावे अचरमपणुं ॥ नारकीथी मांमी वैमानिक सुधी ते ते भावे अचरमपणुं २१ ॥ सिद्ध ते ते भावे अचरम अपडवाथीज २२, ए एकवचनना २२, ने बहुवचनना २२, सर्व मळी ४४ दंमक थया ॥ मिथ्यादृष्टि जीव ते ते भावे कोइ चरम, कोइ अचरम, अपेक्षा आहारकवत् १ ॥ एवं नारकीथी मांमी वैमानिक सुधी ते ते भावे कोइ चरम, कोइ अचरम २५ ॥ ए एकवचनना २५, ने बहुवचनना २५, सर्व मळी ५० दंमक थया ॥ समामिथ्यादृष्टि जीव ते ते भावे कोइ चरम, कोइ अचरम १ ॥ एवं नारकीथी मांमी वैमानिक सुधी ते ते भावे कोइ चरम, कोइ अचरम १७ ॥ ए एकवचनना १७ दंमक, ने १७ दंमक बहुवचनना ए ३४ दंमक थया ॥ सर्व मळी १२६ दंमक थया ॥ इति दृष्टिद्वार॥६॥ हवे सातमुं संयतद्वार कहे छे ॥ संयत जीव, संयतभावे कोइ सिद्धगमनथी चरम, कोइ अचरम १ ॥ एवं मनुष्य कोइ चरम, कोइ अचरम २ ॥ ए एकवचनना २ दंमक, ने बहुवचनना २, एवं ४ दंमक ॥ असंयत जीव, असंयत भावे कोइ चरम, कोइ अचरम १ ॥

एवं नारकीथी मांमी वैमानिक सुधी ते ते नावे कोइने चरमपणुं, कोइने अचरमपणुं जाणवुं २५ ॥ ए एक वचनना २५, ने बहुवचनना २५, ए ५० दंमक थया ॥ संयतासंयत जीव, संयतासंयत नावे कोइ चरम, ने कोइ अचरम १ ॥ तिर्यंच ते ते नावे पूर्ववत् २ ॥ मनुष्य ते ते नावे पूर्ववत् ३ ॥ ए एकवचने ३, ने बहुवचने ३, एवं ६ दंमक थया ॥ नोसंयतनोअसंयत जीव, ते ते नावे अचरम, केमके सिद्धने सिद्धपणाना पर्यायनुं अनपगम ( अनाश ) पणुं ने तेथी १ ॥ एवं सिद्धपणुं एमज जाणवुं २ ॥ ए एकवचनना २, ने बहुवचनना २, एवं ४ दंमके अचरमपणुं ॥ सर्व मळीने ६४ दंमक थया ॥ इति संयतद्वार ॥ ७ ॥ हवे आठमुं कषाय द्वार कहे ने ॥ सकषायी जीव, सकषाय नावे कोइ चरम, कोइ अचरम १ ॥ नारकीथी मांमी वैमानिक सुधी ते ते नावे कोइ चरम, कोइ अचरम २५ ॥ एवं एकवचने २५, ने बहुवचने २५, सर्व मळी ५० दंमक थया ॥ एवं क्रोधकषायीने ५० दंमके ॥ एवं मानकषायीने ५० दंमके ॥ मायाकषायीने ५० दंमके ॥ लोनकषायीने ५० दंमके कोइ चरम, कोइ अचरम ॥ अकषायी जीव, अकषाय नावे अचरम १ ॥ मनुष्य ते ते नावे

 

कोइ चरम, केमके अकषायीपणे युक्त मनुष्यपणाने जे वळी फरी नहि पामे, ते अपेक्षाए ॥ कोइ अचरम, केमके जे फरीने पामशे ते अपेक्षाए २ ॥ सिद्ध ते ते जावे अचरम ३ ॥ ए एकवचने ३ दंरुक, वहु वचने ३ दंरुक, एवं ६ दंरुक ॥ सर्व मळीने २५६ दंरुक थया ॥ इति कषाय द्वार ॥ ८ ॥ हवे नवमुं ज्ञान द्वार कहे छे ॥ ज्ञानी, ज्ञानी जावे अचरम, केमके ज्ञानथी अपरुवे पुनर्जावे अचरमपणुं छे माटे १ ॥ एवं नारकीथी मांमी वैमानिक सुधी ते ते जावे कोइ चरम, केमके ज्ञानयुक्त नारकीपणादि पुनर्लाजना अजावथी ॥ कोइ अचरम २० ॥ सिद्ध ते ते जावे अचरम, केमके अक्षीण ज्ञानजाव छतोज होय ते अपेक्षाए २१ ॥ ए एक वचनना २१, ने वहुवचनना २१, एवं ४२ दंरुक थया ॥ एवं मतिज्ञानी ते ते जावे एक वचने, बहुवचने ४० दंरुके ॥ श्रुत ज्ञानी ४० दंरुके ॥ अवधिज्ञानी ३४ दंरुके ॥ मनःपर्यवज्ञानी ४ दंरुके कोइ चरम, कोइ अचरम, केमके केवलज्ञानप्राप्तिए फरी मति ज्ञानादि न पामे ते अपेक्षाए चरम ॥ केवलज्ञानी ६ दंरुके अचरम ॥ अज्ञानी जीव अज्ञान जावे कोइ चरम, केमके अज्ञानने फरी नहि पामे ते अपेक्षाए ॥ तेथी विपरीत जे

अन्नव्य ते ज्ञानने नहि पामे ते अपेक्षाए कोइ अचरम १ ॥ एवं नारकीथी मांमी वैमानिक सुधी, ते ते नावे कोइ चरम, कोइ अचरम २५ ॥ ए एक वचनना २५, ने बहुवचनना २५, एवं ५० दंमक थया ॥ एवं मतिअज्ञानना एक बहुवचने ५० दंमके ॥ श्रुत अज्ञानना ५० दंमके ॥ विनंगज्ञानना ३४ दंमके कोइ चरम, कोइ अचरम ॥ सर्व मळीने ३५० दंमक थया ॥ इति ज्ञानद्वार ॥ ए ॥ हवे दशमुं जोग द्वार कहे डे ॥ सजोगी जीव, सजोगनावे कोइ चरम, केमके अजोगपणुं पामवानी अपेक्षाए ॥ कोइ अचरम १ ॥ एवं नारकीथी मांमी वैमानिक सुधी, ते ते नावे कोइ चरम, ने कोइ अचरम २५ ॥ ए एकवचने २५, ने बहुवचने २५, एवं ५० दंमक थया ॥ एवं मनजोगीना एक बहुवचने ते ते नावे ३४ दंमके ॥ एवं वचनजोगीना एक बहुवचने ते ते नावे ४० दंमके ॥ एवं काययोगीना ५० दंडके कोइ चरम, कोइ अचरम ॥ अयोगी जीव, अयोगनावे अचरम १ ॥ मनुष्य ते ते नावे चरम, केमके मनुष्यने अयोगीपणे फरी मनुष्यपणानो अलान्न डे, ते अपेक्षाए २ ॥ सिद्ध ते ते नावे अचरम, केमके ते नावनुं नाश थवापणुं नथी, ते अपेक्षाए ३ ॥

चरमाचरमना ॥१२७॥ बोल.

ए एक वचनना ३, ने बहुवचनना ३, एवं ६ दंडक थया ॥ सर्व मळी १८० दंडक थया ॥ इति जोगद्वार ॥१०॥ हवे ११ मुं उपयोगद्वार कहे छे ॥ सागारोवउत्ता जीव, सागारोवउत्ता भावे अचरम, केमके ते भावनुं अनाशपणुं छे, ते अपेक्षाए १ ॥ एवं नारकीथी मांडी वैमानिक सुधी ते ते भावे कोइ चरम, केमके नारकादिपणे फरी सागरोवउत्तापणुं न पामशे, ते अपेक्षाए ॥ तेथी विपरीत कोइ अचरम ॥ २५ ॥ सिद्ध ते ते भावे अचरम, केमके सागारोवउत्तापणानो नाश नथी, ते अपेक्षाए २६ ॥ ए एकवचने २६, ने बहुवचने २६ ॥ सर्व मळी ५२ दंडक थया ॥ एवं अणागारोवउत्तानां पण ५२ दंडक, ते ते भावे सागारोवउत्तानी परे जाणवा ॥ सर्व मळी १०४ दंडक थया ॥ इति उपयोगद्वार ॥ ११ ॥ हवे १२ मुं वेद द्वार कहे छे ॥ सवेदी जीव, सवेदी भावे कोइ चरम, केमके सवेदपणुं फरीथी न पामे, ते अपेक्षाए ॥ कोइ अचरम ते फरीथी पामे ते अपेक्षाए १ ॥ एवं नारकीथी मांडी वैमानिक सुधी ते ते भावे कोइ चरम, कोइ अचरम, २५ ॥ ए एकवचने २५, ने बहुवचने २५, सर्व मळी ५० थया ॥ एवं स्त्रीवेदना एक बहुवचने ३४ दंडके ॥ पुरुषवेदना

एक बहुवचने ३२ दंरुके ॥ नपुंसक वेदना २४ दंरुके ॥ ते ते ज्ञावे कोइ चरम, कोइ अचरम ॥ अवेदी जीव, अवेदज्ञावे अचरम १॥ मनुष्य अवेदज्ञावे कोइ चरम, केमके अवेदपणे युक्त मनुष्यपणाने जे वळी फरी नहि पामे ते अपेक्षाए ॥ कोइ अचरम, केमके कोइ फरी पामशे ते अपेक्षाए २ ॥ सिद्ध ते ते ज्ञावे अचरम ३ ॥ ए एक वचने ३, ने बहुवचने ३, एवं ६ दंरुक थया ॥ सर्व मळीने १४५ दंरुक थया ॥ इति वेदद्वार ॥ १२ ॥ हवे १३ मुं शरीरद्वार कहे छे ॥ सशरीरी जीव, सशरीरज्ञावे कोइ चरम, केमके सिद्धगमनथी फरी शरीर नहि पामे, ते अपेक्षाए ॥ तेथी विपरीत कोइ अचरम १ ॥ एवं नारकीथी मांरुी वैमानिक सुधी, ते ते ज्ञावे कोइ चरम, केमके नारकादिपणे फरी शरीर नहि पामे, ते अपेक्षाए ॥ तेथी विपरीत कोइ अचरम २५ ॥ ए एक वचनना २५, ने बहुवचनना २५, एवं ५० दंरुक थया ॥ एवं उदारिक शरीरी ते ते ज्ञावे, एक बहुवचने ४४ दंरुके ॥ एवं वैक्रेय शरीरी एक बहुवचने ते ते ज्ञावे ३६ दंरुके ॥ एवं आहारक शरीरी ते ते ज्ञावे एक बहुवचने ४ दंरुके ॥ एवं तेजस् शरीरी ते ते ज्ञावे एक बहुवचने ५० दंरुके ॥

एवं कार्मण शरीरी ते ते न्नाव एक बहुवचने ५० दंमके कोइ चरम, ने कोइ अचरम॥ अशरीरी जीव, अशरीरन्नावे अचरम, केमके तेने सिद्धपणुं ने तेथी ते न्नावनुं अनाशपणुं ले, ते अपेक्षाये १ ॥ ए एक वचने १, ने बहुवचने १, एवं २ दंमक थया ॥ सर्व मळीने २१४ दंमक थया ॥ इति शरीरद्वार ॥ १३ ॥ हवे १४ मुं पज्जत्तिद्वार कहे ले ॥ ५ पर्याप्तिए पर्याप्तजीव पर्याप्तन्नावे कोइ चरम, कोइ अचरम १ ॥ एवं नारकीथी मांमी वैमानिक सुधी, ते ते न्नावे कोइ चरम, ने कोइ अचरम २० ॥ ए एक वचनना २०, ने बहुवचनना २०, एवं ४० दंमक थया॥ एवं आहार पर्याप्तिना ते ते न्नावे एक बहुवचने ५० दंमके ॥ एवं शरीर पर्याप्तिना एक वहुवचने ५० दंमके ॥ एवं इंद्रिय पर्याप्तिना ५० दंमके ॥ एवं श्वासोच्छ्वास पर्याप्तिना ५० दंमके ॥ एवं न्नाषा मनपर्याप्तिना ४० दंमके कोइ चरम, कोइ अचरम जाणवा ॥ ए २०० दंमक थया ॥ ५ अपर्याप्तिए अपर्याप्त जीव, अपर्याप्तन्नावे कोइ चरम, कोइ अचरम १ ॥ एवं नारकीथी मांमी वैमानिक सुधी, ते ते न्नावे कोइ चरम, कोइ अचरम २० ॥ ए एक वचनना २०, ने वहुवचनना २०, एवं ४०

दंरुक थया ॥ एवं आहार अपर्याप्तिना एक बहु वचने ५० दंरुके ॥ एवं शरीर अपर्याप्तिना ५० दंरुके ॥ एवं इंद्रिय अपर्याप्तिना ५० दंरुके ॥ एवं श्वासोच्छ्वास अपर्याप्तिना ५० दंरुके ॥ एवं नाषा मन अपर्याप्तिना ४० दंरुके कोइ चरम, कोइ अचरम ॥ सर्व मळीने ५६० दंरुक थया ॥ इति पर्याप्तिद्वार ॥ १४ ॥ सर्व मळीने दंरुक २५०४ थया ॥

गाथा ॥ जो जं पाविहिति पुणो, नावं सो तेण अचरिमो होइ ॥
अच्चंत विजोगो जस्स, तेण नावेण सो चरिमो ॥ १ ॥

नावार्थ—जे जे नावने फरीने पामे, ते ते नावे करी अचरम होय ॥ जे नावनो अत्यंत वियोग, ते तेणे नावे करी चरम होय ॥ १ ॥

॥ इति चरमाचरमना बोल संपूर्ण ॥

## आहारक अनाहारकना बोल ॥

अथ श्री आहारक अनाहारकना बोल पन्नवणा पद २० मांथी लख्या छे ॥
गाथा ॥ आहार १ नविय २ सन्नी ३, लेस्सा ४ दिठि ५ संजय ६ कसाए ७ ॥

आहारक अनाहारकना ॥१२९॥

बोल.

नाण ८ जोगु ए वओगे १०, वेदे य ११ सरीर १२ पज्जत्ति १३ ॥ १ ॥

हवे प्रथम आहार द्वार कहे छे ॥ समुच्चय जीव एक वचन आश्रि कोइ आहारक ने कोइ अनाहारक, ते विग्रह गतिने विषे तथा केवल समुद्घाते तथा १४ मे गुणठाणे तथा सिद्धपणे अनाहारक होय तेथी, एवं नारकीथी मांन्डी वैमानिक सुधी एक वचने जाणवुं ॥ समुच्चय जीव बहु वचन आश्रि आहारक ने अनाहारक होय ते विग्रह गतिने विषे निगोद तथा सिद्ध अनाहारक घणा होवाथी ॥ नारकीना बहु वचन आश्रि ३ जांगा, ते आहारक घणा १ ॥ आहारक घणा ने अनाहारक एक २ ॥ ते नारकीमां १२ मुहूर्त्तनो विरह पडे, विग्रह गतिए कोइ वखते एक उपजवा आश्रि ॥ आहारक घणा ने अनाहारक घणा, ते कोइ वखते विग्रह गतिए घणा जीव उपजे ते आश्रि ॥ एवं यावत् वैमानिक सुधी जाणवुं ॥ नवरं एकेंद्रिय ५, समुच्चय ओघिकनी परे जाणवा ॥ १ ॥ हवे बीजुं जव्य द्वार कहे छे ॥ जव्यसिद्धिक एक वचन आश्रि आहारक अनाहारक, ते युक्ति पूर्ववत् ॥ एवं नारकीथी मांन्डी वैमानिक सुधी जाणवुं ॥ बहु वचन आश्रि जव्यसिद्धिकमां ओघिक ने एकेंद्रियना दंडक वर्जिने ३ जांगा ॥ ॥१२९॥

एवं अन्नव्यसिद्धिक एक वचन आश्रि, बहु वचन आश्रिने जाणवुं ॥ नोजव्यनोअ-न्नव्यसिद्धिक एक वचन आश्रि एक अनाहारक ॥ एवं सिद्ध पण बहु वचन आश्रि अना-हारक ॥ २ ॥ हवे त्रिजुं संज्ञी द्वार कहे छे ॥ एक वचन आश्रि संज्ञी जीव, कोइ आहार-क, ने कोइ अनाहारक, विग्रह गतिनी अपेक्षाए ॥ संज्ञीनुं आयु वेदवाथी संज्ञी शेष काल आहारक, यावत् वैमानिक सुधी ॥ बहु वचन आश्रि संज्ञीने विषे ३ न्नांगा, वैमानिक सुधी ॥ असंज्ञी जीव, एक वचन आश्रि कोइ आहारक, कोइ अनाहारक ॥ एवं नारकी यावत् वाणव्यंतर सुधी ॥ बहु वचन आश्रि असंज्ञी जीव, आहारक ने अनाहारक घणा, एक न्नांगो ॥ असंज्ञी नारकी बहु वचन आश्री ६ न्नांगा ॥ एवं १० न्नवनपतिमां, ६ एकेंद्रि-यमां अन्नंगक ॥ ३ विगलेंद्रिय, तिर्यंच पंचेंद्रियमां ३ न्नांगा ॥ मनुष्य वाणव्यंतरमां ६ न्नांगा॥ नोसन्नीनोअसन्नी मनुष्य, सिद्धमां एक वचने आहारक ने अनाहारक ॥ बहु वचने नो-संज्ञीनोअसंज्ञीमां आहारक ने अनाहारक समुद्घात आश्री घणा ॥ मनुष्यमां ३ न्नांगा ॥ सिद्धो अनाहारक घणा ॥ ३ ॥ हवे चोथुं लेश्याद्वार कहे छे ॥ सलेशी तथा सलेशी नारकी-

आहारक अनाहारकना ॥१३०॥

श्री मांडी वैमानिक सुधी, एक वचने कोइ आहारक, कोइ अनाहारक॥ बहु वचन आश्री सलेशी, कृष्ण नील कापोत लेशीमां समुच्चय ने एकेंद्रियना ५ दंडक वर्जिने, बीजामां ३ नांगा लाने॥ बहु वचन आश्रि तेजु लेश्यामां पृथ्वी पाणी वनस्पतिमां ६ नांगा, बीजा देवलोक सुधीना देवनुं तेमां आगमन छे माटे॥ शेष जीवोमां नांगा ३ लाने॥ जेने तेजुलेश्या होय तेने ३ नांगा, शेषने नहि॥ पद्म शुक्ल लेश्या तिर्यंच पंचेंद्रिय, मनुष्य, वैमानिकने विषे होय॥ एक वचन आश्रि आहारक, बहु वचन आश्रि नांगा ३॥ अलेशी जीव तथा मनुष्य तथा सिद्ध एक वचन बहु वचने अनाहारक॥ ४॥ हवे पांचमुं दृष्टि द्वार कहे छे॥ समदृष्टि जीव कोइ आहारक, कोइ अनाहारक॥ ३ विगलेंद्रिय समदृष्टिमां ६ नांगा॥ सिद्ध अनाहारक॥ शेषमां नांगा ३ लाने॥ मिथ्यादृष्टिमां समुच्चय जीवने एकेंद्रिय वर्जिने, शेषमां ३ नांगा॥ समामिथ्यादृष्टि जीव, आहारक एकेंद्रिय, ३ विगलेंद्रिय वर्जिने, वैमानिक सुधीमां एक बहु वचने आहारक ज होय॥ ५॥ हवे छठुं संयति द्वार कहे छे॥ संजति मनुष्य ने समुच्चय जीव कोइ आहारक, कोइ अनाहारक, बहु वचने ३ नांगा॥ असंजति

बोल.

एक वचने कोइ आहारक, कोइ अनाहारक ॥ बहु वचने समुच्चय जीवने एकेंद्रिय वर्जिने, शेषमां ३ नांगा ॥ संजतासंजति समुच्चय जीव, पंचेंद्रिय तिर्यंच ने मनुष्यमा एक बहु वचने आहारक ॥ नोसंयतनो असंयतनोसंयतासंयत समुच्चय जीवने सिद्ध एक बहु वचने अनाहारक ॥ ६ ॥ हवे सातमुं कषाय द्वार कहे ठे ॥ सकषायी जीव कोइ आहारक, कोइ अनाहारक, एवं वैमानिक सुधी, बहु वचने समुच्चय जीवने एकेंद्रिय वर्जिने, शेषमां ३ नांगा ॥ क्रोध कषायी जीवोने विषे एमज जाणवुं ॥ नवरं देवमां ६ नांगा केमके देवमां स्वनावथी लोन्न बहु होय, क्रोधादि बहु न होय तेथी, क्रोध कषायी एक पण लान्ने ठे तेथी ॥ मान कषायी माया कषायी देव नारकीने विषे ६ नांगा, शेषमां समुच्चय जीवने एकेंद्रिय वर्जिने त्रण नांगा लान्ने ॥ लोन्न कषायी नारकीमां ६ नांगा, शेषमां जीव एकेंद्रिय वर्जिने ३ नांगा लान्ने ॥ अकषायी नोसंज्ञीनोअसंज्ञीनी परे जाणवा ॥ ७ ॥ हवे आठमुं ज्ञान द्वार कहे ठे ॥ ज्ञानी एक वचने समदृष्टिनी परे, मतिज्ञानी श्रुत ज्ञानी, ३ विगलेंद्रियमां ६ नांगा, शेषमां ३ नांगा ॥ अवधिज्ञानी एक वचने तेमज बहुवचने तिर्यंच पंचेंद्रिय आहा-

 

रक ते पंचेंद्रिय तिर्यंचने विग्रहगतिने विषे नहि, त्यारे तेने गुण प्रत्ययथी अवधिनो संनव गुणना असंनवथी नहि ॥ वळी अव्रति पतित अवधिदेव अथवा मनुष्य तिर्यंचने विषे उपजे तेथी, अवधिज्ञानी ठतां तिर्यंचने अनाहारकनो योग न होय, शेष स्थानकने विषे ५ एकेंद्रिय, ३ विगलेंद्रिय वर्जितने विषे एकेक प्रते नांगा ३ ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय आहारक, शेष जीवादिने विषे ३ नांगा, जेने अवधिज्ञान होय तेने विषे ॥ मनःपर्यवज्ञान मनुष्यने तथा समुच्चय दंमके होय ॥ एक बहुवचने आहारक, विग्रह गत्यादि अवस्थाने विषे मनःपर्यवज्ञाननो संनव नथी माटे ॥ केवलज्ञानी, नोसंज्ञीनोअसंज्ञीवत्, केवळज्ञान चिंतवणाने विषे त्रण पद, सामान्यथी जीवपद १, मनुष्य २, सिद्ध ३, सामान्यथी जीवपदे मनुष्यपदे आहारक तथा अनाहारक ॥ सिद्धपदे अनाहारक ॥ बहुवचने सामान्यथी जीवपदे आहारक पण अनाहारक पण ॥ मनुष्यपदे ३ नांगा पूर्वे देखाड्या, ते सिद्धपदे अनाहारक, पण समुच्चय अज्ञानी, मति श्रुत अज्ञानी, एकवचने पूर्ववत् ॥ बहुवचने जीवपद एकेंद्रिय पृथव्यादिने विष आहारक अनाहारक, शेषने विषे ३ नांगा ॥ विनंगज्ञानीने विषे एक

बहुवचने तिर्यंच पंचेंद्रिय, मनुष्य आहारक, विभंग ज्ञान सहितने विग्रह गतिए ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय मनुष्यने विषे उत्पत्तिनो असंभव छे माटे ॥ शेष स्थाने एकेंद्रिय विगलेंद्रिय वर्जितने विषे भांगा ३ ॥ ८ ॥ हवे नवमुं योग द्वार कहे छे ॥ सयोगीने विषे समुच्चय जीवने, एकेंद्रिय वर्जिने, शेषमां ३ भांगा ॥ मनयोगी वचनयोगी समामिथ्यादृष्टिनी परे, नवरं वचनयोगी ३ विगलेंद्रियने, कायजोगने विषे समुच्चय जीवने एकेंद्रिय वर्जिने, शेषमां भांगा ३ ॥ अजोगी जीव मनुष्य, सिद्ध, अनाहारक ॥९॥ हवे दशमुं उपयोगद्वार कहे छे ॥ साकार अनाकार उपयोगने विषे जीव एकेंद्रिय वर्जिने, शेषमां भांगा ३॥ सिद्ध अनाहारक ॥ १० ॥ हवे अग्यारमुं वेद द्वार कहे छे ॥ सवेदने विषे समुच्चय जीवने, एकेंद्रिय वर्जिने, शेषमां ३ भांगा ॥ स्त्री पुरुषवेदने विषे एकवचने तेमज बहुवचने जीवादिने विषे एकेक प्रते ३ भांगा ॥ नपुंसक वेदने विषे जीव एकेंद्रिय वर्जिने त्रण भांगा ॥ जीवमां एकेंद्रिय अहारक घणा अनाहारक घणा, अवेदी जेम केवळी, एक बहुवचने, जीवपदे मनुष्य पदे एकवचने आहारक, कोइ अनाहरक, बहुवचने जीवपदे आहारक पण, अनाहारक पण, मनुष्यने विषे भांगा ३ ॥ सिद्धने विषे तो अनाहारक ॥ ११ ॥ हवे बारमुं शरीर द्वार

आहारक अनाहारकना ॥१३२॥

कहे छे ॥ सशरीरने विषे समुच्चय जीवने एकेंद्रिय वर्जि, शेषमां ३ भांगा ॥ उदारिक शरीरने विषे समुच्चय जीवने मनुष्यने विषे ३ भागा ॥ शेषने विषे आहारक अनाहारक नहि ॥ वैक्रेय आहारक शरीरी एक बहुवचने आहारक अनाहारक नहि, जेने वैक्रेय आहारक संभवे तेज जाणवा, बीजा नहि ॥ नारकी, भवनपति, वाउकाय, तिर्यंच पंचेंद्रिय, मनुष्य, व्यंतर, ज्योतिष, वैमानिकने विषे आहारक नहि ॥ मनुष्यने विषे होय ॥ तैजस् कार्मण शरीरने विषे एकवचने कोइ आहारक, कोइ अनाहारक, बहुवचने समुच्चय जीवने एकेंद्रियने विषे अभंगक ॥ शेषमां ३ भांगा ॥ अशरीरी सिद्धमां जीवने, सिद्धमां एक-वहुवचने अनाहारक॥ १२ ॥ हवे तेरमुं पर्याप्तिद्वार कहे छे ॥ प्रथम ४ आहारादि पर्याप्तिने विषे समुच्चय जीवने, मनुष्यने विषे ३ भांगा॥ शेष आहारक भाषा मनःपर्याप्ति पंचेंद्रियने होय, बीजाने न होय ॥ आहारक पर्याप्तिए अपर्याप्त अनाहारक एक ने बहु वचने ॥ शरीर पर्याप्तिए अपर्याप्त कोइ आहारक, कोइ अनाहारक॥ उपरनी ४ पर्याप्तिए अपर्याप्त नारकी, देव मनुष्यने विषे ६ भांगा ॥ समुच्चय जीवने एकेंद्रिय वर्जिने शेषने विषे ३ भांगा ॥ भाषा, मन पर्याप्तिने विषे समुच्चय जीवने पंचेंद्रिय तिर्यंचमां भांगा ३ ॥ नारकी देव

मनुष्यने विषे ६ जांगा ॥ सव पद ए एक बहुवचन जीवादि दंरुक कहवा॥ जेने जे होय ते पुछवुं, जेने जे न होय ते न पुछवुं ॥ यावत् जाषा मन पर्याप्तिये अपर्याप्त नारकी देव मनुष्यने विषे ६ जांगा ॥ शेषने विषे ३ जांगा ॥ १३ ॥

॥ इति आहारक अनाहारकना बोल संपूर्ण ॥

## बंधिशतकना बोल ॥

अथ श्री जगवती शतक २६ मांथी बंधिशतकना बोल लिख्यते ॥

गाथा ॥ जीवा य १ लेस्स २ पक्खिय ३, दिट्ठि य ४ नाण ५ अनाणे ६ ॥

सण्णा य ७ वेय ८ कसाय ए, जोगु १० वओगे ११ एगारस ठाणाइं ॥ १ ॥

ए ११ द्वारनी गाथा कही ॥ हवे ११ उद्देशानो गाथा कहे छे ॥

अणंतरोववन्नादि चत्तारि ४, परंपरोववन्नादि तहेवय ४ ॥

उहिया १ चरिमा चरिमे य २, इइ एगारस उद्देशा ॥ १ ॥

समुच्चय दंरुकथी मांरुी चोवीसे दंरुकमां जे ठकाणे जेटला बोल लाजे तेनो यंत्र आ प्रमाणे–

| २५ दंडकनां नाम | समुच्चय जीव १ | लेश्या ८ | पक्ष २ | दृष्टि ३ | ज्ञान ६ | अज्ञान ४ | संज्ञा ५ | वेद ५ | कषाय ६ | योग ५ | उपयोग २ | सर्वे मळी ४७ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| समुच्चय दंडकमां | १ | ८ | २ | ३ | ६ | ४ | ५ | ५ | ६ | ५ | २ | ४७ |
| ७ नारकीना १ दंडकमां | १ | ४ | २ | ३ | ४ | ४ | ४ | २ | ५ | ४ | २ | ३५ |
| १० भवनपति,१६वाणव्यंतर, ए ११ दंडकमां | १ | ५ | २ | ३ | ४ | ४ | ४ | ३ | ५ | ४ | २ | ३७ |
| ज्योतिषी,१-२देवलोक सुधीमां | १ | २ | २ | ३ | ४ | ४ | ४ | ३ | ५ | ४ | २ | ३४ |
| ३ थी १२ देवलोक सुधीमां | १ | २ | २ | ३ | ४ | ४ | ४ | २ | ५ | ४ | २ | ३३ |
| ९ ग्रैवेयकमां | १ | २ | २ | २ | ४ | ४ | ४ | २ | ५ | ४ | २ | ३२ |
| ५ अनुत्तर विमानमां | १ | २ | १ | १ | ४ | ० | ४ | २ | ५ | ४ | २ | २६ |
| पृथ्वी,पाणी,वनस्पति ए ३ दंडकमां | १ | ५ | २ | १ | ० | ३ | ४ | २ | ५ | २ | २ | २७ |
| तेउ,वाउ ए बे दंडकमां | १ | ४ | २ | १ | ० | ३ | ४ | २ | ५ | २ | २ | २६ |
| ३ विगलेंद्रियना ३ दंडकमां | १ | ४ | २ | २ | ३ | ३ | ४ | २ | ५ | ३ | २ | ३१ |
| तिर्यंच पंचेंद्रियना दंडकमां | १ | ७ | २ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ४ | २ | ४० |
| मनुष्यना दंडकमां | १ | ८ | २ | ३ | ६ | ४ | ५ | ५ | ६ | ५ | २ | ४७ |

॥१३३॥

हवे बंधीना ४ भांगा कहे छे ॥ बंधी, बंधइ, बंधिस्सइ–बांधतो हवो, बांधे छे, बांधशे १ ॥ बंधी, बंधइ, न बंधिस्सइ–बांधतो हवो, बांधे छे, बांधशे नहि २॥ बंधी, न बंधइ, बंधिस्सइ, बांधतो हवो, बांधतो नथी, बांधशे ३ ॥ बंधी, नबंधइ, नबंधिस्सइ–बांधतो हवो, बांधतो नथी, बांधशे नहि ४ ॥ ए बंधी त्रण काल आश्रि छे, तेमां प्रथम पापकर्म ( अशुभ कर्म ) बांधवा आश्रि २५ दंमकमां जे जे बोल लाभे तेमां कोण २ भांगा लाभे ते कहे छे ॥ समुच्चय जीवमां ४७ बोल लाभे, तेमां समुच्चय जीव १ ॥ सलेशी २ ॥ शुक्ललेशी ३ ॥ शुक्लपक्षी ४ ॥ समदृष्टि ५ ॥ सनाणी ६ ॥ मतिज्ञानीआदि ज्ञानी ४ ॥१०॥ नोसन्नावउत्ता ११ ॥ अवेदी १२ ॥ सकषायी १३ ॥ लोभ कषायी १४ ॥ सजोगी १५ ॥ मनजोगी १६ ॥ वचनजोगी १७ ॥ कायजोगी १८ ॥ सागारोवउत्ता १९ ॥ अणागारो वउत्ता २० ॥ ए २० बोलमां ४ भांगा लाभे ॥ अलेशी १ ॥ केवली २ ॥ अजोगी ३ ॥ ए ३ बोलमां एक चोथो भांगो लाभे ॥ अकषायीमां २ भांगा लाभे ॥ त्रीजो ने चोथो ॥ शेष बोल २३ रह्या, तेमां पहेलो ने बीजो ए २ भांगा लाभे ॥ नारकीथी मांमी मनुष्य वर्जि वैमानिक सुधी २३ दंमकमां

जे जे ठेकाणे जेटला जेटला बोल लाभे, तेमां पहेलो बीजो ए २ भांगा लाभे॥ मनुष्यमां समुच्चय जीवनी परे भांगा उतारवा ॥ हवे ज्ञानावरणीय १ ॥ दर्शनावरणीय २ ॥ नाम ३ ॥ गोत्र ४ ॥ अंतराय ५ ॥ ए ५ कर्मनो भेगो अधिकार कहे छे ॥ समुच्चय जीवमां ४७ बोल लाभे, तेमां समुच्चय जीव १ ॥ सलेशी २ ॥ शुक्ललेशी ३ ॥ शुक्लपक्षी ४ ॥ समकितदृष्टि ५ ॥ सनाणी ६ ॥ मत्यादि ४ ज्ञानी १० ॥ नोसन्नावउत्ता ११ ॥ अवेदी १२ ॥ सजोगी १३ ॥ त्रण जोगी १६ ॥ सागारोवउत्ता १७ ॥ अणागारो वउत्ता १८ ॥ ए १८ बोलमां ४ भांगा लाभे ॥ अलेशी १ ॥ अजोगी २ ॥ केवली ३ ॥ ए ३ मां एक चोथो भांगो लाभे ॥ अकषायीमां त्रीजो ने चोथो बे भांगा लाभे ॥ शेष बोल २५ रह्या, तेमां पहेलो ने बीजो भांगो लाभे ॥ हवे मनुष्य वर्जिने २३ दंडकना सर्व बोलमां पहेलो ने बीजो ए २ भांगा लाभे ॥ मनुष्यमां समुच्चय जीवनी परे भांगा उतारवा ॥ हवे वेदनीय कर्म बांधवा आश्रि कहे छे ॥ समुच्चय जीवमां ४७ बोल लाभे, तेमां समुच्चय जीव १ ॥ सलेशी २ ॥ शुक्ललेशी ३ ॥ शुक्लपक्षी ४ ॥ समकितदृष्टि ५ ॥ सनाणी ६ ॥ केवलज्ञानी ७ ॥ नोसन्ना-

वउत्ता ८ ॥ अवेदी ए ॥ अकषायी १० ॥ सागारोवउत्ता ११ ॥ अणागारोवउत्ता १२ ॥ ए १२ बोलमां ३ भांगा लाभे त्रिजो भांगो वर्जिने ॥ त्रिजो भांगो वेदनीय कर्मना बंध आश्रि मूलथी छे ज नहि ॥ अलेशी १ ॥ अजोगी २॥ ए २ मां १ चोथो भांगो लाभे ॥ शेष ३३ बोल रह्या, तेमां पहेलो ने बीजो बे भांगा लाभे ॥ नारकीथी माण्डी मनुष्य वर्जिने २३ दंडकमां पहेलो ने बीजो बे भांगा लाभे ॥ मनुष्यना दंडकमां समुच्चय जीवनी परे भांगा जाणवा ॥ मोहनीय कर्मनो विस्तार ओघिक अशुभ कर्मनी परे जाणवो ॥ हवे आयुष्य कर्म बांधवा आश्रि कहे छे ॥ समुच्चय जीवमां ४७ बोल लाभे, तेमां अलेशी १ ॥ केवली २ ॥ अजोगी ३ ॥ ए ३ मां एक चोथो भांगो लाभे ॥ समामिथ्यात्वदृष्टि १ ॥ अवेदी २ ॥ अकषायी ३ ॥ ए त्रणमां त्रीजो ने चोथो ए बे भांगा लाभे ॥ कृष्णपक्षीमां पहेलो ने त्रीजो ए २ भांगा लाभे ॥ मनःपर्यव ज्ञानी १ ॥ नोसन्नावउत्ता २ ॥ ए २ मां १-३-४ ए ३ भांगा लाभे ॥ शेष ३८ बोल रह्या तेमां चार भांगा लाभे ॥ नारकीमां कृष्ण पक्षी १ ॥ कृष्णलेशी २ ॥ ए २ मां पहेलो ने त्रीजो ए २ भांगा लाभे ॥ समामि-

थ्यात्व दृष्टिमां त्रीजो ने चोथो ए २ भांगा लाभे ॥ शेष ३२ मां ४ भांगा लाभे ॥ हवे दश भवनपति ॥ वाणव्यंतर ॥ ज्योतिषी ॥ वैमानिक ॥ १२ देवलोक ॥ ए ग्रैवेयकमां ॥ कृष्णपक्षीमां पहेलो ने त्रीजो ए २ भांगा लाभे ॥ समामिथ्यात्व दृष्टिमा त्रिजो ने चोथो ए २ भांगा लाभे, पण एटलुं विशेष जे ए ग्रैवेयकमां समामिथ्यात्व दृष्टि नथी ॥ शेष जेटला जेटला बोल जे जे ठेकाणे रह्या, तेमां ४ भांगा लाभे ॥ चार अनुत्तर विमानमां २६ बोल लाभे, तेमां ४ भांगा लाभे ॥ सर्वार्थसिद्धमां २–३–४ ए ३ भांगा लाभे ॥ पृथ्वी १ ॥ पाणी २ ॥ वनस्पतिमां २७ बोल लाभे तेमां कृष्णपक्षीमां १–३ ए २ भांगा लाभे, तेजुलेशीमां १ त्रिजो भांगो लाभे, शेष २५ बोलमां ४ भांगा लाभे ॥ तेउ वाउमां बोल २६ लाभे, तेमां पहेलो ने त्रिजो ए २ भांगा लाभे ॥ त्रण विगलेंद्रियमां बोल ३१ लाभे, तेमां समदृष्टि १॥ ज्ञान ३ ॥ ए ४ बोलमां एक त्रिजो भांगो लाभे, शेष २७ बोलमां १–३ ए २ भांगा लाभे ॥ तिर्यंच पंचेंद्रियमां बोल ४० लाभे, तेमां कृष्णपक्षीमां १–३ ए २ भांगा लाभे ॥ समामिथ्यात्वदृष्टिमां त्रिजो ने चोथो

ए २ भांगा लाभे ॥ समदृष्टि १ ॥ ज्ञान ४ ॥ ए ५ बोलमां १–३–४ ए ३ भांगा लाभे, शेष बोल ३२ मां ४ भांगा लाभे ॥ मनुष्यमां ४७ बोल लाभे ॥ तेमां अलेशी १ ॥ केवली २ ॥ अजोगी ३ ॥ ए ३ मां एक चोथो भांगो लाभे ॥ कृष्णपक्षीमां १–३ ए २ भांगा लाभे ॥ समामिथ्यात्वदृष्टि १ ॥ अवेदी २ ॥ अकषायी ३ ॥ ए ३ मां ३–४ ए २ भांगा लाभे ॥ समदृष्टि १ ॥ ज्ञान ५ ॥ नोसन्नावउत्ता ७ ॥ ए ७ बोलमां १–३–४ ए ३ भांगा लाभे ॥ शेष ३३ बोलमां ४ भांगा लाभे ॥ इति प्रथम ओधिक उद्देशः समाप्तः ॥ १ ॥ हवे अनंतरोववन्नगादि ४ उद्देशा कहे छे ॥ अनंतरोववन्नगा ते एक समय उपज्याने थयो होय ते १ ॥ अनंतरोगाढगा ते एक समय आकाश क्षेत्र स्पर्श्याने थयो होय ते २ ॥ अनंतरोहारगा ते एक समय आहार लीधाने जेने थयो होय ते ३ ॥ अणंतरपज्जत्तगा ते एक समय प्रजा बांध्याने जेने थयो होय ते ४ ॥ ए ४ उद्देशा ११ द्वार २५ दंडक ए अधिकारे करी बतावे छे ॥ पाप कर्म (अशुभ कर्म) बांधवा आश्रि समुच्चय जीवमां ४७ बोल लाभे, तेमांथी अलेशी १ ॥ समामिथ्यात्वदृष्टि २ ॥ मनःपर्यवज्ञान ३ ॥

केवलज्ञान ४ ॥ नोसन्नावउत्ता ५ ॥ अवेदी ६ ॥ अकषायी ७॥ मनजोगी ८ ॥ वचनजोगी
९ ॥ अजोगी १० ए १० बोल प्रथम समये न होय॥ शेष ३७ बोल राह्य, तेमां २ भांगा
लाभे, ते पहेलो ने बीजो ॥ नारकीथी मांडी १२ देवलोक सुधीमां जे जे ठेकाणे जेटला
जेटला बोल लाभे तेमांथी समामिथ्यात्वदृष्टि १ ॥ मनजोग २ ॥ वचनजोग ३ ॥ ए त्रण
त्रण बोल वर्जवा, शेष जेटला जेटला बोल रह्या तेमां पहेलो ने बीजो भांगो लाभे ॥ नव
ग्रैवेयक, पांच अनुत्तर विमानमां जेटला जेटला बोल लाभे, तेमांथी बे बे बोल वर्जवा ॥
मनजोग १ ॥ वचनजोग २ ॥ शेष जेटला २ बोल रह्या तेमां पहेलो ने बीजो भांगो लाभे ॥
पांच स्थावरमां जेटला बोल लाभे, तेमां बे भांगा लाभे ते पहेलो ने बीजो ॥ त्रण विगलें-
द्रियमांथी १ वचनजोग वर्ज्यो, शेष ३० बोल रह्या तेमां बे भांगा लाभे, पहेलो ने बीजो ॥
तिर्यंच पंचेंद्रियमांथी ५ बोल वर्ज्या ॥ समामिथ्यात्वदृष्टि १ ॥ विभंगज्ञान २ ॥ अवधि-
ज्ञान ३ ॥ मनजोग ४ ॥ वचनजोग ५ ॥ शेष ३५ बोल रह्या तेमां २ भांगा लाभे, पहेलो
ने बीजो ॥ मनुष्यमांथी ११ बोल वर्ज्या ॥ अलेशी १ ॥ समामिथ्यात्वदृष्टि २ ॥ विभंग-

ज्ञान ३ ॥ मनःपर्यवज्ञान ४ ॥ केवलज्ञान ५ ॥ नोसन्नावउत्ता ६ ॥ अवेदी ७ ॥ अक-
षायी ८ ॥ मनजोग ए ॥ वचनजोग १० ॥ अलेशी ११ ॥ शेष बोल ३६ रह्या तेमां २
नांगा लाने, पहेलो ने बीजो ॥ ए समुच्चय अशुनकर्म आश्रि कह्युं ॥ तेम ज्ञानावरणीय १ ॥ दर्श-
नावरणीय २ ॥ वेदनीय ३ ॥ मोहनीय ४ ॥ नाम ५ ॥ गोत्र ६ ॥ अंतराय ७ ॥ ए ७ कर्मनो विचार
ओघिकनी परे जाणवो ॥ हवे आयुष्यकर्म बांधवानो अधिकार कहे ठे ॥ मनुष्य वर्जि २३ दंमक-
मां जे जे बोल लाने ठे, ते ते सर्व बोलमां १ त्रिजो नांगो लाने ॥ मनुष्यमां कृष्णपक्षी एक
बोलमां त्रिजो नांगो लाने ॥ शेष ३५ बोलमां २ नांगा लाने ते त्रिजो ने चोथो ॥ ए
रीते अनंतरोववन्नगादि ४ उद्देशा जाणवा ॥ इति पांचमो उद्देशो समाप्तः ५ ॥ हवे परं-
परोववन्नगादि ४ उद्देशा कहे ठे ॥ परंपरोववन्नगा ते घणा समय उपने थया होय ते १ ॥
परंपरोगाढगा ते घणा समय आकाश क्षेत्र स्पर्श्याने थया होय ते २ ॥ परंपरोआहारगा
ते घणा समय आहार लीधाने थया होय ते ३ ॥ परंपरोपज्जत्तगा ते घणा समय प्रजा
बांध्याने थया होय ते ४ ॥ ए ४ उद्देशानां ११ द्वार, २५ दंमक, ए पापकर्मबंधन अधि-

कार सर्व व्यक्तवता प्रथम ओघिक उद्देशानी परे जाणवी ॥ नवरं पृथ्वी १ ॥ पाणी २ ॥ वनस्पति ३ ॥ ए ३ दंमकमां २६ बोल लाज्ने कहेवा ॥ एक तेजुलेश्या वर्जि, त्रण विगलेंद्रियमां २७ बोल लाज्ने कहेवा ॥ ते ३१ बोलमांथी समकितदृष्टि १ ॥ त्रण ज्ञान ४ ॥ ए ४ बोल वर्जवा ॥ ए ४ उद्देशा थया ॥ इति नवमो उद्देशो समाप्तः ॥ ए ॥ हवे दशमो चरमनो उद्देशो कहे ठे ॥ ए उद्देशाना ११ द्वार, २४ दंमक, ए पापकर्म बंधनाधिकार सर्व व्यक्तवता प्रथम ओघिक उद्देशानी परे जाणवी ॥ नवरं मनुष्यपदे आयुषनी अपेक्षाये सामान्यथी ४ नांगा कह्या ठे, तेमां चरम मनुष्य आश्रि चोथो नांगो संजवे ठे ॥ एम न मानीए तो चरमपणुं न संजवे ॥ एम बीजे पण विशेष जाणवुं ॥ इति दशमो चरम उद्देशो समाप्तः ॥ १० ॥ हवे ११ मो अचरमनो उद्देशो कहे ठे ॥ ए उद्देशाना, ए पापकर्मबंधननो अधिकार, २४ दंमक, ११ द्वारथी बतावे ठे ॥ पापकर्म मोहनीय कर्म बांधवा आश्रि समुच्चय जीवमां ४४ बोल लाज्ने, ते ४७ बोलमांथी अलेशी १ ॥ केवलज्ञानी २ ॥ अजोगी ३ ॥ ए ३ बोल वर्ज्या ॥ ए ३ ने ठेल्लो नव करवापणुं ठे माटे, ए ४४ बोलमां समु-

च्चय जीव १ ॥ सलेशी २ ॥ शुक्कलेशी ३ ॥ शुक्कपक्षी ४ ॥ समकिती ५ ॥ ज्ञान ५ ॥ ए १० ॥ नोसन्नावउत्ता ११ ॥ अवेदी १२ ॥ सकषायी १३ ॥ लोज कषायी १४ ॥ सजोगी १५ ॥ मनजोगी १६ ॥ वचनजोगी १७ ॥ कायजोगी १८ ॥ सागारोवउत्ता १९ ॥ अणागारोवउत्ता २० ॥ ए २० बोलमां १-२-३ ए ३ जांगा लाजे ॥ अकषायीमां एक त्रिजो जांगो लाजे ॥ शेष २३ बोल रह्या तेमां १-२ ए २ जांगा लाजे ॥ नारकीथी मांमी मनुष्य वर्जिने वैमानिकमां ठेठ ४ अनुत्तर विमान सुधीमां जे जे ठेकाणे जेटला जेटला बोल लाजे तेमां १-२ ए २ जांगा लाजे ॥ मनुष्यमां ४४ बोल लाजे, तेमां समुच्चय जीवनी परे जे जे बोलमां जे जे जांगा कह्या वे ते ते जांगा कहेवा ॥ हवे आयुष्य वर्जिने ज्ञानावरणीयादि ५ कर्म बांधवा आश्रि समुच्चय जीवमां ४४ बोल लाजे ॥ तेमांथी पूर्वे २० बोल वर्ज्या हता तेमांथी सकषायी १ ॥ लोज कषायी २ ॥ ए २ बोल वर्ज्या, शेष १८ बोल रह्या तेमां १-२-३ ए ३ जांगा लाजे ॥ अकषायीमां १ त्रिजो जांगो लाजे, शेष २५ बोल रह्या तेमां १-२ ए २ जांगा लाजे ॥ नारकीथी मांमी ४ अनुत्तर विमान सुधीमा १-२

ए २ भांगा लाभे ॥ मनुष्यमां समुच्चय जीवनी परे जाणवुं ॥ हवे वेदनीय कर्म आश्रि समुच्चय जीवथी मांडी ४ अनुत्तर विमान सुधीमां जे जे ठेकाणे जेटला जेटला बोल लाभे छे, तेमां १–२ ए बे भांगा लाभे ॥ हवे आयुष्य कर्म बांधवा आश्रि समुच्चय जीवमां ४४ बोल लाभे तेमांथी समामिथ्यात्व दृष्टि १ ॥ अवेदी २ ॥ अकषायी ३ ॥ ए ३ मां १ त्रिजो भांगो लाभे, शेष ४१ बोल रह्या तेमां १–३ ए बे भांगा लाभे ॥ नारकीथी मांडी पृथ्वी, पाणी, वनस्पति, ३ विगलेंद्रिय, तथा मनुष्य वर्जिने वैमानिकमां ४ अनुत्तर विमान सुधीमां जे जे ठेकाणे जेटला जेटला बोल लाभे, तेमांथी एक समामिथ्यात्व दृष्टिमां एक त्रीजो भांगो लाभे, शेष बोल रह्या तेमां १–३ ए बे भांगा लाभे ॥ पृथ्वी, पाणी, वनस्पतिमां २७ बोल लाभे, तेमांथी एक तेजुलेशीमां त्रिजो भांगो लाभे, शेष २६ बोल रह्या तेमां १–३ ए बे भांगा लाभे ॥ त्रण विगलेंद्रियमां ३१ बोल लाभे, तेमांथी समदृष्टि १ ॥ ज्ञान ३ ए ४ बोलमां एक त्रिजो भांगो लाभे ॥ शेष २७ बोल रह्या तेमां १–३ ए २ भांगा लाभे ॥ मनु-

ष्यमा जे जे बोलमां जे जे जागा लाजे, ते समुच्चय जीवना दंरुकनी परे उतारवा ॥ इति अगीयारमो अचरम उद्देशो समाप्त ॥ ११ ॥

इति बंधिशतकना बोल संपूर्ण ॥

## समवसरणना बोल ॥

अथ श्री जगवती श० ३० मांथी समवसरणना बोल लिख्यते ॥

गाथा ॥ जीवाय १ लेस्स २ पक्खि य ३, दिट्ठि य ४ नाण ५ अनाणे ६ ॥

सन्नाय ७ वेय ८ कसाय ए, जोगु १० वओगे ११ एगारस ठाणाइं ॥ १ ॥

ए ११ ठाणा, बोल ४७, दंरुक २४ अने समुच्चय १, ए दंरुक २५, उपर उतारवा, तेनो विचार कहे छे ॥

| २५ दंडकना नांम | जीव १ | लेश्या ८ | पक्ष २ | दृष्टि ३ | ज्ञान ६ | अज्ञान ४ | संज्ञा ५ | वेद ५ | कषाय ६ | जोग ५ | उपयोग २ | सर्व ४७ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| समुच्चय जीवमां | १ | ८ | २ | ३ | ६ | ४ | ५ | ५ | ६ | ५ | २ | ४७ |
| ७ नारकीमां | १ | ४ | २ | ३ | ४ | ४ | ४ | २ | ५ | ४ | २ | ३५ |
| १० भवनपति,१६वाणव्यंतरमां | १ | ५ | २ | ३ | ४ | ४ | ४ | ३ | ५ | ४ | २ | ३७ |
| ज्योतिषीथी,पहेला २देवलोकसुधी | १ | २ | २ | ३ | ४ | ४ | ४ | ३ | ५ | ४ | २ | ३४ |
| ३ जाथी १२ देवलोक सुधी | १ | २ | २ | ३ | ४ | ४ | ४ | २ | ५ | ४ | २ | ३३ |
| ९ ग्रैवेयकमां | १ | २ | २ | २ | ४ | ४ | ४ | २ | ५ | ४ | २ | ३२ |
| ५ अनुत्तर विमानमां | १ | २ | १ | १ | ४ | ० | ४ | २ | ५ | ४ | २ | २६ |
| पृथ्वी, पाणी, वनस्पतिमां | १ | ५ | २ | १ | ० | ३ | ४ | २ | ५ | २ | २ | २७ |
| तेउ वाउमां | १ | ४ | २ | १ | ० | ३ | ४ | २ | ५ | २ | २ | २६ |
| ३ विगलेंद्रियमां | १ | ४ | २ | २ | ३ | ३ | ४ | २ | ५ | ३ | २ | ३१ |
| तिर्यंच पंचेंद्रियमां | १ | ७ | २ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ४ | २ | ४० |
| मनुष्यमां | १ | ८ | २ | ३ | ६ | ४ | ५ | ५ | ६ | ५ | २ | ४७ |

हवे समवसरण ४ ॥ क्रियावादी १ ॥ अक्रियावादी २ ॥ अज्ञानवादी ३ ॥ विनयवादी ४ ॥ ए ४ समवसरण उपर ४७ बोल उतारवा ॥ समुच्चय जीवमां बोल ४७ लाभे तेमां कृष्णपक्षी १ ॥ मिथ्यादृष्टि २ ॥ अज्ञान ४ ॥ ए ७ बोलमां क्रियावादी वर्जिने ३ समवसरण लाभे, अने अलेशी १ ॥ समदृष्टि २ ॥ ज्ञान ६ ॥ एवं ८ ॥ नोसन्नाउवउत्ता ए ॥ अवेदी ॥ १० ॥ अकषायी ११ ॥ अजोगी १२ ॥ ए १२ बोलमां समवसरण १ क्रियावादीनुं लाभे ॥ समामिथ्यात्व दृष्टिमां समवसरण २ लाभे ते अज्ञानवादी १ ॥ विनयवादी २ ॥ शेष बोल २७ मां समवसरण ४ लाभे ॥ ए पहेलुं समुच्चयनुं द्वार थयुं ॥ १ ॥ हवे नारकीमां ३५ बोल लाभे तेमां कृष्णपक्षी १ ॥ मिथ्यादृष्टि २ ॥ अज्ञान ४ ॥ ए ६ बोलमां क्रियावादी वर्जिने ३ समवसरण लाभे ॥ समदृष्टि १ ॥ ज्ञान ४ ॥ ए ५ बोलमां समवसरण एक क्रियावादीनुं लाभे ॥ समामिथ्यात्व दृष्टिमां समवसरण २ लाभे ते अज्ञानवादी १ ॥ विनयवादी २ ॥ शेष बोल २३ रह्या तेमां समवसरण ४ लाभे ॥ ए नारकीनुं बीजुं द्वार थयुं ॥ २ ॥ हवे भवनपति वाणव्यंतरमां ३७ बोल लाभे तेमां कृष्णपक्षी १ ॥ मिथ्यात्व

दृष्टि २ ॥ अज्ञान ४ ॥ ए ६ बोलमां क्रियावादी वर्जिने ३ समवसरण लाभे ॥ समदृष्टि १ ॥ ज्ञान ४ ॥ ए ५ बोलमां १ क्रियावादीनुं समवसरण लाभे ॥ समामिथ्यात्व दृष्टिमां समवसरण बे लाभे ते अज्ञानवादी १ ॥ विनयवादी २ ॥ शेष २५ बोलमां समवसरण ४ लाभे ॥ ए भवनपति वाणव्यंतरनुं त्रीजुं द्वार थयुं ॥ ३ ॥ हवे ज्योतिषीने प्रथम २ देवलोकमां ३४ बोल लाभे तेमां पूर्वोक्त ६ बोलमां समवसरण ३ लाभे ॥ पूर्वोक्त ५ बोलमां समवसरण १ लाभे ॥ समामिथ्यादृष्टिमां अज्ञानवादी १ ॥ विनयवादी २ ॥ ए बे समवसरण लाभे ॥ शेष बोल २२ मां समवसरण ४ लाभे ॥ ए ज्योतिषीनुं चोथुं द्वार थयुं ॥ हवे त्रिजा देवलोकथी बारमा देवलोकसुधीमां ३३ बोल लाभे तेमां पूर्वोक्त ६ बोलमां तथा ५ बोलमा तथा समामिथ्यादृष्टिमां पूर्ववत् समवसरण लाभे ते उतारवा ने शेष २१ बोलमां ४ समवसरण लाभे ॥ ए ५ मुं द्वार थयुं ॥ हवे ए ग्रैवेयकमां ३२ बोल लाभे तेमां पूर्वोक्त ६ बोलमा तथा ५ बोलमां पूर्ववत् समवसरण लाभे ते उतारवा ॥ शेष २१ बोल रह्या तेमां ४ समवसरण लाभे ॥ ए ६ हुं द्वार थयुं ॥ ६ ॥ हवे ५ अनुत्तर विमानमां २६

बोल लाभे तेमां समवसरण एक क्रियावादीनुं लाभे ॥ ए ७ मुं द्वार थयुं ॥ ७ ॥ हवे पृथ्वी पाणी वनस्पति ए ३ मां २७ बोल लाभे ते सर्वमां बे समवसरण लाभे ते अक्रियावादी १ ॥ अज्ञानवादी २ ॥ ए ८ मुं द्वार थयुं ॥ ८ ॥ हवे तेउ १ वाउ २ ए बेमां २६ बोल लाभे ते सर्वमां बे समवसरण लाभे ते पूर्ववत् ॥ ए ए मुं द्वार थयुं ॥ हवे त्रण विगलेंद्रियमां ३१ बोल लाभे ते सर्वमां २ समवसरण लाभे ते पूर्ववत् ॥ ए १० मुं द्वार थयुं ॥ १० ॥ हवे तिर्यंच पंचेंद्रियमां ४० बोल लाभे तेमां ६ बोलमां ३ समवसरण लाभे ते पूर्ववत् ॥ समदृष्टि १ ॥ ज्ञान ४ ॥ ए ५ बोलमां समवसरण १ क्रियावादीनुं लाभे ॥ समामिथ्यात्वदृष्टिमां समवसरण २ लाभे ते पूर्ववत् ॥ शेष २८ बोल रह्या तेमां समवसरण ४ लाभे ॥ ए ११ मुं द्वार थयुं ॥ हवे मनुष्य पंचेंद्रियमां ४७ बोल लाभे तेमा पूर्वोक्त ६ बोलमां ३ समवसरण लाभे पूर्ववत् ॥ अलेशी १ ॥ समदृष्टि २ ॥ ज्ञान ६, ए ८ ॥ नोसन्नावउत्ता ए ॥ अवेदी १० ॥ अकषायी ११ ॥ अजोगी १२ ॥ ए १२ बोलमां समवसरण क्रियावादीनुं लाभे ॥ समामिथ्यादृष्टिमां समवसरण २ लाभे ते पूर्ववत् ॥ शेष बोल २८ रह्या

 

तेमां समवसरण ४ लाभे ॥ ए १२ मुं द्वार थयुं ॥ हवे आयुष्यना बंध आश्रि कहे छे ॥ समुच्चय जीवमां ४७ बोल लाभे तेमां कृष्णपक्षी १ ॥ मिथ्यादृष्टि २ ॥ अज्ञान ४ ॥ ए ६ बोलमां समवसरण ३ लाभे ॥ ते ४ गतिनुं आयुष्य वांधे ॥ अलेशी १॥ अकषायी २ ॥ समामिथ्यादृष्टि ३ ॥ केवलनाणी ४ ॥ अवेदी ५ ॥ अजोगी ६ ॥ ए ७ बोलवाळा आयुष्य बाधे नहि ॥ समदृष्टि १ ॥ ज्ञान ४ ॥ ए ५ बोलवाळा वे गतिनुं आयुष्य बांधे ते मनुष्य ने देवनुं ॥ मनःपर्यवज्ञानी १ ॥ नोसन्नावउत्ता २ ॥ ए २ बोलवाळा १ देवगतिनुं आयुष्य बांधे ॥ कृष्ण १ ॥ नील २ ॥ कापोत ३ ॥ ए ३ लेश्यामां समवसरण ४ लाभे तेमां क्रियावादी एक मनुष्य गतिनुं आयुष्य बांधे ने शेष ३ समवसरणवाळा ४ गतिनुं आयुष्य बांधे ॥ तेजु १ ॥ पद्म २ ॥ शुक्ल ३ ॥ ए ३ लेशीमां समवसरण ४ लाभे ॥ तेमां क्रियावादी मनुष्य ने देव ए बे गतिनुं आयुष्य वांधे ॥ शेष ३ समवसरणवाळा एक नारकी वर्जिने त्रण गतिनुं आयुष्य बांधे ॥ शेष २२ बोल रह्या तेमां समवसरण ४ लाभे तेमां क्रियावादी मनुष्य ने देव ए बे गतिनुं आयुष्य बांधे अने नारकी देवता क्रियावादी होय ते मनुष्यनुं आयुष्य बांधे ॥ शेष

३ समवसरणवाळा ४ गतिनुं आयुष्य बांधे ॥ हवे नारकी भवनपति वाणव्यंतर ज्योतिषी तथा पहेला देवलोकथी मांडी आठमा देवलोक सुधीमां जे जे ठेकाणे जेटला जेटला बोल लाभे तेमां कृष्णपक्षी १ ॥ मिथ्यादृष्टि २ ॥ अज्ञान ४ ॥ ए ६ बोलना होय ते, मनुष्य ने तिर्यंच ए २ गतिनुं आयुष्य बांधे ॥ समदृष्टि १ ॥ ज्ञान ४ ॥ ए ५ बोलना होय ते १ मनुष्य गतिनुं आयुष्य बांधे ॥ समामिथ्यादृष्टिवाळा आयुष्यना अबंधक, शेष बोल जेमां जेटला जेटला लाभे ते तेमां क्रियावादी एक मनुष्यगतिनुं आयुष्य बांधे ॥ शेष ३ समवसरणवाळा मनुष्य ने तिर्यंच ए बे गतिनुं आयुष्य बांधे ॥ नवमा देवलोकथी मांडी सर्वार्थसिद्ध सुधीमां जे जे ठेकाणे जेटला जेटला बोल लाभे ते ते सर्व समवसरणवाळा एक मनुष्यगतिनुं आयुष्य बांधे ॥ समामिथ्यात्वदृष्टिवाळा आयुष्यना अबंधक जाणवा ॥ ए ७ द्वार थयां ॥ ७ ॥ हवे पृथ्वी १ ॥ पाणी २ ॥ वनस्पति ३ ॥ ए ३ मां २७ बोल लाभे ते तेमां एक तेजुलेशी आयुष्यना अबंधक, शेष २६ बोलवाळा मनुष्य १ ॥ तिर्यंच २ ॥ ए बे गतिनुं आयुष्य बांधे ॥ ए ८ मुं द्वार थयुं ॥ ८ ॥ हवे तेउ १ ॥ वाउ २ ॥ ए बेमां

२६ बोल लाभे ते सर्वे १ तिर्यंच गतिनुं आयुष्य बांधे ॥ ए ए मुं द्वार थयुं ॥ ए ॥ हवे त्रण विगलेंद्रियमां ३१ बोल लाभे तेमां समकितदृष्टि १ ॥ ज्ञान ३ ॥ ए ४ बोलवाळा आयुष्य न बांधे, शेष २७ बोलवाळा मनुष्य १ ॥ तिर्यंच २ ॥ ए बे गतिनुं आयुष्य बांधे ॥ ए १० मुं द्वार थयुं ॥ १० ॥ हवे तिर्यंच पंचेंद्रियमांहि ४० बोल लाभे तेमां कृष्णपक्षी १ ॥ मिथ्यादृष्टि २ ॥ अज्ञान ४ ॥ ए ६ बोलवाळा ४ गतिनुं आयुष्य बांधे ॥ समदृष्टि १ ॥ ज्ञान ४ ॥ ए ५ बोलवाळा १ देवगतिनुं आयुष्य बांधे ॥ समःमिथ्यात्वदृष्टि आयुष्य न बांधे ॥ शेष २७ बोल रह्या तेमां कृष्ण १ ॥ नील २ ॥ कापोत ३ ॥ ए त्रण लेश्यामां समवसरण ४ लाभे, तेमां जे क्रियावादी होय ते आयुष्य न बांधे ॥ शेष ३ समवसरणवाळा ४ गतिनुं आयुष्य बांधे ॥ तेजु १ ॥ पद्म २ ॥ शुक्ल ३ ॥ ए त्रण लेश्यामां समवसरण ४ लाभे, तेमां जे क्रियावादी ते १ देवगतिनुं आयुष्य बांधे ॥ शेष ३ समवसरणवाळा १ नारकीनुं आयुष्य वर्जिने ३ गतिनुं आयुष्य बांधे ॥ ए ११ मुं द्वार थयुं ॥ हवे मनुष्यमां ४७ बोल लाभे तेमां जे जे बोल आयुष्य बांधे न बांधे तेनो वर्णव समुच्चय जीवना आयुष्य

बांधवाना द्वारनी परे जाणवो ॥ नवरं समुच्चय जीवमां ए बोलमां मनुष्य अने देवतानुं आयुष्य बांधे ते ठेकाणे मनुष्य देवगति वैमानिकनुं आयुष्य बांधे ॥ ए १२ मुं द्वार थयुं ॥ हवे जव्य अजव्यनुं द्वार कहे बे ॥ समुच्चय जीवमां ४७ बोल लाजे तेमां कृष्णपक्षी १ ॥ मिथ्यादृष्टि २ ॥ अज्ञान ४ ए ६ बोलमां जव्य अजव्य बे होय ॥ अलेशी १ ॥ शुक्लपक्षी २ ॥ समदृष्टि ३ ॥ समामिथ्यादृष्टि ४ ॥ ज्ञान ६ ॥ एवं १० ॥ नोसन्नावउत्ता ११ ॥ अवेदी १२ ॥ अकषायी १३ ॥ अजोगी १४ ॥ ए १४ बोलमां एकला जव्य होय ॥ शेष ३७ बोल रह्या तेमां जे क्रियावादी होय ते जव्य ज होय ॥ शेष ३ समवसरणवाळामां जव्य अजव्य बे होय ॥ नारकीथी मांमी १२ देवलोक सुधीमां कृष्णपक्षी १ ॥ मिथ्यादृष्टि २ ॥ अज्ञान ४ ॥ ए ६ बोलमां जव्य अजव्य बे होय ॥ समदृष्टि १ ॥ शुक्लपक्षी २ ॥ समामिथ्यादृष्टि ३ ॥ ज्ञान ४ ॥ एवं ७ बोलमां एकला जव्य ज होय ॥ शेष बोल जे जे ठेकाणे जेटला जेटला लाजे बे तेमां समवसरण ४ लाजे, तेमां जे क्रियावादी ते निश्चये ज जव्य होय ॥ शेष ३ समवसरणवाळामां जव्य अजव्य बे होय ॥ नव ग्रैवेयकमां ३२ बोल

लाभे तेमां शुक्लपक्षी १ ॥ समदृष्टि २ ॥ ज्ञान ४ ॥ ए ६ बोलमां निश्चय भव्य होय ॥ मिथ्यादृष्टि १ ॥ कृष्णपक्षी २ ॥ अज्ञान ४ ॥ ए ६ बोलमां भव्य अभव्य बे होय ॥ शेष २० बोल रह्या तेमां समवसरण ४ लाभे, तेमां जे क्रियावादी ते निश्चये भव्य होय ॥ शेष ३ समवसरणवाळा ते भव्य अभव्य बे होय ॥ पांच अनुत्तर विमानमां २६ बोल लाभे ते सर्वे निश्चय भव्य होय ॥ पांच स्थावरमां शुक्लपक्षी एकला भव्य होय ॥ शेष २६ बोलमां भव्य अभव्य बे होय ॥ ३ विगलेंद्रियमां शुक्लपक्षी १ सम्यक्दृष्टि २ ज्ञान ३ ए ५ बोलमां एकला भव्य होय ॥ शेष २६ बोलमां भव्य अभव्य बे होय ॥ तिर्यंच पंचेंद्रियमां कृष्णपक्षी १ ॥ मिथ्यादृष्टि २ ॥ अज्ञान ४ ॥ ए ६ बोलमां भव्य अभव्य बे होय ॥ समदृष्टि १ ॥ समामिथ्यादृष्टि २ ॥ शुक्लपक्षी ३ ॥ ज्ञान ४ ॥ ए ७ बोलमां एकेला भव्य होय ॥ शेष २७ बोल रह्या तेमां समवसरण ४ लाभे, तेमां क्रियावादी एकला भव्य होय ॥ शेष ३ समवसरणवाळा तो भव्य अभव्य बे होय ॥ ११ ॥ हवे मनुष्यमां ४७ बोल लाभे तेमां जेटला जेटला बोलमां भव्य अभव्यपणुं जे जे ठेकाणे लाभे तेनो वर्णव समुच्चय जीवनी परे जा-

णवो ॥ ए १२ मुं द्वार थयुं ॥ इति समुच्चयनो प्रथम उद्देशो संपूर्ण ॥ १ ॥ हवे प्रथम समय उपन्या आश्रिना ४ उद्देशा कहे छे ॥ अणंतरोववणगा ते आंतरारहित प्रथम समयना उपन्या १ ॥ अणंतरोगाढगा ते प्रथम समये जे क्षेत्र अवगाह्याते २ ॥ अणंतर आहारगा ते प्रथम समय आहार लीधाने थयो होय ३ ॥ अणंतरपज्जत्तगा ते एक समय प्रजा बांध्याने थयो होय ४ ॥ ए ४ प्रथम समयना होय तेने अणंतर कहीए ॥ हवे २५ दंमक १२ द्वार उपर उतारवा; तेमां समुच्चय जीवमां ४७ बोल लाभे तेमांथी १० बोल वर्जवा ते अलेशी १ ॥ समामिथ्यादृष्टि २ ॥ मनःपर्यव ज्ञानी ३ ॥ केवलज्ञानी ४ ॥ नोसन्नावउत्ता ५ ॥ अवेदी ६ ॥ अकषायी ७ ॥ मनजोगी ८ ॥ वचनजोगी ए ॥ अजोगी १० ॥ ए १० बोल वर्जिने शेष ३७ बोल अनंतर ४ द्वारमां लाभे ॥ १ ॥ नारकी आदि देइ बारमा देवलोक सुधी जे जे ठेकाणे जेटला जेटला समुच्चय बोल लाभे छ तेमांथी समामिथ्यात्वदृष्टि १ ॥ मनजोग २ ॥ वचनजोग ३ ॥ ए त्रण त्रण बोल वर्जवा केमके ए ३ बोल उपजतां प्रथम समये न होय ॥ नव ग्रैवेयक तथा पांच अनुत्तर विमानमां समुच्चय

बोल जेटला जेटला लाभे छे तेमांथी मनजोग १ ॥ वचनजोग २ ॥ ए वे बोल वर्जवा ॥ पांच स्थावरमांथी एके बोल वर्जवो नहि ॥ त्रण विगलेंद्रियमांथी १ वचनजोग वर्जवो ॥ तिर्यंच पंचेंद्रियमां ४० बोल लाभे छे तेमांथी समामिथ्यादृष्टि १ ॥ अवधिज्ञान २ ॥ विभंगज्ञान ३ ॥ मनजोग ४ ॥ वचनजोग ५ ॥ ए ५ बोल वर्जवा ॥ मनुष्यमां ४७ बोल लाभे छे तेमांथी ११ बोल वर्जवा ॥ अलेशी १ ॥ समामिथ्यादृष्टि २ ॥ मनःपर्यवज्ञान ३ ॥ केवलज्ञान ४ ॥ नोसन्नावउत्ता ५ ॥ अवेदी ६ ॥ अकषायी ७ ॥ मनजोग ८ ॥ वचनजोग ९ ॥ विभंगज्ञान १० ॥ अजोगी ११ ॥ ए ११ वोल वर्जवा ॥ हवे अनंतर ४ बोलमांहि जे जे ठेकाणे जेटला जेटला बोल लाभे छे तेमां समवसरण उतारवा ते समुच्चय प्रथम उद्देशामां उतार्यानी परे जाणवा ॥ अनंतर ४ बोलमांहि जेटला जेटला बोल लाभे तेटला आयुष्यना अबंधकना जाणवा ॥ अनंतर ४ बोलमांहि भव्य अभव्यपणानो वर्णव समुच्चय उद्देशानी परे करवो ॥ ए ४ उद्देशा थया ॥ इति पांच उद्देशा संपूर्ण ॥ ५ ॥ हवे परंपरोववन्नगादि ४ उद्देशा कहे छे ॥ परंपरोववन्नगा ते घणा समय उपज्याने जेने थया

होय ते १ ॥ परंपरोगाढगा ते घणा समय क्षेत्र अवगाह्याने जेने थया होय ते ॥ परंपराहारगा ते घणा समय आहार लीधा जेने थया होय ते ३ ॥ परंपरपज्जत्तगा ते घणा समय प्रजा बांध्याने जेने थया होय ते ४ ॥ परंपर उद्देशे समवसरण उतारवा ॥ आयुष्य बांधवानो भव्य अभव्यपणुं उतारवानो वर्णव समुच्चय उद्देशानी परे जाणवो ॥ तेमां एटलो फेर जे पृथ्वी १ ॥ पाणी २ ॥ वनस्पति ३ ॥ ए ३ मां तजु लेश्या कहेवी नहि ॥ ३ विगलेंद्रियमां समकित १ ॥ ज्ञान ३ ॥ ए ४ बोल वर्जवा, शेष तेमज ॥ ए ४ उद्देशा थया ॥ इति नव उद्देशा समाप्त ॥ ए ॥ हवे चरम अचरमना बे उद्देशा कहे छे ॥ तेमां चरमनो उद्देशो समुच्चय उद्देशानी परे उतारवो ॥ अचरमने उद्देशे सर्वार्थसिद्ध वर्जिने तथा मनुष्यमां अलेशी १ ॥ केवलज्ञानी २॥ अजोगी ३ ॥ ए ३ बोल वर्जिने ॥ बीजो सर्व अधिकार समुच्चय उद्देशानी परे जाणवो ॥ ए २ उद्देशा थया ॥ इति ११ उद्देशा थया ॥

इति समवसरणना बोल संपूर्ण ॥

# लद्धिना बोल ॥

अथ श्री लद्धिना बोल ज्ञगवती सूत्र शतक ७ मा ना उद्देशा बीजाथी लख्या छे ॥ ५ ज्ञानना ज्ञेद नंदीसूत्रथी जाणवा एटले पूर्वे ज्ञान तथा अज्ञान कह्या ॥ हवे ज्ञानी तथा अज्ञानी कहे छे ॥ 'जीवाणं ज्ञंते किंनाणी अन्नाणी' इत्यादि २१ द्वारे करी वर्णवीशुं ॥

गाथा ॥ जीव १ गइ २ इंदिय ३ काए ४ । सुहुम ५ पज्जत्ति ६ ज्ञवत्थे य ७ ॥
ज्ञवसिद्धिए य ७ सन्नि ए । लद्धि १० उवओग ११ जोगे य १२ ॥ १ ॥
लेस्सा १३ कसाय १४ वेए १५ । आहारे १६ नाणगोयरे १७ ॥
काले १७ अंतर १ए अप्पाबहुयं २० । पज्जवा २१ चेव दाराइं ॥ २ ॥

हवे प्रथम जीवद्वार कहे छे ॥ २६ ॥

१ समुच्चय जीवमां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी ज्ञजना ॥ २ नारकीमां पहेली नारकीमां ३ ज्ञाननी नियमा, अज्ञान ३ नी ज्ञजना, शेष ६ नारकीमां त्रण ज्ञान त्रण अज्ञाननी ॥१४५॥

नियमा ॥ १९ दश भवनपतिमां ३ ज्ञाननी नियमा, अज्ञान ३ नी भजना ॥ १७ पांच स्थावरमां २ अज्ञाननी नियमा ॥ २० त्रण विगलेंद्रिय असंज्ञी तिर्यंच पंचेंद्रियमां २ ज्ञान, २ अज्ञाननी नियमा ॥ २१ संज्ञी तिर्यंच पंचेंद्रियमां ३ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ २२ सन्नि मनुष्यमां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना, असंज्ञी मनुष्यमां २ अज्ञाननी नियमा ॥ २३ वाणव्यंतरमां ३ ज्ञाननी नियमा, अज्ञान ३ नी भजना ॥ २५ ज्योतिषीथी मांमी नव ग्रैवेयकसुधीमां ३ ज्ञान, ३ अज्ञाननी नियमा ॥ पांच अनुत्तर विमानमां त्रण ज्ञाननी नियमा, अज्ञान नथी ॥ २६ सिद्धमां १ केवलज्ञाननी नियमा ॥

हवे बीजुं गतिद्वार कहे छे ॥ ५-३१ ॥

१ नरकगतिमां ३ ज्ञाननी नियमा, ३ अज्ञाननी भजना ॥ २ तिर्यंचगतिमां २ ज्ञान, २ अज्ञाननी नियमा ॥ ३ मनुष्यगतिमां ३ ज्ञाननी भजना, अज्ञान २ नी नियमा ॥ ४ देवगतिमां ३ ज्ञाननी नियमा, ३ अज्ञाननी भजना ॥ ५ सिद्धगतिमां १ केवलज्ञाननी नियमा ॥

हवे त्रिजुं इंद्रियद्वार कहे छे ॥ ७-३८ ॥

१ सइंदियामां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ २ एकेंद्रियमां २ अज्ञाननी नियमा—मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान ॥ ५ त्रण विगलेंद्रियमां २ ज्ञान, २ अज्ञाननी नियमा ॥ ६ पंचेंद्रियमां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ ७ अणिंदियामां १ केवलज्ञाननी नियमा ॥

हवे चोथुं कायद्वार कहे छे ॥ ८—४६ ॥

१ सकाइयामां पांच ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ ६ पांच स्थावरमां २ अज्ञाननी नियमा ॥ ७ त्रसकाइयामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ ८ अकाइयामां १ केवलज्ञाननी नियमा ॥

हवे पांचमुं सूक्ष्मद्वार कहे छे ॥ ३—४९ ॥

१ सूक्ष्ममां २ अज्ञाननी नियमा ॥ २ बादरमां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ ३ नोसूक्ष्मनोबादरमां १ केवलज्ञाननी नियमा ॥

हवे छठुं पर्याप्तिद्वार कहे छे ॥ ५१—१०० ॥

१ समुच्चय प्रजाप्तामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ २ नारकी प्रजाप्तामां ३ ज्ञान,

३ अज्ञाननी नियमा ॥ १२ दस जवनपति प्रजाप्तामां ३ ज्ञान, ३ अज्ञाननी नियमा॥ २०
५ स्थावर ने ३ विगलेंद्रिय, असंज्ञी तिर्यंचना प्रजाप्तामां २ अज्ञाननी नियमा ॥ २१ तिर्यंच
पंचेंद्रिय प्रजाप्तामां ३ ज्ञान, ३ अज्ञाननी जजना ॥ २२ मनुष्य प्रजाप्तामां ५ ज्ञान, ३ अ-
ज्ञाननी जजना ॥ २५ वाणव्यंतर ज्योतिषीथी मांमी नव ग्रैवेयकसुधीना प्रजाप्तामां ३ ज्ञान,
३ अज्ञाननी नियमा ॥ पांच अनुत्तर विमानना पर्याप्तामां त्रण ज्ञाननी नियमा ॥ ६ समु-
च्चय अप्रजाप्तामां ३ ज्ञान, ने ३ अज्ञाननी जजना ॥ २७ पेहेली नारकीना अप्रजाप्तामां ३
ज्ञाननी नियमा, ३ अज्ञाननी जजना ॥ पांच नारकीना अपर्याप्तामां त्रण ज्ञान, त्रण अ-
ज्ञाननी नियमा ॥ सातमीना अपर्याप्तामां त्रण अज्ञाननी नियमा, नाण नथी ॥ ३७ दस जवन-
पति अप्रजाप्तामां ३ ज्ञाननी नियमा, ३ अज्ञाननी जजना ॥ ४२ पांच स्थावर ने असंज्ञी
मनुष्यना अप्रजाप्तामां २ अज्ञाननी नियमा ॥ ४५ विगलेंद्रियने असंज्ञी तिर्यंच पंचेंद्रि-
यना अप्रजाप्तामां २ ज्ञान, २ अज्ञाननी नियमा ॥ ४६ तिर्यंच पंचेंद्रिय प्रजाप्तामां २ ज्ञान,
२ अज्ञाननी नियमा ॥ ४७ मनुष्य अप्रजाप्तामां ३ ज्ञाननी जजना, २ अज्ञाननी नियमा ॥

४७ वाणव्यंतर अप्रजाप्तामा ३ ज्ञानननी नियमा, ३ अज्ञानननी नजना ॥ ५० ज्योतिषीथी मांकी नव ग्रैवेयकसुधीना अप्रजाप्तामां ३ ज्ञान, ३ अज्ञानननी नियमा ॥ पांच अनुत्तर विमानना अपर्याप्तामां त्रण ज्ञानननी नियमा, अज्ञान नथी ॥ ५१ नोप्रजाप्तानोअप्रजाप्तामां १ केवलज्ञानननी नियमा ॥

हवे ७ मुं नवस्थद्धार कहे ठे ॥ ५–१०५ ॥

१ नारकी नवस्थामां ३ ज्ञानननी नियमा, ३ अज्ञानननी नजना ॥ २ तिर्यंच नवस्थामां ३ ज्ञान, ३ अज्ञानननी नजना ॥ ३ मनुष्य नवस्थामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञानननी नजना ॥ ४ देव नवस्थामां ३ ज्ञानननी नियमा, ३ अज्ञानननी नजना ॥ ५ अनवस्थामां १ केवलज्ञानननी नियमा ॥

हवे ७ मुं नवसिद्धिकद्धार कहे ठे ॥ ३–१०७ ॥

१ नवसिद्धियामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञानननी नजना ॥ २ अनवसिद्धियामां ३ अज्ञानननी नजना ॥ ३ नोनवसिद्धियानोअनवसिद्धियामां १ केवलज्ञानननी नियमा ॥

हवे ९ मुं संज्ञीद्वार कहे छे ॥ ३–१११ ॥

१ संज्ञीमां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ २ असंज्ञीमां २ ज्ञान, २ अज्ञाननी नियमा ॥ ३ नोसंज्ञीनोअसंज्ञीमां १ केवलज्ञाननी नियमा ॥

हवे १० मुं लब्धिद्वार कहे छे ॥ ७०–१८१ ॥

गाथा ॥ नाणति चरित्ता चरित्ते । दाणाइं पंच लद्धिय ॥
इंदिय लद्धि दसमा । एयासिं सत्तरि भेदाय ॥ १ ॥

अर्थ–ज्ञानादि ३, ज्ञानलद्धि १, दंसण लद्धि २, चारित्र लद्धि ३, चरित्ताचरित्त लद्धि १, दानादि ५, इंदिय लद्धि ५, ए १० द्वारे करी ७० बोल वर्णवे छे ॥

प्रथम ज्ञानद्वार–बोल २० ॥

१ नाण लद्धियामां ५ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ॥ २ तस्स अलद्धियामां ३ अज्ञाननी भजना, ज्ञान नथी ॥ ३ मतिज्ञान लद्धियामां ४ ज्ञाननी भजना, ज्ञानमां अज्ञान होय नहि ॥ ४ तस्स अलद्धियामां १ केवलज्ञाननी नियमा, ३ अज्ञाननी भजना ॥

 

५ श्रुत ज्ञान लब्धियामां ४ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ॥ ६ तस्स अलब्धियामां १ केवलज्ञाननी नियमा, ३ अज्ञाननी भजना ॥ ७ अवधिज्ञान लब्धियामां ४ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ॥ ८ तस्स अलब्धियामां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ ९ मनःपर्यव लब्धियामां ४ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ॥ १० तस्स अलब्धियामां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ ११ केवलज्ञान लब्धियामां १ केवलज्ञाननी नियमा, अज्ञान नथी ॥ १२ तस्स अलब्धियामां ४ ज्ञान, ने ३ अज्ञाननी भजना ॥ १३ अज्ञान लब्धियामां ३ अज्ञाननी भजना, ज्ञान नथी ॥ १४ तस्स अलब्धियामां ५ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी॥ १५ मति अज्ञान लब्धियामां ३ अज्ञाननी भजना, ज्ञान नथी ॥ १६ तस्स अलब्धियामां ५ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ॥ १७ श्रुत अज्ञान लब्धियामां ३ अज्ञाननी भजना, ज्ञान नथी ॥ १८ तस्स अलब्धियामां ५ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ॥ १९ विभंग ज्ञान लब्धियामां ३ अज्ञाननी नियमा, ज्ञान नथी ॥ २० तस्स अलब्धियामां ५ ज्ञाननी भजना, २ अज्ञाननी नियमा ॥

## बीजुं दर्शनद्वार-बोल ८ ॥

२१ दंसण लद्धियामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना १ ॥ २२ तस्स अलद्धियामां नत्थि कोइ जीवो २ ॥ २३ समदंसण लद्धियामां ५ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ३ ॥ तस्स अलद्धियामां ३ अज्ञाननी भजना, ज्ञान नथी ४ ॥ २५ मिछादंसण लद्धियामां ३ अज्ञाननी भजना, ज्ञान नथी ५ ॥ २६ तस्स अलद्धियामां ५ ज्ञान, त्रण अज्ञाननी भजना ६॥ २७ समामिछादंसण लद्धियामां ३ अज्ञाननी भजना, ज्ञान नथी ७ ॥ २८ तस्स अलद्धियामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ८ ॥

## त्रिजुं चारित्रद्वार-बोल १२ ॥

२९ चरित्त लद्धियामां ५ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी १ ॥ ३० तस्स अलद्धियामां ४ ज्ञान, अज्ञान ३ नी भजना, मनःपर्यव नथी २ ॥ ३१ सामायिक चारित्र लद्धियामां ४ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ३ ॥ ३२ तस्स अलद्धियामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ४ ॥ ३३ छेदोपस्थापनीय चारित्र लद्धियामां ४ ज्ञाननी भजना, अ-

ज्ञान नथी ५ ॥ ३४ तस्स अलद्धियामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ६ ॥ ३५ परिहारविशुद्ध चारित्र लद्धियामां ४ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ७ ॥ ३६ तस्स अलद्धियामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ८ ॥ ३७ सूक्ष्म संपराय चारित्र लद्धियामां ४ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ९ ॥ ३८ तस्स अलद्धियामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना १० ॥ ३९ यथाख्यात चारित्र लद्धियामां ५ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ११ ॥ ४० तस्स अलद्धियामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ १२ ॥

चोथुं चारित्राचारित्र द्वार-बोल २ ॥

४१ चरित्ताचरित्त लद्धियामां ३ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ॥ १ ॥ ४२ तस्स अलद्धियामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना २ ॥

पांचमुं दानलब्धिद्वार-बोल २ ॥

४३ दाण लद्धियामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना १ ॥ ४४ तस्स अलद्धियामां १ केवलज्ञाननी नियमा २ ॥

छठुं लाभ लब्धिद्वार-बोल २ ॥

४६ एवं लाभ लद्धियाना २ बोल पूर्ववत् २ ॥

सातमुं भोग लब्धिद्वार-बोल २ ॥

४८ एवं भोग लद्धियाना २ बोल पूर्ववत् २ ॥

आठमु उपभोग लब्धिद्वार-बोल २ ॥

५० एवं उपभोग लद्धियाना २ बोल पूर्ववत् २ ॥

नवमुं वीर्य लब्धिद्वार-बोल ८ ॥

५१ एवं वीरियलद्धियाना पूर्ववत् १ ॥ ५२ तस्स अंलद्धियामां १ केवलज्ञान २ ॥ ५३ बाल वीरियलद्धियामां ३ ज्ञान, चोथा गुणस्थाने समदृष्टि आश्रि, ३ अज्ञाननी भजना ३ ॥ ५४ तस्स अलद्धियामां ५ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ४ ॥ ५५ पंडित वीरियलद्धियामा ५ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ५ ॥ ५६ तस्स अलद्धियामां ४ ज्ञान, मनःपर्यव नहि, ३ अज्ञाननी भजना ६ ॥ ५७ बालपंडित वीरिय लद्धियामां ३

ज्ञानवी भजना, अज्ञान नथी ७ ॥ ५८ तस्स अलद्धियामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ८ ॥

दशमुं इंद्रिय लब्धिद्वार-बोल १२ ॥

५९ इंद्रिय लद्धियामां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना १ ॥ ६० तस्स अलद्धियामां १ केवलज्ञाननी नियमा २ ॥ ६१ श्रोत्रेंद्रिय लद्धियामां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ३ ॥ ६२ तस्स अलद्धियामां ४ ज्ञाननी भजना, २ अज्ञाननी नियमा ४ ॥ ६३ चक्षुइंद्रियना लद्धियामां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ५ ॥ ६४ तस्स अलद्धियामां २ ज्ञाननी भजना ने १ केवलनी नियमा, एवं ज्ञान ३ ने २ अज्ञाननी नियमा ६ ॥ ६५ घ्राणेंद्रियना लद्धियामां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ७ ॥ ६६ तस्स अलद्धियामां २ ज्ञाननी भजना, ने १ केवलनी नियमा, एवं ३ ज्ञान ने २ अज्ञाननी नियमा ८ ॥ ६७ जीभेंद्रियना लद्धियामां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ९ ॥ ६८ तस्स अलद्धियामां १ केवलज्ञान, ने २ अज्ञाननी नियमा १० ॥ ६९ फासिंदिय लद्धियामां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ११ ॥ ७० तस्स अलद्धियामां १ केवलज्ञाननी नियमा १२ ॥

हवे ११ मुं उपयोग द्वार कहे छे ॥ बोल १४–१७५ ॥

१ सागारोवउत्तामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी जजना ॥ ३ मति श्रुत सागारोवउत्तामां ४ ज्ञाननी जजना, अज्ञान नथी ॥ ४ अवधिज्ञान सागारोवउत्तामां ४ ज्ञाननी जजना ॥ ५ मनःपर्यवज्ञान सागारोवउत्तामां ४ ज्ञाननी जजना ॥ ६ केवलज्ञान सागारोवउत्तामां १ केवलज्ञाननी नियमा ॥ ७ मतिश्रुत अज्ञान सागारोवउत्तामां ३ अज्ञाननी जजना ॥ ए विनंगज्ञान सागारोवउत्तामां ३ अज्ञाननी नियमा ॥ १० अणागारोवउत्तामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी जजना ॥ १२ चक्षु अचक्षुदर्शन अणागारोवउत्तामां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी जजना ॥ १३ अवधिदर्शन अणागारोवउत्तामां ४ ज्ञाननी जजना, ३ अज्ञाननी नियमा ॥ १४ केवल दर्शन अणागारोवउत्तामां १ केवलज्ञाननी नियमा ॥

हवे १२ मुं योग द्वार कहे छे ॥ बोल ५–२०० ॥

४ सजोगी मनजोगी वचनजोगी कायजोगीमां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी जजना ॥ ५ अजोगीमां १ केवलज्ञाननी नियमा ॥

हवे १३ मुं लेश्याद्वार कहे छे ॥ बोल ८–२०८ ॥

१ सलेशीमां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ ६ कृष्णादि ५ लेशीमा ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ ७ शुक्ल लेशीमां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ ८ अलेशीमां १ केवलज्ञाननी नियमा ॥

हवे १४ मुं कषायद्वार कहे छे ॥ बोल ६–२१४ ॥

५ सकषायी, क्रोध कषायी, मान कषायी, माया कषायी, लोभ कषायी, ए ५ मां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ ६ अकषायीमां ५ ज्ञानननी भजना ॥

हवे १५ मुं वेदद्वार कहे छे ॥ बोल ५–२१९ ॥

४ सवेदी, स्त्री०, पुरुष०, नपुं०, ए ४ मां ४ ज्ञान, ने ३ अज्ञाननी भजना ॥ ५ अवेदीमा ५ ज्ञानननी भजना ॥

हवे १६ मुं आहारद्वार कहे छे ॥ बोल २–२२१ ॥

१ आहारकमां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ २ अणाहारकमां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥

हवे १७ मुं नाणगोयरद्वार कहे छे ॥

नाण केहेतां ज्ञानना विषयनुं परिमाण, गोयर कहेतां अर्थना ग्रहणनो विषय केटलो छे ? उत्तर–मति १ ॥ श्रुतज्ञान २ ॥ चार प्रकारे–द्रव्यथी १ ॥ क्षेत्रथी २ ॥ कालथी ३ ॥ भावथी ४ ॥ तेमां प्रथम मतिज्ञानी आदेश करीने (सामान्य प्रकारे) सर्व द्रव्य, सर्व क्षेत्र, सर्व काल, सर्व भाव, जाणे पण देखे नहीं, श्रुतज्ञानी सउपयोगी (उपयोग सहित) सर्व द्रव्य, सर्व क्षेत्र, सर्वकाल, सर्वभाव, जाणेइ पासेइ ४ ॥ २ ॥ अवधिज्ञानी उपयोग देतां द्रव्यथी जघन्य अनंतां रूपी द्रव्य जाणे देखे, उत्० सर्व रूपी द्रव्य जाणे देखे १ ॥ क्षेत्रथी उपयोग देतो ज० अंगुलनो असंख्यातमो भाग जाणे देखे, उत्० आखो लोक जाणे देखे, ते लोकना जेवडा असंख्याता खांडुआ अलोकमां जाणे देखे २ ॥ कालथी ज० आवलिकानो असंख्यातमो भाग आगलो पाछलो काल जाणे देखे, उत्० असंख्याता उत्सर्पिणीओ अवसर्पिणीओ एटलो आगलो पाछलो काल जाणे देखे ३ ॥ भावथी ज० उत्० अनंता भाव जाणे देखे, सर्व भावथी अनंतमो भाग जाणे देखे ४ ॥ ३ ॥ मनःपर्यवज्ञा-

नीना २ नेद ॥ ऋजुमति १ ॥ विपुलमति २ ॥ द्रव्य थकी ऋजुमति अनंत प्रदेशीया मनना पुद्गलना स्कंध सामान्य प्रकारे जाणे देखे १ ॥ क्षेत्रथी त्रिहुं अढिद्वीपमां अढिअंगुल ओढुं ॥ उंचुं ज्योतिषी लगे नवसें जोजन अढिअंगुल ओढुं ॥ नीचुं हजार जोजन अढि अंगुल ओढुं एटलुं क्षेत्र जाणे देखे २ ॥ कालथी ज० उ० पल्योपमनो असंख्यातमो नाग आगलो पाठलो काल जाणे देखे ३ ॥ नावथी अढिद्वीपना संज्ञी पंचेंद्रिय प्रजाप्ता मनुष्य तिर्यंचना मनना पुद्गल तेना वर्ण गंध रस स्पर्श एना अनंता नाव ठे, तेथी अनंतमे नागे जाणे देखे ४ ॥ एमज विपुलमति पण जाणे देखे ॥ नवरं एटलो विशेष अढि अंगुल अधिक पण विस्तार सहित निर्मळपणे जाणे देखे ४ ॥ केवलज्ञानी द्रव्यथी ठ द्रव्य सर्व प्रकारे जाणे देखे १ ॥ क्षेत्रथी सर्व क्षेत्र लोकालोक जाणे देखे २ ॥ कालथी सर्व काल जाणे देखे ३ ॥ नावथी सर्व नाव जाणे देखे ४ ॥ ५ ॥ मति अज्ञानी, श्रुत अज्ञानी, द्रव्यथी मति-श्रुत अज्ञानमां जेटलां द्रव्य आवे तेटलां जाणे देखे १ ॥ एम क्षेत्रथी, कालथी, नावथी, पण जाणवुं ॥ नवरं श्रुत अज्ञानीमां एटलो फेर, जेटलां द्रव्य आवे, तेटलां आगवइ पन्नवइ

परूवइ, एम क्षेत्रथी, कालथी, भावथी, पण जाणवुं २ ॥ विभंग ज्ञानी द्रव्यथी विभंग ज्ञानमां जेटलां द्रव्य आवे एटलां जाणे देखे १ ॥ एम क्षेत्रथी, कालथी, भावथी, पण जाणवुं ३ ॥ इति १७ मुं नाणगोयरद्वार समाप्तः ॥ १७ ॥

हवे १८ मुं कालद्वार कहे छे ॥

काल केहेतां ज्ञानीनुं ज्ञान जेटला काल रहे तेना २ भेद, साइए सपज्जवसिए १ ॥ साइए अपज्जवसिए २ ॥ तेमां जे साइए सपज्जवसिए तेनी ज० स्थिति अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० छासठ सागरोपम झाझेरानी ॥ एम ज मति श्रुत ज्ञाननी पण जाणवी २॥ अवधिज्ञाननी ज० १ समयनी, उत्० छासठ सागरोपम झाझेरानी ३ ॥ मनःपर्यव ज्ञाननी ज० १ समयनी, उत्० देशे उणी पूर्व क्रोडनी ४ ॥ केवलज्ञान साइए अपज्जवसिए ५ ॥ अज्ञानना ३ भेद ॥ अणादिए अपज्जवसिए ते अभव्य १ ॥ अणादिए सपज्जवसिए ते भव्य २ ॥ सादिए सपज्जवसिए ते पडिवाइ तेनी स्थिति ज० अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० अर्द्धपुद्गल देशे उणानी ३ ॥ एवं मति श्रुत अज्ञाननी स्थिति पण जाणवी २ ॥ विभंगज्ञाननी ज० १ समयनी,

उ० ३३ सागरने देशे उणी क्रोम पूर्व अधिकनी ३ ॥ इति १८ मुं कालद्वार समाप्तः ॥१८॥

हवे १९ मुं अंतरद्वार कहे छे ॥

ज्ञानना २ भेद ॥ साइए अपज्जवसिए १, तेनुं अंतर नथी १ ॥ साइए सपज्जवसिए तेनुं अंतर ज० अंतर्मुहूर्त्तनुं, उत्० देशे उणा अर्द्ध पुद्गलनुं ॥ एम ज ४ ज्ञाननुं पण जाणवुं ॥ ४ ॥ हवे अज्ञानना ३ भेद ॥ अणाइए अपज्जवसिए एनुं अंतर नथी १ ॥ अणाइए सपज्जवसिएनुं अंतर नथी २ ॥ साइए सपज्जवसिएनुं तथा मतिश्रुत अज्ञाननुं अंतर ज० अंतर्मुहूर्त्तनुं, उ० छासठ सागर जाझेरानुं २ ॥ विभंग ज्ञाननुं अंतर ज० अंत०, उ० अनंतकालनुं ते वनस्पति आश्रि ३ ॥ इति १९ मुं अंतर द्वार समाप्तः ॥ १९ ॥

हवे २० मुं अल्प बहुत्वद्वार कहे छे ॥

सर्वथी थोमा मनः पर्यवज्ञानी १ ॥ तेथी अवधिज्ञानी असंख्यातगुणा २ ॥ तेथी मति श्रुत ज्ञानी मांहोमांहि तुल्य ने विसेसाहिया ४ ॥ तेथी केवलज्ञानी अनंतगुणा ५ ॥ त्रण अज्ञाननो अल्प बहुत्व-सर्वथी थोमा विभंगज्ञानी १ ॥ तेथी मतिश्रुत अज्ञानी

मांहोमांहि तुल्य ने अनंतगुण ३॥ हवे ८ नो अल्प बहुत्व कहे छे ॥ सर्वथी थोडा मनःपर्यवज्ञानी १ ॥ तेथी अवधिज्ञानी असंख्यातगुणा २ ॥ तेथी मतिश्रुत ज्ञानी मांहोमांहि तुल्य ने विशेषाधिक ४ ॥ तेथी विभंगज्ञानी असंख्यातगुणा, नारकी देवता आश्रि ५ ॥ तेथी केवलज्ञानी अनंतगुण ६ ॥ तेथी मतिश्रुत अज्ञानी मांहोमांहि तुल्य ने अनंतगुणा ८ ॥ इति २० मुं अल्प बहुत्वद्वार समाप्तः ॥ २० ॥

हवे २१ मुं पर्यवद्वार कहे छे ॥

पांच ज्ञानमां एकेकना अनंता२ पर्यव छे तेनो अल्प बहुत्व-सर्वथी थोडा मनःपर्यव ज्ञानना पर्यव १ ॥ तेथी अवधिज्ञानना पर्यव अनंतगुणा २ ॥ तेथी श्रुत ज्ञानना पर्यव अनंतगुणा ३ ॥ तेथी मति ज्ञानना पर्यव अनंतगुणा ४ ॥ तेथी केवलज्ञानना पर्यव अनंतगुणा ५ ॥ त्रण अज्ञानना पर्यव अनंतानंत छे, तेनो अल्प बहुत्व-सर्वथी थोडा विभंगज्ञानना पर्यव १ ॥ तेथी श्रुत अज्ञानना पर्यव अनंतगुणा २ ॥ तेथी मतिअज्ञानना पर्यव अनंतगुणा ३ ॥ हवे पांच ज्ञान त्रण अज्ञान ए ८ ना पर्यवनो अल्प बहुत्व कहे छे ॥ सर्वथी थोडा मनः

पर्यंव ज्ञानना पर्यंव १ ॥ तेथी विभंगज्ञानना पर्यंव अनंतगुणा २ ॥ तेथी अवधिज्ञानना पर्यंव अनंतगुणा ३ ॥ तेथी श्रुत अज्ञानना पर्यंव अनंतगुणा ४ ॥ तेथी श्रुतज्ञानना पर्यंव विसेसाहिया ५ ॥ तेथी मतिअज्ञानना पर्यंव अनंतगुणा ६ ॥ तेथी मतिज्ञानना पर्यंव विसेसाहिया ७ ॥ तेथी केवलज्ञानना पर्यंव अनंतगुणा ८ ॥ इति २१ मुं पर्यवद्वार समाप्तः ॥२१॥

॥ इति लद्धिना बोल संपूर्ण ॥

## मोटी कर्मप्रकृतिना बोल ॥

अथ श्री पन्नवणा पद २३ मांथी आठ कर्मनी उत्तरप्रकृति १४८ ना बंधनो जघन्योत्कृष्ट स्थितिना बोल लिख्यते ॥ पांच ज्ञानावरणीयनी, चार दर्शनावरणीयनी ए ९ प्रकृतिनी जघन्य स्थिति अंतर्मुहूर्त्तनी ते दशमा गुणठाणा आश्रि, उत्कृष्टी त्रीस क्रोडाक्रोडी सागरोपमनी ॥ ए ॥ पांच निद्रा, ने १ अशातावेदनीय, ए ६ प्रकृतिनो स्थिति

जघन्य १ सागरना सात ज्ञाग करीए तेवा ३ ज्ञाग पल्योपमने असंख्यातमे ज्ञागे ऊणानी, उत्० त्रिश कोमाकोमी सागरोपमनी १५ ॥ शातावेदनीयना २ ज्ञेद ॥ इरियावहीना बंध आश्रि ज० उत्० २ समयनी ॥ संपरायना बंध आश्रि ज० १२ मुहूर्त्तनी ते दशमा गुणठाणा आश्रि, उत्० पंदर कोमाकोमी सागरोपमनी १६॥ सम्यक्त्व मोहनीयनी ज० स्थिति अंतर्मुहूर्त्तनी, उत्० बासठ सागरोपम जाजेरानी १ ॥ मिथ्यात्व मोहनीयनी ज० १ सागरोपमनी पल्योपमना असंख्यातमा ज्ञागे ऊणानी, उत्० सीत्तेर कोमाकोमी सागरोपमनी १० ॥ मिश्रमोहनीयनी ज० उत्० अंतर्मुहूर्त्तनी १ए ॥ अनंतानुबंधीनी ४ ॥ अप्रत्याख्यानावरणीयनी ४ ॥ प्रत्याख्यानावरणीयनी ४ ॥ ए १२ कषायनी स्थिति ज० १ सागरना ७ ज्ञाग करीए तेवा ४ ज्ञाग ने पल्यने असंख्यातमे ज्ञागे ऊणानी, उत्० चालीश कोमाकोमी सागरोपमनी ३१ ॥ संज्वलनना क्रोधनी ज० स्थिति २ मासनी ॥ माननी ज० १ मासनी ॥ मायानी ज० १५ दिननी ॥ लोज्ञनी ज० अंतर्मुहूर्त्तनी ॥ ए ४ नी उत्कृष्ट स्थिति ४० कोमाकोमी सागरोपमनी ३५॥ हास्य १ ॥ रति

२ ॥ ए २ प्रकृतिनी स्थिति ज० १ सागरोपमना सात जाग करीए तेवो एक जाग पल्यो-पमना असंख्यातमा जागे उणानी, उत्० दश कोमाकोमी सागरोपमनी ३७ ॥ अरति १ ॥ जय २ ॥ शोक ३ ॥ दुगंछा ४ ॥ ए ४ प्रकृतिनी स्थिति ज० १ सागरना ७ जाग करीए तेवा २ जाग पल्योपमने असंख्यातमे जागे उणानी, उत्० वीश कोमाकोमी सागरोपमनी ४१ ॥ स्त्रीवेदनी स्थिति ज० १ सागरना ७ जाग करीए तेवा दोढ जाग पल्योपमना असंख्यातमे जागे उणानी, उत्० पंदर कोमाकोमी सागरोपमनी ४२ ॥ पुरुषवेदनी स्थिति ज० ० वर्षनी, उत्० १० कोमाकोमी सागरोपमनी ४३ ॥ नपुंसकवेदनी स्थिति ज० १ सागरना ७ जाग करीए तेवा २ जाग पल्योपमने असंख्यातमे जागे उणानी, उत्० २० कोमाकोमी सागरोपमनी ४४ ॥ नारकी १ ॥ देवता २ ॥ ए बेना आयुष्यना बंधनी स्थिति ज० १० हजार वर्ष ने अंतर्मुहूर्त्त अधिकनी, उत्० तेत्रीश सागरोपमने पूर्व कोमीनो त्रिजो जाग अधिकनी ४६ ॥ मनुष्य १ ॥ तिर्यंच २ ॥ ए २ ना आयुष्यना बंधनी स्थिति ज० अंतर्मुहूर्त्तनी, उत्० त्रण पल्योपम ने पूर्व कोमीनो त्रिजो जाग अधिकनी ४७ ॥ हवे

नामकर्मनो ए३ प्रकृतिना बंधनी स्थिति कहे ठे ॥ नरकगति १ ॥ नरकानुपूर्वि २ ॥ वैक्रेय शरीर ३ ॥ वैक्रेयनां अंगोपांग ४ ॥ वैक्रेय बंधन ५ ॥ वैक्रेय संघातन ६ ॥ ए ६ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक हजार सागरना ७ नाग करीए तेवा २ नाग पल्यने असंख्यातमे नागे उणानी, उत्० वीश कोमाकोमी सागरोपमनी ५४ ॥ तिर्यंचगति १ ॥ तिर्यंचानुपूर्वि २ ॥ एकेंड्रियनी जाति ३ ॥ पंचेंड्रियनी जाति ४ ॥ उदारिक शरीर ५ ॥ उदारिकनां अंगोपांग ६ ॥ उदारिक बंधन ७ उदारिक संघातन ७ ॥ तेजस् शरीर ए ॥ तेजस् बंधन १० ॥ तेजस् संघातन ११ ॥ कार्मण शरीर १२ ॥ कार्मण बंधन १३ ॥ कार्मण संघातन १४ ॥ ठेवट्ठु संघयण १५ ॥ हुंम संठाण १६ ॥ दुर्नि गंध १७ ॥ खर-खरो स्पर्श १७ ॥ गुरु १ए ॥ लुखो २० ॥ शीत २१ ॥ अगुरुलघुनाम २२ ॥ उपघात नाम २३ ॥ पराघात नाम २४ ॥ उश्वास नाम २५ ॥ आताप नाम २६ ॥ उद्योत नाम २७ ॥ अप्रशस्त विहायगति २७ ॥ कालो वर्ण २ए ॥ तीखो रस ३० ॥ त्रस नाम ३१ ॥ स्थावर नाम ३२ ॥ बादर नाम ३३ ॥ पर्याप्ति नाम ३४ ॥ प्रत्येक नाम ३५ ॥ अस्थिर नाम ३६ ॥

मोट कर्म प्रकृतिना ॥१२६॥ अशुभ नाम ३७ ॥ दौर्भाग्य नाम ३८ ॥ दुःस्वर नाम ३ए ॥ अनादेय नाम ४० ॥ अयशो- बोल.
कीर्तिनाम ४१ ॥ निर्माण नाम ४२ ॥ ए ४२ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक साग-
रना सात जाग करीए तेवा बे जाग पल्योपमना असंख्यातमे जागे उणानी, उत्० २०
कोमाकोमी सागरोपमनी एद ॥ मनुष्यगति १ ॥ मनुष्यानुपूर्वि २ ॥ ए २ प्रकृतिना बंधनी
स्थिति ज० एक सागरना सात जाग करीए तेवो दोढ जाग पल्योपमना असंख्यातमे
जागे उणानी, उत्० १५ कोमाकोमी सागरोपमनी एठ ॥ देवगति १ ॥ देवानुपूर्वि २ ॥
ए २ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० १ हजार सागरोपमना सात जाग करीए तेवा एक
जाग पल्योपमना असंख्यातमे जागे उणानी, उत्० १० कोमाकोमी सागरोपमनी १०० ॥
बेइंद्रियनी जाति १ ॥ तेइंद्रियनी जाति २ ॥ चउरिंद्रियनी जाति ३ ॥ कीलकुसंघ-
यण ४ ॥ कुब्ज संठाण ५ ॥ सूक्ष्म नाम ६ ॥ अपर्याप्त नाम ७ ॥ साधारण नाम ८ ॥ ए
८ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना ३५ जाग करीए तेवा ए जाग पल्योपमने
असंख्यातमे जागे उणानी, उत्० अढार कोमाकोमी सागरोपमनी १०८ ॥ वज्रऋषजना- ॥१८६॥

राच संघयण १ ॥ समचउरंस संठाण २ ॥ शुक्लवर्ण ३ ॥ मधुर रस ४ ॥ सुरजि गंध ५ ॥ सुंहालो स्पर्श ६ ॥ लघु ७ ॥ उष्ण ८ ॥ स्निग्ध ए ॥ प्रशस्त विहायोगति १० ॥ स्थिर नाम ११ ॥ शुज नाम १२ ॥ सौजाग्य नाम १३ ॥ सुस्वर नाम १४ ॥ आदेय नाम १५॥ ए १५ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना सात जाग करीए तेवो १ जाग पल्यना असंख्यातमे जागे उणानी, उत्० दश कोमाकोमी सागरोपमनी १२३ ॥ ऋषजनाराच संघयण १ ॥ निग्रोध परिमंमल संस्थान २॥ ए बे प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना ३५ जाग करीए तेवा ७ जाग पल्योपमने असंख्यातमे जागे उणानी, उत्० बार कोमाकोमी सागरोपमनी १२५॥ नाराचसंघयण १ ॥ सादि संठाण २ ॥ ए २ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० १ सागरना ३५ जाग करीए तेवा ७ जाग ने पल्यने असंख्यातमे जागे उणानी, उत्० १४ कोमाकोमी सागरोपमनी १२७॥ अर्द्धनाराच संघयण १ ॥ वामन संठाण २ ॥ ए २ नो स्थिति ज० १ सागरना ३५ जाग करीए तेवा ८ जाग पल्यना असंख्यातमे जागे उणानी, उत्० १६ कोमाकोमी सागरोपमनी १२ए ॥ पीळो वर्ण १ ॥ खाटो रस २ ॥ ए २ नी स्थिति ज०

एक सागरना २८ भाग करीए तेवा ५ भाग ने पल्यने असंख्यातमे भागे उणानी, उत्० साडाबार कोडाकोडी सागरोपमनी १३१ ॥ आहारक शरीर १ ॥ आहारकनां अंगोपांग २ ॥ आहारक बंधन ३ ॥ आहारक संघातन ४ ॥ तीर्थंकर नाम कर्म ५ ॥ ए ५ नी स्थिति ज० अंतो कोडाकोडी सागरोपमनी, उत्० एमज जाणवी १३६ ॥ रातो वर्ण १ ॥ कषायलो रस २ ॥ ए २ नी स्थिति ज० एक सागरना २८ भाग करीए तेवा ६ भाग ने पल्योपमने असंख्यातमे भागे उणानी, उत्० १५ कोडाकोडी सागरोपमनी १३८ ॥ नीलो वर्ण १ ॥ कडवो रस २ ॥ ए २ नी स्थिति ज० एक सागरना २८ भाग करीए तेवा सात भाग ने पल्यने असंख्यातमे भागे उणानी, उत्० साडासत्तर कोडाकोडी सागरोपमनी १४० ॥ यशोकीर्ति नाम कर्मनी स्थिति ज० ८ मुहूर्त्तनी, उत्० १० कोडाकोडी सागरोपमनी १४१ ॥ उंच गोत्रनी स्थिति ज० ८ मुहूर्त्तनी, उ० १० कोडाकोडी सागरोपमनी १४२ ॥ नीच गोत्रनी स्थिति ज० एक सागरना ७ भाग करीए तेवा २ भाग ते पल्यने असंख्यातमे भागे उणानी, उत्० २० कोडाकोडी सागरनी १४३ ॥ अंतराय क-

र्मनी ५ प्रकृति दानांतरायादिनी स्थिति ज० अंतमुहूर्त्तनी ते दशमा गुणठाणा आश्रि, उत्० ३० कोमाकोमी सागरोपमनी १४८ ॥ ए ८ कर्मनी उत्तर प्रकृत्ति १४८ नी बंधस्थिति समुच्चय आश्रि कही १ ॥ हवे जे जे कर्मनी जे जे उत्तर प्रकृतिनी जेटला जेटला सागरोपमनी स्थिति कही छे तेटला तेटला सो वर्षनो ते ते प्रकृतिनो अबाधाकाल जाणवो ॥ ए समुच्चय प्रकृति १४८ ना बंधनो अबाधाकाल कह्यो ॥ हवे एकेंद्रिय जेटली प्रकृति बांधे तेना बंधनी स्थिति कहे छे ॥ ५ ज्ञानावरणीय ॥ ए दर्शनावरणीय ॥ १ अशाता वेदनीय ॥ ए १५ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० १ सागरना ७ नाग करीए तेवा ३ नाग ते पल्योपमने असंख्यातमे नागे उणानी, उत्० प्रतिपूर्ण १ सागरना ३/७ नागनी बांधे १५ ॥ शातावेदनीयना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना ७ नाग करीए तेवो दोढ नाग ते पल्योपमना असंख्यातमे नागे उणानी, उत्० प्रतिपूर्ण १ सागरना ३/७ नागनी १६ ॥ मिथ्यात्व मोहनीयना बंधनी स्थिति ज० एक सागरोपमनी ते पल्यने असंख्यातमे नागे उणानी, उत्० प्रतिपूर्ण १ सागरोपमनी १७ ॥ सोल कषायना बंधनी स्थिति

 

ज० १ सागरना ३/७ भागनी ते पल्यने असंख्यातमे भागे उणानी, उत्० प्रतिपूर्ण १ सागरना ४/७ भागनी ३३ ॥ हास्य १ ॥ रति २ ॥ ए २ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० १ सागरना १/७ भागनी ते पल्यने असंख्यातमे भागे उणानी, उत्० प्रतिपूर्ण १ सागरना १/७ भागनी ३५ ॥ अरति १ ॥ भय २ ॥ शोक ३ ॥ दुगंछा ४ ॥ ए ४ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० १ सागरना २/७ भागनी ते पल्यने असंख्यातमे भागे उणानी, उत्० प्रतिपूर्ण १ सागरना २/७ भागनी ३९ ॥ स्त्रीवेदना बंधनी स्थिति ज० १ सागरना १॥/७ भागनी ते पल्यना असंख्यातमे भागे उणानी, उत्० प्रतिपूर्ण १ सागरना १॥/७ भागनी ४० ॥ पुरुषवेदना बंधनी स्थिति ज० १ सागरना १/७ भागनी ते पल्यने असंख्यातमे भागे उणानी, उत्० प्रतिपूर्ण १ सागरना १/७ भागनी ४१ ॥ नपुंसक वेदनी ज० १ सागरना २/७ भागनी ते पल्यने असंख्यातमे भागे उणानी, उत्० प्रतिपूर्ण १ सागरना २/७ भागनी ४२ ॥ तिर्यंचनुं आयुष्य १ ॥ मनुष्यनुं आयुष्य २ ॥ ए २ प्रकृतिनी स्थिति ज० अंतर्मुहूर्त्तनी, उत्० पूर्व क्रोडी ने २२ हजार वर्षना त्रीजा भागे अधिकनी ४४ ॥ मनुष्यनी गति १ ॥ मनुष्यानुपूर्वि २ ॥ ए २ प्रकृ-

तिनी स्थिति ज० १ सागरना १॥/७ ज्ञाग ते पल्यने असंख्यातमे ज्ञागे उणानी, उ० प्रति-
पूर्ण १ सागरना दोढ सातिया भागनी ४६॥ वज्रऋषजनाराच संघयण १॥ समचउरंस संठाण २॥ शुक्ल वर्ण ३॥ मधुर रस ४॥ सुरजि गंध ५॥ सुंहालो स्पर्श ६॥ लघु ७॥ उष्ण ८॥ स्निग्ध ए॥ प्रशस्त विहायोगति १०॥ स्थिर नाम ११॥ शुज नाम १२॥ सौज्ञाग्य नाम १३॥ सुस्वर नाम १४॥ आदेय नाम १५॥ यशोकीर्त्ति नाम १६॥ ए १६ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना सात ज्ञाग करीए तेवो १ ज्ञाग ते पल्यने असंख्यातमे ज्ञागे उणानी, उत्० प्रतिपूर्ण १ ज्ञागनी ६२॥ तिर्यंचनी गति १॥ एकेंड्रियनी जाति २॥ पंचेंड्रियनी जाति ३॥ तिर्यंचानुपूर्वि ४॥ उदारिक शरीर ५॥ उदारिकनां अंगोपांग ६॥ उदारिक बंधन ७॥ उदारिक संघातन ८॥ तेजस् शरीर ए॥ कार्मण शरीर १०॥ तेजस् बंधन ११॥ कार्मण बंधन १२॥ तेजस् संघातन १३॥ कार्मण संघातन १४॥ छेवट्ठु संघयण १५॥ हुंम संठाण १६॥ कालो वर्ण १७॥ तीखो रस १८॥ दुर्जि गंध १ए॥ खरखरो स्पर्श २०॥ शीत २१॥ गुरु २२॥ लुखो २३॥ अगुरुलघुनाम

 

२४ ॥ उपघात नाम २५ ॥ पराघात नाम २६ ॥ उच्छ्वास नाम २७ ॥ उद्योत नाम २८ ॥ आताप नाम २९ ॥ अप्रशस्त विहायोगति ३० ॥ त्रस नाम ३१ ॥ स्थावर नाम ३२ ॥ बादर नाम ३३ ॥ पर्याप्ति नाम ३४ ॥ प्रत्येक नाम ३५ ॥ अस्थिर नाम ३६ ॥ अशुभ नाम ३७ ॥ दुर्भाग्य नाम ३८ ॥ दुःस्वर नाम ३९ ॥ अनादेय नाम ४० ॥ अयशोकीर्ति नाम ४१ ॥ निर्माण नाम ४२ ॥ ए ४२ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना ७ भाग करीए तेवा २ भाग ते पल्यना असंख्यातमे भागे उणानी, उत्० प्रतिपूर्ण एक सागरना ²⁄₇ भागनी १०४ ॥ बेइंद्रिय १ ॥ तेइंद्रिय २ ॥ चउरिंद्रिय ३ ॥ किलकु संघयण ४ ॥ कुब्ज संठाण ५ ॥ सूक्ष्म नाम ६ ॥ अपर्याप्ति नाम ७ ॥ साधारण नाम ८ ॥ ए ८ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना ३५ भाग करीए तेवा ९ भाग ते पल्यने असंख्यातमे भागे उणानी, उत्० एक सागरना प्रतिपूर्ण ⁹⁄₃₅ भागनी ११२ ॥ ऋषभनाराच संघयण १ ॥ निग्रोध परिमंडल संठाण २ ॥ ए २ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना ३५ भाग करीए तेवा ६ भाग ते पल्यने असंख्यातमे भागे उणानी, उ०

प्रतिपूर्ण एक सागरना ६/३५ भागनी ११४ ॥ नाराच संघयण १ ॥ सादि संठाण २ ॥ ए २ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना ३५ भा । करीए तेवा ७ भाग ते पल्यने अ-संख्यातमे भागे ऊणानी, उत्० एक सागरना प्रतिपूर्ण ७/३५ भागनी ११६ ॥ अर्द्धनाराच संघयण १ ॥ वामन संठाण २ ॥ ए २ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना ३५ भाग करीए तेवा ८ भाग ते पल्यने असंख्यातमे भागे ऊणानी, उत्० एक सागरना प्र-तिपूर्ण ८/३५ भागनी ११८ ॥ रातो वर्ण १ ॥ कषायलो रस २ ॥ ए २ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना २८ भाग करीए तेवा ६ भाग ते पल्य ने असंख्यातमे भागे ऊणानी, उत्० एक सागरना प्रतिपूर्ण ६/२८ भागनी १२० ॥ पीलो वर्ण १ ॥ खाटो रस २ ॥ ए २ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना २८ भाग करीए तेवा ५ भाग ते पल्यने अ-संख्यातमे भागे ऊणानी, उत्० एक सागरना प्रतिपूर्ण ५/२८ भागनी १२२ ॥ नीलो वर्ण १ ॥ कडवो रस २ ॥ ए २ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना २८ भाग करीए तेवा ७ भाग ते पल्यने असंख्यातमे भागे ऊणानी, उ० एक सागरना प्रतिपूर्ण ७/२८ भागनी

१२४ ॥ यशोकीर्ति १ ॥ उंच गोत्र २ ॥ तेनी स्थिति ज० एक सागरना ७ जाग करीए तेवो एक जाग ते पल्यने असंख्यातमे जागे उणानी, उत्० एक सागरना प्रतिपूर्ण ३ जागनी १२६ ॥ दानांतरायादि ५ प्रकृतिना बंधनी स्थिति एक सागरना ७ जाग करीए तेवा ३ जाग ते पल्यने असंख्यातमे जागे उणानी, उत्० प्रतिपूर्ण एक सागरना ३ जागनी १३१ ॥ ए एकेंद्रियना कर्मबंधनी स्थिति कही ॥ एकेंद्रिय १३१ प्रकृति बांधे ते १४८ मांथी सम्यक्त्व मोहनीय १ ॥ समामिथ्यात्वमोहनीय २ ॥ नरकायु ३ ॥ देवायु ४ ॥ नरकगति ५ ॥ देवगति ६ ॥ वैक्रेय शरीर ७ ॥ वैक्रेयना अंगोपांग ८ ॥ वैक्रेयबंधन ए ॥ वैक्रेय संघातन १० ॥ आहारक शरीर ११ ॥ आहारकनां अंगोपांग १२ ॥ आहारक बंधन १३ ॥ आहारक संघातन १४ ॥ नरकानुपूर्वि १५ ॥ देवानुपूर्वि १६ ॥ तीर्थंकर नाम कर्म १७ ॥ ए १७ वर्जि ॥ ए एकेंद्रियना प्रकृतिना बंधनी स्थिति कही ॥ अबाधाकाल पूर्ववत् २ ॥ हवे बेइंद्रिय १ ॥ तेइंद्रिय २ ॥ चउरिंद्रिय ३ ॥ ए ३ विगलेंद्रियना प्रकृतिना बंधनी स्थिति कहे बे ॥ त्रणे विगलेंद्रिय १३१ प्रकृति बांधे, तेमां बेइंद्रियना प्रकृति-

बंधनी स्थिति एकेंड्रियवत् ॥ नवरं एटलो फेर, जेम एकेंड्रियमां एक सागरना नाग कीधा, तेम, बेइंड्रियमां २५ सागरना नाग करवा ३ ॥ तेइंड्रियमां ५० सागरना नाग करवा, शेष पूर्ववत् ४ ॥ चउरिंड्रियमां १०० सागरना नाग करवा शेष पूर्ववत् ५ ॥ ए ३ विगलेंड्रियना प्रकृतिबंधनी स्थिति कही ॥ अबाधाकाल पूर्ववत् ५ ॥ हवे असंज्ञी पंचेंड्रिय १४१ प्रकृति बांधे, ते १४८ मांथी ७ प्रकृति वर्जि ॥ सम्यक्त्व मोहनीय १ ॥ समामिथ्यात्व मोहनीय २ ॥ आहारक शरीर ३ ॥ आहारकनां अंगोपांग ४ ॥ आहारक बंधन ५ ॥ आहारक संघातन ६ ॥ तीर्थंकर नाम ७ ॥ ए ७ वार्जे ॥ हवे मिथ्यात्व मोहनीयनी ज० १००० सागर ते पल्यने असंख्यातमे नागे उणानी, उत्० १००० सागर प्रतिपूर्णनी ॥ नरकायु १ ॥ देवायु २ ॥ ए २ नी ज० १०,००० वर्षने अंतर्मुहूर्त्त अधिकनी, उ० पल्यनो असंख्यातमो नाग ने पूर्व क्रोमनो त्रीजो नाग अधिकनी ॥ नरकगति १ ॥ तिर्यंचगति २ ॥ ए २ नी ज० १००० सागरना ७ नाग करीए तेना २ नागनी ते पल्यने असंख्यातमे नागे उणानी, उ० प्रतिपूर्ण २ नागनी ॥ मनुष्यनी गतिनी ज०

एक हजार सागरना ७ नाग करीए तेवो दोढ नाग ते पल्यने असंख्यातमे नागे ऊणानी, उ० प्रतिपूर्ण दोढ नागनी ॥ एवं देवगतिनी पण जाणवी ॥ नवरं एक नाग कहेवो, एवं वैक्रेय शरीरनी पण जाणवी ॥ नवरं बे नाग कहेवा ॥ शेष एकेंद्रियवत् ॥ नवरं एटलो फेर जे एक सागरना नाग करवा, ते ठेकाणे १००० सागरना नाग करवा कह्या ॥ अबाधाकाल पूर्ववत् ॥ ए असंज्ञी पंचेंद्रियना प्रकृतिबंधनी स्थिति कही ॥ ६ ॥ हवे संज्ञी पंचेंद्रियना प्रकृतिबंधनी स्थिति कहे छे ॥ ५ ज्ञानावरणीय ॥ ४ दर्शनावरणीय ॥ ए ए प्रकृतिनी स्थिति ज० अंत०, उ० ३० कोमाकोमी सागरोपमनी ए ॥ शातावेदनीयनी स्थिति इरियावहियाने आश्रि तथा संपरायने आश्रिने औघिक समुच्चयवत् जाणवी ॥ अशातावेदनीयनी स्थिति ज० अंतो कोमाकोमी सागरोपमनी, उत्० ३० कोमाकोमी सागरोपमनी ॥ सम्यक्त्व मोहनीय १ ॥ समामिथ्यात्व मोहनीयनी स्थिति समुच्चयवत् ॥ मिथ्यात्व मोहनीयनी ज० अंतो कोमाकोमी सागरोपमनी, उ० सीत्तेर कोमाकोमी सागरोपमनी ॥ कषाय १२ नी स्थिति ज० अंतो कोमाकोमी सागरोपमनी, उत्० ४० कोमाकोमी साग-

रोपमनी ॥ संज्वलनना ४ कषायनी ओघिक समुच्चयवत् ॥ आयुष्य ४ नी स्थिति ओघिक समुच्चयवत् ॥ आहारक नाम १ ॥ तीर्थंकर नाम २ ॥ ए २ नी स्थिति ज० उ० अंतो कोडाकोडी सागरोपमनी ॥ पुरुषवेदनी ज० ८ वर्षनो, उ० १० कोडाकोडी सागरोपमनी ॥ यशोकीर्त्ति १ ॥ उंच गोत्र २ ॥ ए २ नी ज० ८ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० १० कोडाकोडी सागरोपमनी ॥ दानांतरायादि ५ अंतरायनी ज० अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० ३० कोडाकोडी सागरोपमनी ॥ शेष प्रकृतिनी स्थिति ज० अंतो कोडाकोडी सागरोपमनी, उत्कृष्टी जेनी जे स्थिति ओघिक समुच्चयमां कहेल छे तेटली तेटली बांधे ॥ संज्ञी पंचेंद्रिय जीवो १४८ प्रकृति बांधे ॥ ए संज्ञी पंचेंद्रियना प्रकृतिबंधनी स्थिति कही ॥ इति कर्मप्रकृतिबंध स्थितिना बोल संपूर्ण ॥

## ४४ बोलनो अल्पबहुत्व ॥

अथ श्री भगवती शतक १९ मे उद्देशा त्रीजाथी २२ एकेंद्रियनो जघन्योत्कृष्ट अवगाहना आश्री ४४ बोलनो अल्पबहुत्व लिख्यते ॥

सर्वथी थोमा सूक्ष्म निगोदना अपर्याप्तानी जघन्य अवगाहना १ ॥ तेथी सूक्ष्म वाउकायना अपर्याप्तानी ज० अ० असंख्यातगुणी २ ॥ तेथी सूक्ष्म तेउ अपर्याप्तानी ज० अ० असंख्यातगुणी ३ ॥ तेथी सूक्ष्म अपकायना अपर्याप्तानी ज० अ० असंख्यातगुणी ४ ॥ तेथी सूक्ष्म पृथ्वी अपर्याप्तानी ज० अ० असंख्यातगुणी ५ ॥ तेथी बादर वाउकाय अपर्याप्तानी ज० अ० असंख्यातगुणी ६ ॥ तेथी बादर तेउकाय अपर्याप्तानी ज० अ० असंख्यातगुणी ७ ॥ तेथी बादर अपकाय अपर्याप्तानी ज० अ० असंख्यातगुणी ८ ॥ तेथी बादर पृथ्वी अपर्याप्तानी ज० अ० असंख्यातगुणी ९ ॥ तेथी बादर निगोद अने बादर प्रत्येक वनस्पति अपर्याप्तानी ज० अ० मांहोमांहि तुल्य ने असंख्यातगुणी १०—११ ॥

तेथी सूक्ष्मनिगोद पर्याप्तानी ज० अ० असंख्यातगुणी १२ ॥ तेथी सूक्ष्मनिगोद अपर्याप्तानी उत्कृष्ट अ० विसेसाहिया १३ ॥ तेथी सूक्ष्मनिगोद पर्याप्तानी उ० अ० विसेसाहिया १४ ॥ तेथी सूक्ष्म वाउकाय पर्याप्तानी ज० अ० असंख्यातगुणी १५ ॥ तेथी सूक्ष्म वाउकाय अपर्याप्तानी उ० अ० विसेसाहिया १६ ॥ तेथी सूक्ष्म वाउकाय पर्याप्तानी उ० अ० विसेसाहिया १७ ॥ तेथी सूक्ष्म तेउकाय पर्याप्तानी ज० अ० असंख्यातगुणी १८ ॥ तेथी सूक्ष्म तेउकाय अपर्याप्तानी उ० अ० विसेसाहिया १९ ॥ तेथी सूक्ष्म तेउकाय पर्याप्तानी उ० अ० विसेसाहिया २० ॥ तेथी सूक्ष्म अपकाय पर्याप्तानी ज० अ० असंख्यातगुणी २१ ॥ तेथी सूक्ष्म अपकाय अपर्याप्तानी उ० अ० विसेसाहिया २२ ॥ तेथी सूक्ष्म अपकाय पर्याप्तानी उ० अ० विसेसाहिया २३ ॥ तेथी सूक्ष्म पृथ्वीकाय पर्याप्तानी ज० अ० असंख्यातगुणी २४ ॥ तेथी सूक्ष्म पृथ्वीकाय अपर्याप्तानी उ० अ० विसेसाहिया २५ ॥ तेथी सूक्ष्म पृथ्वीकाय पर्याप्तानी उ० अ० विसेसाहिया २६ ॥ तेथी बादर वाउकाय पर्याप्तानी ज० अ० असंख्यातगुणी २७ ॥ तेथी बादर वाउकाय अपर्याप्तानी उ० अ० विसेसाहिया २८ ॥ तेथी बादर वाउकाय पर्याप्तानी उ० अ० विसेसाहिया २९ ॥ तेथी बादर

तेउकाय पर्याप्तानी ज० अ० असंख्यातगुणी ३० ॥ तेथी वादर तेउकाय अपर्याप्तानी उ० अ० विसेसाहिया ३१ ॥ तेथी वादर तेउकाय पर्याप्तानी उ० अ० विसेसाहिया ३२ ॥ तेथी वादर अपकाय पर्याप्तानी ज० अ० असंख्यातगुणी ३३ ॥ तेथी वादर अपकाय अपर्याप्तानी उ० अ० विसेसाहिया ३४ ॥ तेथी वादर अपकाय पर्याप्तानी उ० अ० विसेसाहिया ३५ ॥ तेथी वादर पृथ्वीकाय पर्याप्तानी ज० अ० असंख्यातगुणी ३६ ॥ तेथी वादर पृथ्वीकाय अपर्याप्तानी उ० अ० विसेसाहिया ३७ ॥ तेथी बादर पृथ्वीकाय पर्याप्तानी उ० अ० विसेसाहिया ३८ ॥ तेथी वादर निगोद पर्याप्तानी ज० अ० असंख्यातगुणी ३९ ॥ तेथी वादर निगोद अपर्याप्तानी उ० अ० विसेसाहिया ४० ॥ तेथी बादर निगोद पर्याप्तानी उ० अ० विसेसाहिया ४१ ॥ तेथी वादर प्रत्येक वनस्पतिकाय पर्याप्तानी ज० अ० असंख्यातगुणी ४२ ॥ तेथी वादर प्रत्येक वनस्पतिकाय अपर्याप्तानी उ० अ० असंख्यातगुणी ४३ ॥ तेथी वादर प्रत्येक वनस्पतिकाय पर्याप्तानी उ० अ० असंख्यातगुणी ४४ ॥ इति ४४ बोलनो अल्पबहुत्व संपूर्ण ॥

## २८ बोलनो अल्पबहुत्व ॥

अथ श्री भगवती शतक २५ मां उद्देशा पहेलाथी जीवना १४ भेदना जघन्योत्कृष्ट योगना आश्री २८ बोलनो अल्पबहुत्व लिख्यते ॥

सर्वथी थोडा सूक्ष्म एकेंद्रिय अपर्याप्तानो जघन्य योग १ ॥ तेथी बादर एकेंद्रिय अपर्याप्तानो ज० यो० असंख्यातगुणो २ ॥ तेथी बेइंद्रिय अपर्याप्तानो ज० यो० असं० ३ ॥ तेथी तेइंद्रिय अपर्याप्तानो ज० यो० असं० ४ ॥ तेथी चउरिंद्रिय अपर्याप्तानो ज० यो० असं० ५ ॥ तेथी असंज्ञी पंचेंद्रिय अपर्याप्तानो ज० यो० असं० ६ ॥ तेथी संज्ञी पंचेंद्रिय अपर्याप्तानो ज० यो० असं० ७ ॥ तेथी सूक्ष्म एकेंद्रिय पर्याप्तानो ज० यो० असं० ८ ॥ तेथी बादर एकेंद्रिय पर्याप्तानो ज० यो० असं० ९ ॥ तेथी सूक्ष्म एकेंद्रिय अपर्याप्तानो उ० यो० असं० १० ॥ तेथी बादर एकेंद्रिय अपर्याप्तानो उ० यो० असं० ११ ॥ तेथी सूक्ष्म एकेंद्रिय पर्या-

सानो उ० यो० असं० १२ ॥ तेथी बादर एकेंद्रिय पर्यासानो उ० यो० असं० १३ ॥ तेथी बेइंद्रिय पर्यासानो ज० यो० असं० १४ ॥ तेथी तेइंद्रिय पर्यासानो ज० यो० असं० १५ ॥ तेथी चउरिंद्रिय पर्यासानो ज० यो० असं० १६ ॥ तेथी असंज्ञी पंचेंद्रिय पर्यासानो ज० यो० असं० १७ ॥ तेथी संज्ञी पंचेंद्रिय पर्यासानो ज० यो असं० १८ ॥ तेथी बेइंद्रिय अपर्यासानो उ० यो० असं० १९ ॥ तेथी तेइंद्रिय अपर्यासानो उ० यो० असं० २० ॥ तेथी चउरिंद्रिय अपर्यासानो उ० यो० असं० २१ ॥ तेथी असंज्ञी पंचेंद्रिय अपर्यासानो उ० यो० असं० २२ ॥ तेथी संज्ञी पंचेंद्रिय अपर्यासानो उ० यो० असं० २३ ॥ तेथी बेइंद्रिय पर्यासानो उ० यो० असं० २४ ॥ तेथी तेइंद्रिय पर्यासानो उ० यो० असं० २५ ॥ तेथी चउरिंद्रिय पर्यासानो उ० यो० असं० २६ ॥ तेथी असंज्ञी पंचेंद्रिय पर्यासानो उ० यो० असं० २७ ॥ तेथी संज्ञी पंचेंद्रिय पर्यासानो उ० यो० असं० २८ ॥ इति २८ बोलनो अल्पबहुत्व संपूर्ण ॥

# २४ दंडकना जीवोनो अल्पबहुत्व ॥



अथ २४ दंमकना जीवोनो अल्पबहुत्व लिख्यते ॥

सर्वथी थोमा मनुष्य १ ॥ तेथी तेउकाय असंख्यातगुणा २ ॥ तेथी वैमानिक असं० गु० ३ ॥ तेथी १० नवनपति मांहोमांहि तुल्य ने असं० गु० १३ ॥ तेथी नारकी असं० गु० १४ ॥ तेथी वाणव्यंतर असं० गुणा १५ ॥ तेथी ज्योतिषी संख्यात गु० १६ ॥ तेथी तिर्यंच पंचेंद्रिय असंख्यातगुणा १७ ॥ तेथी चउरिंद्रिय विसेसाहिया १८ ॥ तेथी तेइंद्रिय विसेसाहिया १९ ॥ तेथी बेइंद्रिय विसेसाहिया २० ॥ तेथी पृथ्वीकाय असं० गु० २१ ॥ तेथी अपकाय असं० गु० २२ ॥ तेथी वाउकाय असं० गु० २३ ॥ तेथी वनस्पति कायना दंमके जीवो अनंतगुणा २४ ॥ इति २४ दंमकना जीवोनो अल्पबहुत्व संपूर्ण ॥



# १५ योगना ३० बोलनो अल्पबहुत्व ॥



अथ श्री जगवती शतक २५ माना उद्देशा पहेलाथी १५ योगना जघन्योत्कृष्ट योग आश्री ३० बोलनो अल्पबहुत्व लिख्यते ॥

सर्वथी थोमो कार्मण काययोगनो जघन्य योग १ ॥ तेथी उदारिक मिश्रनो ज० यो० असंख्यातगुणो २ ॥ तेथी वैक्रेयमिश्रनो ज० यो० असं० ३ ॥ तेथी उदारिकनो ज० यो० असं० ४ ॥ तेथी वैक्रयनो ज० यो० असं० ५ ॥ तेथी कार्मणनो उ० यो० असं० ६ ॥ तेथी आहारकनो मिश्र ज० यो० असं० ७ ॥ तेथी आहारकनो मिश्र उ० यो० असं० ८ ॥ तेथी उदारिकनो मिश्र अने वैक्रयनो मिश्र उ० यो० मांहोमाहि तुल्य ने असं० ए–१० ॥ तेथी व्यवहार मननो ज० यो० असं० ११ ॥ तेथी आहारकनो ज० यो० असं० १२ ॥ तेथी सत्य मन १ असत्य मन २ मिश्र मन ३, वचनना ४, ए ७ योगनो ज० यो० मांहोमांहि तुल्य ने असं० १ए ॥ तेथी आहारक शरीरनो उ० यो० असं० २० ॥ तेथी उदारिक

१ वैक्रेय २ चार मन ६ चार वचन १० ॥ ए १० नो उ० यो० मांहोमांहि तुल्य ने असंख्यातगुणो ३० ॥ इति योगना ३० बोलनो अल्पबहुत्व संपूर्ण ॥

## जीवना १४ भेदनो अल्पबहुत्व ॥

अथ श्री सूक्ष्मादि जीवोना १४ भेदनो अल्पबहुत्व लिख्यते ॥

सर्वथी थोका संज्ञी पंचेंद्रिय अपर्याप्ता १ ॥ तेथी संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्ता असंख्यात गुणा २ ॥ तेथी चउरिंद्रिय प० सं० गुणा ३ ॥ तेथी असंज्ञी पंचेंद्रिय प० विसेसाहिया ४ ॥ तेथी बेइंद्रिय प० वि० ५ ॥ तेथी तेइंद्रिय प० वि० ६ ॥ तेथी असंज्ञी पंचेंद्रिय अप० असं० ७ ॥ तेथी चउरिंद्रिय अप० वि० ८ ॥ तेथी तेइंद्रिय अप० वि० ए ॥ तेथी बेइंद्रिय अप० वि० १० ॥ तेथी बादर एकेंद्रिय प० अनंतगुणा ११ ॥ तेथी बादर एकेंद्रिय अप० असं० १२ ॥ तेथी सूक्ष्म एकेंद्रिय अप० असं० १३ ॥ तेथी सूक्ष्म एकेंद्रिय प० संख्या० १४ ॥

॥ इति सूक्ष्मादि जीवोना १४ भेदनो अल्पबहुत्व संपूर्ण ॥

इति श्री प्रकरण संग्रह

भाग बीजो

समाप्त.